अप्रैल-सितम्बर, 2024 (संयुक्तांक)

ISSN- 2455-1309

साहित्य भारती

राम साहित्य पर केन्द्रित

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

सुफल राम के राज

- तुलसीदास

सुक्र सुमंगल काज सब, कहब सगुन सुभ देखि।
जंत्र मंत्र मनि औषधी, सहसा सिद्धि बिसेखि।। 1।।
रामकृपा थिर काज सुभ, सनि-बासर बिस्राम।
लोह, महिष, गज, बनिज भल, सुख सुपास गृह ग्राम।। 2।।
राहु केतु उलटे चलहिँ, असुभ अमंगल मूल।
रुंड मुड पाषंड-प्रिय, असुर अमर प्रतिकूल।। 3।।
समउ राहु रवि-गहनु-मत, राजहिँ प्रजहिँ कलेस।
सगुन सोच संकट बिकट, कलह कलुष दुख देस।। 4।।
राहु सोम संगमु बिषमु, असगुन उदधि अगाधु।
ईति भीति खल दल प्रबल, सीदहिँ भूसुर साधु ।। 5।।
सात पाँच ग्रह एक थल, चलहिँ बाम गति धाम।
राज बिराजिय समउ गत, सुभहित सुमिरहु राम।। 6।।
खेती बनि बिद्या बनिज, सेवा सिलिप सुकाज।
तुलसी सुरतरु सरिस सब, सुफल राम के राज।। 7।।

सुधा, साधु, सुरतरु, सुमन, सुफल सुहावनि बात।
तुलसी सीतापति-भगति, सगुन सुमंगल सात।। 1।।
सिद्ध समागम संपदा, सदन सरीर सुपास।
सीतानाथ-प्रसाद सुभ, सगुन सुमंगल बास।। 2।।
कौसल्या कल्यानमय, मूरति करत प्रनामु।
सगुन सुमंगल काज सुभ, कृपा करहिँ सियरामु।। 3।।
सुमिरि सुमित्रा नाम जग, जे तिय लेहिँ सुनेम।
सुवन लखन रिपुदवनु से, पावहिँ पति-पद-प्रेम।। 4।।
दसरथ नाम सुकामतरु, फलइ सकल कल्यान।
धरनि धाम धन धरम सुख, सुत गुन-रूप-निधान।। 5।।
कलह कपट कलि कैकई, सुमिरत काज नसाइ।
हानि मीचु दारिद दुरित, असगुन असुभ अघाइ।। 6।।
राम बाम दिसि जानकी, लषनु दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय, सुरतरु तुलसी तोर।। 7।।

(रामाज्ञा प्रश्न से)

साहित्य भारती

प्रबन्ध सम्पादक

आर.पी. सिंह

आई.ए.एस

सम्पादक

डॉ. अमिता दुबे

सहयोग

श्याम कृष्ण सक्सेना

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

साहित्य भारती

त्रैमासिक
वर्ष : 27, अंक : 2–3
अप्रैल–सितम्बर, 2024 (संयुक्तांक)
राम साहित्य पर केन्द्रित

सम्पादकीय कार्यालय
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग,
हजरतगंज, लखनऊ–226 001
email : sahityabharti1976@gmail.com

पत्रिका प्राप्ति–स्थान
पुस्तक विक्रय–केन्द्र
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग,
हजरतगंज, लखनऊ–226 001
दूरभाष : 0522–2614470

साहित्य भारती शुल्क

एक प्रति : रु0 25.00, वार्षिक शुल्क : रु0 100.00
आजीवन शुल्क : रु0 3,000.00
सदस्यता शुल्क : निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के नाम से ड्राफ्ट/एटपार चेक द्वारा

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के विचार उनके अपने हैं,
उनके विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

दो शब्द

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान हिन्दी साहित्य के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषा साहित्य के संवर्द्धन के लिए समर्पित संस्था है।

हमारा प्रयास रहता है कि उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के माध्यम से प्राप्त अनुदान के द्वारा संचालित योजनाओं से भाषाओं का प्रचार-प्रसार हो साथ ही साहित्य के प्रति अपना जीवन समर्पित करने वाले साहित्यकारों की स्मृति को भी अक्षण्य बनाया जाय।

संस्थान द्वारा संचालित प्रकाशन अनुदान योजना के द्वारा उत्तर प्रदेश के निवासी उन साहित्यकारों को पुस्तक मुद्रण हेतु अनुदान दिया जाता है जिनकी वार्षिक आय 5.00 से कम हो साथ ही उन साहित्यकारों को प्राथमिकता दी जाती है जिनकी एक भी पुस्तक प्रकाशित न हुई हो। इस योजना के द्वारा अनेक साहित्यकारों की महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो जाती हैं और साहित्यकार का जुड़ाव हिन्दी संस्थान से निरन्तर बना रहता है।

संस्थान द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'साहित्य भारती' के विशेषांकों की सराहना शोधार्थी, विद्यार्थी, साहित्यानुरागियों द्वारा निरन्तर की जाती रही है। पत्रिका का जनवरी-मार्च, 2024 का अंक 'छायावाद' पर केन्द्रित था। अप्रैल-सितम्बर, 2024 (संयुक्तांक) हिन्दी साहित्य के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषा के साहित्य के महानायक दशरथसुत श्री राम पर केन्द्रित है, जिनके चरित्र का गान कर तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' की रचना की जो आज भी अवधी भाषा में रचित महत्वपूर्ण एवं अत्यधिक प्रचारित कृति के रूप में भारत में ही नहीं विश्व भर में समादृत है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि अन्य विशेषांकों की भाँति साहित्य भारती का राम साहित्य पर केन्द्रित विशेषांक पाठकों के बीच लोकप्रिय होगा।

आर.पी. सिंह
आई.ए.एस.
निदेशक

सम्पादकीय

अयोध्या के राम : राम की अयोध्या

उत्तर प्रदेश के पवित्र तीर्थ में सरयू नदी के तट पर स्थित अयोध्या नगरी जिसे 'साकेत' भी कहा जाता है सूर्यवंशी महाराज दशरथ के यशस्वी पुत्र राम की जन्म भूमि है यही भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ है यह अयोध्या नगरी अत्यन्त भव्य है क्योंकि इसमें इतिहास के अनेक सुंदर पृष्ठ संयोजित हैं। मैथिलीशरण गुप्त 'साकेत' में कहते हैं-

है अयोध्या अवनि की अमरावती, इन्द्र हैं दशरथ विदित वीरवती।
वैजयन्त विशाल उनके धाम हैं, और नन्दन वन बने आराम हैं।

श्री राम को अपनी जन्मभूमि अत्यंत प्रिय है उन्हें सोने की लंका ने आकर्षित नहीं किया जिसे उन्होंने रावण को पराजित कर प्राप्त किया था उसे विभीषण को उन्होंने ससंकोच भेंट किया परन्तु अयोध्या के प्रति उनकी आसक्ति तुलसीदास के शब्दों में स्तुत्य है-

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि, उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा, मम समीप नर पावहिं बासा।।

बनवास के उपरान्त वानरों को अयोध्या नगरी दिखाते हुए गर्व से कहते हैं श्री राम तुलसीदास की पंक्तियाँ हैं-

इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर। कपिन्ह देखावत नगर मनोहर।
सुनु कपीस अंगद लंकेसा। पावन पुरी रुचिर यह देसा।।
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जुग जाना।
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोऊ कोऊ।।

अयोध्यावासी भी राजा राम को अत्यन्त प्रिय हैं वे अपनी अयोध्या को कभी विस्मृत नहीं कर सके। तुलसीदास जी के शब्दों में-

'अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी।'

यह अयोध्या नगरी श्री राम के आगमन पर सम्पूर्ण शोभा से युक्त हो गयी, सुन्दर वायु बहने लगी, सरयू नदी में जल-निर्मल हो गया-

अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी।
बहइ सुहावन त्रिबिध समीरा। भई सरजू अति निर्मल नीरा।

श्री राम और आयोध्या के बीच जो अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है वह आज भी है क्योंकि अयोध्या के कण-कण में श्रीराम हैं और श्रीराम के नाम के साथ अयोध्या को भी कीर्ति प्राप्त होनी ही है।

साहित्य भारती का यह संयुक्तांक (अप्रैल से सितम्बर, 2024) राम साहित्य पर केन्द्रित है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आप सबको रुचिकर प्रतीत होगा।

डॉ. अमिता दुबे
प्रधान सम्पादक
मो0- 9415551878

साहित्य भारती

अनुक्रम

आलेख

तुलसी के राम	डॉ0 कैलाश देवी सिंह	1
आधुनिक सन्दर्भ में राम	डॉ0 रमा	8
रामकथा में लक्ष्मण का व्यक्तित्व	डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित	12
अवधी लोक साहित्य में राम	डॉ0 विद्या विन्दु सिंह	20
रामकथा का अनन्त विस्तार	डॉ0 रश्मिशील	32
रामराज्य की संकल्पना	डॉ0 राहुल	39
रामकथा में शबरी प्रसंग	डॉ0 नरेन्द्र कुमार मेहता	44
रामावतारः पौराणिक आख्यान	विष्णु भट्ट	49
दक्षिण भारत में राम	डॉ0 बी.वै. ललिताम्बा	53
असमिया साहित्य में राम	डॉ0 ओमप्रकाश पाण्डेय	58
गुजराती साहित्य में राम	वीरेन्द्र याज्ञिक	67
मराठी साहित्य में राम	डॉ0 विद्या केशव चिटको	72
भोजपुरी में राम	डॉ0 राजेश श्रीवास्तव	78
भारतीय समाज और राम	डॉ0 अमित कुमार दीक्षित	81
राम का लोकनायकत्व	डॉ0 रोचना भारती	85
जन-जन में बसे हैं राम	चित्रा गर्ग	91
वनगमन में राम	श्याम कृष्ण सक्सेना	93
रामायण और स्वामी विवेकानन्द	अलका प्रमोद	97

शिक्षाप्रद राम का जीवन	डॉ0 शारदा मेहता	101
आधुनिक जनस्वास्थ : राम	डॉ0 श्रीधर द्विवेदी	105
स्मरण		
राम की शक्ति-पूजा	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	110
कविता		
राम	डॉ0 रामदरश मिश्र	116
ललित-ललाम 'राम'	डॉ0 रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'	117
रामलला की प्राण प्रतिष्ठा	डॉ0 वेद भूषण त्रिपाठी	118
श्री राम पधारे	नरेन्द्र सिंह 'नीहार'	119
मर्यादित पिता : श्री राम	डॉ0 अमिता दुबे	120
संस्थान समाचार		123

रचनाकारों से

- *'साहित्य भारती' त्रैमासिक के लिए साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचनाएँ, लेख, कहानी, कविता आदि आमंत्रित हैं।*
- *रचनाएँ स्पष्ट, हस्तलिपि में अथवा टंकित कागज के एक ओर हों, तथा रचनाकार का सम्पर्क सूत्र यथा पूरा पता, मोबाइल अथवा फोन नम्बर, ई-मेल अवश्य लिखें।*
- *अस्वीकृत रचनाएँ वापस नहीं की जातीं। अतः एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।*
- *साहित्य भारती में प्रकाशित रचना के मानदेय से पत्रिका की एक वर्ष की सदस्यता दी जाती है। अतः वर्ष में सामान्यतः एक ही रचना प्रकाशित की जाती है।*
- *रचना प्रकाशित होने पर लेखकीय प्रति प्रेषित की जाती है।*
- *प्रकाशित रचना की मौलिकता का सम्पूर्ण दायित्व रचनाकार का होगा।*
- *रचना के साथ अपना बैंक खाते में नाम (अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में), निरस्त चेक/बैंक विवरण IFSC कोड सहित भी भेजने का कष्ट करें।*

- सम्पादक

तुलसी के राम

➲ डॉ0 कैलाश देवी सिंह

सत्य संघ पालक श्रुति सेतू।
राम जनम जग मंगल हेतू।।
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ।
कोउ न राम सन जान जथारथ।।

भारतीय संस्कृति में उपलब्ध संज्ञाओं में सर्वाधिक समादृत एवं सर्वत्र संज्ञा है राम। राम का वृत्तान्त अनन्त है और उससे उपजने वाले विमर्श अपार। प्रत्येक पीढी इस बात के लिए उत्सुक दिखती है कि वह अपने जीवनानुभव और जिजीविषा के आलोक में रामचरित की व्याख्या कर सके। यह व्याख्या निरन्तर समाज और उसकी आचारसंहिता को पुनर्नवा करती रहती है। यही कारण है कि काल के त्रिआयामी विस्तार में राम की रचनात्मक अनुगूँज सुनी जा सकती है। वर्ग, वर्ण, जाति, देश व काल का अतिक्रमण करती रामगाथा प्रासंगिकता के प्रत्येक प्रतिमान का पुनरुद्धार करती है। यह कहना असंगत न होगा कि मनुष्यता के महान स्वप्न की स्वर्णिम सार्थकताएँ 'राम' शब्द में समाहित व प्रभावित है। आधुनिक मन भी नमन कर उठता है-

रमो राम जीवन के रंग भुवन में।
प्राणों के निःशब्द विनीत वचन में।।

इस सम्पूर्ण 'राम यात्रा' में गो0 तुलसीदास की भव्य भूमिका अविस्मरणीय है, भारतीय इतिहास के एक सांस्कृतिक संकट का सामना करने के लिए तुलसी राम-नाम को आत्मा की ऊर्जा में रूपान्तरित कर देते है। बाहरी और भीतरी अंधकार को उजियार बनाने के लिए वे महामंत्र देते है-

'राम-नाम मणिदीप धरु जीह देहरी द्वार', यह मंत्र कल आज और कल के लिए तुलसी के राम को अनिवार्य सिद्ध करता है। उत्तर आधुनिकता के इस व्यामोह में भी आलोचको का मत है कि रामचरितमानस यह विश्वास उत्पन्न करने के लिए रचा गया कि 'रावण संस्कृति का विध्वंस और वैकल्पिक संस्कृति की रचना' एक यथार्थ है। समीक्षक शंभुनाथ के शब्दों में तुलसी की वैकल्पिक संस्कृति की परिकल्पना में राम अखण्डता के सूत्र है, लेकिन अखण्डता के साथ स्थानीयता की जबरदस्त स्वीकृति है। उसमें केन्द्र के समानान्तर परिधि की महिमा का कितना उज्ज्वल निरूपण है, इसका आभास विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, निषाद, गुह यहाँ तक कि कवि वाल्मीकि की स्थानीय सृजनात्मक स्वायत्तता के प्रति राम का आदरभाव देखकर होता है। भारतीय स्थितियों में अखण्डता और स्थानीय विशिष्टता का सह अस्तित्व ही सदा से सही मार्ग है।

तुलसी के राम में जो विराट स्वीकार है, वही उन्हे अप्रतिम संस्कृति पुरूष बनाती है। यही कारण है कि जब

आधुनिक अवधी के महान कवि बंशीधर शुक्ल समाज में समता-न्याय का अवतरण चाहते है तो उन्हें राम ही याद आते है:-

आजु जो अइसइ होई नियाउ
प्रजा का मिटई दुक्खु दुरभाउ
देस की रच्छा सिच्छा न्याउ
बढ़ई उत्पादन सुखु सतिभाउ
नीक लागइ सिगरा संसार
हृदय के राजा राम हमार।।

प्रश्न है, राम हमारी मानसिक ऊर्जा के लिए इतने अपरिहार्य क्यों है? राम ऐसे नायक है, जिनमें इन गुणों का समावेश है-विजिगीषा, रक्षा, दीप्ति, प्रेरणा, करुणा, पुरुषार्थ, सबलता, भूमा और ऐश्वर्य, इन गुणों का समेकित प्रभाव राम के वृतान्त को नियोजित करता है। श्रीमद्भागवत में इन गुणों के परिणाम को इस तरह शब्दबद्ध किया गया है-

'मर्त्यावतारात्विह मर्त्य शिक्षण
रक्षोवधायै न केवल विभो
कुतो अन्यथा स्याद् रमतः स्व आत्मनः
सीता कृतानि व्यसनानीश्वरस्य'

अर्थात परमात्मा का अवतार केवल राक्षसवध के लिए नहीं होता, अपितु मर्त्य मानवों को शिक्षा देने के लिए होता है। नहीं तो अपने में रमण करने वाले भगवान को सीता वियोग का दुख कैसा! इसी सूत्र का विस्तार है तुलसी की कविता। बालकाण्ड में तुलसी कहते है।

राम भगत हित नर तनु धारी, सहि संकट किए साधु सुखारी
नामु सप्रेम जपत अनयासा, भगत होंहि मुद मंगल बासा।

तुलसी के राम अन्याय अत्याचार के विरुद्ध युद्ध सन्नद्ध होने के लिए जिन शक्तियों का संचय आवश्यक मानते है, वे हर युग में वरणीय है। धर्म रथ का रूपक रचकर लंका कांड में तुलसी के राम कहते है कि -

सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ ध्वजा पताका।।
बल बिबेक दम परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे।।
ईस भजनु सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा।
बर बिग्यान कठिन कोदंडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा।
एहि सम बिजय उपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीवन कहँ न कतहुँ रिपु ताके।।

धर्मरथ के ये बिन्दु हर युग में मनुष्यता का संविधान रचते रहते हैं। कुबेरनाथ राय कहते है कि-'हम चाहे डेमोक्रेसी में विश्वास करे या टोटेलिटेरियन पद्धति में' चाहे सोशलिस्ट स्टेट में जिएँ या कम्युनिज्म में, हर हालत में हमे ईमानदार नागरिक चाहिए।... राजनीतिक व्यवस्था और अर्थव्यवस्था बदलने से ये आवश्यकताएँ बदल नहीं जाती।... हमारी नाव डूबने से बच सकती है यदि रामचन्द्र हमारे आदर्श हो।

राम पूर्णतः 'मानवीय अवतार' हैं इसलिए सम्भावना है कि राम के आदर्श किसी व्यक्ति/समाज में स्पंदित हो सकें। यह स्पंदन सुमित्रा में मूर्तिमान होता है जब वह बनगमन के समय लक्ष्मण से कहती है।

अवध तहाँ जहाँ राम निवासू।
तहंइ दिवसु जहाँ भानु प्रकासू।।

व्याख्या स्पष्ट है कि - जिस जगह राम के आदर्श जीवन्त है वही आदर्श समाज है। इस आदर्श समाज को किसी कारणवश रामराज्य न भी कहना चाहें तो अन्तर नहीं

पडता। राम राग-विराग के समुच्चय है। तुलसी की टिप्पणी है-'राजिवलोचन राम चले तजि बापु को राज बटाऊ की नाई'।

व्यवस्था और अर्थशास्त्र के वर्तमान लोलुप स्वरूप के बीच राम का चरित्र एक आलोक स्तंभ है, यह आलोक बताता है कि व्यक्ति का अतिक्रमण कर सकने वाला व्यक्तित्व ही लोक कल्याण करता है। राम में यह सहज है। लोक मंगल की सर्वोच्च अवधारणाएँ राम से ही प्रस्फुटित हुई हैं। अवधारणाएँ शून्य में विकसित नहीं होती। राम जिन स्थानों पर रह सके ऐसे आयतन भी तो होने अपेक्षित हैं। प्रश्न राम की सनातन प्रासंगिकता का तो है ही, उससे बड़ा प्रश्न उन व्यक्तियों के होने का है जो राम की प्रासंगिकता का निर्वहन कर सकें। रामचरितमानस के अयोध्या काण्ड में वाल्मीकि राम के रहने योग्य स्थलो का काव्यात्मक वर्णन करते है। इस ध्वनि में भौतिक एवं आध्यात्मिक लक्षणों का समन्वय है। रामकथा की अलौकिक परिधि अक्षुण्ण रखते हुए तुलसी यह भी लिखते हैं-

'काय कोह मद मान न मोहा।
लोभ न दोह न राग न दोहा।।
जिन्ह के कपट दंभ नहि माया।
तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया'।।
जाति-पाँति धनु धरमु बड़ाई।
प्रिय परिवार सदन सुखदाई।।
सब तजि तुम्हहि रहहि उर लाई।
तेहि के हृदय रहहु रघुराई।।

ऐसे हृदय होगें तभी तो रामावरण होगा। शक्ति, शील और सौन्दर्य की त्रिवेणी का समाहार एक अद्‌भुत विशेषता है। तुलसी का रामपरक चिन्तन इसे रेखांकित करता है। राम सहज रूप से अपने भक्त को याचक भाव से मुक्त कर देते है। हम एक 'मंगता युग' में जी रहे है, इस भिक्षुक भाव से मुक्ति के लिए भी राम के आदर्शो की शरण में जाना होगा एक नवीन प्रलोभन प्रेरित पूँजीवादी व्यवस्था ने विश्व समुदाय को अपनी दुर्निवरिता से बींध डाला है। कभी भूमंडलीकरण तो कभी मुक्तमंडी का मुहावरा ढाल की तरह सामने आ रहा है किन्तु मनुष्य भौतिकता की भट्‌ठी में भस्म हुआ जा रहा है। तुलसी सावधान करते हैं -

जग जाँचिअ कोउ न जाँचिउ जौ
जिय जाँचिअ जानकी जानहि रे
जेहि जाँचत जाँचकता जरि जाय
जो जारति कोरि जहानहि रे।।

यही रामकथा का निहितार्थ है। दुष्प्रवृत्तियों के प्रति मन के प्रवाह का स्रोत ही समाप्त हो सके। यही निहितार्थ है जब ये नकारात्मक भाव समाप्त होगें तभी मनुष्य सामाजिक समरसता की ओर अग्रसर होगा। तुलसी के राम अपसंस्कृति के लिए काल सदृश है। विख्यात विद्वान हटिंगटन जिसे सभ्यताओं का संघर्ष कहते है, वह यही तो है, विराट सामाजिक संघर्ष में राम हमें अपना पक्ष बनाने में सहयोग देते है। राम इस बात की शिक्षा देते है कि प्रीति और प्रतिरोध का निर्वाह एक साथ कैसे किया जाय, इसी कारण उनका प्रत्येक चरण आचरण का आत्यंतिक उदाहरण है, प्रत्येक काम धर्म है। डा0 विद्या निवास मिश्र के शब्द हैं- "श्री राम की वन यात्रा केवल पिता की आज्ञा पालने के लिए अथवा रावण वध के लिए नहीं है, वह तो तीर्थ यात्रा है। श्री राम के सहज सरल व्यक्तित्व ने तड़पते हुए अयोध्यावासियों को तो लौटा दिया, परन्तु सरल सहज वनवासियों को अपनाया।"

समकालीन विश्व में अभावों से लगभग आधी जनसंख्या त्रस्त है। विकास की एक विचित्र परिभाषा पूरे विश्व में प्रसारित है। दलितों, वनवासियों, आदिवासियों और अनेक तरह के पीड़ित व्यक्तियों से सभ्यता संस्कृति के सम्बन्ध कैसे हों इसका आख्यान तुलसी के राम करते है। कहना तो यह चाहिए कि छल-छद्‌म से डबडबाती

विलासी नगर संस्कृति की तुलना में राम प्रकृति से नाता जोड़ने वाली संस्कृति से अधिक समीप हैं। उनकी कथा में आए पात्र- निषादराज, शबरी, जटायु, विभीषण आदि तो उनकी विराट मनुष्यता (भगवन्ता सम्भवतः इसी भावना का अन्य नाम है) का उपाख्यान कहते हैं। अगणित महाख्यानों, उपाख्यानो के अप्रतिम नायक राम सघन सामाजिकता के बाद भी 'धीरोदात्त' हैं। साहित्य दर्पण में आचार्य विश्वनाथ धीरोदात्त नायक को परिभाषित करते हैं-

अविकत्थनः क्षमावान अतिगम्भीरो महासत्वः
स्थेयान्नि निगूमानो धीरोदात्तो दृढव्रतः

(अपनी प्रशंसा न करने वाला, क्षमाशील, अतिगंभीर, महासत्व, स्थिर प्रकृति, विनय, प्रच्छन्न गर्व करने वाला एवं दृढव्रती व्यक्ति धीरोदात्त कहलाता है।)

राम इस परिभाषा से भी बड़े हैं आज और संभवतः कल सूचना महाविस्फोट की भीषण होती प्रक्रिया के बीच तथाकथित महानायकों की लबार वाणी या आत्मप्रशंसा जब चरम पर होगी तब राम का स्मरण नए तरह से होगा। जन नेतृत्व का दम्भ भरने वाले व्यक्तियों को रामचरित के गुण सुनाकर तुलसी इस तरह सचेत करते हैं-

'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी'

नरक का समकालीन भाष्य यदि घोरदण्ड कर लें तो कितने जननेता इस श्रेणी में आ जाएंगे। राम राजनीति और धर्म या जीवन मूल्यों का स्वर्णिम संतुलन बनाने का उदाहरण प्रस्तुत करते चलते हैं। शत्रु के लिए भी यह भावना है :-

'काजु हमार तासु हित होई।
रिपुसन करेहु बतकही सोई।।'

यही कारण है कि जब राम कथा का निष्कर्ष रामराज्या की महान मार्मिकताओं के साथ समुपस्थित होता है तो धीरोदात्त जननायक के उज्ज्वल लक्षण दिखते हैं। तुलसी ने रामराज के दो प्रभाव लिखें-

'राज राज बैठे त्रैलोका,
हरसित भए गए सब सोका।
बयह न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई।।'

शोक और विषमता अपदस्थ हो सकें, यही तो रामराज का प्रारंभ है, आज का विश्व विषमता के विष से व्याकुल है विषमताओं के अनेक रूप हैं जिन पर सामाजिकी-मानविकी के विद्वान प्रायः विचार करते रहते है। ध्यान दें कि रामराज्य विषमता की समाप्ति का ही दूसरा नाम है, इससे जो है वह 'सब' के लिए है अर्थात-

'सब निर्दम्भ धर्मरत पुनी।
नर अह नारि चतुर सब गुनी।।'
सब गुनग्य पंडित सब ज्ञानी।
सब कृतग्य नहिं कपट सयानी।।

यहाँ जाति का विभेद नहीं है। स्त्री पुरुष का विभेद नहीं है। महाकाव्य रामचरितमानस में पात्र व परिस्थितिवश आई कुछ पंक्तियों के आधार पर जो व्यक्ति तुलसी को दलित या स्त्री विरोधी कहते रहते है, वे इस सब शब्द पर ध्यान दें। 'सब' अर्थात संपूर्ण समाज। राम संपूर्ण समाज को सुखी बनाने का ही तो संकल्प लेते हैं। आज जब समाज के विषय में हम विचार करें तो इन प्रसंगों से हमें प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। यह प्रेरणा भविष्य में अधिक उपयोगी होगी क्योंकि विकसित और विकासशील देशों में बढ़ती विषमता आगे और भीषण होगी। साधनों व सुविधाओं का सम्यक् वितरण नहीं हो रहा है। राजनीति सर्वग्राही हो गई है। ऐसे में रामराज हमारी कल्पना का सुनिश्चित शरण्य है। डा0 लोहिया ने जब राम कथा से नई मनुष्यता का सम्बन्ध जोड़ा था तब एक भाषण में उन्होंने कहा था- 'राम के जीवन और कर्म से प्रतिक्षण हम एक आलोक प्राप्त करते हैं। राम कोरे शब्द-सारथी नहीं हैं, वे

कार्य सारथी हैं, सत्य व न्याय के लिए वे प्रतिफल समर्पित हैं। पूरी दुनिया में जिन महामानवों ने न्याय की पक्षधरता की, उनमें राम सर्वोपरि है। सांस्कृतिक व मानवीय सत्य के सृष्टा व दृष्टा। राम अनुक्षण हमारे आदर्श हैं। भारतीय संस्कृति में राम एक अनादि अनंत सत्य हैं। ऋग्वेद भी राम की प्रशंसा करता है इसी मानवीय सत्य के लिए-

"यत्र राजा वैवश्वतो यत्रावरोधनं दिवः।
यत्रामूर्यहृतीरामः स्वधा च यत्र तृप्तिश्च।।
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुद प्रमुद आसते।
कामस्य यंत्राप्ताः कामस्तत्र मामृतं कृधि।।

(जहाँ विश्वास के वंशावतंस भगवान राम राजा है, वहाँ मानों समस्त स्वर्गीय सुखों का आवाास हो गया है। जहाँ समय पर याचित वृष्टि होती थी, प्रजाजन स्वाहाकार, स्वधाकार में प्रवृत्त थे। सब तृप्त रहते थे। सर्वत्र आनन्द, मोद, हर्ष और प्रमोद छाया था)।

हम ऋग्वेद का जो भी ऐतिहासिक समय स्वीकार करे, यह तो निर्भान्त है कि उस समय से अब तक राम भारतीय जनमन के महानायक है। गो0 तुलसीदास ने इसी यथार्थ को पहचाना और रामचरितमानस की रचना की, इतना ध्यान रखना होगा कि मध्यकाल की विसंगतियों के विरुद्ध तुलसी अत्यन्त सावधान है। भोग विलास और राजदरबारों की राजनीति पर उन्होंने अपने राम के माध्यम से आक्रमण किया, तुलसी के राम ऐसी व्यवस्था के विरुद्ध तो होगें ही-

'राज करत बिनु काजही करै कुचालि कुसाज।
तुलसी ते दसकंध ज्यों जइहैं सहित समाज।'

यह स्वान्तः सुखाय के स्वर नहीं है... यह वह सभ्यता समीक्षा है जिसकी पक्षधरता मुक्तिबोध ने अपने निबन्धों में की है। तुलसी के राम 'गरीब नवाज' है। राम के लिए यह सबसे बड़ा विशेषण है- भगवान से भी बडा। राम किसी को अपनाते समय जाति, सम्पत्ति, उपयोग या अन्य चतुर तथ्यों पर ध्यान नहीं देते है। भरोसा है तो राम आपके हैं। तुलसी अपने विश्वास में जैसे सन्तप्त मनुष्यता का एक पवित्र पुनर्वास देखते हैं। कहते हैं-

मेरी जाति-पाँतिन, न चही काहू की जाति-पाँति।
मेरो कोऊ काम को न, न हौं काहू के काम को।।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है।
भरोसो तुलसी के एक नाम को।।

राम बताते हैं सब की एक मनुष्य जाति हैं, उनके आदर्श को मानने वालों के लिए भी अनिवार्य है कि 'सब जग' को सियाराममय स्वीकार करें एक ओर जहाँ विश्वग्राम की धारणा पर कार्य हो रहा है वहाँ दूसरी ओर नाना प्रकार की विषमताएँ भी आकार ग्रहण कर रही है। धार्मिक या साम्प्रदायिक मतान्धता एक त्रासदी है। मनुष्य जाति के समक्ष तुलसी के राम 'आस्था' के इस लोकतंत्र का ज्ञान देते हैं कि सब व्यर्थ है। सत्य है तो भजन। भजन अर्थात उस चरित्र का स्मरण जिसने राम शब्द को भजनीय या स्मरणीय बनाया अर्थात -

बहु मुनिमत बहु पंथ पुरानानि, जहाँ तहाँ झगरो सो।
तुलसी राम भजन नीको मोहि लगत राम डगरो सो।।

राम यदि भविष्य की अदम्य आशा है तो उसके अगणित कारण है। कोई भी देख सकता है कि परिवार नामक संस्था जो आज भी समाज की पहली इकाई है। वह किन कर्म से संकटों से आक्रांत है। माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन जैसे सम्बन्ध संत्रास सह रहे हैं। यदि राम कथा को इस दृष्टि से विश्लेषित किया जाए कि राम ने परिवार के लिए कितने आदर्श छोड़े हैं तो जाने कहाँ-कहाँ से स्वर्णिम सूत्र उद्घाटित होंगे। वस्तुतः राम का स्वभाव वह महाभाव है जो सामाजिक सहिष्णुता की शिक्षा देता है। अर्थात एक प्रशस्त सहभागिता। परिस्थितिवश जब किसी के साथ अन्याय हो और प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से कोई आत्मीय इसके लिए उत्तरदायी हो, तब यह सामाजिक सहिष्णुता राह

दिखाती है। राम ने कैकई से यही तो कहा है-

तनय मातु पितु तोष निहारा।
दुर्लभ जननि सकल संसारा।।
सुनु जननी सोई सुत बड़ भागी,
जो पितु मातु चरन अनुरागी।।

राम किसी भी सम्बन्ध को मानवीय गरिमा प्रदान करते है, भविष्य में यह बात और रेखांकित होगी, क्योकि व्यक्तिगत विद्वेष और सामाजिक असंतोष परिवेश को भयाक्रान्त कर देगा। यूज एण्ड थ्रो के समय उपयोगितावाद के दौर में मित्रता की परिभाषा राम ही प्रदान करेगें। रामभक्त तुलसी एक आप्तवचन लिखते है-

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिन्हहिं विलोकत पालक भारी।।

बात व्यक्ति व्यक्ति के बीच मैत्री की हो या राष्ट्र-राष्ट्र के मध्य मित्रता की हो- कसौटी तो यही सर्वश्रेष्ठ है सुख दुख का समान वितरण ही सामरस्य है। यही रामराज्य है। सुविधा के लिए हम राम नाम लेते हैं। ध्यान दें तो इसमें सीता और लक्ष्मण या दूसरे तमाम पात्र भी समाहित हैं। कारण स्पष्ट है राम एक नाम मात्र नहीं, राम जीवनचर्चा है... मनुष्यता का संविधान है। ऐसे रघुवर की सुधि मनुष्यता को ना आएगी तो सचमुच प्रलय हो जाएगी। लोकमात जिसके परम मर्मज्ञ गोस्वामी तुलसीदास हैं। अपने राम की सुधि करता है-

'आजु मोहे रघुवर की सुधि आई।
राम बिना मोरी सूनी अजोधिया,
लछिमन बिनु अंगनाई।
सीता बिना मोरी सूनी रसोईया,
के मोरे भोजना बनाई।।'

वह समय और समाज सूना होगा जिसमें राम की स्मृतियाँ नहीं होगी। रहीम न यों ही नहीं कहा था कि-

'रामचरित मानस विमल, रहिमन सब गुन खान।

क्या कारण है कि जब-जब पराधीनता के भाव से उबरने का प्रयास हुआ उसमें राम और रामचरितमानस की भूमिका अनिवार्य पायी गई। रामचरित की प्रासंगिकता के लिए यह ऐतिहासिक उदाहरण पर्याप्त है। स्वतंत्रता संग्राम में किसान आंदोलन की भूमिका सुपरिचित है। साम्राज्यवाद व सामंतवाद का विरोध करते हुए यह आंदोलन अवध क्षेत्र में अपनी विशिष्टता के साथ विकसित हुआ था। बाबा रामचंद्र ने कितने अद्भुत तरीके से रामचरितमानस और राम को प्रासंगिक बना दिया था। इसका विश्लेषण इतिहासकारों को आश्चर्य में डाल देता है। रामचरितमानस की चौपाइयों को बाबा रामचंद्र आजादी की लड़ाई के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते थे और उनका प्रभाव पड़ता था।

बाबा एक पुस्तिका में लिखते हैं कि जमीदार, पूँजीपति, सूदखोर जनता का शोषण करने वाली शक्तियाँ राक्षस है इनका वध रामरीति से करना होगा। इतिहासज्ञ कपिल कुमार लिखते हैं- बाबा रामचंद्र जी ही थे जिन्होंने रामचरितमानस का विद्रोही ढंग से इस्तेमाल किया और किसानों की परंपरा और संस्कृति को, भारतीय समाज के अन्दरूनी अंतर्विरोधों को रेखांकित करने और उत्पीड़क सामाजिक शक्तियों के खिलाफ लड़ने के लिए इस्तेमाल किया। (रामचरितमानस का एक विद्रोही ग्रंथ के रूप में प्रयोगः अवध में बना रामचन्द्र नायक लेख)

यह उदाहरण बताता है कि रामगाथा किस किस तरह से अपनी सार्थकता सिद्ध करती है। अभी तो फिर से आर्थिक परतंत्रता की पायी परछाईयाँ, राष्ट्र को घेर रही हैं। मुक्त मंडी से दिन-प्रतिदिन कोई प्रलोभन मानव स्वभाव को विचलित कर रहा है। ऐसे परिदृश्य में राम का चरित्र एक अनुपेक्षणीय जीवन सत्य है। इस चरित्र का स्मरण न हो तो जीवन व्यर्थ है।

'सुनि सीतापति सील सुभाउ'
मोद न मन तन पुलक,

नयन जल सो नर खेहनी खाड।।

'तुलसी का भक्ति मार्ग' निबन्ध में आचार्य शुक्ल के शब्द है- राम में सौन्दर्य, शक्ति और शील तीनों की चरम अभिव्यक्ति एक साथ समन्वित होकर मनुष्य के सम्पूर्ण हृदय को- उसके किसी एक अंश को ही नहीं- आकर्षित कर लेती है। कोरी साधुता का उपदेश पाखंड है कोरी वीरता का उपदेश उद्दंडता है। कोरे ज्ञान का उपदेश आलस्य है और कोरी चतुराई का उपदेश धूर्तता है। हमारा समय पाखण्ड, उद्दंडता, आलस्य और धूर्तता के मैनेजमेन्ट का है।

मातु पिता बालकन्ह बोलावहि। उदर भरई सोई धरमु सिखावहि। की संकीर्णता का युग है यह। ऐसे परिवेश मे ही राम की प्रासंगिकता है।

फिर क्षमा याचना सहित यह भी कि हमारी इतनी सामर्थ्य कि हम कल आज और कल के सन्दर्भ में राम की प्रासंगिकता उपयोगिता/सार्थकता सिद्ध करे। इसे ही नामवर सिंह, प्रासंगिकता का प्रमाद कहते है अर्थात जिनकी अपनी कोई प्रासंगिकता नहीं वे राम की प्रासंगिकता का विमर्श रचेंगे। सम्भवतः यही कालकथा है और यही कलिकथा। गीतकार यश मालवीय के अनुसार- जिनका कोई चरित नहीं वे रामचरित लेकर बैठे है।

राम चरित के आलोक में हम अपने जीवन को देखना प्रारम्भ करें। यही सम्यक् संकल्प होगा। वैसे तुलसी के राम आधुनिक मनुष्य को यह छूट देते है कि वह राम की भी अनीति पर टिप्पणी कर सकता है-

जौ अनीति कछु भाखौं भाई
तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।।

परन्तु आधुनिक मनुष्य पहले नीति और अनीति का अन्तर तो जान ले। यह ज्ञान उसकी चेतना में परिवर्तित हो... तब राम के आदर्श, विमर्श का नहीं, हमारे आचरण का विषय बनेंगे। गोस्वामी तुलसीदास 'वाक्य ज्ञान निपुन' व्यक्तियों को सावधान कर चुके है।

राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे,
नाहि त भव, वेगारी महँ परि है, छूटति अति कठिनाई रे।

'भव बेगारी' जितनी बढ़ती जायेगी, तुलसी के राम उतना ही हमारी स्मृति में उजागर होते जायेगें।

41, कलाकांकर कॉलोनी
पुराना हैदराबाद,
लखनऊ-226007
मो0 9415064298

सरल बरन भाषा सरल, सरल अर्थमय मानि।
तुलसी सरलै संतजन, ताहि परी, पहचानि।।
अति सीतल अति ही सुखदाई, सम दम रामभजन अधिकाई।
जड़ जीवन को करै सचेता, जग माहीं विचरन एहि हेता।।
-तुलसीदास

आधुनिक सन्दर्भ में राम

➲ डॉ0 रमा

21 वीं शताब्दी के इस उत्तर-आधुनिक दौर में जब समाज से नैतिकताओं का निरन्तर पतन होता जा रहा है, जहाँ पिता-पुत्र, माँ-बेटा, भाई-बहन, पति-पत्नी के रिश्ते महज़ शब्दों तक सीमित हो चुके हैं। इन रिश्तों के अंदर की भावनाएँ निरंतर कमजोर होती जा रही है, साथ ही इस दौर की राजनीतिक परिस्थितियों पर भी नज़र दौड़ाएँ तो इस धरा के अधिकांश राष्ट्र एक दूसरे पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए प्रयासरत हैं। पिछली सदी के दोनों विश्वयुद्ध और हाल ही में रूस-यूक्रेन, इज़रायल-फ़िलिस्तीन युद्ध जैसी कई ऐसी घटनाएँ हैं जो इस बात का संकेत हैं कि संपूर्ण विश्व एक ऐसी आग की चिंगारी पर खड़ा हुआ है जो कभी भी तीसरे विश्व युद्ध का रूप ले सकती हैं। तब ऐसे में सवाल पैदा होता है कि कौन से ऐसे आदर्श हैं जो इस समाज और विश्व को इस आने वाली विभीषिका से बचा सकते हैं? इस सवाल के जवाब के रूप में ज़हन में सिर्फ़ एक ही उत्तर आता है और वो है - 'राम के द्वारा स्थापित किए गए आदर्श'। उन्हीं आदर्शों के कारण राम का चरित्र हर देशकाल में प्रासंगिक भी रहा है।

संपूर्ण विश्व की सभ्यताओं एवं संस्कृतियों में राम का ही व्यक्तित्व ऐसा है जो परिवार, समाज और राजनीति तीनों के लिए आदर्श स्थापित करता है। राम आज के समय के लिये इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के पतन के इस दौर में संपूर्ण विश्व आज भारत की और नज़र गडाये हुए है। वर्तमान दौर वह दौर नहीं जब भारत को तीसरी दुनिया का राष्ट्र समझ कर उसको महत्त्वहीन समझा जाए। आज भारत राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से संपूर्ण विश्व के केन्द्र में है। ऐसे में 'विश्वगुरु' की भूमिका में रहते हुए भारत राष्ट्र का यह दायित्व है कि भगवान राम द्वारा स्थापित आदर्शों को संपूर्ण विश्व तक पहुँचाएँ एवं संपूर्ण विश्व को एक नई दिशा प्रदान करें। हाल ही में अयोध्या में राम मंदिर की स्थापना इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। उक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस लेख के माध्यम से 'आधुनिक संदर्भ में राम' की उपयोगिता एवं महत्व पर विचार करें।

उत्तर-आधुनिक समाज के बदलते परिवेश को ध्यान में रखते हुए वर्तमान सरकार ने लगभग तीन दशक बाद भारत की शिक्षा नीति में परिवर्तन किया है। नई शिक्षा नीति के तहत नैतिक मूल्यों पर जोर देने की बात की गई है ऐसे में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र पर विचार करना बहुत ज़रूरी हो जाता है। क्योंकि जिन आदर्शों की वर्तमान समाज को आवश्यकता है वे आदर्श राम द्वारा स्थापित आदर्श ही हो सकते हैं। इसके पीछे का एक कारण यह भी है कि राम का चरित्र ही एक मात्र ऐसा चरित्र है जो भारतीय जनमानस के हृदय- हृदय में पहले से विराजमान है। राम की बात आती है तो लोक में बसे राम ही सबसे पहले उभर कर आते हैं। जनमानस में जिस राम की छवि है

उसके निर्माणकर्ता कवि तुलसीदास हैं। 'श्रीरामचरितमानस' के माध्यम से तुलसी ने घर-घर जिस राम को पहुँचाया है उनको आज के संदर्भ में विश्लेषित करने की आवश्यकता है। क्या राम की प्रासंगिकता समाप्त हो गई है या बनी हुई है, इस पर विचार ज़रूरी हो जाता है। पिछले दिनों जिस प्रकार पूरा देश राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर राममय हो गया था, उसे देखकर तो यही लगता है कि राम अभी भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

आधुनिक संदर्भ में राम के जीवन और चरित्र को किस प्रकार देखा जाए, इस प्रश्न से अधिकांश विद्वान टकराते रहे हैं। राम-जीवन के किस पक्ष को हमें जीवन का हिस्सा बनाना है, राम-चरित्र का कौन सा गुण आधुनिक जीवन के लिए ज़रूरी है, इन सारे प्रश्नों पर आधुनिक संदर्भ में विचार-विमर्श ज़रूरी हो जाता है। जब तुलसी कहते हैं-

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा समति नहीं अधमाई।"

अर्थात दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुख पहुँचाने के समान कोई अधर्म (पाप) नहीं है। मनुष्य होने की पहली निशानी मानवता है। अगर आप मानवीय गुणों से युक्त हैं तो ही आप वास्तव में मनुष्य हैं। लेकिन आज मनुष्य होने की पहली शर्त पर ही संकट छाया हुआ है। राम अपने चरित्र और जीवन के माध्यम से मानवता की स्थापना करते हुए दिखते हैं। आधुनिक संदर्भ में इस मानवता की रक्षा बहुत ज़रूरी हो गई है। इंसान मनुष्य होने की श्रेणी से अपदस्थ होता जा रहा है। दुष्टता, घृणा, छल-कपट आदि अमानवीय गुणों का बोलबाला है। आज ज़रूरत है समाज, देश और विश्व में आपसी सौहार्द फैलाने की लेकिन हो इसका उल्टा रहा है। तो आज की परिस्थितियों में राम का चरित्र अनुकरणीय है जहाँ कोल, किरात, वानर सभी राम के अनुग्रह को प्राप्त करते हैं। राम हमेशा दूसरों के लिए जीते हैं। मानस में राम के व्यक्तित्व का वह पक्ष उभर कर आता है जहाँ राम दूसरों के अधिकारों की रक्षा करते हैं। वर्तमान समय की परिस्थितियों को देखते हुए संपूर्ण विश्व के लिए लोककल्याण और लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण राम जैसे व्यक्तित्व की आज ज़रूरत है । तुलसीदास जी 'रामचरितमानस' के 'उत्तरकाण्ड' में लिखते हैं -

"दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।।"

अर्थात 'राम-राज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते । सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बतायी हुई नीति में तत्पर रह कर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं। राम और राम राज्य के उक्त संदर्भ के आलोक में अगर वर्तमान समाज और राजनीति का मूल्यांकन करें तो हम पाते हैं कि मनुष्य-मनुष्य का दुश्मन बना हुआ है। ऐसे में राम राज्य की संकल्पना और भी अधिक प्रासंगिक साबित हो जाती है।

आधुनिक समय में मानवीय रिश्तों की परिधि में राम को देखने की कोशिश प्रासंगिक लगती है। रिश्तों की परिधि जब आज कम होती जा रही है तब हम राम का जीवन देख सकते हैं कि किस प्रकार उन्होंने पारिवारिक रिश्तों से लेकर ग़ैर पारिवारिक रिश्तों को पूरे मन से निभाया है। राम ने जिन-जिन को अपनाया सब की पीड़ाओं का हरण किया। ऐसा लगता है जैसे राम का पीड़ा मात्र से रिश्ता है। अंगद को जब राम लौटाते हैं तो राम चाहते हैं कि जो भाव और प्रेम अंगद का मेरे लिये है वही भाव और प्रेम पूरी वानर जाति के लिए हो। वे राम की तरह ही प्रजा के दुख में दुखी होंगे। वे राम की एक सजीव उपस्थिति होंगे। चाहे कोई भी रिश्ता हो, सभी रिश्तों की मर्यादों की रक्षा करते हुए राम दिखते हैं। तुलसीदास ने मानस में रावण जैसे शत्रु को भी नैतिक मूल्यों से पूर्ण

दिखाया है। शत्रु से शत्रु-भाव का रिश्ते निभाते हुए भी एक नैतिकता की दरकार होती है। रावण माता सीता को स्पर्श नहीं करता है। ऐसा करके वह स्त्री के अस्तित्व की रक्षा करता है। वहीं भगवान राम भी सेवक निषाद को अपने भ्राता के समान मानते हैं। कहते हैं तुम मेरे मित्र हो और भरत के समान भाई हो। अयोध्या में सदा आते-जाते रहना-

"तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता।
सदा रहेहू पुर आवत जाता ।।
बचन सुनत उपजा सुख भारी।
परेऊ चरण भरि लोचन बारी ।"

उत्तर-आधुनिकता के इस दौर में परिवार का पर्याय 'हम दो, हमारे दो' तक सीमित हो चुका है। जिसका परिणाम यह हुआ है कि संयुक्त परिवार धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे हैं। जिसके फलस्वरूप आपसी पारिवारिक रिश्ते खत्म तो हो ही रहे हैं साथ ही साथ जो रिश्ते बचे हुए हैं उनकी डोर भी कमजोर होती जा रही है। आये दिन समाचार पत्र आपसी रिश्तों को शर्मसार करने वाली घटनाओं से भरे हुए दिखाई देते हैं। ऐसे में परिवार के लिए राम द्वारा किये गए त्याग को स्थापित करना वर्तमान समय के लिए अति आवश्यक है। संयुक्त परिवार की सार्थकता राम के जीवन को देखकर ही पता चलती है। आज जिस प्रकार से परिवार टूट रहा है और तमाम समस्याएँ उत्पन्न हो रही है, वैसे में संयुक्त परिवार का महत्त्व पता चल रहा है।

आज जब पूरा विश्व पर्यावरण के स्तर पर संकट से घिरा हुआ है ऐसे में राम का जीवन हमारे सामने एक समाधान ले कर आता है। रामराज में मनुष्यों के साथ-साथ पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों सभी की चिंता दिखती है। सभी में समन्वय बिठाकर राम चलते हैं। राम की जीवन यात्रा में नर, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, फूल-पत्ती सभी सम्मिलित हैं। इसीलिए रामराज में सभी फल-फूल रहे हैं-

"फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन,
रहहिं एक संग गज पंचानन।
खग-मृग सहज बयरु बिसराई,
सबहीं परस्पर प्रीति बढ़ाई।।

राम की तरह ही प्राणिमात्र से सामंजस्य बिठाने की आज आवश्यकता है। हम अपने उपयोगों के लिए लगातार जंगलों की अंधाधुन्ध कटाई कर रहे हैं। उसके बाद हम पर्यावरण में उत्पन्न विसंगतियों पर चिंता व्यक्त कर रहे हैं। हमें अब चर-अचर सभी प्राणियों के साथ मिलकर चलना होगा। उनको छोड़कर आगे बढ़ने पर पर्यावरण का संतुलन बिगड़ना तय है। इसलिए हमें रामराज्य वाली उन परिस्थितियों में जीना होगा जहाँ सभी फले-फूलें।

लोकतंत्र में शासक का आदर्श क्या हो? इसका उत्तर राम के राजतंत्र में ही मिल जाता है। शासक के बदले जनता को महत्त्व देना, जनता की चिंता को सर्वोपरि रखना राम के शासक रूप से हमें सीखने को मिलता है। राम कहते हैं-

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सोई नृप अवसि नरक अधिकारी।"

अर्थात् जिस राजा के राज में प्रजा दुखी हो, वह राजा नरक में जाने योग्य है। अगर आज का शासक इस मूल्य को अपनी दृष्टि में रखे तो फिर किसी भी राज्य की जनता कभी दुखी नहीं होगी।

राजा अपनी प्रजा से किस प्रकार कर प्राप्त करे और उस कर का कैसे प्रयोग करे, यह भी तुलसी राम के माध्यम से बताते हैं। वे कहते हैं कि जिस प्रकार सूरज जहाँ पानी की मात्रा अधिक होती है यानी समुद्र से पानी सोखता है और वाष्प बना कर समान रूप से वहाँ बारिश करता है जहाँ बारिश की ज़रूरत होती है। ऐसे ही राजा को भी उन लोगों से कर लेना चाहिए जिनके पास अथाह संपदा हो और उस संपदा को समान रूप से जरूरतमंदों में वितरित करना चाहिए। दोहावली में तुलसीदास जी राम के माध्यम

से प्रजा से कर किस प्रकार वसूल करना चाहिए? इसे स्पष्ट करते हुए लिखते हैं-

"बरषत हरषत लोग सब करषत लखे न कोई।
तुलसी प्रजा सुभाग ते भूप भानु सो होई।।"

दरिद्रता किसी भी समाज और राष्ट्र के लिए अभिशाप के समान है। गरीबी कितनी भयावह होती है इसको बताते हुए तुलसी कहते हैं-

"नहीं दरिद्र सम दुःख जग माहीं।"

अर्थात दरिद्रता, ग़रीबी के जैसा इस संसार में कोई दुख नहीं है। आज जब तमाम सरकारें इस ग़रीबी पर विजय पाना चाह रही है लेकिन अभी तक असमर्थ है, तो इन स्थिति में आर्थिक पक्ष को सुदृढ़ करना कितना महत्वपूर्ण हो जाता है, उपरोक्त पंक्ति से पता चलता है।

हम तमाम वेदों और धर्म-ग्रंथों में यह पढ़ते आ रहे हैं कि नारी को पतिव्रता होना चाहिए। हमारा लोक और समाज भी हमें यही बताता और सिखाता है। लेकिन रामचरितमानस में तुलसी राम-जीवन के माध्यम से यह संदेश देते हुए नज़र आते हैं कि पति को भी पत्नीव्रता होना चाहिए। तुलसी कहते हैं-

"सब उदार सब पर उपकारी।
बिप्र चरन सेवक नर नारी।
एकनारी व्रत रत सब झारी ।
ते मन बच क्रम पति हितकारी।।"

यानी सभी नर-नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं और सभी ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं। सभी पुरुषमात्र एकपत्नीव्रती हैं। इसी प्रकार स्त्रियाँ भी मन, वचन और कर्म से पति का हित करनेवाली हैं। स्त्री-पुरुष समानता की बात यहाँ दिखती है। आज पूरा का पूरा स्त्री-विमर्श जिस स्त्री-पुरुष समानता पर आधारित है वही समानता उपरोक्त पद में देखने को मिलती है। जो अधिकार और कर्तव्य स्त्री को मिले हैं वही अधिकार और कर्तव्य पुरुषों को भी दिये गये हैं। आज के संदर्भ में स्त्री-पुरुष के बीच अधिकारों और कर्तव्यों को बराबरी के स्तर पर निभाने की ज़रूरत है।

साहित्य के क्षेत्र में भी बार-बार राम कथा को आधार बना कर साहित्य लेखन किया गया। मध्य काल में जब इस्लाम के भारत में प्रवेश के साथ धार्मिक भावनाएँ कमजोर पड़ने लगी थी, भारतीय जनमानस को तलवार के दम पर इस्लाम धर्म स्वीकार करवाया जा रहा था। तब तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के माध्यम से फिर से राम के आदर्शों को समाज में स्थापित करने का प्रयास किया। उसी का परिणाम है कि राम के आदर्श वर्तमान समय तक भारतीयों के हृदय में बसे हुए है। आजादी की लड़ाई के समय निराला 'राम की शक्ति पूजा' के माध्यम से राम के चरित्र को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। आजादी के उपरान्त बदली हुई परिस्थितियों में मनुष्य जहाँ 'आत्म की खोज' के लिए प्रयासरत था, उसी समय नरेश मेहता राम के चरित्र को आधार बना कर 'संशय की एक रात' की रचना करते हैं। इन साहित्यिक रचनाओं एवं प्रसंगों का वर्णन करने का उद्देश्य यहाँ यह स्पष्ट करना था कि राम का चरित्र जब हर देशकाल में साहित्यकारों के लिए प्रासंगिक रहा है तो जाहिर सी बात है राम का चरित्र एवं उनके आदर्श भी प्रत्येक देशकाल वातावरण में उपयोगी साबित होंगे।

प्राचार्या,
हंसराज महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली-110001

रामकथा में लक्ष्मण का व्यक्तित्व

ɔ डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित

भारतीय साहित्य में लक्ष्मण का व्यक्तित्व यों तो राम के व्यक्तित्व का पूरक बनकर आया है, यानी कहीं भी किसी मानक प्रबंध काव्य में नायक बनाकर स्वतंत्र रूप से उनका चरित्र-चित्रण नहीं हुआ है, फिर भी उनके व्यक्तित्व की रेखाएँ अथवा उनकी आकृति-प्रकृति इतनी प्रभावकारी है कि सर्वत्र उनका एक रूपाकार निर्मित हो ही गया है। 'लक्ष्मण' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा गया है-

'लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धनः ।
'लक्ष्मणो लक्ष्मि सम्पन्नः'।

अर्थात् लक्ष्मण जी ऐश्वर्य के प्रतीक हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने इस कथन का समर्थन करते हुए लिखा-

'लच्छन धाम रामप्रिय, सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ठ तेहिं, राखा लछिमन नाम उदार ।।'

अर्थात् वे मानवीय शुभ लक्षणों के केन्द्र हैं एवं राम के परम प्रिय हैं। वे शेषावतार हैं, इसलिए सकल जगत को धारण किए हुए हैं और सुमित्रा के आदर्श पुत्र तथा राम के परिपूरक आदर्श भ्राता हैं।

वाल्मीकि 'रामायण' में लक्ष्मण के लिए तीन विशेषण दिये गए हैं-

'प्राणः बहिश्चरः' ।
'भ्राता स्वमूर्तिरात्मनः'।
'सुमित्रानन्द वर्धनः ।'

वाल्मीकि के अनुसार वे राम की प्राणवायु हैं। ऊर्मिला और सुमित्रा के भी प्राण प्रिय हैं लक्ष्मण।

गोस्वामी जी ने दोहावली की इन पंक्तियों में लक्ष्मण को लालित्य, माधुर्य, सुख-सम्पत्ति, कीर्ति-विजय आदि गुणों का समुच्चय मानते हुए सर्वमांगल्य का प्रतीक भी घोषित किया है-

'ललित लखन मूरति मधुर, सुमिरत सहित सनेह।
सुख संपति कीरति विजय, सुमन सुमंगल गेह।'

भारतीय निगमागम के मतानुसार राम ब्रह्म हैं और लक्ष्मण मायायुक्त, क्योंकि लक्ष्मण स्वयं शेष है, शेषावतार हैं तथा राम शेषी हैं, शेषशायी हैं। दोनो मिलकर शेष नारायण हैं। तुलसीदास जी विनयपत्रिका में लक्ष्मण की वंदना करते हुए कहते हैं- "भगवंत भूषण भुजगराज भुवनेश भूमार भारी/प्रलय पावक महाज्वाल माला वमन समन संताप हारी।" गोस्वामी जी ने उन्हें अनंत (नाग) भी कहा है यथा- "क्रोधवंत तब भयेउ अनंता।" शक्ति लगने पर राम उन्हें जगाते हुए कहते हैं- "तुम कृतांत रक्षक सुर त्राता।" मूर्च्छित हो जाने पर भी शत्रु उन्हें उठाकर नहीं ले जा पाता, क्योंकि वे शेषाधारित हैं। तुलसीदास के शब्दों में वे- "कमठ शेष समधर वसुधा के" हैं। "शेष सहस्र शीश जगकारण। जो अवतरे भूमि भय हारन।" इसीलिए धनुर्भंग के समय पृथ्वी को धारण करने वाली शक्तियों को सावधान

करते हुए लक्ष्मण आदेश देते हैं-

"दिसि कुंजरहु कमठ अहि कोला,
धरहुँ धरणि धरि धीर न डोला।
राम चहहिं शंकर धनु तोरा।
'सजग होहु सुनि आयसु मोरा।"

यहाँ वे अहि (शेषनाग) को सावधान रहने का आदेश दे रहे हैं।

लक्ष्मण के चरित्र में रामकथाकारों ने अनेक विशेषताएँ चित्रित की हैं, जैसे-

1. परम त्यागी- बाल्मीकि 'रामायण' के अनुसार लक्ष्मण को जब युवराज-पद दिया जाता है तो उसे वे अस्वीकार कर देते हैं, इसलिए उनके नाम से पृथक् राज्य की स्थापना विश्वसनीय नहीं लगती । भ्रातृ प्रेम के पीछे वे अपनी पत्नी ऊर्मिला तक का मोह त्याग देते हैं। राम से परित्यक्ता होते ही वे अपना शरीर त्याग देते हैं।

2. संयमी- राम-काव्यों में लक्ष्मण को परम जितेन्द्रिय रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे भ्रातृ-भक्ति के कारण सर्वस्व त्याग कर श्रीराम के साथ वन जाते हैं। चौदह वर्षों तक वहाँ ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए, निद्रा का त्याग करके श्री राम और श्री सीता की वे सेवा करते हैं। सीता हरण के बाद श्री राम उनके आभूषण दिखाते हुए लक्ष्मण से पहचान करवाना चाहते हैं तो लक्ष्मण कहते हैं कि मैं मात्र इन नूपुरों को पहचान रहा हूँ, क्योंकि चरण-वन्दना करते मैं इन्हें नित्य देखा करता था ।

3. अनन्य सेवक - लक्ष्मण छाया की तरह श्री राम का साथ देते हैं। उन्हें बन गमन की अनुमति देती हुई सुमित्रा कहती हैं कि तुम्हारा जन्म ही वनवास के लिए हुआ है। तुम राम को दशरथ के तुल्य मानना। मेरी जगह सीता को माँ समझना। उस वन को ही अयोध्या मान लेना और हर प्रकार राम को प्रसन्न रखना -

स्रष्टं त्वं वनवासाय स्वानुरक्त सुहृज्जने।
"रामं दशरथं बिद्धि मां बिद्धि जनकात्मजाम्
अयोध्यामटवीं बिद्धि गच्छेत यथासुखम् ।
रामे प्रसादं मा कार्षीः पुत्र भ्रातरि गच्छति।।"

यही बात तुलसी ने सुमित्रा से कहलवायी है-

"तात तुम्हारि मातु बैदेही।
पिता राम सब भाँति सनेही।।"
"अवध तहाँ जहाँ राम निवासू ...।"

रामवन गमन प्रसंग में लक्ष्मण की अनन्यता चरम स्थिति पर पहुँच गयी है । जब श्री राम उन्हें समझाते हैं कि तुम मेरे साथ बन जाने के बजाय यहाँ सबकी सेवा करो तो लक्ष्मण कहते हैं कि मैं आपसे अलग नहीं रह सकूँगा, क्योंकि मेरे सर्वस्व मात्र आप हैं-

'मोरे सबहि एकु तुम स्वामी'

लक्ष्मण जी श्री राम के अनन्य परामर्शदाता हैं। सीता हरण के बाद वे विरहाकुल राम को समझाते रहते हैं। गोस्वामी जी के शब्दों में "लछिमन समझाए बहुभाँती।" दोनों में परस्पर प्रगाढ़ प्रेम है। तुलसीदास लिखते हैं- 'इनके प्रीति परस्पर पावन।' जनक वाटिका में वे वर रूप में राम का शृंगार करते है। जयमाल के समय राम सिर नहीं झुकाते हैं तो लक्ष्मण उनके चरणों में झुक जाते हैं। वे राम सीता की सुरक्षा इस प्रकार कर रहे हैं, जैसे पलकें पुतली की रक्षा करती हैं या जड़ व्यक्ति शरीर की सेवा करता है-

'जोगवहिं प्रभुसिय लखनहिं कैसे।'
पलक बिलोचन गोलक जैसे ।'
'जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहिं। (रामचरित मानस)

4. 'भायप भगति' के आदर्श- लक्ष्मण जी लघु भ्राता के रूप में राम की दाहिनी भुजा हैं। बाल्मीकि के अनुसार 'रामस्य दक्षिणो बाहुः।" तुलसी के शब्दों में, दोनों भाइयों में 'ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू' है, अर्थात् राम परमात्मा है, लक्ष्मण जीवात्मा। यही तुलसी का विशिष्टाद्वैतवाद है। इसे 'अयोध्या कल्ट' भी कहा जा सकता है। इसीलिए अवध के मन्दिरों में

सीता के साथ रामलला लखनलाल की युगल मूर्ति रखी गयी है। चारों भाइयों में राम-लखन का युग्म सर्वाधिक घनिष्ट है । राम रक्ष्य हैं, लक्ष्मण रक्षक, इसीलिए विश्वामित्र इन दोनों को अपने साथ ले जाते हैं और दीक्षा देते हैं। अयोध्या की रसिकोपासना में राम 'काम' हैं, सीता 'रति' हैं और लक्ष्मण 'ऋतुराज' हैं। रामकाव्यों में राम-लक्ष्मण का स्नेह बाल्यावस्था से ही चित्रित किया गया है । बाल्मीकि रामायण में एक प्रसंग आया है कि एक बार इन दोनों शिशुओं को अलग-अलग पलँगों पर लिटा दिया जाता है तो वे आर्तक्रंदन करने लगते हैं। विवश होकर गुरु वशिष्ठ को बुलाया जाता है । वे स्थिति को ताड़ लेते हैं और जब उन्हें साथ-साथ लिटा देते हैं तो दोनों शान्त हो जाते हैं। दोनों की संग निद्रा, संग भोजन, संग शिक्षा और संग मृगया का प्रायः उल्लेख किया गया है। इसीलिए बनवास के समय भी लक्ष्मण श्री राम से अलग नहीं होते और तभी गोस्वामी जी के शब्दों में वे - 'भूरि भाग्य भाजन भयहु ।' बाल्मीकि जी के अनुसार जब रामराज्याभिषेक में बाधा पहुँचती है तो लक्ष्मण विद्रोह कर बैठते हैं। गोस्वामी जी के अनुसार श्रीराम की उपस्थिति में जब जनक "वीर विहीन मही" घोषित कर देते हैं तो लक्ष्मण उनका विरोध करते हैं और बड़ी निर्भीकता एवं प्रत्युत्पन्न मति से परशुराम को निरुत्तर कर देते हैं, जिससे रामलीला का लक्ष्मण-परशुराम संवाद सर्वाधिक रोचक हो गया है। हिन्दी कवियों, विशेषतः केशव ने इसे संवाद कला का बेजोड़ नमूना बना दिया है। लक्ष्मण भ्रातृ भक्ति वश चित्रकूट में मिलने आ रहे भरत-शत्रुघ्न पर भी सन्देह करते हैं। स्पष्ट है कि गोस्वामी जी ने उन्हें भ्रातृ प्रेम की पराकाष्ठा माना है और राम को भी परम प्रेमास्पद सिद्ध किया है। लंका में जब लक्ष्मण को शक्ति लगती है तो श्रीराम कातर - क्रंदन करते हैं । वे लक्ष्मण को 'सहोदर भ्राता' कहते हैं- 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।' इसके पीछे गूढ़ रहस्य यह है कि कौसल्या ने अपने चरु का आधा भाग सुमित्रा को दिया था, उससे लक्ष्मण का जन्म हुआ। कैकेयी ने आधा हिस्सा सुमित्रा को दिया था, उससे शत्रुघ्न का जन्म हुआ । इसीलिए राम लक्ष्मण एवं भरत शत्रुघ्न की जोड़ी बनी। इस प्रकार रामलक्ष्मण सहोदर माने गए। इसलिए लक्ष्मण के साथ श्रीराम प्राण त्याग करने के लिए उद्यत हो जाते हैं । वे लक्ष्मण के साथ जल समाधि ले लेते हैं। 'गीतावली' के एक पद में गोस्वामी जी लिखते हैं- "सुनि रन घायल लखन परे हैं।" पूरी रामकथा में राम ने ऐसा विलाप और कहीं नहीं किया है।

वस्तुतः भ्रातृत्व का ऐसा उदाहरण विश्व- साहित्य में दुर्लभ है। विलक्षणता यह है कि गोस्वामी जी ने भरत को भी भ्रातृत्व का आदर्श माना है। एक स्थल पर श्रीराम स्वयं लक्ष्मण से कहते हैं-

'लखन तुम्हारि सपथ पितु आना ।
नहिं सुबन्धु जग भरत समाना।'

यहाँ वे एक भाई के आगे दूसरे भाई की तुलना कर रहे हैं। लक्ष्मण ने राम के पीछे अपना सर्वस्व त्याग दिया, किन्तु सर्वोत्तम भाई उन्हें न मानकर वे भरत को मानते हैं। यह बात विचित्र सी लगती है। किन्तु इसके पीछे एक गूढ़ार्थ है। वह यह कि लक्ष्मण मात्र भाई नहीं हैं, बल्कि राम के व्यक्तित्व के अभिन्न अंश हैं। तभी वे उनकी शपथ लेते हैं। गोस्वामी जी ने लक्ष्मण के माध्यम से उन मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति कराई है जो मर्यादा पुरुषोत्तम होने के नाते श्रीराम में नहीं दिखाई जा सकतीं, जैसे- क्रोध, आशंका आदि। इन भावों की भी नर लीला में कभी-कभी जरूरत पड़ती है, इसलिए ऐसे प्रसंगों में श्रीराम प्रायः लक्ष्मण के मुँह से बोलते हैं। उदाहरणार्थ लक्ष्मण परशुराम प्रसंग में, समुद्र से वार्ता करते हुए, सीता पर हमला करती हुई शूर्पणखा को दण्ड देते हुए, बालकाण्ड में सती की परीक्षा लेते हुए और जनक, सुग्रीव आदि का विरोध करते हुए। यह उल्लेखनीय है कि राम लक्ष्मण प्रायः

साथ-साथ मिलकर ताड़का, विराध, कबन्ध आदि राक्षसों का वध करते हैं। मेघनाद का वध लक्ष्मण अकेले करते हैं। तात्पर्य यह है कि राम-लक्ष्मण दोनों दो शरीर, एक मन-प्राण हैं। गोस्वामी जी ने ठीक ही लिखा है-

"रघुपति कीरति बिमल पताका।
दण्ड समान भयहु जस जाका।"

अर्थात् यदि राम यशः पताका हैं तो लक्ष्मण उसको धारण करने वाले दण्ड हैं। लक्ष्मण के बिना श्रीराम का अवतारी रूप अपूर्ण ही रह जाता ।

5. चिन्तक- राम काव्यों में लक्ष्मण को यदा-कदा दार्शनिक के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है । बाल्मीकि के शब्दों में वे "नर युद्धे च कुशलः सर्वशास्त्र विशारदः" हैं। वें मारीच की माया को पलक मारते समझ लेते हैं, सीता को समझाते हैं तथा लक्ष्मण रेखा बनाकर उनकी सुरक्षा व्यवस्था करते हैं। सती के छद्म वेश को भी पहचान लेते हैं। 'मानस' में वे निषादराज से ब्रह्म विद्या की जो चर्चा करते हैं, उससे उनके तत्त्व ज्ञानी होने का प्रमाण मिलता है ।

6. क्रोधी - विद्रोही व्यक्तित्व- राम काव्यों में लक्ष्मण, महर्षि वाल्मीकि के अनुसार "अमर्षी दुर्जेयो जेता विक्रांतो बुद्धिमान बली" हैं। उनको प्रायः अनय एवं कुव्यवस्था का विरोधी सिद्ध किया गया है। हाँ, उनका क्रोध अविचारित नहीं है। उसके पीछे राम-भक्ति की प्रेरणा रही है। वे श्रीराम के हित में कभी कभी असहमति भी प्रकट करते हैं, जैसे समुद्र से राम का प्रार्थना करना उन्हें अच्छा नहीं लगा। जब श्रीराम कहते हैं "लछिमन बान सँभारहुँ भय बिनु होय न प्रीति" तो वे प्रसन्न हो जाते हैं । कवि कहता है - "यह मत लछिमन के मन भावा।" इसी प्रकार सीता की अग्नि परीक्षा और बनवास का वे विरोध करते हैं, किन्तु समझा देने पर वे अग्रज की अवज्ञा नहीं करते । श्रीराम अपना मन उन्हीं से खोलते हैं। एक तो जनक वाटिका में पूर्वराग के समय और दूसरे, सीता विरह की अवस्था में । 'उत्तर राम कथा' में राम जब परिस्थितिवश लक्ष्मण का त्याग करते हैं तो मर्माहत होकर लक्ष्मण जल समाधि ले लेते हैं। बाल्मीकि ने लक्ष्मण को 'विनयसंपन्न' भी कहा है। इसका अर्थ यह है कि वे राम द्रोहियों के प्रति उग्र हैं, शेष के प्रति विनम्र।

7. लोक कथाओं में लक्ष्मण- उत्तर मध्य भारत की कई कथाओं में लक्ष्मण को लंका जाकर रावण वध करने का श्रेय दिया गया है। अवधी के एक लोकगीत की पंक्ति हैं- "लछिमन तीर चलाई। मारेउ तीर गिरे भुजा बीसा, जहँ बइठे रघुराई।" जैन रामायणों में राम पूर्ण अहिंसावादी हैं, अतः उनमें रावण वध लक्ष्मण से कराया गया है। सुग्रीव के प्रमोद से क्रुद्ध होकर उन्हें रोष करते यहीं पहली बार दिखाया गया है।

एक लोक कथा के अनुसार अयोध्या में रामराज्य स्थापित करके राम मधुवन जाकर किसी कूबरी के प्रेम में फँस जाते हैं, तब लक्ष्मण वहाँ सीता के साथ जाते हैं और राम को मनाकर वापस लाते हैं। सीता को जब बनवास होता है तो लक्ष्मण उन्हें बाल्मीकि आश्रम तक ले जाते हैं और सोती हुई सीता को छोड़कर दुखी मन से लौट आते हैं। लवकुश का जन्म होने पर सीता मात्र लक्ष्मण को रोचना भेजती हैं। एक दिन आखेट के व्याज से वे राम को सीता की कुटी तक ले जाते हैं । अश्वमेध के पूर्व राम एवं वशिष्ठ के साथ लक्ष्मण भी सीता को मनाने के लिए जाते हैं। कुछ गीतों में, विशेषतः छत्तीसगढ़ी लोक वाङ्मय में लक्ष्मण को मछंदर पुत्री मचलादई, रावण-पुत्री फुफैया, वासुकि की बेटी बीजल देई, इन्दर राजा दुर्बल की इन्दर कामिनी आदि का प्रेमी कहा गया है और उन्हें 'सत-परीक्षा' (अग्नि परीक्षा) के लिए भेजा गया है। एक छत्तीसगढ़ी 'लोकाख्यान' में सीता जी लक्ष्मण द्वारा रावण की पुत्री का अपहरण करवाकर अपना बदला लेती हैं। कई गीतों में लक्ष्मण को चौपाल की शोभा कहा गया है- 'राम बिना मोरी सूनी अजुध्या लछिमन बिना चौपारी।' कुछ पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार लक्ष्मण

को लक्ष्मण पुरी (लखनऊ) का संस्थापक भी माना गया है। यहाँ लछिमन टीला कोणेश्वर और शेषनाग मंदिर इस कथन के साक्ष्य हैं। अवधी छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में लक्ष्मण को सीता 'बिपदा का साथी' मानती हैं और आदर्श देवर भी ।

8. गोस्वामी जी के मध्यस्थ- 'विनय पत्रिका' में गोस्वामी जी ने लक्ष्मण को अपना माध्यम बनाया है। तुलसी की प्रार्थना पर सबसे पहले लक्ष्मण ध्यान देते हैं और भरत की 'मति' पाकर वे प्रभु से संस्तुति करते हैं कि इस भक्त का उद्धार होना चाहिए, इसीलिए गोस्वामी जी ने लखनलाल को बड़ी आस्था के साथ चित्रित किया है। फलतः रामलखन–जानकी की त्रयी अवध के जन-जीवन में सदा-सर्वदा के लिए प्रतिष्ठित हो गई है। अपवाद रूप में लक्ष्मण के नाम से कुछ मंदिर बने हैं, यों वे राम के साथ ही विद्यमान हैं।

वस्तुतः लक्ष्मण का चरित्र राममय है। वे कभी राम का अहित सहन नहीं कर पाते। इसीलिए रामकथा में उन्हें अनेक बार विद्रोह की भूमिका में उतरना पड़ा है। वे स्पष्ट कह देते हैं कि दशरथ के प्रति मैं पितृभाव नहीं रखता। वे सुमंत द्वारा यही कटु वचन (संदेश) भेजते हैं। भरत-शत्रुघ्न पर भी सन्देह करते हैं और समय-समय पर जनक, परशुराम, शूर्पणखा, समुद्र, सुग्रीव, अयोमुखी आदि का विरोध करते हैं तथा विराध, कबंध और मेघनाद का वध करते हैं। राम को उनके पौरुष पर बड़ा विश्वास है । वे कहते हैं-

"जग मँह अहहिं निसाचर जेते।
लछिमन हनहिं निमिष मँह तेते।"

लक्ष्मण दूरदर्शी हैं, इसलिए मारीच की माया को भाँप लेते हैं । इसी के साथ - साथ सती के रूप को पहचान लेते हैं और हर अनिष्ट का यथा समय निवारण कर देते हैं।

लक्ष्मण को चरित नायक बनाकर भारतीय भाषाओं में कुछ काव्य, उपन्यास, नाटक आदि रचे गए हैं, किन्तु सब में प्रायः राम ही छा गए हैं, इसलिए कि लक्ष्मण स्वयं राम के अंश हैं, उनके पूरक है, अर्थात् अविभाज्य अंग हैं। बाल्मीकि के शब्दों में- रामस्यापि शरीरतः । श्रीराम का व्यक्तित्व लक्ष्मण के साथ जुड़कर ही अवतारी तथा लीला-मर्यादा पुरुषोत्तम रूप धारण करता है ।

अयोध्या कल्ट में रामलला और लखन लाल की युगलोपासना होती है। गोस्वामीजी ने उन्हें राम भक्ति का हेतु माना है। उनके शब्दों में- 'बन्दहु लछिमन पद जल जाता। सीतल सुभग भगत सुख दाता। कृपा सिंधु सौमित्र गुनाकर।'

उन्होंने 'मानस' के अरण्य काण्ड में होने वाली राम लक्ष्मण वार्ता को 'लक्ष्मण गीता' के रूप में प्रस्तुत किया है और उन्हें विश्वात्मा, 'विश्वविभु' कहा है। वाल्मीकि रामायण में अयोध्याधिपति श्रीराम के साथ इनके पारस्परिक अलौकिक प्रेम का सविस्तार दिग्दर्शन कराया गया है। सुमित्रानन्दन लक्ष्मण श्रीराम के दक्षिण बाहु एवं बाहरी प्राण हैं, इसीलिये श्रीराम लक्ष्मण के बिना न भोजन करते हैं, न शयन करते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने लक्ष्मण कुमार को साक्षात् शेष का अवतार तथा अनन्य आज्ञाकारी सेवक के रूप में चित्रित किया है। 'मानस' में गोस्वामी जी ने भी लक्ष्मण को एक ओर शेषावतार तथा दूसरी ओर शेष का भी कारण कहा है। इनकी वन्दना करते हुए गोस्वामी जी ने इन्हें सहस्रफण वाले शेषनाग का तथा जगत् का "कारण" घोषित किया है। लक्ष्मण का व्यक्तित्व ओज का अनुपम उदाहरण है। जनक ने जब पृथ्वी को "वीर विहीन" कह दिया तो लक्ष्मण रुष्ट हो गये। वे ब्रह्माण्ड को गेंद के समान उठा लेने, कच्चे घड़े के समान फोड़ डालने और मूली की तरह मरोड़ डालने की घोषणा करते हैं, किन्तु प्रभु के संकेत पर वे शान्त हो जाते हैं । जब श्री राम धनुष तोड़ने चले, तब लक्ष्मण ने पृथ्वी को पाँव तले दबाकर दसों

दिग्गजों तथा कच्छप, शेष, वराह आदि को स्थिर रहने का आदेश दिया। इससे स्पष्ट है कि लक्ष्मण जी शेष को भी आज्ञा देने वाले अर्थात् शेष के कारण हैं। श्रीराम के वनगमन के समय लक्ष्मण अपने परिजनों तथा राज्य के सुखों का परित्याग कर प्रभु के साथ वन चले गये । उन्होंने चौदह वर्षों तक प्रहरी के रूप में, शयन किये बिना, नित्य निरन्तर श्री सीताराम की हर तरह से सेवा की ।

लक्ष्मण जी ने लंका-युद्ध में इन्द्रजित मेघनाथ का वध कर सुयश प्राप्त किया। लोक-परलोक के समस्त वैभव को तृण के समान त्याग कर श्री सीताराम की सेवा करने वाला, उच्च–उदात्त आदर्श प्रस्तुत करने वाला दूसरा ऐसा कोई पात्र रामकथा में नहीं है। उन्होंने कभी स्वामी बनने की कामना नहीं की। मात्र अनन्य सेवक बने रहने की ही प्रतिज्ञा का निर्वाह किया। इसीलिये सीताराम की प्राप्ति में सुमित्रानन्दन को प्रमुख सहायक स्वीकार किया गया है और इसीलिए सीताराम के प्राचीन मन्दिरों में सर्वत्र लक्ष्मण की प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

एक प्राचीन ग्रन्थ 'रुद्रयामल' के सत्रहवें अध्याय में शंकर जी पार्वती से कहते हैं कि पापमोचन तीर्थ (वर्तमान गोलाघाट) के पूर्व भाग में सरयू के जल से सौ धनुष की दूरी पर उत्तम तीर्थ सहस्रधारा है। इसके समीप ही लक्ष्मण का निवास था। वाल्मीकि रामायण में भी इसका संकेत है। इसको वर्तमान समय में लक्ष्मण किला, लक्ष्मण घाट तथा सहस्रधारा तीर्थ के नाम से जाना जाता है । सहस्रधारा तीर्थ की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए शिवजी कहते हैं-

भगवान श्रीराम जब राक्षसों का वध कर अयोध्यापुरी में, राजसिंहासन पर अभिषिक्त होकर राज्य का संचालन कर रहे थे, उसी समय ब्रह्मा जी का संदेश लेकर स्वयं कालदेवता प्रभु के पास पधारे। श्रीराम काल देवता के साथ एकांत में बैठकर मंत्रणा करने लगे। वार्तारंभ के पूर्व राम ने काल के आग्रह पर यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि हमारी इस गुप्त मंत्रणा के मध्य में जो भी आयेगा, उसका वध या परित्याग कर दिया जायेगा। उन्होंने लक्ष्मण को द्वार-रक्षक बना दिया। उसी बीच दुर्वासा वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने लक्ष्मण से कहा - "सुमित्रानन्दन! मैं अत्यन्त आवश्यक कार्यवश श्रीराम से मिलने आया हूँ। आप शीघ्र मेरे आगमन की सूचना दें।" लक्ष्मण ने प्रणाम निवेदन कर उनसे कहा- "महर्षे! आपका जो कार्य हो, आप कहें। मैं आपकी क्या सेवा करूँ ? इस समय रघुनाथ जी आवश्यक कार्य में संलग्न हैं। आप दो घड़ी तक प्रतीक्षा कर लें।" यह सुनकर दुर्वासा रुष्ट हो गए और बोले- "सुमित्रानन्दन ! इसी क्षण श्रीराम को मेरे आगमन की सूचना दो, अन्यथा मैं समस्त राज्य को, इस नगर को तथा तुम सभी भाइयों को शाप दे दूँगा।" शाप द्वारा सबका विनाश न हो, यह निश्चय कर लक्ष्मण अपने ही विनाश का संकल्प लेकर मंत्रणा करते हुए श्रीराम के समीप पहुँच गये। उन्होंने महर्षि दुर्वासा के आगमन का समाचार दिया। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार, श्रीराम ने दुर्वासा का स्वागत कर उनके आगमन का प्रयोजन जानना चाहा । दुर्वासा जी बोलें- "रघुनन्दन ! मैंने एक हजार वर्षों तक उपवास किया है। आज व्रत-समाप्ति का दिन है, अतः जो भोजन आपके यहाँ तैयार हो, उसे मैं ग्रहण करना चाहता हूँ।" रघुनन्दन ने प्रसन्न होकर उन्हें भोजन कराया। अमृत तुल्य भोजन ग्रहण कर दुर्वासा मुनि तृप्त हुए और अपने आश्रम को चले गये। दुर्वासा मुनि के चले जाने पर श्रीराम ने काल के वचनों का स्मरण करके और अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण करके, भावी भ्रातृ वियोग से दुखी हो गये। तब स्वयं सुमित्राकुमार ने मधुरवाणी में प्रभु को प्रतिज्ञा-पालन करने की सलाह दी। ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जी की अनुमति से श्रीराम ने लक्ष्मण कुमार का परित्याग कर दिया। श्रीराम के इतना कहते ही कि "मैंने तुम्हारा परित्याग कर दिया" लक्ष्मण के नेत्रों में आँसू भर आये। वे तुरन्त वहाँ से चल दिये। अपने महल में नहीं गये, सीधे सरयूतट

पहुँचे। सरयू के जल का उन्होंने आचमन किया तथा बद्धांजलि होकर सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके, योगयुक्त हो, अपनी प्राणवायु को रोक लिया ।

लक्ष्मण का चरित्र-विकास विभिन्न धार्मिक, सामाजिक दबावों से प्रेरित-प्रभावित प्रतीत होता है। वाल्मीकि रामायण के दक्षिण पाठ में, पालि भाषा के 'दशरथ जातक' में, भास रचित 'प्रतिमा' नाटक में और खेतवनी रामायण' में लक्ष्मण को राम का द्वितीय ज्येष्ठ भ्राता (भरत से भी बड़ा भाई) बताया गया है, जबकि अधिकतर रामकाव्यों में राम का अवतरण चैत्र नवमी को, भरत जन्म दशमी को और लक्ष्मण का जन्म एकादशी को हुआ है। बौद्ध जातकों में उन्हें अनेक स्थलों पर 'लखन पण्डित' नाम दिया गया है। अवधी लोक कथाओं, लोकगीतों में राम-लखन की जोड़ी सर्वत्र दिखाई गयी है। एक गीत में वे साथ-साथ शिकार करते हुए जनकपुर पहुँच जाते हैं। घर लौटकर राम जी दशरथ से आग्रह करते हैं कि सीता से मेरा ब्याह करा दो। उनसे अनुमति प्राप्त करके राम-लक्ष्मण सीता को व्याह करके अयोध्या लाने चल पड़ते हैं। पूरी रामकथा में वे राम की छाया की तरह विद्यमान हैं। तुलसी के राम केवल 'छाया' सीता वाली घटना उन्हें नहीं बताते। गोस्वामी जी कहते हैं- "लछिमन हूँ यह मरम न जाना।" शेष सब कार्य दोनों की सहमति से होते रहे हैं। एक विचित्रता इस बात में भी है कि तुलसी के राम और सीता ने लक्ष्मण को सदैव अबोध (नाबालिग) रूप में देखा है। वनपथ पर चलती हुई सीता बहाना करती हुई कहती हैं- "जल को गए लक्खन हैं लरिका, परखो प्रिय छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।" इसी प्रकार सूर्पणखा के प्रेम-प्रसंग को टालते हुए राम जी, लक्ष्मण को कुँवारा कहते हैं- "अहहि कुमार मोर लघु भ्राता।" लक्ष्मण के मर्यादा बोध पर प्रकाश डालतें हुए गोस्वामी जी लिखते हैं कि राम-सीता के पीछे चलते हुए लक्ष्मण यही प्रयास करते रहे हैं कि राम और सीता के पद चिन्हों पर उनके पैर न पड़ने पाएँ, क्योंकि दोनों उनके आराध्य हैं।

बँगला कृति - 'मेघनाद वध' में माइकेल मधुसूदन दत्त ने लक्ष्मण को खलनायक रूप में चित्रित किया है, इसलिए कि उन्होंने निकुम्भला में साधनारत मेघनाद पर आक्रमण करके उसे छल से मारा था । 'साकेत' में गुप्त जी ने पहली बार ऊर्मिला को नायिका का और लक्ष्मण को नायक का पद प्रदान किया। गुप्तजी ने यह भी संकेत किया है कि रामराज्य में "मनस्वी लक्ष्मण का बलतंत्र" अर्थात् वे सैन्य-सुरक्षा व्यवस्था के प्रभारी रहे हैं। 'साकेत' में उन्हें एकपत्नीव्रती, सुरसिक, सच्चरित्र, कर्त्तव्यनिष्ठ और अनन्य सेवाव्रती रूप में चित्रित किया गया है। 'पंचवटी' में भी उनका काफी गौरव-गान किया गया है। कविवर शिवसिंह 'सरोज' ने वीरवर 'लक्ष्मण' नामक महाकाव्य और 'लक्ष्मण' नामक उपन्यास में उन्हें लक्ष्मण नगरी (लखनऊ) का संस्थापक सिद्ध करने का प्रयास किया है। डा0 सुधाकर अदीब लिखित 'मम अरण्य' नामक उपन्यास में लक्ष्मण को एक महान दूरदर्शी, यथार्थवादी राजनेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यही शील निरूपण वालकृष्ण शर्मा नवीन के 'ऊर्मिला' महाकाव्य, डॉ0 निशंक रचित 'सुमित्रा' महाकाव्य, छत्तीसगढ़ी रामायण आदि में किया गया है। 'रामचरित मानस' तो सर्वोपरि है ही।

लक्ष्मण संबंधी काव्यों की परंपरा बहुत पुरानी है। प्राचीनतम काव्य है डोमन कृत 'लक्ष्मण रासो।' रीतिकालीन कवि 'खुमान' ने 'लक्ष्मण शतक' नामक जिस काव्य की रचना की है, वह वीररस का उत्कृष्ट नमूना है-

"भूप दसरत्थ को नवेलो अलबेलो रन
रेलो कूप झेलो दल राकस निकर को।
मान कवि कीरति उमंडी खलखंडी चंडी
पति सो घमंडी कुलकंडीं दिनकर को।
इन्द्र गज गंजन को भंजन प्रभंजन तनै

जन मन रंजन निरंजन भँवर को ।
राम गुन ज्ञाता मनवांछित को दाता
हरिदासन के त्राता धनि भ्राता रघुवर को ।।"

कई कवियों ने उन्हें अमर्ष, असहिष्णुता (सात्विक क्रोध) का आदर्श सिद्ध किया है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जहाँ अप्रिय नहीं बोलना चाहते, वहाँ लक्ष्मण वह भूमिका निभाते हैं। वे राम का अहित होता नहीं देख सकते, इसलिए गोस्वामी जी लिखते हैं- 'अहह धन्य लछिमन बड भागी रामपदारबिन्द अनुरागी । बारहिं ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरित रति मानी।' उनके अनुसार राम मधु हैं, लक्ष्मण मदन/राम नारायण है, लक्ष्मण नर, राम बुध है, लक्ष्मण विधु।

लक्ष्मण विषयक अन्य काव्य हैं- लछिमन चंद्रिका (रसिक गोविंद, 1806 वि.) लक्ष्मण शक्ति (राजाराम) लक्ष्मण परशुराम संवाद (शंभुप्रसाद) बोले लक्ष्मण (नंदकुमार मनोचा) लक्ष्मण देखो तो (रामकृपाल निगम) लखनपिया (राजेन्द्र शुक्ल) विरहिणी उर्मिला (केशव प्रसाद सरस) तपस्विनी उर्मिला (आशाराम त्रिपाठी) उर्मिला (1) शोभादास चकोर (2) अनंत मिश्र (3) पृथ्वीनाथ शर्मा शांत (4) उर्मिला (अश्विनी पाराशर) आदि। पंत जी ने अपने नामराशि सुमित्रानंदन पर 'लक्ष्मण शीर्षक एक कविता लिखकर "मेरे मन के मानव लक्ष्मण, ईश्वरत्व भी जिन्हें समर्पण" (युगवाणी) जैसे उद्‌गार व्यक्त किए हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' निबन्ध लिखकर इस दंपति के नव चरित्रांकन की पहल की थी और मैथिलीशरण गुप्त ने 'उर्मिला उत्ताप' के माध्यम से उसकी प्रतिपूर्ति की थी। तबसे लक्ष्मण के शील निरूपण का यह क्रम चल रहा है।

वस्तुतः बड़ा महिमामंडित है रामकथा में लक्ष्मण का व्यक्तित्व ।

'साहित्यिकी', डी-54
निराला नगर, लखनऊ-226020
मो0- 9451123525

सोइए लाल लाडिले रघुराई।
मगन मोद लिए गोद सुमित्रा बार-बार बलि जाई।।
हँसे हसत अनरसे अनरसत प्रतिबिंबनि ज्यों झांई।
तुम सबके जीवन के जीवन, सकल सुमंगलदाई।।
मूल मूल सुरबीथि-बोली, तम-सोम-सुदल अधिकाई।
नखत-सुमन, नभ विटप बौंडि मानो छपा छिटकि छवि छाई।
हौं जाँभात अलसात, तात! तेरी बानि जानि मैं पाई।
गाई-गाई हलराई बोलिहौं सुख नींदरी सुहाई।।
बछरु छबीली छगन-मगन मेरे कहति मल्हाइ मल्हाई।
सानुज हिय हुलसति तुलसी के प्रभु की ललित लरिकाई।।
-तुलसीदास

अवधी लोक साहित्य में राम

➲ डॉ0 विद्या विन्दु सिंह

श्री सीता राम कथा में उनके वनवास का प्रसंग लोकमन में संवेदना की जो करुण धारा प्रवाहित करता है वह पूरे विश्व के लिए अविस्मरणीय है। लिखित साहित्य से लेकर वाचिक साहित्य तक संवेदना का यह प्रवाह अविरल गति से निरंतर प्रवाहित हो रहा है।

सभी भारतीय भाषाओ और लोकभाषाओ में रामकथा जाने कब से कही-सुनी और पढ़ी-लिखी जाती रही है। पूरे विश्व की भाषाओ में मौलिक लेखन, अनुवाद और वाचिक साहित्य के माध्यम से राम कथा का प्रसार हो चुका है।

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि को रामकथा लिखने के लिये जब ब्रह्मा ने आदेश दिया तो कहा कि तुम्हारी यह रामकथा लोक में प्रचार पायेगी। उनका आशीर्वाद सच सिद्ध हुआ, फला-फूला और भारतीय लोक साहित्य में इस कथा के नये-नये अभिप्राय उद्भावित हुए। कहीं-कहीं शास्त्रीय परंपरा से एकदम भिन्न सहज जीवन के चित्रों के माध्यम से रामकथा की अभिव्यक्ति हुई है। लोक-जीवन में व्याप्त कुछ कुरीतियों या अंधविश्वासों को भी राम और सीता के कथानक से जोड़कर इसलिए कहा गया है कि उनका सुधारात्मक प्रभाव अधिक पड़ेगा।

साहित्य और कला दोनों में कुछ पुनरावर्त्यमान अभिप्राय मिलते हैं जिनके माध्यम से कुछ विशेष परिस्थितियों से कई संभावनाओं की तलाश करने में सहायता मिलती है। रामकथा काव्य की मार्मिक संवेदना के लोकाभिप्राय सभी रामकथाओं में मिलते है, पर राम वनगमन के प्रसंग में ये अभिप्राय विशेष रूप से लोक गीतों और लोककथाओं में मिलते हैं ।

लोकगीतों में राम वन गमन की पूर्व पीठिका राम जन्म के समय ही प्रस्तुत है। इसलिए वर्णित घटनाओ के कथा सूत्र में भावी कष्ट की मानसिक तैयारी प्रारंभ हो जाती है।

कुछ लोक में प्रचलित अभिप्रायों की ओर संकेत करना चाहती हूँ ।

साहित्य में प्रचलित रामकथा से यहाँ अंतर यह है कि उसमें कौशल्या और कैकेयी को खीर या फल का एक ही भाग मिलता है, दोनों अपने भाग से सुमित्रा को देती हैं, अतः दो पुत्र होते हैं। लोकगीतों में ऋषि द्वारा प्राप्त फल अथवा जड़ी महाराज दशरथ महारानी कौशल्या को देते हैं और महारानी कैकेयी सिल धोकर औषधि पीती हैं इस से कैकेयी के मन में गाँठ हैं। कैकेयी अपने पुत्र के अधिकार की माँग पुत्र के जन्म के समय ही करती हैं। राम जन्मोत्सव के उछाह में ही कैकेयी का व्यंग्य दुःखद भविष्य का संकेत है। रानी कौशल्या प्रसन्नता में पूरी धन-संपत्ति, राज-पाट लुटा देने को तैयार हैं। पर रानी कैकेयी कहती हैं- "अरे

महारानी कौशल्या! धीरे धीरे राज्य लुटाना, इसमें आधा राज्य भरत का है। धीरे धीरे खुशी मनाओ, क्योंकि राम जब बारह वर्ष के होंगे, तभी उन्हें वनवास के लिए जाना पड़ेगा।" माता कौशल्या के हृदय पर चोट लगती है पर अपना हृदय दबाकर कहती हैं- "अरे बहन कैकेयी ! कोई बात नहीं। राम वन जायेंगे तो क्या हुआ, मेरा बंध्या का नाम तो छूट गया।"

राजा दशरथ को श्रवण के माता-पिता के शाप का स्मरण रामजन्म के उछाह में ही आता है। दृष्टिहीन दंपत्ति का वह शाप कि तुम्हारा पुत्र राम वन जायेगा और उसी के विछोह में तुम भी प्राण त्यागोगे। वे कौशल्या को टोकते हैं, "अरी बावरी ! इतनी प्रसन्नता ठीक नहीं। राम को वन जाना है।" उन्हें भी कौशल्या जी दो टूक उत्तर देती हैं- "बावरे तो आप हुए हैं। भले ही राम वन जायेंगे, लौटकर आयेंगे तो। उछाह क्यों न मनाऊँ ?"

इस स्मृति से दुःख की मानसिक तैयारी पहले से ही हो जाती है। अधिक प्रसन्नता का परिणाम दुःखद हो सकता है, इसलिए उसकी वर्जना है।

राम की छठी में हरिण का शिकार और हरिणी का करुण आर्त्तनाद है। जंगल में हरिणी उदास खड़ी है। हरिण चरते-चरते उससे पूछता है, "क्यों उदास हो? क्या तुम्हारा चारा कम हो गया या पानी बिना मुरझाई हो?" वह कहती है- "नहीं, मेरे प्यारे हरिण ! ऐसी कोई बात नहीं, मैं इसलिए उदास हूँ कि आज राम की छठी है, तुम्हारा वध हो जायेगा।" वह कहता है- "अरे! तुम तो बावरी हो। राम की छठी में पड़ूँगा तो मेरा उद्धार हो जायेगा। हरिणी प्रार्थना करती है- "मेरे हरिण का वध न करो, मुझे मार डालो।" शिकारी कहता है कि तुम बावरी हो गयी हो, हरिणी का वध नहीं किया जाता। हरिणी पीछे उलटकर देखती है उसका हरिण धराशायी हो गया है। वह रानी कौशल्या से कहती है- "महारानी! हरिण की खाल मुझे दे देना। उसे पेड़ पर टाँग कर देखूँगी और मन को समझाऊँगी कि मेरा हरिण जीवित है।" पर रानी कौसल्या कहती हैं- "इस खाल से तो मैं अपने राम के लिए खँझड़ी बनवाऊँगी, जिससे मेरे राम खेलेंगे।"

उदास हरिणी लौट जाती है, जब-जब वह खँझड़ी बजती है, वह कान उटेर कर खड़ी हो जाती है और ढाक के पेड़ के नीचे खड़ी होकर अपने हरिण के लिए बिसूरती है। इसका कहीं-कहीं पाठ मिलता है कि हरिणी कौसल्या को शाप देती है कि रानी ! मेरी तरह ही तुम भी बिसूरोगी। पर कहीं-कहीं हरिणी के बिसूरने मात्र का ही उल्लेख है जो अधिक करुण व्यंजना करता है।

लोक गीतों में प्राणिमात्र के वंश की चिंता है, इसीलिए मादा हरिणी के वध का निषेध है।

उल्लास के समय दूसरे प्राणी के दुःख की चिंता नहीं होती, विवेक भ्रमित हो जाता है। खँझड़ी के बजने मात्र से हरिण वध की स्मृति और हरिणी का दुःख पूरे लोक में व्याप्त हो जाता है और यही कौसल्या के पति वियोग का कारण होता है। हरिणी का शाप श्रवण के माता-पिता के शाप की तरह है जो दशरथ से रानी कौसल्या के विछोह की ओर पूर्व संकेत करता है ।

यह रामायण कथा में व्यक्त क्रौंच-वध का अभिप्राय दूसरे रूप में है। हरिणी के आर्त्तनाद में करुणा का बीज है। अंतर इतना ही है कि क्रौंच-वध से उद्वेलित कवि का हृदय राम का चरित लिखने को तैयार होता है और यहाँ रामकथा के पात्र का प्रमाद ही शोक का कारण बनता है। दोनों अभिप्रायों में प्रकृति की समरसता से छेड़छाड़ को अमंगल के रूप में देखा गया है।

राजा दशरथ का ताड़का को वरदान की लोककथा है कि एक बार राजा दशरथ शिकार खेलने गये, मार्ग भटक गये। राजा भूखे-प्यासे बेहाल थे। तभी ताड़का नामक राक्षसी ने उन्हें जल पिलाकर उनके प्राणों की रक्षा की।

राजा दशरथ ने उससे वरदान माँगने को कहा। उसने कहा, "मुझे चौदह वर्ष के लिए अयोध्या की राजगद्दी चाहिए।" राजा दशरथ ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।"

जब राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ यज्ञ की रक्षा के लिए गये, तो वहाँ पर ताड़का ने भी उत्पात मचा रखा था। राम ने ताड़का का वध कर दिया। राजा दशरथ को जब यह ज्ञात हुआ तो वह पश्चात्ताप करने लगे। वरदान की घटना जानकर राम सोचने लगे कि पिता के वचन की रक्षा कैसे करूँ? उन्होंने ताड़का की हड्डियों की खड़ाऊँ बनवा कर पहन लिया। जब राम चौदह वर्ष के लिए वनवास गये, तब भरत उन्हें मनाने के लिए वन पहुँचे। राम ने भरत को अपनी खड़ाऊँ देकर कहा कि मैं नहीं लौट सकता, आप अयोध्या का राज्य सँभालिये। मेरे स्थान पर यह खड़ाऊँ चौदह वर्ष तक राजगद्दी पर रहेगी। इस प्रकार महाराज दशरथ के वचन का पालन हुआ है।

राम की बारात प्रस्थान करती है। लक्ष्मण सहबाला के रूप में साथ चल रहे हैं, दाहिने बायें काग बोलने लगता है। राम कहते हैं कि भाई लक्ष्मण ! इस सगुन का विचार करो। लक्ष्मण कहते हैं- भाई सब शुभ है जनकपुर में आदर सत्कार होगा, खूब उपहार मिलेगा, लक्ष्मी सीता हमारे घर आयेंगी, पर आपकी पियरी धूमिल नहीं होगी तभी आपको वन जाना पड़ेगा।

विवाह करके अयोध्या आने पर राम-सीता की आरती उतारती माँ कौसल्या को राम वनवास की पूर्व सूचना देते हैं। राम के आँसू प्रवाहित हो रहे हैं। माता आकुल होकर पूछती हैं- "क्यों मेरे लाल ! क्या राजा जनक ने तुम्हारी आवभगत नहीं की? अथवा तुम्हारी सीता सुंदर नहीं हैं?" राम उत्तर देते हैं- "माँ! खूब सत्कार हुआ, लक्ष्मी सीता मेरे घर आयीं। पर माँ! मुझे वनवास जाना पड़ेगा।"

लोक राम के वनवास की कल्पना से इतना क्षुब्ध है कि वह राम के विवाह के समय ही राम को सावधान करता है "तुम वन मत जाना।" राम के किसी भी दुःख की कल्पना भी लोकमन सहन नहीं कर पाता ।

हे दूल्हे राम! बार-बार तुम्हें मना करती हूँ, दंडकबन न जाओ। दंडकबन में मेघ गरजते हैं, तुम्हारी सेना भीग जायेगी, हाथी भीग जायेंगे, घोड़े भीग जायेंगे। हे दूल्हे राम ! तुम्हारे माथे का चंदन भीग जायेगा, पालकी भीग जायेगी, डोली भीग जायेगी, चारों कहार भीग जायेंगे, तुम्हारा जामा भीग जायेगा, जोड़ा भीग जायेगा, तुम्हारा अंगवस्त्र भीग जायेगा, तुम्हारी दूल्हन का लहँगा और चुनरी भीग जायेगी, सिंदूर भरा उनका भाल भीग जायेगा। सब स्त्रियाँ भीग जायेंगी। बाजे वाले भीग जायेंगे, सारी बारात भीग जायेगी। हे दूल्हे राम! माँ की कोख भीग जायेगी, जिसने तुम्हें अवतार दिया है।

बेरिया क बेरि तोहिं बरजउँ दुलहे राम,
दंडकबन जिनि जाउ ।
वहि वना में मेघ गरजत हैं,
भिजिहइँ कटक तोहारि।...

सीता को छोटे से प्रमाद का दुष्परिणाम भोगना पड़ता है। सीता सामान्य वधू की भाँति घर की झाड़ू-बुहारी करके कूड़ा-करकट दूर न फेंककर घर के पिछवाड़े घूरे में डाल देती हैं। वहाँ एक घनी बँसवारी उग आती है। कालांतर में साधारण कृषक की भाँति राजा दशरथ बाँस कटाने जाते हैं, उनकी अँगुली में काँटा चुभ जाता है। काँटे की चुभन के दर्द से राजा दशरथ बेहाल हो जाते हैं। रानी कैकेयी आकर उनका उपचार कर पीड़ा हर लेती हैं। राजा कहते हैं- "रानी! जो वर माँगना चाहो माँग लो।" रानी कैकेयी तुरंत दो वर माँग लेती हैं- "भरत के लिये अवध का राज्य और राम के लिये वनवास।"

यहाँ अधिक सहज और मनोवैज्ञानिक ढंग से

कैकेयी की सहजता भी व्यक्त है । वरदान समय पर माँगने की बात कहकर टाल देना और अवसर आने पर माँगने की कुटिलता लोकसाहित्य में नहीं है। तुरंत मनचाहा माँग लिया है। काँटा के बदले काँटा देने का अभिप्राय इसमें व्यक्त है। राजा दशरथ का यह कहना कि "यह कैसा काँटा निकाला तुमने? अँगुली का काँटा निकाल कर कलेजे में वाण मार दिया।" यह वाक्य कथा में नाटकीयता लाकर वेदना की तीव्रता का अनुभव कराता है। सीता अनजाने में काँटा बो देती हैं और यह काँटा उनके कष्ट का कारण बनता है।

आयीं रानी केकई पलंग चढ़ि बइठी,
हरि लिहीं अँगुरी के पीर ।
जवना मँगन तूँहू माँगा रानी केकई!
तवन मँगन हम देब ।
भरत काँ लिखा राजा आपन रजवा,
राम काँ लिखा बनवास।
कवन मँगन तँहू माँग्यू रानी केकयी!
मार्‌यू करेजवा म बान।

वनगमन से पूर्व सीता के प्रति राम चिंतित होते हैं। संवाद होता है।

राम- "माँ ! मेरे वन जाने के बाद सीता को कैसे रखेंगी?"

माता कौसल्या- "आँगन में कुँआ खोदवाऊँगी, सीता को नहलाऊँगी, दूध, चिरौंजी का भोजन करवाऊँगी, अपने नयनों के बीच रखूँगी। पर पुत्र ! जिस प्रकार बिना केवट के नाव होती है, वैसे ही प्रिय पुरुष के बिना स्त्री का जीवन हो जाता है।"

राम- "बिना केवट की नाव किस घाट लगेगी, बिना पुरुष की नारी किस डाल (सहारा) लगेगी माँ ?"

माता- "बिना केवट की नाव यमुना के तीर जा लगेगी, पुत्र ! बिना पुरुष की नारी मायके चली जायेगी।"

राम- "माँ! जिस राह से सीता जायेंगी, भूमि (सीता की माँ) भी भार अनुभव करेगी। मायके के लोग ऊब जायेंगे, कहेंगे कि सीता यहाँ से कब जायेंगी।"

कौसल्या की व्यथा असीम है, कब यमुना सूखेंगी, दुखों के शैवाल बह जायेंगे? कब मेरे राम लौटकर आयेंगें? मैं उनसे अपना दुःख कहूँगी। जेठ महीने में यमुना सूखेंगी, सेवार बहेंगे। आषाढ़ लगते ही राम लौटकर आयेंगें। उनसे अपनी व्यथा कहूँगी ।

कहिया जमुना झुरइहैं, सेवार बहि लगिहैं,
रामा! हमरी पपिनियाँ क राम लौटि कब अहहैं हो।
जेठहि जमुना झुरइहै, सेवार बहि लगिहैं,
लागत असाढ़ राम लौटिहैं, कहब दुख आपन हो।

राम सीता को वन न चलने के लिए समझाते हैं- "मेरे साथ मत चलो, बहुत दुःख पावोगी।" सीता कहती हैं- "मैं भूख-प्यास सह लूँगी, धूप, बरसात सह लूँगी, तुम्हारी सूरत देखती रहूँगी तो मुझे सारे सुख मिलते रहेंगे।"

राम जे चले मधुनवाँ त सीता गोहन लागैं,
हो मोरी सीता! जिनि चला हमरे गोहनवाँ,
बहुत दुख पइबू।
सहबौं मैं भुखिया, पियसिया त घमवा, बयरिया।
हो मोरे रामा! देखि-देखि तुहरी सुरतिया,
सकल सुख पइबै।

सीता कहती हैं- "तुमने तो जोगियों का वेष धारण कर लिया, वन में जाने को तैयार हो गये हो। मैं किसके सहारे रहूँगी? एक घड़ी तुम्हें न देखूँगी तो मर जाऊँगी, चौदह वर्ष तो बहुत दूर की बात है। हे सूर्यकुल के दुलारे! स्वयं तो तुम फल-फूल खाकर बिताओगे और मुझे पूड़ी-मिठाई के व्यंजन खाने के लिए रहने को कह रहे हो। मैं तो बिना मौत के ही मर जाऊँगी, तुम वन जा रहे हो, मैं भी साथ चलूँगी, शिव की सौगंध खाकर कह रही हूँ मैं तुम्हारी यहाँ रुकने की आज्ञा नहीं मान सकती। इसलिए अपनी सीता को अलग न करो। सीता की विकलता देखकर श्री राम कह उठे "अच्छा चलो। तुम भी साथ चली चलो।

वही होगा जो विधि ने माथे पर लिख दिया है (अर्थात वन में सीताहरण, युद्ध)।" कह कर सीता सहित रथ पर सवार हुए और कोसलपुर में अँधेरा करके चल पड़े।

तू तौ जोगिया भेष पिया धारे,
हरे जियबै हम केकरे सहारे, जात बन प्यारे ।
घरी मैं न देखबे त मरबै जरूरी,
चौदह बरिसवा बाय बड़ी दूरी, हे रवि राज दुलारे !

सीता दृढ़प्रतिज्ञ हैं "यदि मेरे राम रथ पर चलेंगे तो मैं पैदल ही चली जाऊँगी, पर जाऊँगी अवश्य। मेरे राम जो वन के फल खायेंगे, मैं उनके छिलके खाकर ही रह लूँगी, मेरे राम कुश के बिछावन पर सोयेंगे तो मैं भूमि पर ही लोट जाऊँगी, पर उनके बिना अयोध्या में नहीं रहूँगी। जब मेरे रघुवर थक जायेंगें तो मैं अपने आँचल से बयार करके उनकी थकान दूर करूँगी।"

रघुबर संग जाब, अब ना अवध माँ रहबै।
जौ मोरे रघुबर बनफल खैहैं, फोकली चाटि लेब,
अब ना अवध माँ रहबै...
वन राम-लक्ष्मण जा रहे हैं, सीता साथ लग जाती हैं।
बन को चले लखन रघुराई, सीता लगैं गोहनवाँ ना।...
चन्नन की डरियाँ तँ सोइबा, पतवा भुइयाँ गिरौबा ना।
पतवा पै सोइ करब गुजरनवाँ, हमहूँ चलबै गोहनवाँ ना।

माता कौशल्या व्यथित हैं। राम खड़ाऊँ पहने हुए, हाथ में दंड लिये माता से विदा माँगते हैं "माँ! आशीर्वाद दो, वन को प्रस्थान करूँ।" माता कौशल्या कहती हैं "मेरे लाल ! ऐसी जीभ पर अंगार धर लूँ जिससे वन की आज्ञा निकले। अरे राजा! आँखों में पट्टी बँधवा दो, अयोध्या की ओर देखते नहीं बन रहा है। राम, सीता और लक्ष्मण वन चलने को प्रस्तुत हैं। हृदय वेदना से फट रहा है। वे कहती हैं कि इस अयोध्या में क्या सभी निष्ठुर लोग ही बसते हैं? कोई भी मेरे राम को वन जाने से नहीं रोक रहा है। अरे नगर के बच्चो ! तुम सब एकत्र होकर धमार रचो, जिसमें मेरे राम रम जायें और थोड़ी देर वन जाने से रुक जायें । राम, सीता और लक्ष्मण चले जाते हैं, माता कौशल्या पीछे दौड़ी जाती हैं। पर किस मार्ग से वे निकल गये, वे ढूँढ़ नहीं पातीं। वे सभी से पूछती हैं:

"अरे बेरी के पेड़! तुम सो रहे हो कि जाग रहे हो? तुमने मेरे बच्चों को देखा? किस मार्ग से वे गये?" बेरी उत्तर देती है "हाँ, माँ! मेरे काँटों में उनकी पाग उलझ गयी थी, उसे सुलझाने के लिए वे थोड़ी देर के लिए रुके थे।' माता कौसल्या उसे आशीर्वाद देती हैं "अरे बेरी! तुमने किसी बहाने से मेरे बच्चों को थोड़ी देर के लिए विश्राम दिया, रोका, जाओ मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ कि तुम्हारी जड़ें पाताल तक जायेंगी। तुम्हें समूल कोई नष्ट नहीं कर पायेगा।"

माता और आगे बढ़ती हैं घाट पर धोबी है, उससे भी पूछती हैं "घाट के धोबी! तुमने मेरे बच्चों को देखा? वे किस राह से गये? वह उत्तर देता है हाँ माता! मैने राम-लक्ष्मण के सिर की पाग धोकर सुखायी, वे इसी राह से गये।" माता कहती हैं "तुमने मेरे बच्चों को विश्राम दिया, सुख दिया, मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ कि तुम सौ साठ लादी (गंदे कपड़ों के ढेर की गठरी) धोओगे पर तुम्हें विस्मरण नहीं होगा कि किस ग्राहक का कौन सा कपड़ा है।" वह और आगे चलती हैं तो चकवा-चकवी युगल बैठे मिलते हैं। माता कौशल्या उनसे भी अपना प्रश्न करती हैं। चकवी कहती है "नहीं, मैं तो अपने चकवे के साथ शयन कर रही थी, मैंने नहीं देखा कि तुम्हारे राम, लक्ष्मण और सीता किधर से गये?" माता कौशल्या दुःखी होकर कहती हैं "चकवी! तुमने मेरे राम को नहीं देखा? जाओ तुम दिन भर तो अपने चकवे के साथ रहोगी पर रात में तुम उससे बिछुड़ जाया करोगी।'

सहज करुणा से भरा मातृहृदय महारानी के सारे आवरण हटाकर वन पथ में अपने बच्चों के पीछे भागता है।

बेर जो काँटेदार है, कुपथ्य है, वह भी राम के प्रति करुण है, संवेदनशील है। जो राम का हो जाये, उसका कोई नाश नहीं कर सकता। धोबी जाति को अपने ग्राहकों के वस्त्र की पहचान नहीं भूलती, इस लोक विश्वास को रामकथा से जोड़कर महत्त्व दिया गया है। चकवा-चकवी के विछोह के प्रसिद्ध 'कवि-समय' को कथा में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मातृहृदय की सहज झाँकी है। अपने बच्चे को चाहने वाले को आशीष और उपेक्षा करने वाले पर आक्रोश है।

माता कौशल्या की चिंतित हो भीतर से निकलती हैं। नेत्रों से अश्रु प्रवाहित हो रहे हैं। कौन जाने मेरे बच्चे कहाँ किस वृक्ष के नीचे पड़े वर्षा में भीग रहे होंगे। हे देव! मेरी विनती है कि उस वन में मत बरसना जहाँ मेरे बच्चे हों, नहीं तो वे भीग जायेंगे। राम का पीतांबर भीग जायेगा । लक्ष्मण का पट वस्त्र और मेरी सीता का सोलहों श्रृंगार भीग जायेगा। उसकी माँग का सिंदूर न भीग जाये, यह ध्यान रखना। अरे देवता ! मेरे राम तो भरी दुपहरी में ही चले गये, लक्ष्मण के जाने से साँझ हो गयी और मेरी सीता के जाने से तो अँधेरा ही हो गया। मैं कैसे अपने मन में धीरज रखूँ ? राम के बिना मेरी अयोध्या सूनी हो गयी । लक्ष्मण के बिना चौपाल। मेरी सीता के बिना तो रसोई ही सूनी हो गयी। राम तो मेरे नयनों की पुतली हैं, लक्ष्मण मेरे नायक हैं। सीता तो मेरे हाथों की करछी थीं। अब इन तीनों के बिना मैं कैसे धीर रखूँ। कब गंगा-यमुना उमग कर बहेंगी? कब मेरे राम घर लौट कर आयेंगे।

आज मुझे रघुवीर की सुध आई। चिंतित माता कौसल्या कहती हैं- "कौन भोजन बनाये ? भूख लगने पर वे भोजन ? प्यास लगने पर पानी कहाँ पायेंगे। नींद लगने पर बिछावन कहाँ पायेंगे? मेरे राम-लक्ष्मण और प्यारी सीता कैसे काट रहे होंगे बनवास के दिन ?"

कि आजु मोहे रघुबर की सुधि आयी।
कौनों बिरिछि तराँ भीजत होइहैं, राम-लखन दूनों भाई।
राम बिना मोरी सूनी अयोध्या, लछिमन बिनु चौपारी।
सीता बिना मोरी सूनी रसोइया,
केन मोरा भोजना बनाई?
भूख लगे भोजन कहाँ पैहैं, प्यास लगे कहाँ पानी?
नींद लगे डासन कहाँ पइहैं, राम-लखन सिया प्यारी?
कि आजु मोहिं रघुबर की सुधि आयी।

माता कौसल्या का हृदय विदारक रुदन और अपने बच्चों के लिए चिंता अत्यंत मार्मिक है।

वे वन में भीग रहे होंगे।
सवना-भदौवाँ क निसि अन्हियरिया,
उमड़-घुमड़ि दयवा गरजैं हो राम।
कवनो बिरिछि तरे भीजत होइहैं,
राम-लखन दूनों भैया हो राम।
जिनि बरसा दयवा हो वही कजरी बनवाँ,
नाहीं भिजिहैं मोरे लरिकवन हो राम।
राम के भिजिहैं रे पीला पितंबर,
लछिमन कै भीजै पटुकवा हो राम।
सीता के भिजिहैं सोरहो सिंगरवा,
जिनि भीजै माँगि कै सेन्हुरवा हो राम।

विस्वल होकर भरत पूछते हैं- "माता ! भाई राम कहाँ हैं? जब से अयोध्या नगरी छूटी हमारा मन उदास है। घर-गली, घाट-बाट सर्वत्र प्रजा रो रही है।"

पूछत भरत राम कहाँ माई?
जबसे छुटी अजोधिया नगरी, हमैं उदासी छाई।
घर-गलियाँ, घाट-बाट, सब परजा रोवत पाई।

भरत रोते हैं- "माँ! तुम्हें तनिक भर भी दर्द नहीं हुआ राम-सीता और लक्ष्मण को वन भेजते हुए? तुम इतनी कठोर कैसे हो गयीं? राम-लक्ष्मण मेरी दाहिनी बाँहें हैं। सीता मेरी माता हैं। पिता दशरथ ने राम के वियोग में प्राण त्याग दिये और तुम अभी नागिन सी बैठकर मुझे भी मारने की (राजतिलक करने की) तैयारी कर रही हो। सारी अयोध्या के दुलारे राम, सबकी आँखों के उजाले राम को

तुमने वन भेजकर, डूब मरने का कार्य किया है।"

तोहरे तनिको दरदिया न आई,
बन पठइउ लखन-रघुराई, गजब किहू माई।...
सगरी अजोधिया के राम दुलरुवा,
आँखिन कै उजियारी।
तिनका बन पठ्यू तँ बेदर्दी, किह्यू बूड़ि मरै कै तैयारी,
गजब किह्यू माई।

एक कथा का भाव है कि श्री भरत अपनी माँ को शाप देते हैं कि माँ तुम अगले जन्म में इमली का पत्ता बनोगी, जिसका कोई उपयोग नहीं हो सकता। केकेयी जब रोने लगी, तब भरत ने कहा- "ठीक है माँ! जब किसी को कहीं दर्द होगा तो तुम्हारे पत्ते गर्म करके उस स्थान पर रख देने से पीड़ा दूर हो जायेगी।" इस प्रकार माँ की ग्लानि देखकर भरत माँ को क्षमा कर देते हैं ।

केवट-राम संवाद में सुरसरि के तीर दोनों भाई खड़े हैं। राम- "केवट ! नाव ले आओ, हम पार जाने वाले हैं।" केवट- "तुम यदि पार जाने वाले हो, तो बताओ हमें उतराई क्या दोगे?" राम- "सीता की मुंदरी ले लो, और हमारे पास क्या है? हम तो वनमार्ग में हैं वनवास के लिए जा रहे हैं। हमारे पास क्या है।" केवट- "हम मुँदरी के भूखे नहीं हैं, राजा। हम तो आपके चरण धोना चाह रहे हैं।" कठौता भर कर केवट जल ले आया चरण पखार कर माथे चढ़ाया ।

सुरसरि तीर खड़े दूनौं भइया हो।
केवट! केवट! राम पुकारैं, लावौ नइया,
हम पार के जवैया हो। सुरसरि तीर...

राम को गंगा पार कराने का केवट प्रसंग प्रचलित रामकथा सा ही है पर यहाँ केवट कहता है "हे माता ! धीरे बहो, मेरी नाव में श्रीराम सवार हैं।" नदी प्रश्न करती है, वह समाधान देता है-

मोरी नइया म राम सवार गंगा मइया धीरे बहो।...

राम की उपस्थिति से वन प्रफुल्ल हो जाते हैं। जिस वन में राम ने वास किया, वहाँ के सूखे काठ भी हरे होने लगे। उनमें नई कोपलें फूटने लगीं। सूखे ताल सरोवर उमग आये, उसमें हंस विहरने लगे, पक्षी जल पीने लगे। जंगल में मंगल हो उठा। अमृत फल फलकर लटकने लगे। चिड़ियाँ मिल कर उन्हें चखने लगीं (राम के अमृत का फल उसके स्वाद की इच्छा रखने वाले ऋषियों के मन पंछी चखने लगे)। सूखे सरोवर अगम्य भर आये, हंस उनमें पान करने लगे (ज्ञान के सरोवर में मानस हंस)। जिस वन में सींक और पत्ता भी हिल नहीं सकता था (सघनता और आतंक के कारण), वहाँ अब हंस विचरण करने लगे, उड़ने लगे, निर्भय निर्बाध।

जौने बन राम लिहिन बनवासा।
सूखे काठ होय लागै हरियर, फूटन लागे गाँसा।
जौने बन राम लिहिन बनवासा।
फरि-फरि अमृत लटकन लागे, चिरइअन मिलि चाखा।
जौने बन राम लिहिन बनवासा।
सूखे ताल अगम भरि आये, पियन लागे सब हंसा।
जौने बन राम लिहिन बनवासा।
जौने बन सींक पत्र नहिं डोलें, उड़न लागे हंसा।
जौने बन राम लिहिन बनवासा।

मारीच-वध, सीताहरण, जटायु का रावण से युद्ध आदि प्रसंग भी गीतों में मिलते हैं। वन में राम-लक्ष्मण-सीता बैठे हैं, मारीच स्वर्णमृग बनकर सामने दिखाई देता है। सीता की स्वर्णमृग की खाल पाने की लालसा ने राम को प्रेरित किया कि वे सुनहले मृग का पीछा करें। पर फिर भी उन्होंने सीता को समझाना चाहा कि स्वर्णमृग यह नहीं है। निशाचर माया हो सकती है। एक हाथ में धनुष, एक में बाण लेकर वे लक्ष्मण को सीता की रखवाली के लिए छोड़कर चले गये। आगे आगे हिरन, पीछे पीछे राम। बाण लगते ही उसने लक्ष्मण के नाम की गुहार (पुकार) लगाई। सीता ने लक्ष्मण से प्रार्थना की कि राम के

ऊपर आयी विपत्ति का निवारण करो। धनुष की नोक से लक्ष्मण ने रेखा खींच दी कि इसके भीतर जो भी प्रवेश करेगा, भस्म हो जायेगा। रावण साधु के वेश में भिक्षा माँगता है। सीता घेरे के भीतर से भिक्षा देने लगती हैं तो रावण कहता है- "मैं बँधी भिक्षा नहीं लेता, मैं जनकपुर का भिखारी हूँ, जाकर वहाँ आपकी निंदा करूँगा।" सीता अपना पाँव उठाकर जैसे ही भिक्षा देने लगती हैं, रावण उनका हाथ पकड़कर खींच लेता है। सीता विवश कातर-पुकार करती हैं- "कौन मुझे आकर बचायेगा?" गिद्धराज जटायु रावण से युद्ध करने लगते है, किंतु रावण के अग्निवाण से मूर्छित होकर गिर पड़ते हैं। मन का कपटी रावण सीता को लेकर लंका पहुँच कर फुलवारी में सीता के रहने की व्यवस्था करता है। विधि के विधान के अनुसार सीता पर दुःख का आसमान टूट पड़ा। विधि की रची कर्म की रेखा यही थी।

हरे रामा सोने कै हरिनवाँ सीता माँगैं रे हारी।
मानो मोर कहनवाँ सीता! नाहीं ई सोन हरिनवाँ रामा।
हरे रामा बन-बन घूमें निसाचर,
बनहीं क माया रे रही...

सीताहरण पर राम का बिलखना भी मार्मिक अभिव्यक्ति है। हिरन मारकर राम-लक्ष्मण वापस लौटे। पर्णकुटी में सीता नहीं। राम व्याकुल होकर लक्ष्मण से कहने लगे "भैया लक्ष्मण! सीता को कौन हर कर ले गया।" दीपक जलाकर भवन (तात्पर्य कुटी से ही है। राम-सीता जहाँ रहें वह भवन से कम नहीं) में चारों तरफ देखा, सेज सूनी पड़ी है। माथे पर बिंदी, नयनों में काजल, मोतियों से भरी माँग वाली सीता को कौन हर ले गया? कहीं सीता को रावण तो नहीं हर ले गया या वन का 'बाघ' तो नहीं खा गया? कहाँ गई मेरी सीता? अब न तो वन की चिड़ियाँ बता रही हैं और न ही आज वन के पत्ते और फूल भी मुझसे बात कर रहे हैं। वे भी निस्तब्ध हैं, जो सीता के संग रहने पर बातें करते से लगते थे ।

लछिमन भैया! सीता के कौन हरी?
दीपक बारि भवन बीचे ढूँढ़ेवँ, सूनी सेज परी।...

इसके बाद कथा-सूत्र लंका में अशोक वाटिका में बैठी सीता से जुड़ता है। बीच के प्रसंगों का पारंपरिक गीतों में उल्लेख भर हुआ है। श्री हनुमान से सीता अपनी व्यथा कहती हैं- "हे कपि! कब मेरे अवध बिहारी आयेंगे, मुझे असीम दुःख है। जब से अयोध्या का राज्य छूटा, तभी से विपत्ति ने पीछा कर लिया। एक देवर लक्ष्मण सुख-दुःख के साथी थे, उन्होंने भी मेरी सुध बिसरा दी। हे कपि! जाकर मेरे राम से कह देना कि अब यहाँ मेरा और जीवित रहना संभव नहीं।"

राम-लक्ष्मण सीता की खोज में वन वन भटक रहे हैं। वन में शबरी सगुन विचार रही है। आज मेरे राम आयेंगे। लंबे लंबे बालों से शबरी राहें बुहार रही है, सुरभि गाय के गोबर से वेदी लीप रही है, गंगा-यमुना का जल लाकर चरण पखारने के लिए रख रही है। कुश की चटाई यत्न से बिछा रही है। आज मेरे राम आसन लगायेंगे। मीठे मीठे बेरों के दोने सजा रही है, मेरे राम भोग लगायेंगे।

सेबरी सोचि रही सगुनवाँ, आज मोरे रामा अइहैं ना।
लंबी-लंबी केस सबरी रहिया बहारै,
आजु मोरे रामा अइहैं ना।
मीठे-मीठे बैरि सेबरी दोनवाँ लगावैं,
राम मोरे भोगवा लगैहें ना। सेबरी...

वन में राम पर विपत्ति पड़ी। वन-वन व्याकुल श्री राम फिर रहे हैं। कहाँ जाकर ढूँढ़ें सीता को? जो मेरी सीता की खबर लगायेगा, उसके समान प्रिय मित्र और कोई नहीं होगा। पहाड़ पर दो बंदर बैठे हैं, सुग्रीव और हनुमान। वे बताते हैं कि विमान पर रावण सीता को लेकर जा रहा था। सीता बिलखती हुई जा रही थीं।

बनहू म राम पै परी भारी विपदा ।
बन-बन व्याकुल राम फिरत हैं, जाइ कहाँ ढूँढौं सीता।

जे मोरी सीता कै खबरि लगावै, सबसे बड़ा मोर मीता।
पहाड़ बइठे बोलैं दुइ बानर, सुग्रीव अउर हनुमंता।
उड़न खटोला पै रावन बैठा, बिलखत जाति रहीं सीता।

हनुमान द्वारा समुद्र लाँघना, सीता की खोज, लंका तहस-नहस के गीत हैं।

श्री हनुमान का स्मरण करता हूँ। जिन्होंने सात योजन का प्रमाण जो समुद्र का है, उसे लाँघकर क्षण भर में पार करके लंका पहुँच गये। मेवा और फल के बाग उजाड़ कर मधुर-मधुर फल तोड़े। पूँछ में आग लगने पर लंका गढ़ पर चढ़ गये, गली-गली घूमने लगे। क्षण भर में लंका भस्म हो गयी। समुद्र में पूँछ डुबाकर आग बुझाई। लंका जलाकर माता सीता के पास हाथ जोड़कर खड़े हुए। उछल कर अपनी वीरता दिखाई कि विश्वास हो जाय कि मेरी रक्षा के योग्य है पुत्र। नीचे से कूदकर ऊपर की छलाँग लगाई और बोले "सीता जी को ले जाऊँगा। लंका होली की भाँति फूँक दूँगा। सिया-राम के चरणों की आशा है, बलिहारी है।"

सत योजन परिमान समुंदर पहुँच गयो छन माहीं।
मेवा फल कर बाग उजारा, वह मधुर-मधुर फल तोरी।
बान्ह लंगूर चढ़े गढ़ लंका, घुमिरत खोरी-खोरी।।
छिन माँ लंका भस्म करि डारत,
लंगूर समुंदर बोरी।
लंका लायो, मातु लगे आयो,
ठाढ़ भयो कर जोरी,
तरकी कूद उपर महि डारत,
सिया लै जाबै बरजोरी।
सिया-राम बलि आस चरन की,
लंका फूँकि देबै जैसे होरी।

सेतुबन्ध बनाने की एक लोक कथा है जिसमें श्रीराम नाम से पत्थर तैरने की श्री राम परीक्षा लेते हैं। उन्होंने एक पत्थर उठाकर पानी में फेंका, वह डूब गया। वे हनुमान से बोले "राम नाम के बल पर पत्थर के तैरने वाली बात झूठ है, जब मेरे हाथ से फेंकने पर डूब गया तो।" हनुमान जी बोले- "प्रभु! आप नहीं समझेंगे, भक्त के विश्वास की शक्ति को। आपने भक्त के विश्वास की परीक्षा ली। फिर आपने जिस पत्थर को अपने हाथ में उठा लिया था, उसका मन तो प्रसन्नता और उमंग से आकाश को छूने लगा होगा कि प्रभु ने अपने हाथ में उठाया। पर जब आपने उसे फेंका, तो फिर डूब मरने के अतिरिक्त वह और क्या करता कि ऐसा अधम मैं कि प्रभु ने उठाया, अपनाया फिर फेंक दिया।"

सीता अशोक वाटिका में हनुमान का परिचय पूछती हैं- "हे महावीर ! तुम्हें तो मैं पहचान ही नहीं पा रही हूँ।" हनुमान- "मैं अंजनी का पुत्र हूँ, राम का चरण सेवक हूँ। सीता की सेवा में रहता हूँ।" सीता- "जो तुम राम के दूत हो तो कोई चिह्न दिखाओ।" हनुमान जी ने राम की मुँदरी सीता के आगे डाल दी। सीता नयनों से अश्रु गिरने लगे।

तुम्हैं त हम चीन्हित नाय महाबीर।
केकर पुत्र, केकर हया पायक, केकरे तूँ रहथ्या हुजूर।
अंजनी क पुत्र, राम कर पायक, सीता के रहिथे हुजूर।
तुहें त हम चीन्हित नाय महाबीर।
जौ तूँ हया राम कै पायक, चीन्ह देखावो महाबीर।
राम क मुंदरी सीता आगे डारैं, बहै लगे नयना से
नीर।

सीता विकल हो कर कह उठीं- "हे कपि! मुझे असीम कष्ट है। यह तो बताओ कि अवधबिहारी कब आयेंगे? जब से अयोध्या का राज्य छूटा तबसे विपत्ति ने पीछा कर लिया । देवर लक्ष्मण मेरे सुख-दुःख के साथी थे, उन्होंने भी मेरी सुध बिसरा दी। जाकर मेरे प्राणनाथ से कहना कि शीघ्र आयें मुझे ले चलने को। नहीं तो विष खाकर प्राण दे दूँगी, शरीर को चिता पर जला दूँगी।"

कपि कब ऐहें अवध बिहारी, हमैं दुःख भारी।
अरे जबसे राज अवध के छूटे, तब से विपति पछारी,
देवर लखन ! रहे मोर साथी, वनहू अब सुध बिसराई,

हमैं दुःख भारी।...

राम-रावण युद्ध छिड़ गया। रावण का पुत्र मेघनाद लक्ष्मण पर शक्तिबाण चला देता है । लक्ष्मण गिर पड़ते हैं, उनको गोद में लेकर व्याकुल राम कातर होकर जगा रहे हैं, उठा रहे हैं- "भैया! तनिक जगो तो।" अरे किसका हरण हुआ? किसका मरण हुआ? किसको शक्तिबाण लगा? सीता का हरण हुआ। दशरथ का मरण हुआ। लक्ष्मण को शक्ति लगी। माता-पिता को छोड़कर यहाँ वन में आये तुम। वन में तुमने साथ दिया। शीत, धूप सहा। कभी दुखित नहीं किया, सेवा और प्यार ही दिया। अब कौन इतना दुलार-प्यार करेगा? आँखें खोलकर तनिक देखो तो, मुँह से तनिक बोलो तो। मैं माँ को क्या जवाब दूँगा? तनिक जगो भाई!

लछिमन के कनियाँ लिहे राम, तनिकी जागा भैया।...
लछिमन के लागा सक्ती-बान, तनिकी जागा भैया,
माई-बाप छोड़ आया, बनवा माँ साथ दिया,
अब के करिहैं यतना दुलार, तनिकी जागा भैया,
आँखिया से देखा भैया, मुँहवा से बोला भैया,
काव देबौं मइया के जवाब, तनिकी जागा भैया।

लक्ष्मण की मूर्छा दूर नहीं हुई। राम विह्वल होकर हनुमान से कह उठते हैं- "हे कपि! बताओ तो मैं क्या करूँ? भाई के बिना मेरी तो बाँह ही टूट गयी। माता-पिता ने वनवास दिया, वन में पत्नी का हरण हुआ, इसके कारण अपने लक्ष्मण लाल को हाथ से गँवा रहा हूँ। मेघनाद ने प्रातः ही आकर मुझे लूट लिया (प्रातः से तात्पर्य लक्ष्मण की चढ़ती वय से भी है)। वहाँ भरत तो भरतकुंड पर खड़ाऊँ खूँटी लिये बैठे हैं। हमारे पिता चिंता में मर ही गये। उन पर काल की मुट्ठी का प्रहार पड़ा। मैं कैसे छाती और सिर पीटूँ? अब कौन मेघनाद को मारेगा? मुझसे तो विधाता ही रूठ गया। मेरी कमर तोड़कर मेरा भाई चला गया। अब किसके बल से उठूँ, शक्तिहीन हो गया हूँ, मेरा सारा शरीर झूठा हो गया। हे पवनसुत ! तुम शीघ्र जाकर सूर्योदय से पहले बूटी लेकर आओ। उसकी घूँटी दो, नहीं तो भाग्य फूट जायेगा, रूठ जायेगा।"

कपि बतावा का करी? भैया बिना बँहियाँ टूटी।
मातु-पिता बनवास दिये हैं, गई नारि बन लूटी।
वन के कारन लखनलाल मोर, गये हाथ से छूटी...

श्री हनुमान जी राम की वेदना से विह्वल हो उठे। वे संजीवनी बूटी लेने के लिए चल पड़े। संजीवनी बूटी सहित पहाड़ ही उठा लिया। पहाड़ लेकर तीव्र वेग से उड़ते हुए लंका से लौट रहे थे, मार्ग में अयोध्या नगरी पड़ी। भरत जी ने समझा कि कोई निशाचर माया है, उन्होंने नीचे से बाण मार दिया। हनुमान जी पहाड़ सहित अवध भूमि पर गिर गये। गिरते ही राम! राम! की गुहार लगाई। सुनते ही भरत दौड़ पड़े, पूरा समाचार जानकर भरत दुखी हुए और बोले- "मेरे बाण पर आप बैठ जाइए, मैं अभी क्षणभर में लंका पहुँचाता हूँ। आप शीघ्र जाइए और हमारा संकट दूर करिए।"

संजीवनी का पर्वत लइके, चले जात हनुमान सुना।
उड़ते पड़ी अयोध्या नगरी, भरत जी मारेन बान सुना।
राम! राम! कहि लिहे पहड़वा, तुरत गिरे हनुमान सुना।
राम ही राम रटनिया सुनिकै, भरत भये हैरान सुना।...
लछिमन मूर्च्छित शक्ति बान से, लइके बूटी जात सुना।
बैठो हमरे यही बान पै, तुरतै करौ पयान सुना।
मोरे भइया कै प्राण बचाओ, महावीर हनुमान! सुना।

सीता के सुख-दुःख और ताप के साथी देवर लक्ष्मण अपनी सीता भाभी का देवर की भाँति दुलार भी करते हैं। सीता की सुकुमारता व्यक्त करने के लिए दूध के फाहे से देवर लक्ष्मण द्वारा उन्हें जगाने का चित्र है। इसीलिए लक्ष्मण सीता के ही देवर नहीं, हर भाभी के देवर बन जाते हैं, क्योंकि लक्ष्मण जैसा सुख-दुःख में साथ निभाने वाला और कोई देवर नहीं हुआ। इसीलिए हर कन्या यह कामना करती है कि उसे लक्ष्मण सा देवर मिले। जो

जगत्जननी सीता के असीम दुःखों के साक्षी और साथी थे, विपत्ति के नायक थे, वह लक्ष्मण देवर हर विवाह के अवसर पर याद किये जाते हैं, हर दुःख में, हर सुख में, लोक मन में अवतरित होते रहते हैं।

राम लक्ष्मण को मना करते हैं कि तुम मेघनाद को मारने का बीड़ा मत खाना (मत उठाना)। कलमदान, स्याही मँगवाकर राम एक परचा लिखते हैं। उसमें पहला नाम अपना लिखते हैं, दूसरा राम के युद्ध का ।

रावण का पुत्र मेघनाद दल के साथ खड़ा होकर चुनौती देता है- "जो कोई भी वीर राम के दल में हो धनुष उठाकर हमसे लड़ने को आ जाये।" उसकी यह गर्वोक्ति सुनकर लक्ष्मण क्रोध से जल उठते हैं। हनुमान ने गदा उठा ली, लक्ष्मण ने बाण चढ़ा लिया। बाण मारते ही लंका गढ़, लंका के अचल दुर्गस्वरूप मेघनाद गिर पड़ा। सिर उसका वहाँ जाकर गिरा जहाँ सुलोचना रानी (मेघनाद की पत्नी) बैठी थी। सुलोचना रुदन करती बोली मेरी "लंका में तो आज आग लगी।"

बीरा मति खाया लछिमन मोरे भाई।
कलमदान स्याही मँगवाये पुरचा लिखत बनाई।
पहिला नाम हरि आपन लिखत हैं,
दुसरी राम की लड़ाई।
मेघनाद रावन के बेटा, ठाढ़ै दल गोहराई।
जौ केहु वीर राम के दल माँ,
धनुष उठाइ करै हमसे लड़ाई। बीरा...
यतनी बात जब सुने हैं लछिमन,
जलि के खाक होइ जाई।
हनुमान जब गदा उठाई, लछिमन बान चढ़ाई।
मारत बान गिरत गढ़ लंका,
सीस गिरत जहँ बैठी सुलोचनि रानी।...

सीता की दिव्य परीक्षा में दिव्य अग्नि, आदित्य, गंगा, तुलसी परीक्षा आदि के वर्णन मिलते हैं । सीता हर परीक्षा में खरी उतरती हैं। इस प्रसंग के भी बहुत कम गीत मिले। साहित्य में केवल अग्नि परीक्षा की बात की गयी है। जिसका अलौकिक पक्ष भी प्रस्तुत किया है कि सीता को राम ने वनवास प्रारंभ होते ही अग्नि में प्रवेश करा दिया था और सीता की छाया का हरण रावण द्वारा किया गया था। सीता की अग्नि परीक्षा का उद्देश्य था छाया सीता को अग्नि में डालकर सीता को वापस प्राप्त करना।

सीता का पत्नी रूप से त्याग करने के कारण की एक लोक कथा है कि राम के वन जाते समय महाराज दशरथ ने अपनी शेष आयु के अंतिम वर्ष श्री राम को दान कर दिये थे। राजगद्दी पर बैठने के बाद राम अपनी आयु पूरी कर चुके और पिता की आयु जी रहे थे। इसी कारण सीता को तपोवन में भेज दिया। राम यह भी चाहते थे कि उनकी संतान अयोध्या के सुख-वैभव में नहीं, ऋषियों के आश्रम में, वन में पलें, जिससे कि तेजस्वी बनें।

वनवास से लौटकर राम का पहुनाई के लिए जनकपुर जाने का वर्णन भी गीतों में हुआ है। राजा दशरथ का राम के राजतिलक तक जीवित रहने का भी उल्लेख मिलता है जो लोक का स्वप्न है। लोक मन चाहता है कि महाराज दशरथ यह सुख देखें।

लोक साहित्य राम और सीता के प्रत्यक्ष अनुभव से भरा है। गीतों में एक माँ का हृदय किस प्रकार अपने बच्चों के साथ वन-वन घूमता है इसका सजीव और मर्मस्पर्शी चित्र मिलता है। हर ऋतु के गीत रामकथा गाते हैं। लोक के बारहमासा, चौमासा गीतों की परम्परा में भी रामकथा की अनेकानेक भंगिमाएँ हैं। चैत्र माह की शुभ रामनवमी को रामजन्म के उल्लास से प्रारम्भ करके बारहों महीनों के सुख-दुख रामकथा को जोड़ा गया है। हर ऋतु का सुख भी राम के बिना व्यर्थ हो जाता है और विछोह की पी दुख भी ऋतु को उदास कर जाता है।

बारहमासा गीतों में पूरी राम वनवास गाथा है।

चैत्र मास में राम का जन्म हुआ चंदन से घर लीप कर गज मोतियो से चौक पूरा गया। सोने के कलश चौक

पर रखे गये। वैशाख माह में ऋतु विष के समान लगने लगती है। धरती और आकाश तड़पते लगते है। मेरी गति जल बिना तड़पती मीन जैसी कैकयी ने कर दी है। ज्येष्ठ महीने में 'लू' लगती है। और राम लखन सीता के साथ वन में हैं। जिनके चरण कमल के समान है आषाढ़ मास में चारों ओर बादल गरज रहे। कौसल्या अवध पुर धाम में बिलख रही है। मेरे बच्चे भीग रहे होंगे अयोध्या के महालाटारी किस काम की है ? सावन में नदी तालाब सब भर गये हैं। धरती पर साँप गौजर घूम रहे होंगे । भादो में मेरे बच्चे भीग रहे होंगे। सीता की चूनर, राम और लक्ष्मण की पाग और मुकुट भीग रहा होगा। सीता का सोलहो श्रृंगार भीग रहा होगा। हे देवता मेरी सीता का सिंदूर न भीगने पाये। कुवार का महीना धर्म का महीना है मेरे राम यहाँ होते तो धर्म का कार्य दान आदि करते। मेरे घर में विरह की फाँस लगी है। अपने जीवनकाल में राम की लौटने की आशा में प्राण अटके है। कार्तिक महीने में सभी दीपक जला रहे है लेकिन मेरी अयोध्या में अँधेरा है। अगहन में सभी श्रृंगार कर रही है। पर मेरी सीता वन में है। पूस महीने में तुषार पड़ रहा है। रातें तलवार की धार बन गयी है। कुस के आसन पर मेरे बच्चे कैसे सो रहे होंगे? माघ में बसन्त ऋतु है मैं बच्चो के बिना कैसे जिऊँ? फागुन महीने में भरत जी राम की चरण पादुका पर चँवर डुला रहे है, अबीर घोलते हुए दुखी है कि किस पर रंग डालूँ? राम वन से लौटकर अयोध्या धाम आये सभी का मन पुलकित हो गया। जो यह बारह मासा गायेगा वह बैकुंठ धाम जायेगा।

चैत अजोध्या जनमें राम,
चन्नन से कौसिल्या लिपावैं धाम।।
जे एहि गावैं बारहमासा, से पावें बैकुण्ठे बासा।
गावैं तुलसी अवधपुर धाम, बन से लौटें सिय,
लछिमन, राम।

सर्वाधिक महत्त्व की बात तो यह है कि ये गीत सामान्य जन के सुख-दुःख के साथ रामकथा के पात्रों को सहभागी बनाकर रामकथा को मनुष्य मात्र की कथा के रूप में नया आयाम देने वाले हैं। राम की कथा का अंतर्द्वन्द्व कथा में करुणा की पीठिका तैयार करता है। राम का यह अंतर्द्वन्द्व बालि के वध में उभरा है, श्री भरत की बात न मानने में उभरा है। प्रजा भी चाहती है कि लौट जायें राम, भरत का मन रखने के लिए ही ।

लोकमानस में राम-सीता मिथक और प्रतीक नहीं हैं। वे जन-जन के साथ चलते हैं। हर घर में खेलते हैं, सबके सुख-दुःख में सहभागी हैं। राम-सीता जहाँ-जहाँ जाते हैं, लोक उनके पीछे-पीछे चलता है, उनकी जय बोलता है, उनसे रूठता है, उन्हें मनाता है और उनके बने रहने में ही संसार की समस्त संपदा प्राप्त करने का सुख पाता है ।

मानव-मन जब तक राम कथा से एकात्म भाव स्थापित करता रहेगा तब तक विश्व में शांति रहेगी, क्योंकि राम विश्व शांति और सौहार्द की प्रतिमूर्ति हैं। वैरी भी उनकी प्रशंसा करते हैं। राम के सामने किसी विद्वेष, ईर्ष्या, मद-मत्सर के भाव टिक ही नहीं सकते। जहाँ राम हैं वहाँ अभिराम सौहार्द भाव है, अपनत्व है, सुख है, दुख में भी धीरज है। राम कथा के ये अभिप्राय अपनी सार्थकता तभी पायेंगे जब राम भाव के हम उत्तराधिकारी बने रहेंगे।

'श्रीवत्स' 45 गोखले
विहार मार्ग, लखनऊ-226001
मो0- 9335904929

रामकथा का अनन्त विस्तार

➲ डा0 रश्मिशील

राम आधुनिक चिंतन में सम्पूर्ण मानवता के सार्वकालिक, सर्व प्रिय लोक हितैषी इतिहासपुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। राम का चरित्र एक ऐसी धरोहर है, जिसमे भारतीय संस्कृति के समस्त अपूर्व एवम् अमूल्य गुण विद्यमान है। छांदोग्य उपनिषद में ऋषि सनत कुमार कहते हैं कि जो व्यापक है उसमें ही सुख है, जो संकुचित होता है उसमें सुख नहीं होता "यो वै भूमा तत्सुखम् न अल्पे सुखमस्ति ।"

हमारी जिस संस्कृति में हृदय की विशालता को सुख के साथ जोड़ा गया है, उसके सामने आज कई तरह के खतरे पैदा हो चुके हैं और उनसे बचने के लिए या उनका सामना करने के लिए जो मार्ग दिखता है, वह है हमारे पारंपरिक आदर्श चरित्र। श्री राम व श्रीकृष्ण हमारे जनमानस के ऐसे ही विशद व्यक्तित्व हैं, जो हमें उचित पथ का दिग्दर्शन कराते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि-

"भारतीय संस्कृति की आत्मा वेद है,
उपनिषद उसका तत्व है,
भगवत गीता उसका हृदय है,
रामायण और महाभारत उसकी आँखें हैं।"

600 वर्ष ईसा पूर्व आदि कवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की, महाकवि के लिए जो आत्मदर्शन था वही पाठक समाज के लिए जीवन दर्शन बन गया। नारद जी से राम के आदर्श गुणों को सुनने के बाद जब वे तमसा नदी के तट पर टहलते हुए नदी के निर्मल जल प्रवाह को देखकर प्रसन्न थे, तभी क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक की शिकारी के हाथों मृत्यु देखकर वह विह्वल हो उठते हैं और वह सोचने लगते हैं कि आखिर मनुष्य इतना निष्ठुर क्यों हो जाता है अपने साथ जीवन का आनंद लेने वाले सहजीवियो को जीने के अधिकार से वंचित करने वाले जीवों को जीने का क्या अधिकार है? उनके अंदर का शोक श्लोक बनकर प्रकट होता है-

मां निषाद प्रतिष्ठाम् त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम्।।

भारतीय साहित्य की यह पहली सारस्वत अभिव्यंजना केवल आदि काव्य का अक्षरबीज नहीं है, बल्कि संपूर्ण सृष्टि का बीजाक्षर भी है, जो समस्त रामाख्यान को अभीष्ट पुष्टि प्रदान कर इसे शाश्वत रूप देता है। हालाँकि ऐसा माना जाता है कि इससे पूर्व भी एक रामायण लिखी जा चुकी है जिसका उल्लेख पराशर संहिता में है। यह रामाख्यान हनुमान जी ने पत्थरों पर उत्कीर्ण किया था, साथ ही लोक गाथाओं, लोकगीतों के माध्यम से राम कथा का सतत प्रवाह बना रहा है। आज भी राम के जीवन पर आधारित सर्वाधिक ग्रंथ हैं। डाक्टर कामिल बुल्के, जिन्होंने राम पर आधारित पहला शोध प्रबंध लिखा

था, उन्होंने 350 ग्रंथो का उल्लेख किया था। संस्कृत में विष्णु पुराण, ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, हरिवंश पुराण भागवत् पुराण, गरुड़ पुराण, नरसिंह पुराण, मत्स्य पुराण, स्कंद पुराण, अग्नि पुराण, वायु पुराण में राम का उल्लेख है, साथ ही अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, अद्भुत रामायण, भुशुंडि रामायण, वशिष्ठ रामायण, हनुमान्नाटक, प्रसन्न राघव भी काफी लोकप्रिय हैं। संस्कृत में भास, कालिदास, भवभूति आदि कवियो ने रामाख्यान लिखे हैं, पाली में अनाम जातक, दशरथ जातक तो प्राकृत में उत्तर पुराण कथा, जैन रामायण, पउम चरिउ, महा रामायण आदि अनेक ग्रंथ लिखे गए हैं। इसी प्रकार तेलुगु में रंगनाथ रामायण, भास्कर रामायण, मोल्ला रामायण, कन्नड़ में पंप रामायण, सेतुराम, ओड़िया में विचित्र रामायण, विलंका रामायण, बंगाल में कृतिवास रामायण, मेघनाथ वध, पंजाबी में गोविंद रामायण, दशावतार,रामावतार, गुजराती में नागरकृत रामायण कहाव की रामायण, अवधी भाषा में तुलसीदास कृत रामचरित रामायण इत्यादि अनेक राम कथाएँ प्रचलित हैं । वर्तमान में राम कथा की व्याप्ति अंतर्राष्ट्रीय है। थाईलैंड, इंडोनेशिया, जावा, कंबोडिया, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिनाद, गयाना, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका), नेपाल, अफगानिस्तान, बेल्जियम आदि विभिन्न देशों में कथांतर के साथ राम कथा जारी है। कहने का तात्पर्य यही है कि हजारों वर्ष पहले आदि कवि के हृदय में रामायण लिखते समय जो स्पंदन जगे थे, वह काल के प्रदीर्घ पट को पार कर आज भी जनमानस को झंकृत करते हैं। इससे महाकाव्यों की पुरातनता के साथ ही सनातनता भी सिद्ध होती है। इसका कारण यही है कि दिन, महीना, वर्ष, शताब्दियाँ, सहस्राब्दियाँ बदलती हैं, परंतु मनुष्य नहीं बदलता क्योंकि समस्याएँ नहीं बदलती। हम देखते हैं कि समय ने बहुत कुछ बदल दिया, जैसे गुफा का स्थान मकान, तीर का बुलेट, रथ की जगह कार और घोड़े की जगह मोटरसाइकिल का प्रयोग हो रहा है, परंतु हमारे भीतर चलने वाला युद्ध अब भी जारी है। सच्चाई, करुणा, प्रेम,अहिंसा की शक्ति से झूठ, कटुता, द्वेष और हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ सदियों से आपस में टकरा रही हैं। युगों युगों से चलने वाले अतः संघर्ष पूर्ववत् ही हैं। इसीलिए राम आज भी समसामयिक बने हुए हैं।

रामायण अर्थात राम का अयन या गति अर्थात् राम के जीवन की गति या जीवन का मार्ग। डा0 राधाकृष्णन् के अनुसार "यदि गति और मार्ग दोनों एक ही शब्द में कहना हो तो हम कह सकते हैं रामायण अर्थात राम का गति पथ।"

यह गति पथ ही हमारे जीवन में भी है बस अच्छा या बुरा हमें तय करना होता है। तुलसीदास जी कहते हैं, "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।" मनुष्य में राम और रावण दोनों ही विद्यमान रहते हैं, मात्रा कम या अधिक हो सकती है। अगर केवल रामत्व ही हो तो रावण का चरित्र पराया हो जाता और यदि रावण ही हो तो राम का उदात्त चरित्र समझना असंभव हो जाता। गुणवंत शाह का कथन है- "राम महान् हैं इसलिए अनुकरणीय है, अपनी इच्छा, सुकर्म और दृढ संकल्प के द्वारा हम अपने चरित्र का परिष्कार कर सकते हैं। इसी प्रकार रावण पामर है परंतु उसकी पामरता का कुछ अंश हमारे भीतर भी है। अच्छे बुरे का संघर्ष हमारे अंतर में निरंतर चलता रहता है इसीलिए राम कथा हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी बासी नहीं हुई क्योंकि यह कथा हमारे शाश्वत मूल्यों की कथा है। राम कथा का एक-एक चरित्र कवितामय है इसीलिए इसे मानवता का महाकाव्य कहा जाता है। छोटा सा छोटा पात्र अपने आप में महत्वपूर्ण है जो धर्म और सत्य की लड़ाई में खुद को बलिदान करने के लिए तत्पर है। बलिदान की भावना से भरा हुआ जटायु हो या प्रतीक्षा की साक्षात्कार मूर्ति शबरी, वियोगिनी उर्मिला, बैरागी भरत, कर्तव्यनिष्ठ

लक्ष्मण या प्रचंड शक्ति युक्त हनुमान। सभी पात्र परहित के लिए सर्वस्व त्याग के लिए तत्पर दिखाई देते हैं। राम स्वयम् मर्यादा और धर्म के अप्रतिम ऊर्ध्वारोहण हैं। इसीलिए जब राम कथा का श्रवण अथवा पाठन होता है तो जस का तस बने रहना आसान नहीं होता। यह प्रभाव ही हमारी संवेदना है और संवेदनहीनता हमारा आज का संकट है। स्वराज की प्राप्ति के बाद किसी ने गाँधी जी से पूछा था, आपकी दृष्टि में स्वराज्य प्राप्ति के बाद भारत की सबसे बड़ी समस्या क्या है?" तब उन्होंने उत्तर दिया था, "बुद्धिमान मनुष्यों की हृदय हीनता।" यह हृदयहीनता ही आज की बहुत सी समस्याओं का कारण है और यही रावण तत्व है। यानी दस गुना समर्थ मस्तिष्क और संवेदन शून्य हृदय, जिसके कारण वह मारीच की चेतावनी, मन्दोदरी की सलाह और विभीषण की नीति सम्यक् बातें नही सुनता। परिणामस्वरूप अनेक संघर्षो का जन्म होता है व विनाश का कारण बनता है। हमारा आज का जीवन भी संवेदन शून्यता के कारण उपद्रवों से भरा हुआ है इसीलिए रामाख्यान या राम का चरित्र पुरातन होकर भी शाश्वत सनातन है क्योंकि राम के चरित्र में मानवता के महान् धर्माचरण को प्राथमिकता दी गई है । जो आज आधुनिकता के मिथ्याभिमान से भरे हुए हैं, वह नहीं जानते कि तीर की जगह गोली से मरने की अंतिम चीख की पीड़ा में कोई अंतर नहीं होता। राम महान् थे क्योंकि वे मानवता की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे इसके लिए वे देश की सीमा लंका तक युद्ध करने जाते हैं और वहाँ विजय प्राप्त कर स्थायी सुशासन की स्थापना करते हैं। उन्होंने रावण को परास्त कर उन सभी द्वीपों को भी स्वतंत्र कर दिया था जो रावण के आधिपत्य में थे। राम के विवेक पूर्ण आचार-व्यवहार ने उन्हे मर्यादापुरुषोत्तम बनाया।

नारद जी वाल्मीकि को राम का परिचय देते हुए कहते हैं -

विष्णुना सदृशो वीर्ये, सोमवत्प्रिय दर्शनः
कालाग्निसदृशः क्रोधे क्षमया पृथ्वीसमः

अर्थात्, विष्णु के समान बलवान, चंद्रमा के समान दर्शनीय, काल के समान क्रोधी और पृथ्वी के समान क्षमाशील हैं। उन्होंने राम को इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न मानवोचित गुणो से युक्त पुरुष कहा हैं- "इक्ष्वाकु वंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।" परंतु धीरे-धीरे राम मानवेतर हो गए। भवभूति कृत उत्तर रामचरित में रघुवंशी राम के शौर्य, करुणा युक्त रूपों का व्यापक वर्णन है। इसके बाद अद्भुत रामायण और आनंद रामायण में राम के मानवीय चरित्र का वर्णन गौड रखते हुए उनके प्रति भक्ति, ज्ञान, उपासना युक्त ब्रह्म राम पर अधिक बल दिया गया । परवर्ती रचनाकारों पर इस परिवर्तन का बहुत प्रभाव पड़ा और तुलसीदास तक आते-आते राम ब्रह्म के परमार्थ रूप बनकर समाज, ईश्वर और परम ब्रह्म के रूप में परिवर्तित हो चुके थे। तुलसी के राम भले ही दशरथ नंदन हो परंतु वे वेदांत उपनिषद् प्रतिपाद्य निर्गुण निराकार ब्रह्म हो चुके थे, जो बिना पैर के ही चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के कर्म करता है

बिनु पद चालइ, सुनइ बिनु काना।
कर बिनु करम करइ विधि नाना।।

ऐसे लोकादर्श राम पिता के प्रण की रक्षा के लिए तपस्वी बनकर अरण्य का कठोर जीवन चुनते हैं तो वह अवतारी हो जाते हैं, जो पुराण, इतिहास, वेद, उपनिषद् के लोकेषणा का निष्णात निष्कर्ष है। वस्तुत आज के राम का परिचय यदि संसार के सभी देशों में है तो वह तुलसी के राम ही हैं, जो मर्यादा पुरुषोत्तम है। जिनके माध्यम से आदर्श परिवार, आदर्श समाज, आदर्श राज व आदर्श युग की प्रतिष्ठा करने का प्रयत्न किया गया है। राम कथा केवल ऐतिहासिक सत्य नहीं, वह भारतीय संस्कृति चेतना का प्रतीक है। इसके सभी पात्र व घटनाएँ व्यक्ति मूल्य, पारिवारिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य, राज

व्यवस्था, अनुशासन, दर्शन व अध्यात्म विधान को प्रतिष्ठित करने के निमित्त हैं। भारतीय दर्शन में चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को महत्व दिया गया है, जिसमें सर्वाधिक बल मोक्ष को दिया जाता है। राम नाम एक ऐसा संबल है जिसके स्मरण मात्र से सारी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। राम ने अपने समय में जो कार्य किए, वे सब हमारे आदर्श जीवन मूल्य बन गए। माता-पिता, भाई-भाई, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, पति-पत्नी आदि समस्त सम्बन्धों का आदर्श रूप हमें रामचरित में मिलता है। आज जब संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, पारिवारिक ढाँचा बदल रहा है ऐसे में जबकि ज्ञान परंपरा का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवाह बाधित है, तब राम परिवार के आदर्श, स्नेह व सहयोग को आधार बनाकर आपसी सम्बन्धों, कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को समझा जा सकता है। राम लक्ष्मण और सीता वनवास से लौटते हैं तो माता कौशल्या लक्ष्मण से आकुल होकर पूछती हैं कि "दिखाओ तुम्हें कहाँ शक्ति लगी थी और तुम्हें कितनी वेदना से गुजरना पड़ा?" तब लक्ष्मण उत्तर देते हैं कि "वेदना राघवेंद्रस्य केवलंम् व्रणिनो वयम्" (हमें तो केवल घाव हुआ था, पीड़ा तो राघवेंद्र को हुई) बस यही राम नाम का सार है। भवभूति ने उचित ही कहा हैं- रामस्य करुणो रसः।

राम के चरित्र को तुलसीदास जी उद्भासित करते हुए लिखते हैं-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा ।
मात-पिता गुरु नावहि माथा।।
आयसु मांगि करहि पुर काजा।
देखि चरित हरषहि मन राजा।।

इसी भाँति भरत का चरित्र श्रद्धा, समर्पण और मर्यादा का अप्रतिम रूप है, कहीं-कहीं तो वे राम से भी आगे निकल जाते हैं। राम की चरण पादुका लेकर राज चलाना, स्वयं नन्दी गाँव में निवास करना, पर्णकुटी में रहना और भूमि पर सोना। राम और भरत मिलाप का दृश्य तो इतना अद्भुत अभिभूत करने वाला है कि "धीर धुरंधर धीरजु त्यागा" यानी कि भरत के त्याग और मर्यादा के आगे धर्म की धुरी धारण करने वाले राम भी अपनी धैर्य को त्याग देते हैं। राजधर्म की सीख जब राम भरत को देते हैं तो वह कहते हैं कि "मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।" सुशासन की जो छवि भारतीय लोक मानस में बसी है उसका बहुत अधिक श्रेय तुलसीदास को जाता है। रामराज की जो अवधारणा तुलसी के समय थी, लगभग आज की स्थिति भी वही है इसीलिए गाँधी जी ने न केवल उसका स्मरण किया बल्कि उसी के अनुरूप यथार्थ जीवन जीने के लिए अग्रसर भी हुए।

मानव की स्वतंत्रता उसकी सत्ता की तरह होती है इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता परंतु स्वीकार की एक सीमा होती है अर्थात् हम तभी तक स्वतंत्र हैं जब तक सामाजिकता की हानि ना हो। यह सारे तथ्य तुलसी के रामराज में भी मिलते हैं और हमारे संविधान में भी। राम राज्य में वर्णाश्रम की व्यवस्था है परंतु उसमें अस्पृश्यता का भाव नहीं है। राम का शबरी, किरात, भील, कोल आदि से संबद्ध इसी बात को दर्शाते हैं। जब वशिष्ठ भरत से कहते है कि "यह (गुह) राम का मित्र है" तो भरत ने उसे उठा कर गले लगा लिया कि मानो लक्ष्मण से मिल रहे हो-

करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाई।
मनहु लखन सन भेंट भई प्रेमु न हृदय समाई।।

यद्यपि रामराज में राजतंत्र की व्यवस्था थी परंतु राजतंत्र निरंकुश नहीं था। राजा प्रजा एक दूसरे के सुख-दुख में सहभागी है इसीलिए राम के जन्म के समय घर-घर में आनंद मनाया जाता है तो वनवास के समय पूरी प्रजा दुखी होती है । एक प्रकार से राजतंत्र तो है परंतु वह प्रजातंत्र के करीब है । राम के आदर्श व्यापक हैं, उनका धर्म सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित।... "सगुनहि-अगुनहि

नहि कछु भेदा।" कहकर सगुण और निर्गुण में समन्वय के साथ ही वैष्णव व शैव मतावलम्बियों को भी समन्वित होने का संदेश प्राप्त होता है। मानस में राम शिव के भक्त हैं तो शिव राम के भक्त हैं। धार्मिक परंपरा के यह मूल्य आज भी स्वीकार और ग्रहण करने योग्य हैं-

हरि के पंकज कपि कै सीसा।
देखि के मगन भए गौरीशा।।

राम की कथा का हमारी संस्कृति में गहरा प्रभाव है। हमारे ऊपर दुख है तो राम, सुख है तो राम, आश्चर्य में राम, घृणा में राम, नमन में राम, धिक्कार में राम, अभिवादन में राम और जीवन के अवसान में भी राम नाम सत्य है।

राम हमारे आदर्श हैं, सत्य हैं, ईश्वरीय हैं और लोकनायक भी हैं इसीलिए हमारे पर्व और त्योहार हमारी लोक परंपरा सब राम में है । हमारे लोकगीतों में राम और उनके परिवार का आलोक दिखाई देता है। सावन में झूला झूलते समय गाए जाने वाले एक लोकगीत में सीता की कोमलता का वर्णन है-

झूला धीरे से झुलाओ सुकुमारी सिया है,
झूले अवध बिहारी और संग सिया प्यारी,
तन मन बलिहारी सुकुमार सिया है।

इसी प्रकार होली गीत में राम का वर्णन मिलता है-

होली खेले रघुवीरा अवध मा होरी खेलै रघुवीरा
कहिके हाथ कनक पिचकारी,
कहिके हाथ अम्बीरा, अवध...।

लोकगीतों में पुत्र जन्म के समय गाए जाने वाले सोहर में राम की छवि का मनमोहन दृष्टव्य है-

चौतैह तिथि नवमी ते नौबत बाजै हो,
बाजै दसरथ राजकुमार कौसल्या रानी मंगल हो।

इसी प्रकार विवाह गीतों में भी वर को राम और वधू को सीता के रूप में चित्रित किया जाता है। संस्कार गीतो में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता इत्यादि की मोहक छवियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। एक गारी गीत द्रष्टव्य है-

निहुरे निहुरे परसे जनक जी
धोतिया मैलि होइ जाइ कि हाँ जी,
जेवन बैइठे राम लखन सब
सखियाँ देवै गारी कि हाँ जी।

राम जन जन के हैं इसीलिए वे देश काल जाति की सीमा से परे हैं। अनेक मुस्लिम कवियों ने भी राम के विविध रूपों का विभिन्न प्रकार से वर्णन किया है। मशहूर शायर कैफी की निम्न पंक्तियाँ दर्शनीय है -

यह देख जो हाल हुआ रामचंद्र का,
मुमकिन नहीं जनाब-ए-कलम कर सके अदा।
पास इसके जाके बैठा अयोध्या का बादशाह,
वह दिन की कैफियत थी कि मुँह सिला हुआ।।

जफर अली खान लिखते हैं -

नक्स ए तहज़ीब ए हुनूद अब भी नुमायाँ है अगर,
तो वह सीता से है, लक्ष्मण से है और राम से है।।

रहीम दास जी नीतिपरक दोहों में राम का वर्णन मिलता हैं-

अनुचित वचन न मानिए, जदपि गुरायसु गाढि।
है रहीम रघुनाथ ते सुजस भरत को बाढि।।

खुसरो की मुकरियों में राम का जिक्र मिलता है-

बखत बखत मोहे वा की आस
रात दिन ऊ रहत मो पास
मेरे मन को सब करत है काम
ऐ सखि साजन? ना सखी राम।

नजीर बनारसी राम के साथ-साथ तुलसीदास जी को महत्व प्रदान करते हैं-

जी राम को वनवास दिया दशरथ ने
उस राम को घर-घर पहुँचा दिया तुमने।

रीतिकालीन कवि सेनापति राम के यश का गायन करते हुए कहते हैं -

देव दया सिंधु सेनापति दीनबंधु सुनौ,
अपने विरद तुम्हें कैसे विसरत हैं।
तुम हो हमारे धन, तोसो बाँध्यो प्रेमपन,
और से ना माने मन तोही सुमिरत हैं।

वस्तुतः राम का चरित्र इतना व्यापक है कि गुप्त जी के शब्दों में कहें तो-

राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।

हम वर्तमान की समस्याओं का सहज समाधान रामाख्यान में पाते हैं। हमारे सामने आज पर्यावरण संरक्षण की समस्याएँ हैं परन्तु जब हम प्रकृति और जीवन के मध्य सहजीवन और संस्थागत समायोजन स्थापित कर लेते हैं तो प्रकृति खिल उठती है, इसीलिए प्रकृति को लोक आस्था से जोड़ा गया है और घर-घर में पर्यावरण का महत्व स्थापित किया गया है। जब वनवास जाते समय राम ऋषि भरद्वाज से पूछते है कि उन्हे कहाँ रहना चाहिये तो वे चित्रकूट पर्वत का वर्णन करते हुए कहते है कि यह ऐसा स्थल है जहाँ मन को पाप करने प्रेरणा नहीं मिलती, "न पापे कुरुते मनः" अर्थात् हमारे रहन-सहन और खान-पान का सीधा प्रभाव मन पर होता है। जब पंचवटी में राम निवास करते हैं तो आसपास रहने वाले मुनिगण भी भय मुक्त हो गए, पर्वत, नदी, तालाब, वनों के सौंदर्य में अभिवृत्ति हो गई, सारे पशुओं में पक्षियों में आनंद का भाव प्रसारित हो गया और भ्रमरों का मधुर गुंजन शुरू हो गया-

खग मृग वृन्द आनंदित रहही।
मधुप मधुर गुंजत छवि लहही।।

आज पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में भटकता हुआ मनुष्य पवित्र ग्रंथो में छिपी आनंददायिनी शक्ति को नहीं देख पाता है और वह यौनकुंठाएँ, असंतोष, विद्रोह, संत्रास, अशांति आदि अनेक विषैली आत्मघाती प्रवृत्तियों से घिरा हुआ है। यदि रामचरित को ही नया आयाम देकर उसे अध्ययन, मनन और चिंतन से जोड़ा जाए तो टूटे सपने फिर से जुड़ सकेंगे और नए संकल्प भी मिल जाएंगे। राम चरित्र आदर्शमय सौंदर्य है और मर्यादा उसका केंद्रीय भाव है इसीलिए राम की प्रासंगिकता हर काल, हर देश के लिए है। आज आवश्यकता है तो रामराज या यूँ कहे कि रामचरित में व्याप्त प्राविधानों को चरितार्थ किया जाए, जो वास्तव में मानव जीवन के दुखों को दूर करने वाली संजीवनी है। आज आवश्यकता इस बात की भी है कि हम राम के स्वरूप को समझें उन्हें अपने जीवन में ढालने का प्रयत्न करें। हर व्यक्ति में राम का स्वरूप दृष्टिगोचर हो यही तो शुभ संकल्प है सिया राम मय सब जग जानी। करहु प्रनाम जोर जुग पानी।

जहाँ राम है, वहाँ धर्म है, वही सत्य है, राम कहते हैं कि "धर्मो ही परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठतम्" अर्थात् संसार में धर्म ही सबसे महान् है धर्म में ही सत्य प्रतिष्ठित होता है- धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुराण बखाना। इसीलिए वशिष्ठ कहते हैं कि राम अकेला वन नहीं जाएगा, सारी अयोध्या उसके साथ जाएगी, केवल लोग बाग ही नहीं, बल्कि पेड़ -पौधे, पशु- पक्षी भी चल पड़ेंगे । जहाँ राम है, वही राष्ट्र है, चाहे वह वन हो या भवन "बड़भागी वन अवध अभागी। जो रघुवंश तिलक तुम त्यागी।।

स्त्री सशक्ति और अधिकारों की हम बात करते हैं, रामकाल में स्त्री का सशक्त रूप दृष्टिगोचर होता हैं। वशिष्ठ राम वन गमन के समय सीता को राज्य का प्रतिनिधित्व करने की बात कहते हैं "राम को वन जाना ही है तो वनवास के समय राम की प्रतिनिधि बनकर सीता अयोध्या में राज संभालेगी और अगर राम के साथ जाना चाहती है तो वह योग्य परिधान के साथ राम को आराम पहुँचाने की प्रयास करेगी।" ना गंतव्यंम् देव्या सीतया शील

वर्जिते। अनुष्ठास्यति रामस्य सीता प्रकृतभासनम्।"

स्त्री पुरुष समानता व अधिकारों के प्रति जागरूक कौशल्या राम से कहती हैं- "जिस गौरव के कारण राजा को तुम पूज्य मानते हो, उसी तरह मैं भी हूँ। मैं तुम्हें वन जाने की आज्ञा नहीं देती, अतः तुम्हें वन नहीं जाना चाहिए।" राम का पूरा जीवन धर्ममय है, वह धर्म के प्रतीक हैं। युद्ध के समय रथ रहित रघुवीर को देखकर विभीषण अधीर हो जाते हैं- "रावण रथी विरथी रघुवीरा। देखि विभीषन भयउ अधीरा" और तब राम जो उत्तर देते हैं, वह ध्यातव्य है -

सुनहु सखा! कह कृपानिधाना।
जेहि जय होइ, सो स्यंदन आना।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ ध्वजा पताका।।
बल विवेक दस पर हित घोरे।
क्षमा कृपा समता रजु मोरे।।
ईस भजन सारथी सुजाना।
विरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा।
बर विज्ञान कठिन कोदंडा।।

संक्षेप में कहे तो राम के समान आदर्श जीवन जीने वाला पुरुष कोई अन्य नहीं है। वैयक्तिक जीवन के स्तर पर राम और सामाजिक जीवन स्तर पर राम राज्य की आकांक्षा हर समाज और हर युग में जीवित रही है । आज भी सबकी यही कामना होती है कि पुत्र हो तो राम जैसा और राजा हो तो वह भी राम जैसा हो । प्रशासन स्तर पर जितने भी प्रकार हैं, उनमें प्रजातंत्र को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि प्रजातंत्र में प्रजा का स्थान व उसकी इच्छा को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है। रामराज में मानवीय मूल्यो की रक्षा होती है । सिंहासन पर आरूढ होते ही राम कहते हैं - "जो अनीति कछु भाषौ भाई । तो मोहि बरजहु भय बिसराई।।" प्रजातांत्रिक मूल्यों का इससे अधिक और क्या महत्व हो सकता है। रामराज की सुंदर परिकल्पना तुलसीदास जी करते हैं-

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
रामराज मा काहु ना व्यापा।।
सब नर करहि परस्पर प्रीती।
चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

राम कथा मानव जीवन की गरिमा, अभिव्यक्ति की आजादी जैसे आधुनिक भावों से परिपूर्ण है इसीलिए भारतीय समाज और जनमानस की सर्वप्रिय कथा राम कथा है और आने वाली पीढ़िया भी रामराज का ही स्वप्न देखती रहेगी । भारतीय संविधान की भूमिका के साथ राम दरबार का चित्र प्रकाशित है, जो इस बात का द्योतक है कि हमारा शासन रामराज के अनुरूप होना चाहिए। आज शताब्दियाँ व्यतीत हो जाने के बाद भी मूलभूत जन आकांक्षाओ में विशेष बदलाव नहीं आया है। राम समग्र मानव जाति की चेतना में रमे हुए हैं। अध्यात्म, धर्म, दर्शन, काव्य में राम और राम कथा का अनंत विस्तार है- "राम अनंत अनंत गुन अमित कथा विस्तार।"

संस्कृति जीवन का आधार होती है। जीवन और यथार्थ की परिधि में जो हमें अस्तित्व का बोध कराती है, जीवन की मंगल कामना के साथ जीवन के विविध रागात्मक सौंदर्य का अनुभव कराती है, वह युगों-युगों तक लोक मानस में पीढ़ी दर पीढ़ी अनंत काल तक सौंपी जाती रहेगी। "न हन्यते हन्यमाने शरीरे" के अनुरूप ही राम के लोकादर्श हमारी चेतना के प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

547क/245 शीतलापुरम
राजाजी पुरम-1, लखनऊ-226017
मो.न.-9235858688

रामराज्य की संकल्पना

➲ डॉ0 राहुल

रामकथा भारत राष्ट्र की धमनियों और शिराओं में महर्षि वाल्मीकि के पैदा होने के कई शताब्दियों पूर्व से संचरित होती आई है। राम का नाम योगियों को भी प्रभावित करता रहा है, वियोगियों को भी। सांसारिक प्रपंचियों ने राम के नाम में ऐहलौकिक ऐश्वर्य की तलाश की है, विरतियों ने उससे मोक्ष का पाथेय बटोरा है। भारतीय जनों ने मिलन के क्षणों में भी राम का नाम मंगलसूत्र माना है और मृत्यु की महायात्रा में भी। 'राम' शब्द के जितने विविध अर्थ-अभिप्राय हैं उतने ही विविधि हैं राम के आख्यान। आज जितने ही स्वरूपों में रामकथा उपलब्ध है उतने ही प्रकार के कवियों ने उस पर अपनी लेखनी चलाई है। वाल्मीकि रामायण से लेकर तुलसी के 'रामचरित मानस', रामचरित चिन्तामणि (रामचरित उपाध्याय), मैथिलीशरण गुप्त-कृत 'साकेत' कौशल किशोर (बलदेव प्रसाद मिश्र), श्रीराम चन्द्रोदय (रामनाथ ज्योतिषी) और इन पंक्तियों के लेखक कृत युगांक (महाकाव्य) आदि कृतियों में राम के ईश्वरत्व और पुरुषोत्तम स्वरूप के उजले पक्ष को बड़ी बारीकी से रूपायित किया गया है। इन कृतियों में युगीन सृजनशीलता के साथ दृष्टि की मौलिकता श्लाघ्य है। समूचे विश्व-साहित्य में राम ही एक ऐसा चरित्र हैं जो अन्याय के विरुद्ध इस सामाजिक आस्था को जगाने के लिए लोकशक्ति का आह्वान करते हैं। वस्तुस्थिति यह है कि वाल्मीकि समस्त रामकथा-साहित्य में सामान्य भारतीय विश्वास के अनुसार राम के समकालीन ही नहीं वरन् पूर्ववर्ती माने जाते हैं।

रामकथा वैदिक भी है, प्राक्वैदिक भी और लौकिक भी। उनका सम्बन्ध किसी जाति-धर्म विशेष से नहीं, मानवीय मात्र है। वे मानवता के महान् रक्षक और भारतीय संस्कृति के प्रवर्तक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके विराट व्यक्तित्व में महान् मानवीय गुणों का वैशिष्ट्य विद्यमान है। यही कारण है उनके राज्य में सभी सुखी-सम्पन्न थे। उनके न्यायप्रिय शासन में सभी को समुचित न्याय मिला। उनका दरबार सभी के लिए सदैव खुला रहा। ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, छुआछूत की भावना से परे उनके मन में सभी मनुष्यों और जीव-जन्तुओं के प्रति प्रेम-भाव था। तभी तो तुलसीदास लिखते हैं-

दैहिक-दैहिक - भौतिक तापा।
रामराज्य नाहिं काहुहि व्यापा!।

इसलिए राज्य की दुहाई शुरू से ही दी जा रही है। प्रायः हिन्दू शासकों ने अपनी शासन-व्यवस्था में रामराज्य की प्रस्थापना का प्रसंग उठाया। यह दीगर बात है कि उसका कितना प्रतिशत अनुपालन हुआ। महात्मा गाँधी ने रामराज्य की बात करते हुए कहा है "धार्मिक दृष्टिकोट से रामराज्य पृथ्वी पर ईश्वरीय कहा जा सकता है। राजनैतिक दृष्टि से रामराज्य एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र है, जहाँ अधिकार, वर्ण, स्त्री तथा पुरुष के विभेद पर आधारित असमानताएँ

तिरोहित हो जाती है। इस प्रजातन्त्र में भूमि तथा राजसत्ता की अधिकरिणी प्रजातंत्र है।"

रामराज्य की न्याय-व्यवस्था के प्रसंग में दो कथाएँ मेरी स्मृति में कौंध रही हैं। पहली कथा इस प्रकार है, एक श्वान सड़क के किनारे लेटा हुआ था। वह किसी राहगीर को देखकर न भौंकता था, न काटता था। उस सड़क से होकर रोज सैकड़ों लोग आते-जाते थे। अगर किसी ने कुछ फेंक दिया तो खा लेता था, वरना भूखा-प्यासा पड़ा रहता था। किसी को उससे कोई डर-भय नहीं लगता था। महीनों बीत गए। अचानक एक संन्यासी वहाँ से गुजर रहा था। उसने श्वान की ओर देखा और डर वश उसने श्वान की पीठ पर छड़ी से जोर से मारा। श्वान भौंकता हुआ सीधे भगवान राम-भवन के पास पहुँच कर जोर-जोर राम को पुकारने लगा। उसकी आर्त-करुण पुकार सुनकर राम ने लक्ष्मण से कहा, "बाहर जाकर देखो कौन पुकार रहा है?" तब लक्ष्मण ने बाहर आकर देखा, द्वार के पास एक श्वान राम से मिलने की रट लगाए था। लक्ष्मण ने उसकी समस्या पूछी तो वह बोला, "मैं राम को ही बताऊंगा।" लक्ष्मण ने राम को बताया। राम ने विचार करते हुए कहा, "उसे अन्दर ले आओ।" लखन जी आज्ञा का पालन करते हुए उसको लिवाने गये। किन्तु उसने विनम्रता से यह कहकर 'राजभवन' में भीतर जाने से मना कर दिया कि "मैं निम्नकोटि का जानवर हूँ और तामसी भी। इसलिए दरबार में नहीं आ सकता।" जैसा उसने कहा, लक्ष्मण ने राम को यथावत् सुना दिया। तब भगवान राम स्वयं उठकर भवन से बाहर आए। श्वान की शिकायत सुनी। उस संन्यासी को बुलवाया। संन्यासी ने जो उत्तर दिया, उसको सुनकर राम ने कहा, "किसी को सन्देहवश प्रताड़ित नहीं किया जा सकता। तुमने इस निर्दोष लघु जीव को मारने का अपराध किया है। अतः अपनी गलती का प्रायश्चित करते हुए इससे क्षमा मांगो। भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो इसका ध्यान रखना।" संन्यासी ने वैसा ही किया। वह श्वान श्रीराम के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हुआ वापस चला गया।

दूसरी घटना के प्रसंग से पूर्व राम की उदात्तता, करुणा, दया और न्यायप्रियता के प्रति उनकी नीतिगत मनोवृत्ति पर विचार करना होगा। उन जैसा उदात्त (राजा) शासक ही भवन से बाहर आकर एक पीड़ित की बात सुनने की पहल कर सकता है। जिस शासक के मन में दूसरों के प्रति गहरी संवेदना होगी वही महानता स्थापित करेगा। दूसरी कथा है, एक पेड़ में बने 'कोटर' के विवाद के सम्बन्ध में कौआ और गिद्ध दोनों अपना होने का दावा करते हुए आपस में लड़ पड़े। बहुत से पक्षियों ने उनके विवाद को सुलझाने की कोशिश की । किन्तु दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे। तब किसी ने सलाह दी कि इसका सही निराकरण श्रीराम के अलावा कोई दूसरा नहीं कर सकता। तब वे राम के पास पहुँचे। उनकी शिकायत सुनने के लिए राम पहले की तरह भीतर दरबार में बुलवाए लेकिन दोनों पक्षी अपने को अधम और तामसी-वृत्ति का होने के नाते उनसे दरबार से बाहर आकर शिकायत सुनने और न्याय करने का आग्रह किए। राम ने वैसा ही किया। वह बाहर आए । कौआ बोला, "भगवन् उस पेड़ के कोटरे में मैं सदियों से रह रहा हूँ। सो मेरा है।" तभी गिद्ध खिसियाता हुआ अपना पक्ष मजबूती से रखा। "हे कृपानिधान, मेरी यह वृद्धावस्था देखें। इसी कोटर में पिछले अस्सी वर्षों से मेरे माता-पिता रहते थे। अब वो नहीं हैं। मेरे दो बच्चे हैं। मैं उनके साथ इसी में जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। वह मेरा है। यह कौआ धूर्त है। झूठ बोल रहा है।"

उनकी बातें सुनकर राम बड़े द्विविधा में पड़ गए। उन्होंने गम्भीरता से विचार किया। उन्हें एक सप्ताह बाद बुलाया। इस बीच उन्होंने ज्ञानी-विज्ञानी पंडितों, पुरातात्विक विशेषज्ञों और अनुभवशील सभासदों से विचार-विमर्श किया। सभी ने अपने-अपने तर्क दिए। पुरातत्व विशेषज्ञ ने कोटर को देखा, कुछ नमूने लिए। और

उनके परीक्षण के आधार पर बताया कि "वह पीपल का पेड़ करीब सौ-सवा सौ साल पुराना है।" सप्ताह बाद जब वे दोनों पक्षी आए तो राम ने कौए से कहा, "एक सदी सौ साल की होती है। तुम उसमें सदियों से रहने की बात करते हुए अपना होने का दावा कर रहे हो। तुम्हारी उम्र कितनी है?" कौआ चिन्तनपूर्ण मुद्रा में बोला, "प्रभु! आप सर्वज्ञ हैं। फिर भी आप जानना चाहते हैं तो मेरी उम्र 72 साल हो रही है।' उसकी बात सुनकर राम ने कहा, "एक कौआ की उम्र न्यूनतम 30 साल और अधिकतम एक सौ साल तक होती है। तुम उसमें सदियों से रहने की बात बता रहे हो। इसलिए तुम्हारा दावा गलत है।" जहाँ तक उस पेड़ की बुनियाद की बात है जब वह सौ-सवा सौ साल का है तो कोटर सदियों पुराना नहीं हो सकता और तुम स्वयं भी इतने साल के नहीं हो। ऐसी स्थिति में तुम्हारा दावा सही नहीं है।"

महाप्रभु श्रीराम का निर्णय सुनकर गिद्ध प्रसन्नचित्त भाव से बोला, "आप दीनानाथ हैं।" कौए को झूठ बोलने, गिद्ध को परेशान करने और महत्वपूर्ण समय को नष्ट करने के लिए पाँच दिन सुबह-शाम सरयू के पावन जल में स्नान कर अपने झूठ का प्रायश्चित करने का निर्देश दिया।... कौए ने आज्ञानुसार वैसा ही कर अपने पाप का प्रायश्चित किया।

राम की उदात्तता के प्रति विचार करते हुए कह सकते हैं, महान् व्यक्ति न किसी का अपमान करता है और न उसको सहता है। वीर पुरुष किसी से द्वेष नहीं करता, भयंकर शत्रु को भी मित्र की भाँति आलिंगन करता है और युद्ध की स्थिति को भी शान्ति में बदलने की कोशिश करता है।... वह दयालु प्रकृति का होता है और सत्यप्रिय होने के कारण सभी से अपेक्षा रखता है कि दूसरा भी उस जैसा हो। उसके मन में सभी प्राणियों के प्रति करुणा की भावना होती है। करुणा ही मनुष्य के मन में सात्विकता की ज्योति जगाती है। सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है। राजा को करुणाशील होना चाहिए। क्रूर और अपने प्रतिस्पर्धियों एवं पड़ोसियों के प्रति बर्बरता नहीं बरतनी चाहिए। इससे उसकी लोकप्रियता घटती है।

वर्तमान सन्दर्भ में राम के आदर्श एवं मान्यताओं को अंगीकार करते हुए नीति-रीति का अनुकरण करना/कराना ही राष्ट्रहित में रामादर्श को स्थापित करना कहां... जाएगा। राम भारतीय संस्कृति के संवर्धक संवाहक हैं। जिस तरह की न्याय-प्रणाली और सभी के प्रति पूर्वाग्रह से परे होकर लोकहित में सार्थक पहल करते थे, वैसी समुचित व्यवस्था और समाज में बिना किसी भेदभाव के सभी की सुरक्षा - संरक्षा जरूरी है। नारियों के मन में व्याप्त भय भगाना होगा। उन्हें आध्यात्मिकता से जोड़ना होगा। जब तक किसी राष्ट्र की नारियों में आध्यात्मिक चेतना न होगी वह राष्ट्र स्थायी, शक्तिशाली और उन्नत राष्ट्र नहीं बन सकता। रामराज्य में नारियाँ विशेष प्रतिष्ठित थीं। मोदी सरकार ने नारी-समाज के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए अनेक योजनाएं कार्यान्वित की है। नारियाँ निर्भय बनी हैं। स्त्री और पुरुष में समता-समानता का भाव पैदा हुआ है। मोदी जी की मान्यता है कि मनुष्य होने के नाते नारी-पुरुष की समस्याएँ और आवश्यकताएँ समान हैं। वे सुख-दुख तथा सभी मूल संवेगों और भावनाओं का अनुभव करते हैं। इस दृष्टि से स्त्री-पुरुष एक दूसरे से पृथक् नहीं, परस्पर पूरक हैं। अतः किसी को निकृष्ट न समझना एवं सहयोग देना ही राम राज का ध्येय था। प्रादेशिक सरकार स्त्री-पुरुष में समानता की प्रबल पक्षधर हैं। अन्य क्षेत्रों की भाँति कानून के क्षेत्र में भी वह स्त्री - पुरुष का समान अधिकार देने का समर्थन करती है।

राम सिर्फ एक गौरव-गाथा नहीं, भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा की रीढ़ हैं। उनका राजकाज सभी के मानस में सकारात्मक चेतना का संचार करता है। उनका राज्य एक आदर्श राज्य था जिसकी संकल्पना आज

भी प्रासंगिक है। विश्व के सांस्कृतिक इतिहास में राम जैसा आदर्श और उनके राज्य जैसा उत्कर्ष कहीं नहीं मिलता। राम का नाम लेते ही मनुष्य को अन्तर्बाह्य प्रकाश मिलता है। इसीलिए कहा गया है - राम के बिना भारत निष्प्राण है।

रामकथा मनुष्य मात्र में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है। यह मनुष्य को देवता तक बना सकती है। मानव-जीवन के हर पहलू पर राम और उनके जीवन के आदर्शों की छाप देखी जा सकती है। जन्म से लेकर मरण तक, उल्लास, हताशा और विस्मय तक हर मनोभाव को 'राम' शब्द में देखा जा सकता है। हिन्दू देवी-देवताओं में अन्य अनेक देवी-देवता हैं लेकिन राम एकमात्र ऐसे हैं जिन्हें हर कोई सुख-दुख में स्मरण करता है या अनायास ही उनकी जुबान पर आ जाता है। राम-नाम इसके स्मरण मात्र से ही अद्‌भुद सुख-शान्ति की अनुभूति होती है। यह राम के रामत्व का ही विशिष्ट प्रभाव कहा जा सकता है। इस प्रभाव के कारण ही राम भारतीयता के प्रतीक कहे जाते हैं। उन्हें किसी जाति-धर्म, सम्प्रदाय, राष्ट्र विशेष की सीमा में बाँध कर नहीं रखा जा सकता है।

रामकथा के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव का ही परिणाम है कि राम हिन्दू धर्म में अपनी अप्रतिम महत्ता स्थापित करते हैं तो दूसरे धर्मावलम्बी भी राम को देवता के रूप में नहीं, एक आदर्श पुरुष के रूप में मानते हैं। वाल्मीकि रामायण में राम एक आदर्श पुरुष के रूप में ही प्रतिष्ठित हैं। रामकथा दिल को भीतर तक छू लेनेवाली गहराई है। इसलिए जब हम घर-परिवार, समाज, राष्ट्रीयता की बात करते हैं तो उसमें भावनात्मक आदर्श के साथ सामाजिक- सांस्कृतिक चेतना का महामंत्र है। बचपन में राम का चरित्र मन को छू लेता है। उनके कर्म लोकरंजक और मनभावन हैं। अयोध्या में राजभवन में भोजन करने का एक दृश्य -

अनुज सखा संग भोजन करहीं।
मातु - पिता अग्या अनुसरहीं।।

...और पुरवासियों के प्रति अनुराग और सुखमयता का मनोभाव देखिए- 'जेहि बिधि सुखी होता पुर लोगा/करहिं कृपानिधि सोच संयोगा।' राम के मन में सभी अनुजों के प्रति अत्यन्त प्रेम-अनुराग था। माता-पिता के प्रति आदर और सम्मान की भावना इस कदर भरी हुई थी राज्याभिषेक के समय माता कैकेयी द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राजा बनाने की मांग करने पर राजा दशरथ की मनोव्यथा को भाँपकर उनकी आज्ञा का पालन करते हैं और माता कौशल्या के रोकने के प्रस्ताव को बड़ी सहजता से अपने पक्ष में बना लेते हैं। इसमें माता-पिता के वचनों की रक्षा और सम्मान की मर्यादा का भाव निहित है। कैकेयी कहती है-

तापस वेष बिसेषी उदासी।
चौदह बरिस राम बनबासी ।।

कैकेयी द्वारा उक्त वचन पूरा करने की बात पर शोकाकुल राजा दशरथ भगवान् आशुतोष से कहते हैं-

तुम प्रेरक सबके हृदय सो मति रामहि देहु।
बचन मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सुनेहु।।

यानी आप प्रेरकरूप में सबके हृदय में हैं। आप श्रीरामचंद्र को ऐसी बुद्धि दीजिए जिससे वे मेरे वचन को त्यागकर और शील-स्नेह को छोड़कर घर ही में रह जाएँ। परन्तु राम ने इसे पिता की आज्ञा मानकर वनवास को सहर्ष स्वीकार कर सीता और लक्ष्मण के साथ राजभवन की सुविधा का परित्याग कर चले जाते हैं। राम को माता-पिता प्राणों से भी प्रिय थे लेकिन पिता के वचन को मानना उनका जीवन-दर्शन था ।

प्रजा के प्रति उनके मन में असीम सौहार्द था। बिना किसी छुआछूत के वे निषादराज को गले लगाते हैं। उनका यह मैत्रीपूर्ण व्यवहार हर किसी के लिए एक दृष्टान्त है। उनके मन में सभी के प्रति अपनेपन का भाव भरा था। यही कारण है कि कोल-किरात को भी प्यार किया और भक्त सबरी के जूठे बेर को खाकर समरसता का शाश्वत

सन्देश दिया। समरसता ही रामत्व का मूल है। दक्षिण भारत की ओर बढ़ते हुए उन्होंने जो विविध जाति-वर्गीय समाज देखा उनमें अपनेपन की, एकता की, राष्ट्रीयता की, मानवीयता की भावना का संचार किया। किष्किन्धा पर्वत पर श्रीहनुमान् से मित्रता और वहाँ के राजा सुग्रीव (वानर जाति) को सम्मान दिया। वे हनुमान् जी को लक्ष्मण से भी अधिक सहोदर मानते थे। गीधराज जटायु को पितातुल्य मानना उनकी सहृदयता का द्योतक है। गुरु वसिष्ठ को पितृवत् सम्मान देना, मन्त्री सुमन्त को 'काका श्री' कहना उनके आत्मीयभाव का मर्यादत्व है। वे विपत्ति के समय भी अपनी मर्यादा और आदर्श का अतिक्रमण नहीं करते हैं। वे शील व सुभाव की प्रतिमूर्ति हैं। उनका हृदय समुद्र की तरह विशाल-गहरा है। वे धीर-गम्भीर हैं।

'रामचरितमानस' की तरह 'युगांक' (महाकाव्य) में उनके विराट व्यक्तित्व के साथ जनप्रेम एवं राष्ट्रप्रेम को चित्रित किया गया है। उन्होंने समाज में जिस नैतिक आदर्श की प्रबल प्रतिष्ठा और मानव मूल्यों को स्थापित किया उनके अनुकरण मात्र से मानव जीवन और वैश्विक समाज आदर्शमय बन सकता है। राजनीतिक दृष्टि से उनका शासनकाल आतंक, अत्याचार, कदाचार, शोषण, उत्पीड़न, दमन, हिंसा, असत्य की प्रवृत्ति से परे था। सबमें समता-समानता-समरसता की भावना भरी हुई थी। वे सामन्ती मूल्यों के पोषक न बनकर विकसित मानवता के विरुद्ध महाशक्तियों के षडयंत्र के प्रति रोष (भी) प्रकट करते थे --सहेजते थे जीवन मूल्यों को। वे संकल्पशील थे भारतीय संस्कृति और उसके उच्च-उदात्त आदर्श की पुनस्थापना के लिए, मानव के अस्तित्व रक्षा के लिए। उन्हें समस्त समाज की चिन्ता थी। राष्ट्र की सम्पूर्ण समस्याओं के समाधान के लिए उनका उजला कार्य-कलाप समकालीन व्यवस्था के लिए एक दृष्टान्त है, बशर्ते कि आज हम उनका सही-सही अनुकरण करें। वे सही मायने में भारतीय जीवन के महाप्राण थे। माता-पिता, पत्नी, भाई, मन्त्री, सभासद, प्रजा गुरु, मित्र-शत्रु सभी उनके आचरण से विशेष प्रभावित थे।

आज ले मनुज-रूप अवतार, चले हैं करने पतितोद्धार।
नहीं तुम मानो कुछ सन्देह, राम-प्रति सभी जताते नेह।

निश्चित रूप से राम के आदर्शों का अनुसरण करने से राष्ट्र की समस्त समस्याओं का सम्यक् समाधान हो सकता है। सिर्फ जरूरत हैं स्वार्थ, लोभ-लालच और महत्वाकांक्षा से रहित होकर सोचने और कार्य करने की। उन जैसा उदात्त चरित्र कहाँ मिल सकता है। रामकथा के मर्मज्ञ विद्वान पं. रामकिंकर उपाध्याय के शब्दों में, 'राम-चरित्र की प्रासंगिकता तो कालातीत है । राजनीति कैसी हो, शासक कैसा हो, उसके अधिकार व दायित्व कैसे हों, लोगों का आपसी व्यवहार कैसा हो, धर्म कैसा हो? इसकी बहुत गहरी दृष्टि उनमें थी। समकालीन परिवेश में रामराज्य की संकल्पना तभी हो सकती है जब स्वयं में उन आदर्श-मूल्यों को आत्मसात करें, आचरित करें। इसलिए श्रीराम पुरुषोत्तम होकर भी देवत्व गुणों से सम्पन्न भगवान् थे। ब्रह्म थे, ईश्वर थे। उनकी उद्घोषणा है-

आदर्श नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया।
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।।

(मूल नाम- राममोहन श्रीवास्तव)
'साहित्य कुटीर' साइट-2/44, विकासपुरी,
नई दिल्ली-110018
मो0- 9289440642

रामकथा में शबरी प्रसंग

➲ डॉ0 नरेन्द्र कुमार मेहता

वाल्मीकि रामायण में अयोध्याकाण्ड के अन्त में तपस्विनी अनसूयाजी द्वारा सीताजी को प्रेमोपहार के कथा प्रसंग के साथ काण्ड समाप्त हो जाता है। उसी प्रकार अरण्यकाण्ड के अन्त में श्रमणी शबरीजी के कथा प्रसंग के साथ ही इस काण्ड की समाप्ति हो जाती है। सीताजी के अन्वेषण के सम्बन्ध में कबन्ध ने श्रीराम को शबरी के आश्रम में पहुँचने के पहले ही उसका तथा सुग्रीव के निवास की पूरी-पूरी जानकारी उन्हें दे दी गई थी। श्रमणी शबरीजी का आश्रम पम्पा सरोवर के तट पर स्थित दण्डकवन में और किष्किन्धा के मध्य बसा हुआ है। महामुनि मतंग और उनके शिष्यों ने कठोर तपस्या के बल पर इस स्थान को अत्यन्त ही पवित्र और आकर्षक बना दिया था। उसकी शोभा देखते हुए श्रीराम और लक्ष्मण दोनों भाई बहुसंख्यक वृक्षों से आच्छादित हुए उस सुरम्य आश्रम पर पहुँचे।

तौ दृष्ट्वा तु तदा सिद्धा समुत्थाय कृताञ्जलिः।
पादौ जग्राह रामस्य लक्ष्मणस्य च श्रीमतः।।

शबरी सिद्ध तपस्विनी थी। उन दोनों भाईयों को आश्रम पर आया देख हाथ जोड़कर खड़ी हो गई तथा उसने बुद्धिमान श्रीराम और लक्ष्मण के चरणों में प्रणाम किया।

शबरीजी मतंग मुनि के आश्रम में अपने जीवन की संध्या में इनकी प्रतीक्षा कर रही थी । शबरीजी श्रीरामजी और लक्ष्मण के आगमन के पूर्व ही पूर्ण रूप से आश्वस्त थी उसने श्रीराम से कहा-

तैश्चाहमुक्ता धर्मज्ञैर्महाभागैर्महर्षिभिः।
आगमिष्यति ते रामः सुपुण्यमिमाश्रमम्।।
स ते प्रतिग्रहीतव्य सौमित्रिसहितोऽतिथिः।
तं च दृष्ट्वा वरांल्लोकानक्षयास्त्वं गमिष्यसि।।

उन धर्मज्ञ महाभाग महर्षियों ने जाते समय मुझ से कहा था कि तेरे इस परम पवित्र आश्रम पर श्री रामचन्द्र जी पधारेंगे और लक्ष्मण के साथ तेरे अतिथि होंगे। तुम उनका यथावत् सत्कार करना उनका दर्शन करके तू श्रेष्ठ एवं अक्षय लोकों में जाएगी।

एवमुक्ता महाभागैस्तदाहं पुरुषर्षभ।
मया तु संचितं वन्यं विविधं पुरुर्ष्षभ।।
तवार्थे पुरुषव्याघ्र पम्पयास्तीरसम्भवम्।।

शबरी ने श्री राम से कहा- पुरुष प्रवर! उन महाभाग महात्माओं ने मुझसे उस समय ऐसी बात कही थी। अतः पुरुष सिंह! मैने आपके लिए पम्पा तट पर उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के जंगली फल-फूलों का संचय किया है।

जिनका यह आश्रम है और जिनके चरणों की मैं दासी रही हूँ उन्हीं पवित्रात्मा महर्षियों के समीप अब मैं जाना चाहती हूँ। शबरीजी के धर्मयुक्त वचन सुनकर लक्ष्मण

सहित श्रीराम को अनुपम प्रसन्नता प्राप्त हुई। उनके मुँह से निकल पड़ा आश्चर्य है। तदनन्तर श्रीराम ने कठोर व्रत का पालन करने वाली शबरीजी से कहा- भद्रे ! तुमने मेरा बड़ा सत्कार किया। अब तुम अपनी इच्छा के अनुसार आनन्दपूर्वक अभीष्ट लोक की यात्रा करो । श्रीरामजी के इस प्रकार आज्ञा देने पर मस्तक तथा जटा और शरीर पर चीर एवं काला मृगचर्म धारण करने वाली शबरीजी ने अपने आपको अग्नि में होमकर प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी शरीर प्राप्त किया। दिव्य वस्त्र, दिव्य आभूषण, दिव्य फूलों की माला और दिव्य अनुलेपन धारण किये बड़ी सुन्दर (मनोहर) दिखाई देने लगी तथा पर्वत पर प्रकट होने वाली बिजली के समान उस प्रदेश को प्रकाशित करती हुई स्वर्गलोक (साकेतधाम) को ही चली गई। तदनन्तर श्रीराम-लक्ष्मण भी परम सुन्दर पम्पा सरोवर के तट पर चले गए।

मानस में शबरीजी का प्रसंग संक्षिप्त में दिया गया है किन्तु उसमें सब कुछ छुपा हुआ है। हम चाहें तो उसमें से सब कुछ प्राप्त भी कर सकते हैं। इस प्रसंग में श्रीरामजी ने शबरी को नवधा भक्ति तथा उसके महत्व को बड़े ही सरल सारगर्भित शब्दों से समझाया है। ये नवधा भक्ति ही मोक्ष का मार्ग बताने वाली है। इसमें सभी भक्ति में से कोई भी एक भक्ति को जीवन में धारण कर हम साकेतधाम भी जा सकते हैं।

श्रीराम कबन्ध (गन्धर्व) को मोक्ष प्रदान कर उसके कथनानुसार श्रमणी- तपस्विनी शबरीजी के आश्रम में गए। शबरीजी ने श्रीरामजी को आश्रम में आये देखा तब महामुनि मतंगजी के वचनों को स्मरण करके उनका मन प्रसन्न हो गया।

कमल-सदृश नेत्र और विशाल भुजावाले सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर वनमाला धारण किए हुए सुन्दर साँवले और गोरे दोनों भाईयों के चरणों में लिपट पड़ी। तदनन्तर जल लेकर आदरपूर्वक दोनों भाईयों के चरण धोयें, फिर उन्हें सुन्दर आसनों पर बैठाया।

दोहा-कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि।।

उन्होंने अत्यन्त रसीले और स्वादिष्ट कन्द-मूल और फल लाकर श्रीरामजी को दिए। प्रभु ने बार-बार प्रशंसा करके उन्हें प्रेम सहित खाया।

तदनन्तर शबरीजी हाथ जोड़कर उनके सामने खड़ी हो गई । श्रीराम को देखकर उनका प्रेम अत्यन्त बढ़ गया। शबरीजी ने फिर श्रीरामजी से कहा मैं आपकी स्तुति किस प्रकार करूँ? मैं अधम जाति की और अत्यन्त मूढ़ बुद्धि हूँ। जो अधम से भी अधम है स्त्रियाँ उनमें भी अत्यन्त अधम है और उनमें भी हे पापनाशन! मैं मन्दबुद्धि हूँ। श्रीराम ने कहा- हे भामिनि ! मेरी बात सुन। मैं तो केवल भक्ति ही का सम्बन्ध मानता हूँ।

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई।।
भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।

जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब गुण और चतुरता - इन सबके होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है जैसे जलहीन बादल दिखाई पड़ता है।

तदनन्तर श्रीरामजी ने शबरीजी को नवधा भक्ति बताई तथा कहा कि इन नौ में से जो कोई भी एक भक्ति करेगा चाहे वह स्त्री-पुरुष, जड़-चेतन भी क्यों न हो वह उन्हें अत्यन्त प्रिय हैं। फिर श्रीरामजी ने शबरीजी से कहा कि तुम में तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है। अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है, वही आज तेरे लिए सुलभ हो गई। मेरे दर्शन का परम अनुपम फल यह है कि जीव अपने सहज स्वरूप को प्राप्त हो जाता है। हे भामिनि ! अब यदि तू जानकीजी की कुछ खबर जानती हो तो बता ।

पंपा सरहि जाहु रघुराई।
तहँ होइहि सुग्रीव मिताई।।
सो सब कहहि देव रघुबीरा।
जानहूँ पूछहु मति धीरा।।
बार-बार प्रभु पद सिरू नाई।
प्रेम सहित सब कथा सुनाई।।

शबरी ने श्रीराम से कहा- हे रघुनाथजी! आप पंपा नामक सरोवर को जाइये, वहाँ आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी। हे देव ! हे रघुवीर ! वह सब बताएगा । हे धीरबुद्धि ! आप सब जानते हुए भी मुझसे पूछ रहे हो। बार-बार श्रीराम के चरणों में सिर नवाकर, प्रेमसहित उसने सब कथा सुनाई।

श्रीरामजी को सब कथा कहकर भगवान् के मुख के दर्शन कर, हृदय में उनके चरण कमलों को धारण किया और योगाग्नि से देह को त्याग कर, जलाकर वह उस दुर्लभ हरिपद में लीन हो गई जहाँ से लौटना नहीं होता है। श्रीरामजी ने उस वन को छोड़ दिया और वे आगे चल पड़े।

एक दन्तकथा शबरीजी के बारे में बहुत प्रसिद्ध है कि उनका जन्म एक उच्च तथा सम्पन्न परिवार में हुआ था, किन्तु परतन्त्रता के कारण उन्हें सत्संग तथा साधना के लिए अवकाश प्राप्त नहीं होता था । अतः उसने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि उसका अगला जन्म किसी वनवासी जाति में हो, जिससे उसकी भक्ति साधना में बाधा उपस्थित न हो। फलस्वरूप वह भीलों के परिवार में उत्पन्न हुई थी। उसके विवाह योग्य हो जाने पर उसने देखा कि उसके घर में सैकड़ों बकरे - भैंसें इकट्ठे किए जा रहे हैं। उसे यह भी ज्ञात हुआ कि जिससे उसका विवाह हो रहा है, वह होने वाला उसका पति भी बड़ा शराबी है चूँकि शबरी ईश्वर की परम भक्त, दयालु और अहिंसक थी। उसके पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि उसके विवाह के अवसर पर इन सबकी बलि दिया जाना है। यह सुनकर देखकर वह बहुत भयभीत हुई तथा सब निरीह प्राणियों (पशुओं) को मुक्त करके वन में चली गई तथा पम्पा सरोवर के निकट ही मतंग महामुनि के आश्रम के समीप झोपड़ी बनाकर ऋषि-मुनियों की निष्काम सेवा में लग गई।

आनन्दरामायण में शबरी कथा प्रसंग
तिष्ठन्त्यग्रे मतंगादिमुनीनां परिचारिका।
शबरीदर्शनार्थं त्वं तत्र याहि रघुत्तमः।।

कबन्ध ने श्रीराम से कहा यहाँ से आगे मतंग आदि मुनियों की परिचारिकाएँ रहती हैं। रघुत्तम! आप वहाँ जाकर शबरी से मिलें।

तदनन्तर कबन्ध ने कहा हे रघुनन्दन! शबरी आपकी सीताजी का पता बताएगी। इतना कहकर उसने श्रीराम की स्तुति की और नमस्कार करके वह आनन्दपूर्वक स्वर्ग को चला गया। इसके बाद श्रीराम लक्ष्मण को लेकर शबरी के पास गए। शबरी ने वन के अच्छे-अच्छे पुष्पों तथा फलों से उनका पूजन सत्कार किया। बाद में चितारोहण करते समय हर्षपूर्वक वह श्रीराम से बोली कि आगे ऋष्यमूक पर्वत के शिखर पर मंत्रियों के साथ सुग्रीव रहता है। उसकी मित्रता प्राप्त करने से आपको सीताजी का पता मिल जाएगा। हे राम ! आप यहाँ से चलकर पंपा सरोवर जाए। इसके किनारे पर लगे हुए वृक्षों के विविध फल खाकर तथा जलपान करके आप सुग्रीव के पास जाइएगा। इतना कहकर शबरी ने श्रीराम को प्रणाम किया और अग्नि में प्रवेश कर गई।

इस प्रकार श्रीरामजी के दर्शनमात्र से मुक्त होकर वह बैकुण्ठधाम चली गई। तदनन्तर श्रीराम भाई लक्ष्मण के साथ पम्पा सरोवर गए। वहाँ के सुन्दर फल खाकर सरोवर का निर्मल जल पीया तत्पश्चात् धीरे-धीरे ऋष्यमूक पर्वत की ओर चल पड़े। इस रामायण में श्रीराम का शबरीजी के यहाँ जलपान करने का वर्णन है।

श्रमणी शबरी की श्रीरामजी के प्रति भक्ति का

प्रसंग इस रामायण के अरण्यकाण्ड के सर्ग 10 में बड़े ही रोचक शैली में वर्णित है। महादेवजी यह प्रसंग पार्वतीजी को सुनाते हुए कहते हैं कि गन्धर्व (कबन्ध) ने परमधाम जाते हुए श्रीराम से कहा- हे रघुनन्दन ! सामने वाले आश्रम में शबरी रहती है। वह आपके चरण कमलों में अति अनुराग, श्रद्धा और भक्ति रखती हैं। हे महाभाग ! आप वहाँ पधारिये शबरी आपको सीताजी के सम्बन्ध में सब कुछ बातें बता देगी। इतना कहकर वह कबन्ध (गन्धर्व) तेजस्वी विमान पर चढ़कर विष्णुलोक को चला गया। श्रीराम उस घनघोर वन से धीरे-धीरे शबरीजी के आश्रम पहुँच गए। लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी को समीप आते देखकर शबरीजी अत्यन्त हर्ष से तुरन्त उठ खड़ी हुई। उनके नेत्रों में आनन्दाश्रु भर आए और वह भगवान् श्रीराम के चरणों में गिर पड़ी तथा उनका स्वागत कर कुशल प्रश्नादि के बाद उन्हें सुन्दर आसन पर बैठाया।

रामलक्ष्मणयोः सम्यक्पदौ प्रक्षाल्य भक्तितः ।
तज्जलेनभिषिच्याङ्गमथार्घ्यादिभिरादृता ।।
सम्पूज्य विधिवद्रामं ससौमित्रिं सपर्यया।
संगगृहीतानि दिव्यानि रामार्थं शबरी मुदा ।।
फलान्यमृतकल्पानि ददौ रामाय भक्तितः ।
पादौ सम्पूज्य कुसमैः सुगन्धैः सानुलेपनैः ।।

तदनन्तर भक्ति से श्रीराम और लक्ष्मण के चरण अच्छी प्रकार से धोये और उस चरणोदक को अपनी अंगों पर छिड़ककर श्रद्धायुक्त होकर अर्घ्यादि विविध सामग्रियों से श्रीराम और लक्ष्मण का विधिवत पूजन कर जो अमृत के समान दिव्य फल उसने श्रीरामचन्द्रजी के लिए इकट्ठे कर रखे थे। वे हर्ष से लाकर भक्तिपूर्वक उन्हें दिये और उनके चरण कमलों का चन्दनयुक्त सुगन्धित पुष्पों से पूजन किया।

आतिथ्य सत्कार हो जाने के बाद जब श्रीराम लक्ष्मणजी सहित आसन पर विराजमान थे, शबरी ने भक्तिपूर्वक हाथ जोड़कर कहा हे रघुश्रेष्ठ ! इस आश्रम में पूर्व में मेरे गुरुवर महर्षि मतंग रहा करते थे। मैं उनकी सेवा सुश्रुषा हजारों वर्ष से करती हुई यहाँ रहती हूँ। महर्षि मतंग अब ब्रह्मलोक चले गए हैं। ब्रह्मलोक जाते समय उन्होंने मुझसे कहा था कि तू यही रहना श्रीराम राक्षसों को मारने और ऋषि-मुनियों की रक्षा के लिए राजा दशरथजी के पुत्र के रूप में अवतार लेकर आएँगे। अभी वे चित्रकूट के आश्रम में है।

यावदागमनं तस्य तावद्रक्ष कलेवरम् ।
दृष्ट्वैवं राघवं दग्ध्वा देहँ यास्यसि तत्पदम् ।।

जब तक वे (श्रीराम) आवें तब तक तू अपने शरीर का पालन कर श्रीरघुनाथजी के आने पर उनका दर्शन करते हुए इस शरीर को जलाकर तू उनके परमधाम चली जाएगी।

हे राम ! गुरुजी के कथनानुसार मैं तभी से केवल आपका ध्यान करती हुई आपके आने की बाट (राह) देख रही थी। आज गुरुजी की भविष्यवाणी सत्य हुई। आपका दर्शन तो मेरे गुरुदेव को भी प्राप्त नहीं हुआ। फिर हे अप्रमेयात्मन् ! मैं तो वनवासी जाति में उत्पन्न हुई तथा एक अनपढ़ नारी ही हूँ। मैं तो आपके दासों की दासी बनने योग्य भी नहीं हूँ। मैं आपकी स्तुति करना नहीं जानती। अब मैं क्या करूँ? प्रभो आप स्वयं ही मुझ पर प्रसन्न होइये।

पुंस्त्वे स्त्रीत्वे विशेषो वा जातिनामश्रिमादयः ।
न कारणं मद्भजने भक्तिरेव हि कारणम् ।।

श्रीरामचन्द्रजी बोले-पुरुषत्व-स्त्रीत्व का भेद (अन्तर) अथवा जाति, नाम और आश्रम ये कोई भी मेरे भजन के कारण नहीं है। उसका कारण तो एकमात्र मेरी भक्ति ही है। जो कोई मेरी भक्ति से विमुख है वह दान, तप अथवा वेदाध्ययन आदि किसी भी कार्य से मुझे कभी नहीं देख सकते।

अतः हे भामिनि! मैं संक्षेप में अपनी इस भक्ति के

साधनों का वर्णन करता हूँ। यहाँ श्रीराम ने बड़े ही आसान (सरल) पद्धति से नवधा भक्ति बताई। श्रीराम ने कहा पहला भक्ति का साधन सत्संग ही है। दूसरी भक्ति मेरे जन्म-कर्मों की कथा कीर्तन करना दूसरा साधन है। तीसरा साधन मेरे गुणों की चर्चा करना है। मेरे वाक्यों की व्याख्या करना, चौथा साधन अपने गुरुदेव की निष्कपट होकर भगवद्बुद्धि से सेवा करना, पाँचवाँ पवित्र स्वभाव यम-नियमादि का पालन करना और मेरी पूजा में सदा प्रेम-श्रद्धा होना, छठा मेरे मन्त्र की सांगोपांग उपासना करना, सातवाँ साधन कहा जाता है कि मेरे भक्तों की मुझसे भी अधिक पूजा करना, समस्त प्राणियों में मेरी भावना करना, आठवाँ शम-दयादि सम्पन्न होना, नवाँ-तत्व विचार करना है। हे भामिनि ! इस प्रकार यह नौ प्रकार की भक्ति है। भक्ति के उत्पन्न होने से मोक्ष हो जाता है। जिसमें भक्ति का पहला साधन होता है तो उसमें क्रमशः ये सभी साधन स्वतः आ जाते हैं। तू मेरी भक्ति से युक्त है अतः मैं तेरे पास आया हूँ। अब यह मेरा दर्शन होने से तेरी मुक्ति हो ही जाएगी। इसमें कोई सन्देह नहीं है। यदि तुझे पता हो तो बता इस समय सीता कहाँ है? उन्हें कौन ले गया है?

देव जानासि सर्वज्ञ सर्वं त्वं विश्वभावन।
तथापि पृच्छसे यन्मां लोकाननुसृतः प्रभो ।।
ततोऽहमभिधास्यामि सीता यत्राधुना स्थिता।
रावणेन हृता सीता लंकायां वर्ततेऽधुना ।।

शबरी ने श्रीराम से कहा- हे देव ! हे सर्वज्ञ ! हे विश्वाभावन ! आप सभी कुछ जानते हैं तथापि हे प्रभु लोकाचार का अनुसरण करते हुए यदि आप मुझसे पूछते हैं तो इस समय सीताजी जहाँ हैं वह मैं बताती हूँ। सीताजी को रावण हर ले गया है और वे इस समय लंका में है।

हे राम! यहाँ से पास ही पम्पा नाम का एक सरोवर है तथा उसके समीप ऋष्यमूक एक बड़ा पर्वत है। वहाँ महाबली, पराक्रमी वानरराज सुग्रीव अपने बड़े भाई बालि के भय से चार मंत्रियों सहित रहते हैं। ऋषि के शाप के कारण यहाँ बालि नहीं जा सकता है। आप वहाँ जाकर सुग्रीव से मित्रता कीजिए, वही आपका कार्य सिद्ध करेगा।

अब मैं आपके समक्ष ही अग्नि में प्रवेश करूँगी तथा जब तक मैं अपने शरीर को जलाकर परमधाम नहीं पहुँच जाऊँ तब तक आप एक मुहूर्त यहाँ ठहरिये । श्रीराम से शबरी ने इस प्रकार कहकर अग्नि में प्रवेश कर गई और एक ही क्षण में समस्त अविद्याजन्य बन्धनों को नष्टकर श्रीराम की कृपा से अति दुर्लभ मोक्ष पद को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार शबरी के वनवासी जाति को महत्व दिया गया है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि श्रीराम भक्ति भेदभाव से ऊपर उठकर सबको मुक्ति प्रदान करती है। श्रीराम की भक्ति में कोई भेदभाव का स्थान नहीं है।

श्रीराम ने सीतान्वेषण में पशुओं, पक्षियों, भौरों, अनेक वृक्षों जैसे कदम्ब, अर्जुन, ककुभ, अशोक, ताल, जामुन, कनेर, आम, कदम्ब, विशालशाल, कटहल, अनार, चन्दन, केवड़े आदि से सीताजी के बारे में पूछा। पशुओं में मृगों के झुण्ड दाहिनी ओर से आकर श्रीराम को अमंगल का संकेत दे रहे थे, पक्षी में जटायु ने सीतान्वेषण में श्रीराम की सहायता की, गन्धर्व (कबन्ध), महिला प्रतिनिधि के रूप में श्रमणी शबरीजी एवं वानरराज सुग्रीव ने सीताजी की खोज में जो कार्य किया है वह सब श्रीराम के प्रति भक्ति का ही प्रतीक है।

पता- सीनि. एमआईजी-103
व्यास नगर, ऋषि नगर विस्तार,
उज्जैन (म.प्र.)
मो.- 9424560115

रामावतार : पौराणिक आख्यान

➲ विष्णु भट्ट

"यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भावामि युगे-युगे।।"

श्रीमद्भागवत् गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेश- "जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब धर्म के अभ्युत्थान के लिए साधुओं के परित्राण के लिए और दुष्टात्माओं के विनाश के लिए मैं अवतार लिया करता हूँ।", को सभी सुधि पाठकों ने अवश्य ही पढ़ा होगा ?

भगवान विष्णु ने जब भी अवतार लिया तब ऐसी ही परिस्थितियाँ पैदा हुई थीं जैसा कि उपर्युक्त कहा गया है। ऐसी ही परिस्थिति जन्य परिस्थितियाँ त्रेतायुग में भी पैदा हुईं जब भगवान विष्णु को रामावतार लेने के लिए बाध्य होना पड़ा।

रामावतार के सन्दर्भ में पुराणों में कई ऐसे आख्यान हैं जिनके कारण भगवान विष्णु को राम के रूप में अवतार लेना पड़ा, क्योंकि पूर्व जन्म में ऐसी घटनाएँ घटित हुईं जिनका सफल/कुफल अगला जन्म लेकर सम्बन्धितों को भुगतान करना पड़ा। पौराणिक आख्यानों के अनुसार हम उन घटनाओं और उनसे जुड़े हुए राजाओं, मनीषियों, ऋषियों आदि के बारे में चर्चा करेंगे जिनको दिये हुए शाप/वचन को पूर्ण करने के लिए त्रेतायुग में भगवान विष्णु को रामावतार लेने पर विवश होना पड़ा। यदि वे जन्म, या यूँ कहें कि अवतार नहीं लेते तो जिन्होंने सम्बन्धितों का शाप, वचन और वरदान दिया था वह निष्फल हो जाता। ऐसा उस युग में नहीं हो सकता था। जो कहा वह अवश्य सत्य सिद्ध होता था। सबसे पहले जिसे पौराणिक आख्यान की हम चर्चा करेंगे वह हैं- 'नारद का अभिमान और नारद का विष्णु भगवान को दिया गया शाप।'

ब्रह्मा के मानस पुत्र नारद ऋषि के बारे में भला कौन अनभिज्ञ होगा ? नारद भगवान् विष्णु के परमभक्त थे। एक बार नारद को अभिमान हुआ कि उनके बराबर विष्णु भगवान का कोई भक्त नहीं। वे ब्रह्मचारी रहकर भगवान विष्णु की भक्ति करते हैं। यहाँ तक कि उनको कामदेव भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के लिए विचलित नहीं कर सकते।

भगवान विष्णु नहीं चाहते थे कि नारद अभिमानी हों जिससे उनके भगवत् कार्य में बाधा उत्पन्न हो। इसलिए उनका अभिमान चूर करने के लिए उन्होनें (भगवान विष्णु ने) अपनी माया के द्वारा एक सुन्दर नगर का निर्माण कराया जो श्रीनिवासपुर से भी अधिक विशाल एवं सुन्दर हो। उस नगर के राजा सीलनिधि थे। उनकी परम सुन्दरी पुत्री विश्व मोहिनी थी। अपनी पुत्री का स्वयंवर कराने के लिए सभी राजाओं को सूचना दी। निश्चित तिथि को स्वयंवर के स्थान पर सभी राजा आए। उधर नारद भी

घूमते हुए उस नगर में पहुँचे। उन्होंने ऐसी सुन्दर और सात योजन क्षेत्रवासी नगरी पहले कभी नहीं देखी थी। वैकुण्ठ धाम से भी विशाल और सुन्दर नगरी थी वह। जैसे ही नारद को ज्ञात हुआ कि राजा सीलनिधि अपनी पुत्री विश्वमोहिनी का स्वयंवर करने जा रहे हैं तो कामदेव के प्रभाव से उन्होंने राजकुमारी को देखते ही उससे विवाह करने की इच्छा मन ही मन कर ली। उन्होंने तुरन्त बैकुण्ठ धाम जाकर भगवान विष्णु से उनका सुन्दर रूप उन्हें देने की विनती की ताकि वे स्वयंवर में सबसे सुन्दर लगे और राजकुमारी उन्हीं के गले में वर माला डाल दे।

भगवान् विष्णु मन ही मन नारद के 'हरि' रूप माँगने पर प्रसन्न हो रहे थे। नारद को कहा- "जो तुम्हारे हित में होगा वहीं करूँगा।" नारद खुश होकर स्वयंवर के स्थान पर गये। राजा ने बड़े सम्मान से नारद को आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया। नारद मन ही मन बड़े प्रसन्न हो रहे थे कि स्वयंवर में उन्हीं के गले में राजकुमारी वरमाला डालेगी। लेकिन जैसे ही राजकुमारी वरमाला लिये हुए उनके सामने से गुजर कर आगे निकल गई तो नारद को बड़ा आश्चर्य हुआ। नारद के अगल-बगल शिवजी के गण भी बैठे थे। उन्होंने नारद के मुख को देखकर उनकी खूब हँसी उड़ाई। भगवान विष्णु भी उस स्वयंवर में विराजमान थे। वे वह सब देखकर नारद की दशा पर प्रसन्न हो रहे थे। जब नारद ने गणों से हँसी उड़ाने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा- "आपका मुँह तो बन्दर जैसा है।' कहते हुए फिर हँसने लगे। तब नारद ने उन दोनों को शाप दिया- 'तुम दोनों कपटी, पापी निशाचर हो जाओ।" नारद को गणों के कथन पर विश्वास नहीं हुआ। भगवान विष्णु ने 'हरि रूप' देने का वचन दिया था फिर बन्दर की सूरत कैसे दे दी ? उन्होंने अपना मुँह जल में देखा तो बंदर का दिखाई दिया। तब उनको विश्वास हुआ। वे तुरन्त भगवान विष्णु के पास गये और उनको शाप दिया। कि- "आपने मेरा मुख बन्दर जैसा बना दिया सो मेरा स्वयंवर में न केवल गणों ने बल्कि कईयों ने उपहास किया है। आपको अगले जनम में बन्दर की ही सहायता लेनी पड़ेगी। मेरा आपने उपकार किया है जिससे मैं राजकुमारी को स्वयंवर में नहीं जीत पाया सो आप भी अगले जन्म में स्त्री सुख से वंचित रहेंगे।"

भगवान विष्णु ने नारद के शाप को शिरोधार्य किया। एक कल्प बीत जाने पर त्रेतायुग में विष्णु भगवान ने नारद के शाप को सत्य करने के लिए रामावतार लिया। उधर दोनों गणों को जो नारदजी ने शाप दिया था उनको भी कहा कि- "जब भगवान विष्णु मनुष्य रूप में अवतार लेंगे तब उनके हाथों तुम्हारा उद्धार होगा। नारद का अभिमान चूर करने के लिये ही भगवान विष्णु ने मायावी नगरी, राजा, राजकुमारी और स्वयंवर आदि रची। जब नारद का मोह भंग हुआ तब सब अदृश्य हो गया। नारद का अभिमान भी समाप्त हुआ। नारद ने 'हरि रूप' माँगा था। 'हरि का एक अर्थ 'बन्दर' भी सो ही दिया।

इस प्रकार नारद के शाप को सत्य करने के लिए भगवान विष्णु ने शाप के एक कल्प के पश्चात त्रेतायुग में रामावतार लिया। इसी तरह दोनों गणों ने भी पुर्नजन्म लिया।

अब दूसरा पौराणिक आख्यान लें।

ब्रह्मजी के पुत्र स्वायंभू मनु और उनकी पत्नी शतरूपा बड़े ही धर्मात्मा थे और भगवान विष्णु के अनन्य भक्त थे। उनका पुत्र उत्तानपाद हुआ। उसे राजा बनाकर वे दोनों वन में तपस्या करने चले गये। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उन्हें भगवान विष्णु के साक्षात दर्शन हो। इसके लिए उन्होंने घोर तपस्या की । एक पाँव पर खड़े रहकर तपस्या की। इस कारण उनका शरीर कृशकाय अस्थियों का ढाँचा बनकर रह गया। तब भगवान ने प्रसन्न होकर उनको दर्शन दिये भगवान् के दर्शन मात्र से वे धन्य हो गये। फिर भी भगवान् विष्णु ने मनु को वर माँगने का आग्रह किया। भगवान् का आग्रह वे नहीं टाल सकें और बोले- "भगवान्!

यदि आप मुझे वर देना ही चाहते है तो कृपा निधान 'मुझे आपके समान ही पुत्र हो ऐसा वरदान दीजिये।" तब भगवान् विष्णु ने एवमस्तु कह कर वरदान दिया।

भगवान् विष्णु के वरदान के कारण स्वयंभू मनु त्रेतायुग में 'दशरथ' के रूप में हुए और उन्हीं के पुत्र के रूप में 'राम' के रूप में विष्णु भगवान ने अवतार लिया। इस प्रकार भगवान विष्णु ने अपना वरदान पूर्ण करने के लिए रामावतार लिया।

राजा भानुप्रताप का पौराणिक आख्यान भी महत्त्वपूर्ण है। कैकय देश के राजा सत्यकेतु थे। वे बड़े धर्मात्मा, राजनीति के प्रकांड ज्ञानी, तेजस्वी, बलवान और शीलवान थे। सत्यकेतु के दो पुत्र हुए। दोनों ही रणवीर और सर्वगुण सम्पन्न थे। बड़े का नाम था भानु प्रताप और छोटे का अरिमर्दन।

सत्यकेतु ने अपने ज्येष्ठ पुत्र भानु प्रताप को राजगद्दी सौंपी। भानुप्रताप का परम हितैषी सचिव था। धरमरुचि। वह भी रणवीर एवं प्रतापी था। उन्होंने अपनी चतुरंगिणी सेना के द्वारा कई राजाओं का राज्य जीत लिया उनके राज्य में कामधेनु के समान सबकी इच्छा पूर्ति होती थी। भानुप्रताप की सारी जनता बहुत सुखी थी।

एक बार मृगया खेलने के लिये राजा भानुप्रताप विनूध्याचल के वन में गये। मृगया खेलते हुए एक सूअर का पीछा करते हुए राजा भानुप्रताप बहुत दूर निकल कर अपने साथियों से बिछुड़ गये। भूख-प्यास से व्याकुल भानुप्रताप जंगल में भटक गये थे। तभी उन्हें एक आश्रम दिखाई दिया। उन्होंने राजसी वेश उतर कर साधारण व्यक्ति के रूप में ऋषि आश्रम की ओर कूच किया।

ऋषि के आश्रम में प्रवेश कर भानुप्रताप ने ऋषि को प्रणाम किया और भूख-प्यास से व्याकुल होकर उनके चरणों में बैठकर सुस्ताने लगे। भानुप्रताप ने अपना नाम नहीं बताया। लेकिन मुनि तो सर्वज्ञाता थे वे भानुप्रताप के हाव-भाव और बोलचाल से ही समझ गये थे कि वह कोई राजपुरुष है। पर उन्होंने राजा पर यह प्रकट होने नहीं दिया। राजा को शीतल जल पिलाया, फलाहार करवाया।

जब राजा आश्वस्त हुये तब मुनि ने कहा- "तुम्हारे लक्षण तो किसी चक्रवर्ती राजा जैसे दिखाई दे रहे हैं।" इस पर विवश होकर राजा भानुप्रताप ने अपना परिचय दिया। तब मुनि ने राजा को रात वहीं आश्रम में ठहरने का अनुरोध किया।

जाते हुए राजा भानुप्रताप ने मुनिवर को अपने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। मुनि ने आने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। परन्तु यह कहा कि वे अगर आए और उनका किसी भी तरह का अपमान हुआ तो राजा को घोर शाप झेलना पड़ जायेगा जो उसके हित में नहीं होगा। इस पर राजा ने मुनि को आश्वस्त किया।

मुनि ने तब राजा को कहा कि वे राजा के नगर में प्रवेश नहीं करेंगे। वे पास के पर्वत के तल पर निर्झर जल के पास ठहरेगे। तुम सपरिवार वहीं आ जाना।

जब सब तैयारियाँ हो गयी तब कालकेतु नामक राक्षस आया। उसने अपनी माया से राजा की मति फेर दी और उस राक्षस ने भानुप्रताप के दसों भाइयों को मार डाला।

उधर जब रसोई बनाई जा रही थी तो शाकाहारी के बजाय मांसाहारी रसोई बनाई गयी। जब ऋषि मुनि भोजन करने लगे तभी आकाशवाणी हुई। ऋषियों यह भोजन मांसाहारी है इसे मत खाओं। "सुनते ही विप्रवर उठ खड़े होकर राजा पर कुपित हुए। उन्होंने राजा भानुप्रताप को शाप दिया- "राजा भानुप्रताप तुम और तुम्हारे परिवार के लोग निशाचर हो जाओ।" इस पर धरमरुचि ने क्षमा मांगते हुए विप्रवर को पूरी स्थिति बताई। तब विप्रवर को ज्ञात हुआ उस षड्यंत्र का विप्रमुनि का शाप सुनते ही राजा भानुप्रताप की मतिभ्रम दूर हुई और तब उसे ज्ञात हुआ कि भोजन बनाते समय कालकेतु निशाचर ने ही शाकाहारी को मांसाहारी बना दिया। उसने क्षमा याचना की परन्तु विप्र ने

शाप वापस नहीं लिया। हाँ उन्होंने उससे छुटकारा पाने का उपाय भी बता दिया- "जब त्रेतायुग में रामावतार होगा तब उनके हाथों तुम्हारी मृत्यु होगी और निशाचर योनी से मुक्ति होगी।"

अगले कल्प में राजा भानुप्रताप लंकापति रावण हुआ। उसका अनुज अरिमर्दन, रावण का अनुज कुंभकर्ण हुआ। धरमरुचि नाम का सचिव रावण का अनुज विभीषण हुआ। इनके अलावा उसके राज्य के सभी लोग निशाचर हुए। विप्रवर के शाप से भानुप्रताप अरिमर्दन और धरमरुचि को मुक्त करने के लिये भगवान विष्णु ने रामावतार लिया।

और अंत में अहिल्या के उद्धार की पौराणिक कथा- महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या बहुत सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता पर मोहित होकर इन्द्र ने उसको अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए शारदीय रात्रि में चन्द्रमा की सहायता से योजना बनाई।

योजनानुसार चन्द्रमा ने मुर्गे का रूप धारण कर शारदीय रात्रि में बाँग लगाई। महर्षि गौतम ने बाँग सुनकर ब्रह्म मुहूर्त जानकर अपना कमण्डल उठाया और गंगा स्नान करने निकले। महर्षि की अनुपस्थिति का लाभ उठाने के लिये इन्द्र ने तुरन्त महर्षि गौतम का रूप धारण कर आश्रम में प्रवेश किया। उधर महर्षि गौतम को मार्ग में ही आभास हो गया कि रात्रि तो अधिक है ब्रह्म मुहूर्त तो बहुत देर से आयेगा। ऐसा उन्हें लगा कि किसी ने उनके साथ छल किया है।

ऐसा विचार आते ही महर्षि गौतम तुरन्त आश्रम के लिये लौटे। जैसे ही वे आश्रम में पहुँचे चन्द्रमा ने उन्हें देख लिया और भागने लगा। महर्षि ने तुरन्त चन्द्रमा पर अपने मृगचर्म से प्रहार कर शाप दिया- "तू सदा कलंकी रहेगा।" उधर कुटिया के अन्दर इन्द्र ने महर्षि गौतम का क्रोध भरा स्वर सुना तो वह बाहर निकला। उसने क्षमा मांगते हुए ऋषि के चरण पकड़ लिये। परन्तु गौतम ऋषि ने इन्द्र को भी शाप दिया- "तू काम-कीट बना है। इस कारण तेरे शरीर में सहस्त्र भग हो जाएँ और तेरा वृषण गिर पड़े।" आश्रम में महर्षि गौतम अहिल्या के पास गये और उसे भी शाप दिया- "तू पाषाणी हो जा।"

जब अहिल्या ने अपने आपको निरपराधी बताया। बहुत आर्तनाद करते हुए क्षमा मांगी तो दया करते हुए महर्षि ने कहा- "तुम पाषाणी रहोगी पर जब तक, तब तक त्रेतायुग में भगवान विष्णु अवतार लेकर राम के रूप में इस आश्रम में आकर अपने चरण रज से तुमको छू नहीं लेंगे। तुम्हें जैसे ही उनके चरण छुएंगे तुम अपने असली रूप में आजाओगी। तुम्हारे पाप धुल जाएंगे। तभी मैं तुम्हें स्वीकारूँगा।"

इस तरह अहिल्या उद्धार के लिए महर्षि गौतम के शाप से मुक्ति दिलाने के लिए भगवान विष्णु को रामावतार लेना पड़ा।

अतः रामावतार की पृष्ठ भूमि में पौराणिक आख्यानों की प्रमुख भूमिका रही है। जिनमें शाप, वचन, वरदान आदि की सत्यता को रखने के लिए भगवान विष्णु को त्रेतायुग में मानव के रूप में 'राम' नाम रूप लेकर अवतरित होना पड़ा। तुलसी ने अपने महाकाव्य में 'श्रीरामचरित मानस' के बालकाण्ड में इन आख्यानों का वर्णन किया है।

म0नं0-1 म 9, गायत्री नगर हिरन मगरी,
सेक्टर-5, उदयपुर राजस्थान-313002
मो0-9461403169

दक्षिण भारत में राम

➲ डॉ0 बी.वै. ललिताम्बा

अयोध्या में राम की प्रतिष्ठापना होने से पूरा देश अपनी सांस्कृतिक भूमि अयोध्या के प्रति पूरी तरह भाव विभोर हुआ है। यह सच है, मगर वास्तव में कर्नाटक की जनता के लिए, यहाँ के निवासी के लिए 'राम' अपरिचित या नया व्यक्ति भी नहीं। राम जन्मभूमि को लेकर यहाँ की जनता पहले से भी श्रद्धावान है। राम इस देश के कण-कण में पहले से भी संचार करते रहे है। कर्नाटक के कण-कण में राम हैं। बसंत निरगुणे जी के शब्दों में भारतीय संस्कृति का प्रतीक राम है। बसंत निरगुणे ने एक पूरा वृहद् ग्रन्थ इस देश के विद्वानों को शामिल कर उनसे लेख आदि लिखवाकर 'राम' शीर्षक से उसे छापा है। उनका उपोद्घात भी इसी वाक्य से परिपूर्ण सम्पन्न है।

बसंत निरगुणे जी ने अपने अनुभव से राम की संज्ञा का अनुभव किया है। उत्तर भारत-मध्य भारत पूर्व-पूर्वोत्तर भारत में मैंने स्वतः यह अनुभव किया है कि जन-जीवन और आदिवासी जीवन में राम की संकल्पना ही बहुत बड़ी चीज है।

रामायण भारतीयों का आदर्श काव्य है इसलिए भी राम का आदर्श ही उस प्रकार का है। इसलिए नहीं, पिता दशरथ का राम ने आदेश का शिरसा-शीर्ष नमाकर पालन किया। मात्र राम नहीं युवा उम्र में अपनी माँ नहीं, सौतेली माँ की पुरानी इच्छा, अथवा अपने पति से कभी जो वचन लिया था, नवविवाहित युवा राम ने कभी सीता के उसके साथ चलने पर जोर नहीं दिया, लक्ष्मण जैसा आदर्श भाई, भरत-शत्रुघ्न भी, उन्हें भी राजा राम के आदेश की अवहेलना करने की इच्छा नहीं, माँ की इस इच्छा से उनको बहुत बुरा लगता है। माँ की इच्छा का भी उन्हे अच्छा तो नही' लगता मगर पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर उसी से राज्य शासन का आदेश माँगते हैं। रामायण सम्पूर्ण रूप से आदर्श काव्य है। राम का आदर्श, पत्नी सीता का आदर्श है, छोटे भाई लक्ष्मण का आदर्श है। भरत-शत्रुघ्न का आदर्श है, पिता दशरथ का आदर्श है, दशरथ अपनी छोटी पत्नी को दिए गए वचन का सही पालन करते हैं, प्राण जाए पर वचन न जाए, दशरथ प्राण जरूर त्याग देगें राम को वापस नहीं बुलाते- यही आदर्श भारतीय संस्कृति का आदर्श है। राम का त्याग आज तक भारतीय संस्कृति का आदर्श बना हुआ है।

भारतीयों के कण-कण में राम का आदर्श शाश्वत बना हुआ है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने राम के इसी आदर्श को भारत के कण-कण में देखा है, वह आज तक उत्फुल्ल है।

'राम' के साहित्यिक अंश की जानकारी में उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम, सभी दिशाओं में रामायण युग-युगों से साहित्यिक अस्तित्व हम दक्षिण भारतवासियों

के लिए श्री राम अपरिचित व्यक्तित्व भी नहीं। दक्षिण भारत के कण-कण में श्रीराम का निवास है।

वाल्मीकि, कहा जाता है कि दण्डकारण्य के निवासी थे। रामायण के साथ विशेषता भी ऐसी है, एक भील शिकारी व्यवसाय से शिकारी होते हुए उन व्याध के मुँह से करुणा की स्रोतास्वनी झरती है। आज अनपढ़ या प्रौढ व्यक्तियों को अक्षराभ्यास किया-कराया जाता है। वाल्मीकि के गुरु कौन थे, वसिष्ठ, विश्वामित्र या और कोई ऋषिवर्य, नाम तो कईयों का लिया जाता है किन्तु वाल्मीकि के गुरु कौन रहे, रामायण की पीठिका को देखते हुए उनके मुँह से निकला प्रथम श्लोक इस परिस्थिति के अनुकूल ही निकला था, परिस्थितियाँ उनके गुरु रही।

अनुष्टुप छन्द में रची पंक्तियाँ वाल्मीकि को प्रथम कवि घोषित करती है। यहाँ तक पीठिका रही, भारत यद्यपि एक राष्ट्र है। उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम, पूर्वोत्तर, इस प्रकार अलग-अलग दिशाओं में हमारे लोगों का निवास है, हम सभी इसी देश के बन्धु है।

श्री राम, के व्यक्तित्व पर केन्द्रित करने पर दक्षिण भारत एक प्रस्थभूमि कहलाता है। इसके बाद भी कर्नाटक की संस्कृति पर केन्द्रित करने पर इस प्रदेश में भाषाओं का यद्यपि भेद नहीं कर्नाटक की प्रमुख भाषा यहाँ की बोलचाल की भाषा कन्नड़ है।

कन्नड़ भाषा भी भाषा कहकर स्वीकार करने पर विभिन्न प्रदेशों की आबोहवा में परिवर्तन है, उसके अनुकूल भाषा भी है।

राम-कर्नाटक के कण-कण में निवास करता है। श्रद्धालु नागरिकों को राम-सीता के ऐतिहासिक स्थान दिख जाते हैं। कही सीता किसी ताल में, नदी-नद में नहाकर गई थी, गुरूपदेश इसे मिला था, पता नही हमारी जनता को सीता कहाँ मिली थी, उसके कष्टमय जीवन पर हमारी प्रजा की सहानुभूति जरूर मिलेगी।

रामायण हमारी जनता के लिए अपरिचित काव्य नहीं। यहाँ पर पारम्परिक वाल्मीकि रामायण की कथा मिलती है, वशिष्ठ रामायण और जैन रामायण, इतना ही नहीं द्वैत सिद्धान्त को दुहराना चाहा है। हम यहाँ युग-युगों की बात, साहित्य से जुड़ी हुई बातें भी करना चाहते हैं।

राम के प्रति श्रद्धा के परिणाम स्वरूप ही मैं यहाँ दक्षिण भारत की बात तक अपनी बात सीमित नहीं करता, रामायण मण्डलियाँ जन जीवन में बनी हैं। पूरे दक्षिण भारत की बात नहीं केरल के पुराने राजा रविवर्मा की बात नहीं करना उचित नहीं होगा। उनके हाथ बनी अद्‌भुत कलाकृतियों का एक उल्लेख मात्र काफी होगा, राम-सीता, हनुमान, पूरे परिवार की सुन्दरकाण्ड कृतियाँ अविस्मरणीय बनी है।

हमारे यहाँ (कर्नाटक) के अनुसार विक्रम संवत के अनुसार युगादि का पर्व-वर्षारम्भ का पर्व वसंत ऋतु में होता है। वसंत ऋतु में चैत्रमास के शुक्ल पक्ष का पड़वा हमारे वहाँ पड़वा पहले दिन पर वर्षारम्भ होता है। वसंत ऋतु अभी समाप्त नही होती, ग्रीष्म का आरम्भ होता है। पतली धूप अभी शुरू होती रहती है, चारों तरफ हरियाली फैली रहती है।

कोयल की कूहू-कूहू सुनाई देती रहती, मन को मोहित करने वाला वातावरण फैला रहता है, रागियों को राग में उन्मत्त करने वाला वातावरण रहता है। तभी ठीक युगादि के नौवें दिन रामनवमी, राम जन्मोत्सव का आचरण कर्नाटक के घर-घर होता है।

'राम' जन्मोत्सव का यह अवसर हैं। ग्रीष्म में एक तरफ गर्मी है, दूसरी तरफ सुंदर फूलो से भरा वातावरण, झींगुरों का नाद और सूखे पेड़ो का कपित्-कपित्थ फलों के पकने का यह समय होता है। कपित्थ फल नारियल की तरह बाहर से सूखा और अन्दर से सूखा ही समझ लीजिए, मसल कर रस को निकाला जा सकता है। गन्ने का गुड़ निकालने का भी यह मौसम होता है। कपित्थ फल के साथ गुड़ मिलाकर उससे रस निकालकर दक्षिण भारतीय शरबत

जिसे पानक कहा जाता है, निकालकर राम जन्मोत्सव, राम नवमी पर बन्धु-मित्रों को आमंत्रित कर आनंद लूटा जाता है।

राम नवमी की कई विशेषताएँ है, कपित् की बात हुई यह मौसम कच्चे चने का भी होता है और युगादि पर्व का आचरण बहुत ही स्वस्थ वातावरण में किया जाता है। रामनवमी राम जन्मोत्सव को उसके जन्मोत्सव को कर्नाटक के हर परिवार में बडे उत्साह से मनाया जाता है। घर परिवार के लोगों को न्योता मिलता है। पानक का एक विशिष्ट आनन्द मिलता है। यह मूँग और चने का ताजा फसल का भी मौसम होता है। दोनो की ताजा फसल आती है। हम घर परिवार के लोग बड़े उत्साह से उनको दालों को भिगोकर अधिक सा पानी निचोडकर उनका सलाद बना देते है। नारियल का भी ताजे नारियल का भी यही मौसम होता है। इस सलाद को कर्नाटक की भाषा में कोसम्बरी कहते हैं। दोनो दाल भिगोकर अलग-अलग से कोसम्बरी बनाकर पान के पत्तों के ताजे इस मौसम पर सुपारी रखकर पडोस के अतिथियों को बाँटते है। पानक अनिवार्य रूप से हर आगत बन्धु को दिया जाता है। (आदर के साथ) यह मैसूर, बैंगलौर, शिमोगा आदि शहरों में आचरित होता है। यह आचरण यहाँ तक सीमित भी नहीं।

बसंत ऋतु का समय है शरन्नवरात्रि रामनवमी का कर्नाटक में रामनवमी से आरंभ कर रामनवमी पर बसंत उत्सव का आरम्भ कर, रामनवमी पर श्रीराम का वसंतोत्सव का आचरण होता है।

रामनवमी पर श्री राम का उत्सव और बसंत स्नान दोनों साथ-साथ संपन्न होता है, उत्सव मनाया जाता है। पारस्परिक परिवारों के पुराने समय में वृहद प्रदर्शनी के समय राम की तस्वीर रथ में रखकर सड़कों पर जाते हैं। एक बड़े बर्तन में पानी भरकर उसमें हल्दी डालकर होली जैसे ही परस्पर एक दूसरे पर पानी उड़ेलते हैं। राम श्रीराम की जय की घोषणा निकालकर राम मंदिर तक हो आते हैं। नवमी के आठ नौ दिन कई घरों में चना भिगोकर उबालकर उसकी खिचड़ी बनाकर केले के पत्ते से बने दोने पर रखकर सभी भक्तों को बाँटते हैं। यह अवसर ऐसा है सामूहिक जीवन को महत्व मिलता है। मंदिर का एक मैदान होता है वहाँ रात के आराम से बैठकर घर-घर न्योता देकर अथवा नोटिस लगाकर सभी मिलकर बैठते (चरपू प्रसाद) दोनों में भरकर खाते है यह-यह सामूहिक प्रसाद खाना होता है।

रामनवमी के आचरण को लेकर...

रामनवमी एक और तरीके से मनाई जाती है वह संगीत कचहरियों के द्वारा...

यही अवसर है जब जनता आराम से रात के समय संगीत का स्वाद ले सकेगी। पुराने जमाने मैसूर राजाओं का शहर है। राजमहल के चारों तरफ पुराने समय में दरबारियों और संगीतकारों को बुलाकर संगीत का आयोजन किया जाता था। आज से कई वर्ष पहले उत्तर दक्षिण भारत, विदेशी गायकों के नामी गायकों को आमंत्रित कर संगीत का आयोजन करवाया जाता था। हनुमान जयंती और रामनवमी के दो आयोजन थे जिसमें मैसूर बेंगलुरु के नागरिकों को संगीत के श्रावकों को सुनने का अवसर मिल जाता था। रामनवमी से शुरू कर यह आयोजन दो-तीन महीनों तक लगातार चलता रहता। इसके लिए रात का समय ही चुनते थे। उसमें भी विशेषकर बेंगलुरु नगर में फोर्ट हाई स्कूल के आगे मोड़ पर रोज आयोजन होता था। (चामराज पेट पर) सार्वजनिक मिलन का यही अवसर होता था। एक गायक समाज आज भी अस्तित्व में है। मेरी जानकारी के हिसाब से, या सुनी बातों के हिसाब से आजकल उस उत्सव की बात सुनाई नहीं दी है।

बेंगलुरु में जयनगर की दिशा में एक इंदिरा गाँधी सर्किल है। वहाँ पर आज भी बेंगलुरु के नागरिक संगीत सभा का नियमित आयोजन करते हैं और कहीं पर मुझे जानकारी नहीं है।

मैसूर शहर पहले से आज तक साहित्य और

कलाकारों का हृदय स्थल रहा है।

मैसूर नगर की बार-बार बात कर लेने का उद्देश्य भी है। यह राजाओं का शहर रहा है। संगीत और कला का भी केंद्र रहा है। राजमहल के बहुत करीब नहीं फिर भी करीब ही है। पिटील चौडय्या थे। चौडय्या की संगीत की विशेषता फिड्ल थी। उनका वादन देश भर में नाम कर चुका था। वीणा के विशेषज्ञ सम्मान्य वेंकटगिरियप्पा थे। यह दोनों आस्थान (राजा के आस्थान) के विशेषज्ञ थे। आज वे दोनों इस संसार में नहीं है मगर उन दोनों के वादन की विशेषता आज भी है। वीणा वेंकटगिरियप्पा के रूप में आज भी उनकी बेटी जिंदा है। वेंकटगिरियप्पा की यादगार बनकर उनकी बेटी आज भी बहुत सुंदर रूप से वीणा वादन करती है। राजमहल की प्रांगण में मैसूर में आज भी राम मंदिर है। हनुमान मंदिर है लोगों का विश्वास है कि हनुमान जी सत्यवाहक परिपालन करते हैं।

राम के साथ राम के भक्त पर हमारी जनता विश्वास करती है।

राम पर कर्नाटक की जनता के विश्वास पर जनता का पुराना विश्वास बना है। उन दिनों भारत को स्वाधीन बनकर कुछ ही दिन हुए थे। देश में असुरक्षा का वातावरण था। तभी देश भारत पाकिस्तान के दो भागों में बाँटा था। इंसान का इंसान पर विश्वास नहीं रह गया था।

रात देर हो चुकी थी एक अपरिचित बी0बी0 पंडित के नौगनगुडु परिवार में आ पहुँचा था। देखने से ही वह निराश्रित लग रहा था। आगंतुक व्यक्ति ने भी बी0बी0 पण्डित से एक रात के लिए मात्र पनाह माँगी थी। पंडित जी उदार हृदय थे तो पनाह दी गई। अगली सुबह तक वह इस संसार से चला गया था उसकी कुछ खबर ली गई तो पता चला कि वह व्यक्ति अनाथ होकर मर गया था।

वह मात्र एक ऐतिहासिक घटना थी उसकी खोज खबर लेने पर पता चला उस व्यक्ति के शरीर पर जितने कपड़े थे उन सब पर (उस जमाने के) ब्रिटिश जमाने के नोट सिले हुए थे। वह एक अनाथ सा इंसान था पंडित जी सच्चे इंसान थे किसी का पैसा मुफ्त में रखने वाले इंसान न थे। यह मेरी सुनी हुई कहानी है और अपनी जानकारी के अनुसार वह पहली बार थी जब राम कोटी, जाप हवन हुआ था अर्थात पंडित जी हर भक्त के हाथ एक नोटबुक थमा दे देते और पूरी पुस्तक श्री राम, जयराम से भर देते थे। पंडित जी के साथ यह घटना 80 या 90 साल पहले घटी होगी। तब से आज तक कितने भक्तों ने रामकोटि जप यज्ञ किया होगा।

आज तक भक्तगण इस विश्वास को राम नाम पर विश्वास करते आ रहे हैं। आज तक रामकोटि यज्ञ जारी है। यह घटना आम जनता से जुड़ी है। राम इस प्रकार अयोध्या से घर-घर पहुँचे रहे हैं।

यह राम के नाम पर लोगों का विश्वास है। तुलसीदास रामचरित मानस के आरंभ में ही राम से बढ़कर राम के नाम पर अपना विश्वास जताते हैं। तुलसीदास की हनुमान चालीसा की आराधना कर्नाटक के घर-घर करते हैं और उस पर विश्वास अपरंपार है।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की साहित्य मासिकी पर राम विशेषांक पर साहित्यकारों से लिखवाते समय उसे एक साहित्य पर केंद्रित अंक बनाना चाहा है।

चूँकि उत्तर प्रदेश और कर्नाटक के मध्य दिनों दिन संवाद की दूरी रहती है, यह हमारा भी कर्तव्य बनता है, कुछ जानकारी उन तक पहुँचाएँ।

कई उदाहरण काफी कुछ पहुँच चुके है, एक तो कर्नाटक की जन संस्कृति में लोक संस्कृति नामवाची शब्दों के साथ राम का नाम निरंतर सुनाई देने वाला नाम है। भारतीय संस्कृति में घुलामिला है। राम दशमी शताब्दी से लगातार रामायण कथाएँ कन्नड़ साहित्य में प्रकाशित होती रही है। हालाँकि दसवीं सदी से पूर्व एक श्रीविजय नामक व्यक्ति द्वारा रामायण की रचना का उल्लेख मिलता है, मूल रचना अलभ्य है।

एक भुवनैक रामाभ्युदय का भी दशवीं सदी में उल्लेख अवश्य मिलता है। उस रचना के भी मूल स्वरूप के अलभ्य होने से निर्णयात्मक रूप से उस रचना को लेकर कुछ भी कहना कठिन है। दसवी सदी-11वी सदी पर कर्नाकट के कवि लेखकों पर जैन धर्म का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। जैन परम्परा के आधार पर पिरोई गई कहानियाँ, एक कुमुदेन्दु (वह भी जैन रामायण ही है), रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

एक नरहरि द्वारा रचित रामायण भी है। रामायणों पर एक स्वेच्छा से शोध कार्य करने वाली अध्ययन/अध्येता की सुविधा के लिए कन्नड़ रामायणों की एक सूची भी बनाकर प्रस्तुत करती है। उस सूची में लोक साहित्य भी जुड़ा है। लोक साहित्य के आधार पर बनी रामायणें चम्पू गद्य पद्य मिश्रित रामायणें-

चम्पू	पटपद्दी	लोक साहित्य	शत्रुमायण	आधुनिक कुवेम्पु	हरिकथा
नागचंद्र	काव्य के स्वरूप के आधार पर नरहरि	हेवनकट्टे	देवप्पकवि	मारुति	यक्षगान
चन्द्र वर्मा	कनिकादास	गिरियम्मा		मुलेपतिम्मपया	
देवचन्द्र	लक्ष्मीश			वीरप्पा	
	तत्तलश्वर			मोथिलि	
	वेकामाहस				
	सोसले				
	अय्याशास्त्री				
	मुद्दण				
	कुमुदेंदु				

हमारे यहाँ एक कन्नड़ विदुषी श्रीमती एसवी प्रभावती हैं उनका ग्रंथ कन्नड़ रामायण, राम और रामायणों पर ही केंद्रित है। यक्षगानों में भी रामायण के प्रसंगों की कमी नहीं। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि कन्नड़ भाषा में इतिहास काल में अब तक रामायणों की कमी नहीं। 19वीं सदी के आरंभ काल में 'मुद्दण' के छद्म नाम से प्रकाशित रामाश्वमेध गद्यम् हृदयम् उस गद्यकाव्य में मुद्दण और उसकी मनोरमा के छद्मनाम से निकाला और यह भी काव्य पाठकों के चित्राकर्षण के अनुकूल है।

श्री राम पट्टाभिषेकम् भी आकर्षक है। कन्नड़ भाषा में यह ऐतिहासिक दखल का काव्य बना है। कन्नड़ भाषा के विद्वान श्री प्रधान गुरुदत्त के अनुसार आधुनिक काल अर्थात 20वीं सदी में रचित श्री रामायणदर्शनम् कन्नड़ के कई नए आयाम खुलता है। वे शबरी को नए तरीके से प्रस्तुत करते हैं शबरी का व्यक्तित्व देखकर पाठक का हृदय उमड़ पड़ता है।

अब जनजीवन में राम कहकर सोचने पर यहाँ रोज नई मंडलीय राम की भक्ति में लोट-पोट होने वाली भक्ति मंडलियों कि यहाँ कमी नहीं।

एक पुस्तक प्रकाशित है जिसका शीर्षक अत्यंत सहज सरल भाषा में बना है इसका शीर्षक है श्री राम सेवा मंडली यह संस्था अयोध्या की पुनः प्रतिस्थापना के बाद भी नहीं बनी, इस मंडली से कुछ लेख लेकर एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका शीर्षक अत्यंत ही सहज गद्य है अर्थात शब्दाडम्बर बिल्कुल नहीं।

'धर्म पथ दर्शन श्रीराम नडेद दारि'

इसका शीर्षक है 'रामो विग्रहवान धर्म है।' इस ग्रंथ में एक सुंदरकांड है। 2- विभीषण प्रवृत्ति, 3- सीता अग्नि परीक्षा, सीताराम में, अन्योन्य, श्री राम हनुमान, रामायण में ऋषि रामायण की प्रस्तुतता,

इस प्रकार श्री राम मंडली समूह संपूर्ण चिंतन मनन की उपरांत निकली मंडली है। मात्र साहित्य नहीं, चिंतन-मनन के परिणाम स्वरूप बनी निरंतरता है। राम अयोध्या के भी हैं। घर-घर के है। भारतीय संस्कृति का प्रतीक है।

1304, प्रथम सी, मेन सेकेंड स्टेज,
नौवाँ ब्लॉक नागरमाई, बैगलुरू- 660072
मो0 94488-56174

असमिया साहित्य में राम

➲ डॉ0 ओमप्रकाश पाण्डेय

रामायण भारतीय जाति का, मानवता का अमर महाकाव्य है इसमें भारत ने अपने को पूर्ण रूप से उद्‌भासित किया है। रामायण का भारतीय समाज और भारतीय जनजीवन पर प्रभाव बहुत गहरा है। हजारों वर्षों से इसने भारत की हृदय-भूमि को गंगा की धारा की तरह सिंचित किया है। इसका प्रभाव भारतीय जनमानस पर आज भी अक्षुण्ण है। रामायण के प्रति विद्वान् और अपढ़ दोनों के हृदय में इसके प्रति अपार आदर और श्रद्धा का भाव विद्यमान है। रामायण भारतीय समाज का प्राण बिन्दु है। इसलिए रामायण महाकाव्य भारत के आबाल-बृद्ध-वनिता-हर व्यक्ति के लिए असीम श्रद्धा की वस्तु है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण रचित होने के पहले रामकथा आख्यानक काव्य के रूप में प्रचलित और लोकप्रिय थी। अतः रामायण को भारतीय धर्म-प्राण कहा जाता है। रामायण के दीर्घ कथा प्रवाह में जो कुछ निर्मित हुआ है उसका हमारे जीवन के साथ बड़ा ताल-मेल है। युग बीत जाते हैं, विवरण के संदर्भ बदल जाते हैं, परन्तु मनुष्य के मूलभूत विचारों में कोई बदलाव नहीं आता। रामायण की पुरातनता में सनातनता का यही रहस्य है। भारत के हर ग्राम में राम का निवास है क्योंकि वे आदर्शों के प्रतिनिधि, मर्यादा पुरुषोत्तम तथा विष्णु के अवतार हैं। राम का जीवन एक ऐसा आदर्श जीवन है - जिसके अंदर एक औसत भारतीय को कैसा जीवन जीना चाहिए- क्या उसके दैनंदिन जीवन का आचरण होना चाहिए तथा पारिवारिक जीवन उसे किन मर्यादाओं का पालन करते हुए विभिन्न आश्रमों के निर्वाह की अपनी जीवन यात्रा आगे बढ़ानी चाहिए, यह सब देखा जा सकता है।

रामायण के राम संस्कृति मनुष्य हैं, पुराण-पुरुष हैं। वे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धर्मयुक्त मर्यादाओं का पालन करने वाले नर श्रेष्ठ है। सामाजिक रूप से राम का चरित्र निष्कल कथा है। वे ऐतिहासिक महापुरुष थे, जिन्होंने कर्तव्य के आगे सदैव अपने क्षुद्र स्वार्थों को बलि दी । राम ने आदर्श राजा बनकर प्रजा-पालन किया। वे घर-घर में परिवार के समस्त बंधनों के आदर्श हो गये हैं। वे स्वयं महान् थे जिनके अवतार स्वीकार किये गये वे विष्णु भी महान् थे। दैवी तथा मानवी गुणों के समन्वय के विराट पुरुष थे। भक्त लोग राम को नारायणत्व से नरत्व तक अवतरित मानते हैं और अनेक प्रबुद्ध जन उन्हें नरत्व से नारायणत्व तक उन्नत। वे चाहे नारायण हों या नर उनका सबसे बड़ा गुण है मानवीयता। इसलिए रामकथा वस्तुतः मानव जाति की कथा है और रामायण मानवता का महाकाव्य। वाल्मीकि रामायण समस्त राम काव्यों का उद्‌गम स्रोत है। यह जातीय महाकाव्य है। ऋषि प्रणीत होने के कारण इसे आर्ष महाकाव्य भी कहा जाता है। संस्कृत के रघुवंश और नैषध

काव्य, तमिल भाषा का 'कंब रामायण' मलयालम की 'अध्यात्म रामायण', असमिया की 'कंदली रामायण', मराठी का 'भावार्थ रामायण', बंगला की कृतिवास रामायण' आदि इसी कोटि में आते हैं। इन सभी रामकाव्यों पर अपने-अपने परिवेश का गहरा धार्मिक-सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव लक्षित होता है। पूर्वांचल के काव्यों का आधार वाल्मीकि रामायण का गौड़ीय संस्करण ही रहा है और उनमें इस प्रदेश की धार्मिक-सांस्कृतिक प्रवृतियों तथा लोकाचार आदि का वर्णन स्थान-स्थान पर मिलता है।

संस्कृत भाषा से लेकर अपभ्रंश से होती दक्षिण भारतीय भाषाओं बंगाली, असमी, उड़िया आदि में जो विकसित हुई, उन सब पर स्थानीयता, जाति धर्म और निजंधरों का दबाव है। राम कथा भारतीय संस्कृति के आदर्शवाद का उज्ज्वलतम प्रतीक बनकर भारत की समग्र जनता के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुई है। रामाख्यानक रचनाएँ भारतीय अस्मिता की बोधक, सांस्कृतिक धरोहर, साहित्यिक- राष्ट्रीय और शाश्वत मानव मूल्यों का उत्कृष्ट भंडार होने के साथ ही लोकमानस को आन्दोलित-आह्लादित करने के सर्व प्रकारेण समर्थ है। राम कथा को भारत की किसी एक भाषा किसी एक जाति, किसी एकमतवाद, किसी विशिष्ट सम्प्रदाय, किसी राजनीतिकमत, किसी एक विचारधारा से जोड़ना हमारी अज्ञानता तथा हठधर्मिता का प्रतीक है। रामकथा ने भारतीय वाङ्गम को ही नहीं, अपितु विश्व वाङ्गम को प्रभावित किया है।

असम और बंगाल में दोनों प्रदेशों में शक्ति की उपासना अत्यंत लोकप्रिय थी और वैष्णव कवियों के लिए उसके साथ अपनी आस्थाओं का समन्वय करना एक प्रकार से आवश्यक था। भक्ति का बीज प्राग्वैदिक युग से ही भारतवासियों की मानसिकता में विद्यमान था परवर्ती काल में आर्यों की बौद्धिकता जब भक्ति की प्राथमिक प्रवृत्तियों के साथ मिश्रित होने लगी तब भारतीय धार्मिक भाव के अंदर धीरे-धीरे गंभीरता और व्याप्ति आयी । अवतारवाद की कल्पना के प्रसार के साथ नरोत्तमराम भी विष्णु के अवतार के रूप में चिह्नित हुए। रामचरित्र के अंदर समाज कल्याण का बीज निहित होने के कारण राम को केन्द्र कर भक्ति का समावेश होने लगा। रामानंद के आन्दोलन के माध्यम से यह रामोपासना खूब लोकप्रिय हो उठी। भारतीय धर्म की सारी शिक्षाओं को रामायण के माध्यम से समाज जीवन में व्याप्त कर देने के लिए तत्कालीन चिन्ताकों भक्तों ने प्रयास करना शुरू कर दिया। इसी के फलस्वरूप विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं तथा लोकभाषाओं में रामायण की रचना की प्रवणता बढ़ने लगी । प्रादेशिक भाषाओं में रचित रामायणों में भक्ति का प्राधान्य स्पष्ट रूप से दिखायी देता है । यह युग ही भक्ति का युग था । इन रामायणों में राम विष्णु के अवतार हैं और सारे श्रेष्ठ चरित्र विभिन्न देवी-देवताओं के अंश हैं।

रामकथा पर संस्कृत में वाल्मीकि के बाद भी अनेक रामायणों की रचना हुई। उनमें योगवशिष्ठ, 'आध्यात्म रामायण' और 'अद्‌भुत रामायण' है। डॉ0 भीखी प्रसाद वीरेन्द्र अपने शोधग्रंथ रामकथाकृत्तिवास और तुलसीदास की भूमिका में लिखते हैं- ''सबसे पहले तमिल भाषा में रचित हुआ 'कम्ब रामायण' (द्वादश शताब्दी) उसके बाद तेलगू भाषा में रचित हुआ 'द्विपद रामायण', 'निर्वाचनोत्तर रामायण', 'उत्तर रामायण'। कालत्रयोदश सदी। चतुर्दश शताब्दी में रचित हुआ तेलगू भाषा में 'भास्कर रामायण' मलयालय भाषा में 'रामचरितम', असमिया में 'माधव कंदलि रामायण' और 'लवकुश युद्ध', गुजराती भाषा में 'रामलीलाना पदों'। पंचदश शताब्दी में रचित हुआ बंगला का 'कृत्तिवासी रामायण', मलयालम भाषा में 'कन्नश रामायण'। गुजराती में 'राम विवाह', 'राम बालचरित', 'सीता हरण'। सोलहवीं शताब्दी में विभिन्न

भारतीय भाषाओं में अनेक रामायणों की रचना हुई जिसमें हिन्दी में तुलसी का 'रामचरितमानस' और उड़िया में बलराम दास का 'रामायण' प्रसिद्ध है । उन्नीसवीं शताब्दी में रचित हुआ नेपाली भाषा में 'भानुभक्त रामायण'।" (पृ0 15-16)। लेकिन मेरे लेख का विषय है असमिया में माधव कंदलि रामायण पर प्रकाश डालना।

मध्यकालीन भारतीय भक्ति आंदोलन में रामकथा और राम चरित्र को सर्वथा नवीन गति मिली। हिन्दी के प्रथम रामायणकार विष्णुदास और असमिया के प्रथम रामायणकार माधव कंदलि का रचनाकाल भक्ति आंदोलन की पूर्ववर्ती सीमा पर पड़ता है। दोनों कवियों की रामाख्यानकृतियों का मूलाधार रामायण है। माधव कंदलि का लक्ष्य भी अन्य रामायणों की तरह शील संस्कृत में प्रणीत रामायण को जनभाषा में प्रस्तुत कर राम के चरित्र के माध्यम से जनसाधारण के सम्मुख मानवीय गुण, और आचार का आदर्श प्रस्तुत करना रहा होगा । असम में सबसे पहले माधव कंदलि ने रामायण लिखी इनका प्रामाणिक जीवन उपलब्ध नहीं है। असमिया विद्वान इन्हें चौदहवीं शती का और बंगला विद्वान सुकुमार सेन इन्हें सोलहवीं शती का मानते हैं। प्राचीन काल के अधिकांश कवियों की भांति माधव कंदलि के भी जीवन-कृत ग्रंथो एवं आश्रयदाता के बारे में साक्ष्य के अभाव के कारण अनिश्चितता बनी हुई है। कवि ने स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने बराही राजा महा माणिक्य के अनुरोध पर रामायण की रचना की । "माधव कंदलि ने राजाश्रित होने के कारण राजा के अनुरोध पर ही रामायण की रचना लोकभाषा में की थी। वे ब्राह्मण थे। उस समय विष्णु की पूजा-उपासना का प्रचलन था। इसीलिए वे वैष्णव भक्ति की ओर आकर्षित होकर भी रामकथा लिखने के लिए भी प्रेरित होंगे।" कंदलि ने 1500 ई के आस-पास नौ गाँव अंचल में कहीं जन्म लिया होगा। विद्वानों में मतैक्य नहीं होने पर इतना स्पष्ट है कि महा माणिक्य राजा तथा उनके आश्रित कवि माधव कंदलि का काल चौदहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध है। माधव कंदलि को संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं में प्रथम रामायण लिखने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने स्वीकार किया है कि जन समाज उन्हें कविराज कंदल कहता है। "शास्त्रार्थ में पारंगत लोग ही कंदलि कहलाते होंगे।" सत्येन्द्रनाथ शर्मा ने भी न्याय शास्त्र में व्युत्पत्ति रखने वाले व्यक्ति को कंदलि कहा है।

माधव कंदलि की कंदलि उपाधि के विषय में प्रायः सभी एकमत हैं कि मध्यकालीन असम में न्याय शास्त्री, शास्त्रार्थपटु, तर्कपटु, विद्वानों की सम्मान सूचक उपाधि कंदलि होती थी । अनंत कंदलि की एक उक्ति है - "तर्कत लाभिलानाम अनंत कंदलि।" कविराज की उपाधि-संभवतः उन्हें अपने आश्रयदाता अथवा विद्वत् मंडली से प्राप्त हुई होगी। पांडित्य गरिमा के कारण उन्हें कंदलि उपाधि मिली होगी एवं सर्वजनबोध्य कविता रचने के लिए कविराज उपाधि मिली थी। अन्तः साक्ष्य से पता चलता है कि माधव कंदलि कविराज के नाम से विख्यात थे उन्होंने रामायण की रचना पयार छंदों में वाराही राजा महा माणिक्य के अनुरोध पर की थी। असम में शंकरदेव तथा माधवदेव द्वारा पंचकांड रामायण में क्रमशः उत्तरकांड और आदिकांड जोड़कर सप्तकांडात्मक स्वरूप दिए जाने के कारण माधव कंदलि की रामायण का प्रभाव अक्षुण्ण रहा। रामकाव्य की परम्परा से इसका अद्वितीय, महत्वपूर्ण स्थान है। वह न केवल धार्मिक अपितु साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टि से भी अन्यतम उपलब्धि है। डा0 मागध ने अपनी पुस्तक 'असम प्रान्तीय राम साहित्य' में कथा गुरु चरित के आधार पर माधव कंदलि को शंकर देव की गुरु परम्परा में सन्निविष्ट किया है । माधव कंदलि, राघवाचार्य, महेन्द्र कंदलि, शंकर देव के गुरु थे। शंकर देव ने भी उत्तरकांड में माधव कंदलि को ससम्मान स्मरण किया है। कंदलि के सम्बंध में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है। लेखक राम

का भक्त है, वह स्थान-स्थान पर राम की वंदना करता है। राम कथा के मर्म स्पर्शी स्थलों की उसे पहचान है। रमानाथ त्रिपाठी ने लिखा है- "पता नहीं पूर्वांचलीय लोग अपने प्रदेश की रामायणों को वाल्मीकि का अनुवाद क्यों मानते हैं? ये सच में अनुवाद हैं ही नहीं। बंगला और उड़िया भाषाओं की रामायणों के स्रोत ग्रंथ कई रामायण, नाटक, पुराण आदि हैं किन्तु असमिया रामायण ने वाल्मीकि रामायण को ही अपना मुख्य आधार बनाया है।"

असमिया विद्वान श्रीकृष्णकांत संदिकै ने एक बार कहा था - "संस्कृत रामायण के पाठ-निर्णय और इतिहास आलोचना के लिए प्राचीन असमिया रामायण की सहायता की आवश्यकता होगी।"

असमिया रामायण में वाल्मीकि का अंध अनुसरण नहीं है। लेखक ने वाल्मीकि की कथा को अपने युग और परिवेश के अनुकूल प्रस्तुत कर साधारण जन के लिए नूतन आस्वाद के साथ प्रस्तुत किया है। असमिया जनता स्थानीय चित्रण-समन्वित इस रामायण के प्रति अपनत्व की अनुभूति करती है। डॉ0 पुष्पासिंह का मत है- "कवि कंदलि ने युगीन परिस्थितियों का प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया लोक की पतन्मुखी दशा देख उनका मन विचलित हो उठा होगा। लेकिन लोक चेतना उद्‌बुद्ध करने का उन्हें रास्ता दीख रहा था। जिसकी पूर्ति बराही नरेश महामाणिक्य ने की। माधव कंदलि महामाणिक्य के राज कवि थे। विषम परिस्थितियों को देख राजा ने अनुभव किया राम कथा के आदर्श पात्रों के चरित्र गान द्वारा देश की विषम परिस्थिति को सम बनाया जा सकता है।" अतः लोक में प्रेरणा तथा सजीवता प्रदान करने के उद्देश्य से राजा ने अपने आश्रित कवि माधव कंदलि को परब्रह्म राम को सामाजिक क्षेत्र में उतारने का आग्रह किया जिसके कारण लोक की जीवन धारा में नवीन संस्कृति का प्रादुर्भाव हो सके। राजा के वाक्य को शिरोधार्य कर कंदलि ने वाल्मीकि रामायण का सम्पूर्ण मंथन किया और यहाँ से सारतत्व को ग्रहण कर देश-काल और पात्र के अनुसार 'सप्त कांड रामायण' की रचना की ।

माधव कंदलि ने रामायण रचना के विषय में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया है। वाल्मीकि रामायण को पढ़कर उसे अपने प्रबंध में जिस प्रकार प्रस्तुत किया है, इसका उल्लेख कवि ने इन शब्दों में किया है-

"आपोनार, बुद्धि, अर्थ जिमत बुजिलो।
संक्षेप करिया ताक पद विरचि लो।
समस्त रसक कोने जानिवाक पारे।
पक्षी सम उरइ जैन परवा अनुसारे।।
कवि सब निबंधय लोक व्यवहारे।
कतो निज कतो लम्मा कथा अनुसारे।।"

(रामायण किष्किन्धा कांड, छंद- 3966)

मैंने (वाल्मीकि की कथा का) जैसा अर्थ समझना उसे संक्षित कर लिखा। समस्त रसको कौन जान सकता है। पक्षी अपने परों की शक्ति के अनुसार उड़ा करते हैं। कवि लोक व्यवहार के लिए काव्य रचना करते हैं। वे कुछ तो अपनी ओर से लिखते हैं और कुछ स्रोत सामग्री के अनुसार।

वे यह भी कहते हैं कि रामायण अपौरुषेय पाठ नहीं है। मैंने इसमें जो संशोधन और संक्षेपण किए हैं, उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। माधव कंदलि ने वाल्मीकि के आधार पर रचना करके भी स्थानीय चित्रण से मार्मिक प्रसंगों को सजीव रूप से उपस्थित करने में विशेष सफलता पायी है। असमिया रामायण में वाल्मीकि का अंध अनुसरण नहीं है। कवि ने वाल्मीकि की कथा को अपने युग तथा परिवेश के अनुकूल प्रस्तुत कर साधारण जन के लिए उसे नूतन आस्वाद के साथ प्रस्तुत किया है। असमिया जनता स्थानीय चित्रण-समन्वित इस रामायण के प्रति अपनत्व की अनुभूति करती है। रामकथा मर्मज्ञ रमानाथ त्रिपाठी ने

लिखा है- "असमिया रामायण में प्रायः संस्कार, प्रसाधन, वस्त्रालंकार, भोज्य-पदार्थ, पशु-पक्षी, वनस्पति, जाति, धर्म, साधना एवं स्थान विशेष का वर्णन करते समय लेखक अपने परिवेश की झलक दे गया है। रामायण में स्थान-स्थान पर वहाँ के खाद्य-पदार्थ, भात, संदेश आदि का वर्णन है। असम में पायी जाने वाली संधिर्के, शांखारि (शंखकार) आदि जातियों का उल्लेख है। वन का वर्णन करते समय मेठोन (Bissow) घोंग (काला पत्थर), सौनगुई (सुनहरी पीठ वाला झिपकली जातीव जीव) राजगोम तथा मांडलिक सर्पों का वर्णन है। माधव कंदलि ने असम के जनजीवन, प्रकृति को बड़े ही भव्य रूप में उपस्थित किया है, यथा राम को वन से लौटा लाने के लिए भरत के साथ जाने वाले लोग असम के विभिन्न वर्ण जातियों के लोग हैं-

"क्षत्री वैश्यगण, कायस्थ सज्जन नट भाट तेली तांती।
ठठारि सोणारि कंसार सेरवांरी।।"

(अयोध्याकांड,-छंद-2381)।

अतः डा0 सत्येन्द्र नाथ शर्मा का यह कथन अधिक प्रासंगिक लगता है- "चतुर्दश शती का असमिया समाज, असमिया जीवन धारण की प्रणाली, शिल्प, धर्म-विश्वास, खाद्या-खाद्य जाति और व्यवस्था, फूल-फल, पशु-पक्षी, राजकीय व्यवस्था आदि के सम्पूर्ण चित्रण न सही पर कुछ आभास इस ग्रंथ (माधव कंदलि रामायण) में उपलब्ध है। जनता के जीवन का प्रतिबिम्ब पड़कर कन्दलि की रामायण का वर्णन अधिक आकर्षक हुआ है।"

श्रीमंत शंकरदेव के पूर्वकालीन कवियों में माधव कंदलि निःसंदेह श्रेष्ठ कवि थे श्रीमंत शंकरदेव ने उत्तरकांड (रामायण) का अनुवाद करते समय अपने को खरगोश और कंदलि को हस्ती के साथ तुलना करके उनके पांडित्य की स्वीकृति के लिए अप्रमादी कवि विभूषण का प्रयोग किया है-

पूर्व कवि अप्रमादी माधव कंदलि
आदि बिरचिला पदे रामकथा।
हस्तीर देखिया शशा जेन धारे मार्ग
मोर मैल तेहणय अवस्था।।

भारतीय प्रान्तीय आर्य भाषाओं का प्राचीनतम राम-साहित्य असमिया रामायण है। इस संदर्भ में फादर कामिल बुल्के का कथन है- "भारत की प्रादेशिक आर्य भाषाओं का प्राचीनतम राम-साहित्य असमिया, बंगाली तथा उड़िया में सुरक्षित है। तीनों भाषाओं में एक-एक रामायण सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त कर सका, असमिया में माधव कंदलि का, बंगाली में कृतिवासका तथा उड़िया में बलराम दास का रामायण । इनमें से 14 वीं शताब्दी के अंत का माधव कंदलि कृत रामायण सबसे प्राचीन है।"

माधव कंदलि कृत रामायण के अन्तःसाक्ष्य से ज्ञान होता है कि उन्होंने सप्त कांड रामायण की रचना की थी, लेकिन शंकरदेव (1449-1568) के समय में आदि और उत्तर कांड न मिलने के कारण इन दोनों कांडों को परवती काल में जोड़ना पड़ा। माधव कंदलि रामायण में कुल 5226 छंद हैं। अयोध्या से लेकर लंका कांड तक छंदो के क्रम इस प्रकार हैं - अयोध्याः 126, अरणयः 773, किष्किन्धाः 603, सुंदरकांडः 854 और लंका कांडः 1870 फिर भी माधव कंदलि द्वारा असमी में अनुदित तथा लिखित रामायण को वह लोकप्रियता नहीं मिली जो उसे मिलनी चाहिए थी। काल के प्रवाह में वह लुप्त होने के कगार पर था। लेकिन 15 वीं सदी में असम के प्रसिद्ध संत पुरुष एवं भक्त कवि शंकर देव की उस पर नजर पड़ी, तो वह इसकी तरफ आकृष्ट हुए। मगर तब तक इसका आदिकांड और उत्तरकांड विलुप्त हो चुका था। बहुत खोज करने पर भी इसका आदि और उत्तरकांड उपलब्ध न हो सका। तब उन्होंने अपने शिष्य माधव देव के द्वारा इसका आदिकांड लिखवाया और स्वयं उत्तरकांड लिखकर इसे पूरा किया।

डा0 दिनेश कुमार चौबे ने लिखा है- "माधव

कंदलि को संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं में प्रथम रामायण लिखने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने पंचकांड रामायण की रचना सन् 1400 ई. के आस-पास की थी। इसमें पंचकांड हैं- अयोध्या, अरण्य, किष्किंधा, सुन्दर एवं युद्धकांड। वाल्मीकि रामायण पर आधारित रामायण में स्थानीय रीति-रिवाज एवं संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगत होता है। माधव कंदलि की रामायण को सप्त कांडात्मक रूप देने का कार्य महापुरुष शंकरदेव और माधव देव ने किया। शंकरदेव द्वारा उत्तर कांड सन् 1550-60 और माधवदेव द्वारा आदि कांड लगभग इसी समय रचित हुआ।" सप्तकांड रामायण के रचयिता माधव कंदलि के अतिरिक्त माधव देव तथा शंकरदेव हैं, जिन्होंने क्रमशः आदिकांड तथा उत्तरकांड लिखकर पंचकांड रामायण को सप्त कांड का रूप दिया। इस प्रकार सप्तकांड रामायण के माध्यम से असमिया में पहली बार रामकथा को समग्रता एवं विस्तृति मिली माधव कंदलि कृति रामायण की अनुमानित रचना-काल सन् 1400ई. है। सप्तकांड-रामायण का महत्व महापुरुष माधवदेव के प्रयासों के कारण हमेशा अक्षुण्ण रहा। इसी के आधार पर परवर्ती काल में रचित अनन्त कंदलि कृति रामायण इसके समान लोकप्रियता प्राप्त न कर सका । सप्तकांड-रामायण को लोकप्रिय बनाने रखने में शंकरदेव तथा माधवदेव का विशेष योगदान है। दोनों महापुरुषों ने उसमें धर्म एवं भक्ति तत्वों को समाविष्ट कर अधिक लोकप्रिय एवं अमर बनाया। लेकिन डा0 मागध का यह कथन है- "ऐसा स्पष्ट होता है कि माधव कंदलि का उद्देश्य इस कृति के द्वारा केवल रामकथा का गायन था भक्ति प्रचार नहीं लेकिन माधवदेव ने उनकी कृति में धर्म एवं भक्ति तत्वों को जोड़कर उसे जन समाज में धार्मिक ग्रंथ के रूप में प्रचारित किया। फलस्वरूप अद्यावधि उपलब्ध माधव कंदलि कृति रामायण माधव देव द्वारा किंचित संशोधित, परिवर्द्धित एवं संपादित रूप में उपलब्ध हैं।।" इसे भी शंकरदेव तथा माधवदेव की धार्मिक कृतियों की भाँति ही जन समाज में आदर प्राप्त है।

शंकरदेव (1449-1568) ई. असमिया के महान कवि, भक्त, समाज सुधारक तथा सम्प्रदाय प्रवर्त्तक हैं। इनके विषय में कई चरित्र काव्य लिखे गये हैं। प्राप्त जानकारी के आधार पर इनका जन्म 1449 ई. असम के नगाँव जिले के बरदोआ गाँव में हुआ था। उन्होंने अपने व्यक्तिचरित्र तथा सामाजिक ऊर्जा के कारण ही लोकप्रियता प्राप्त कर धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक गुरुपद को प्राप्त किया। शंकरदेव के विषय में सम्यक् अध्ययन डा0 मागध के ग्रंथ 'शंकरदेव साहित्यकार और विचारक' में हुआ शंकरदेव ने असम धरा पर जिस शाश्वत भारतीय साहित्य की रचना शताब्दियों पूर्व की वह न केवल धार्मिक बल्कि साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टि से भी अन्यतम उपलब्धि है। श्रीमंत शंकरदेव की समर्पित तथा शिष्य परंपरा के ध्वजवाहक थे श्रीमाधव देव। उन्होंने अपने गुरु के संकेत से साहित्य सर्जन शुरू किया तथा अपनी अद्वितीय साहित्यिक तथा कला प्रतिभा के बल पर भारतीय भक्ति साहित्य में असमिया भक्ति साहित्य को सुप्रतिष्ठ किया। असमिया जीवन को शंकर-माधव ने अपनी लोकोत्तर आध्यात्मिक प्राणवायु से ऊर्जास्वित किया। माधवदेव शंकरदेव के उद्घोषक थे। उन्होंने अपनी सारी प्रतिभा अपने गुरु के विचारों के प्रचार-प्रसार तथा उसके पल्लवन में लगा दिया । गुरु के आदेश पर उन्होंने माधव कंदलि के रामायण को पूरा किया। असमिया राम काव्य रचयिताओं में 16 वीं शताब्दी के अनंत कंदलि का नाम उल्लेखनीय हैं। इनके द्वारा रचित रामायण (1552-60) में तीन खंड प्राप्य हैं-अयोध्या, अरण्य और किष्किन्धा। लेकिन तद्युगीन ग्रंथों में कंदलि रामायण का उल्लेख सप्तकांड के रूप में मिलता है। बाद में बहुत से असमिया विद्वानों ने संस्कृति तथा हिन्दी भाषाओं से रामकाव्यों का

असमिया में अनुवाद कर रामकाव्य को समृद्ध किया है। असमिया रामायण में राम को विष्णु और लक्ष्मीपति कहा गया है- लक्ष्मी समन्विते, क्षीरोदसागरे, आछा प्रभु नारायणा। (छंदः 547)। असमिया रामायण में सीता लक्ष्मी मात्र है। रामकाव्य परम्परा में असमिया रामाख्याक कृतियों का ऐतिहासिक महत्व है। असमिया में रचित कंदलि रामायण भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा कवच है।

माधव कंदलि की रामायण में शंकरदेव ने उत्तरकाण्ड जोड़ा था। उन्होंने ने भी आख्यान को भक्तिपरक दृष्टिकोण दिया है। वाल्मीकि रामायण से केवल भक्तिपरक दृष्टिकोण का ही अंतर नहीं है चरित्र-चित्रण में भी मौलिकता का परिचय दिया है। इतना सब होते हुए भी लेखक ने मूलकथाकार कंदलि के वर्णन से साम्य स्थापित किया है। उसी तरह रामायण के आदिकांड के लिखते समय माधव देव ने माधव कंदलि के दृष्टिकोण को भी भली प्रकार हृदयंगम कर लिखने का प्रयास किया है। उन्होंने असमिया रामायण के आदिकांड लेखक माधव देव ने भी कंदलि का ही दृष्टिकोण अपनाया है, फिर भी उनकी निजी अपनी निजस्वता भी है। माधव कंदलि का प्रेरणा ग्रंथ वाल्मीकि रामायण है, जिसमें अनेक प्रसंगों की भरमार है, वर्णन भी विस्तार युक्त है। कंदलि ने कथा में चुनाव किया और उसमें भी संक्षिप्त पद्धति अपनायी। उन्होंने वाल्मीकि का अनुवर्त्तन कर अपने ढंग से विश्रुत रामकथा का वर्णन किया है। वाल्मीकि के पश्चात कई कवियों ने रामकथा को अपने ढंग से नये मोड़ दिए।

अवतारवाद का प्रचार हो जाने के कारण राम, भरत, माता कैकेयी आदि के चरित्र को निष्कलंक बनाने की चेष्टा की गयी है। असमिया रामायण में ऐसा प्रयास नहीं है। कैकेयी सहज रूप में ही अपने पुत्र का मंगल-कल्याण चाहती है। कंदलि ने लक्ष्मण-रेखा और छाया सीता प्रसंगों का भी बहिष्कार-किया है क्योंकि वे प्रसंग वाल्मीकि रामायण में नहीं है। सीता संवाद के समय पर कंदलि ने सीता जन्म के नए वृत्तांत का वर्णन किया है। अपुत्रक जनक भार्या सहित यज्ञ-भूमि जोतने गये। आकाश में मेनका अप्सरा देखकर दुखी हुए। आकाशवाणी हुई कि यज्ञ-भूमि जोतो तुम्हें ऐसी ही पुत्री प्राप्त होगी। यह प्रसंग भी वाल्मीकि रामायण के गौड़ीय संस्करण के अनुसार है। कथा को भक्तिपरक दृष्टिकोण देने के लिए और प्रसंग को रोचक रूप देने के लिए केवट प्रसंग और ग्रामवधू प्रसंग लाये गये हैं । कंदलि ने इन्हें नहीं अपनाया।

प्रो. भूपेन्द्रराय चौधरी की मान्यता है - "माधव कंदलि ने वाल्मीकि रामयाण का गौड़ीय या पूर्व भारतीय पाठ का अनुसरण किया है। फादर बुल्के ने गौड़ीय पाठ के कुछ प्रसंगों के उल्लेख किये हैं जो माधव कंदलि रामायण में उपलब्ध है, यथा- राम की कुश पादुकाओं का उल्लेख, सीता की जन्म कथा में मेनका का वृतांत, राम के प्रति तारा का शाप, विभीषण पर रावण का पाद प्रहार, शरणागति के पूर्व विभीषण द्वारा अपनी माता से तथा अपने भाई कुबेर से भेंट, कालनेमि का वृतांत, समुद्रलंघन के वर्णन में सुरसा का प्रथम स्थान में उल्लेख, सम्पाति के पास सुपार्श्व का आगमन।" माधव कंदलि रामायण में वर्णित वाल्मीकि रामायण से भिन्न प्रसंग हैं, यथा-सीताहरण के समय सुपार्श्व का रोकना, हनुमान का लंका की वाटिका का विध्वंस करने के पूर्व वृद्ध ब्राह्मण के रूप में रावण से भेंट करना, नल को दिए हुए वरदान का यह स्पष्टीकरण कि उसके स्पर्श से पत्थर नहीं डूबेंगे । धनुभंग के पूर्व ही राम के रूप पर मुग्ध होकर देवी सीता का मन निमज्जित हो गया। सीता ने निश्चय कर लिया कि राम ही हमारे पति होंगे-

"रामर रूपत, निमजिल मन, भै गैल देवी मोहति
एन्तेसे मोर, हैबै निजपति, करिलो मने निश्चया। "

अयोध्याकांड में कैकेयी को कलंक मुक्त करने वाली किसी भी कथा का असमिया रामायण में अभाव है।

असमिया रामायण में स्वयंवर के समय उपस्थित राजाओं की मनोदशा का अच्छा चित्रण है। वे सीता के लोभ में अपनी-अपनी पत्नियाँ छोड़कर आये हैं। वे अब कठोर धनुष देखते हैं और तिरछी आंखों से सीता को देखकर साँसे भरते हैं । इस रामायण में निराश राजाओं के साथ राम का युद्ध का वर्णन है। असमिया रामायण में जयंतकाक सीता के स्तनों पर चोंच प्रहार करता है। असमिया रामायण में रावण-लक्ष्मण शक्ति प्रहार से आहत करता है, उसमें कालनेमि राक्षस और मकरी की कथा है। असमिया रामायण में हनुमान् गन्धर्वों से युद्ध करते हैं। इस रामायण में हनुमान् भरत की भेंट नहीं दिखायी गयी है क्योंकि वाल्मीकि रामायण में भी नहीं है। इसमें राम का माया मुंड, रावण को नंदी का शाप, सुग्रीव बाली की उत्पति की कथायें हैं साथ ही अग्नि परीक्षा प्रसंग अत्यंत मार्मिक है। हनुमान् लंका में प्रवेश कर राक्षसों के जो खेल देखते हैं, वस्तुतः वे असम के प्राचीन खेल हैं। राम के भवन में असम की स्थापत्य कला का परिचय मिलता है। भित्ति चित्र भी दिखाये गये हैं।

असमिया रामायण में सीता वनवास, वाल्मीकि के आश्रम में लवकुश का जन्म, राम का अश्वमेघ यज्ञ, हनुमान् जन्म वृतांत, लवकुश का रामायण गान तथा राम से परिचय, राम के समक्ष सीता की उपस्थिति, सीता का भयंकर क्रोध पाताल-प्रवेश, राम द्वारा भाइयों, पुत्रों के मध्य राज्य - वितरण काल और राम की भेंट, लक्ष्मण वर्जन और राम का स्वर्ग गमन । असमिया रामायण में जहाँ एक ओर राम के महामानव का चित्रण है, वही उनके ब्रह्मतत्व का भी। असमिया के राम अपने ब्रह्मतत्व को सदैव याद नहीं रखते। राम से सम्बंधित पात्र भी राम के ब्रह्मत्व को सदैव याद नहीं रखते। राम ब्रह्म होने के कारण कोमल, सुकुमार भी हैं। असमिया रामायण में उन्हें दूर्वादल श्यामसू और मक्खन जैसा कोमल कहा गया है- "लवनु पुतलि जेन सुकोमल तनु।" (छंद-1200)।

असमिया की सीता भी वाल्मीकि रामायण की तरह रावण की उपस्थिति में भय तथा लज्जा के कारण पीठ देकर उत्तर देती है-

रावण के लाजे, भये पिठि दिया

असमिया रामायण का रावण सीता को लक्ष्मी मानता हुआ भी उनसे भोग की कामना करता है। वह कई तरह से सीता को प्रबुद्ध करता है। इसमें पात्रों का चित्रण स्वाभाविक एवं मानवीय आधार पर हुआ है। अधिकांश चरित्र भक्ति-भावापन्न और उससे अनुप्रेरित है। अधिकांश चरित्र वाल्मीकि के प्रायः अनुरूप ही हैं। ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं। यदि कतिपय भिन्नताएँ हैं भी तो वे कवि युग परिस्थिति तथा दृष्टि की भिन्नता के कारण हैं। माधव कंदलि ने तुलसीदास या कृतिवास की तरह अन्य पुराण, उपपुराणों से कथा का संयोजन नहीं किया है। अनुवाद करते समय कवि ने सतत् सौन्दर्य तथा पाठकों की रुचि के प्रति ध्यान रखा है। कहीं भी साम्प्रदायिक या धार्मिक मतवाद को महत्व देकर सौन्दर्य को विनष्ट नहीं किया है। इस संदर्भ में डा0 सत्येन्द्र नाथ शर्मा का कथन महत्वपूर्ण है- "इस रामायण की रचना करते समय कवि ने राम को विष्णु के अवतार के रूप में स्वीकार किया है अवश्य पर, भक्ति प्रवाह में न बहकर वाल्मीकि रामायण के प्रमुख मानवीय स्तर को परिवर्तित करने की कोशिश नहीं की है। पर्दों में बार-बार ईश्वरतत्व थोपकर राम-लक्ष्मण, भरत आदि के चरित्रों का मानवीय आवेदन विनष्ट नहीं किया है।"

डा0 दिनेश कुमार चौबे का यह कथन महत्वपूर्ण है- "माधव कंदलि और शंकरदेव ने भी विभिन्न संस्कृतियों के समन्वय और विभिन्न जातियों के परस्पर मेल से नवीन भारतीय संस्कृति के विकास के लिए असम में वातावरण का निर्माण किया । असम के इन दोनों कवियों ने आर्य-आदर्श

विरोधी आचार नीति का विरोध करते हुए लोगों को राम और कृष्ण के प्रति आकर्षित करने का प्रयास किया माधव कंदलि ने इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर रामकथा को जनभाषा में काव्य रूप प्रदान किया। शंकरदेव और माधवदेव ने भी सांस्कृतिक परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में ही समुचित सामंजस्य एवं अन्तर्भावना से भारतीय संस्कृति के युगानुरूप सर्जन किया है।"

सप्तकांड के रचयिता को पात्रों के सभी गुणों को विशद रूप में चित्रित करने का अवसर मिला है। माधव कंदलि ने वाल्मीकि के आधार पर रचना करके भी स्थानीय चित्रण से मार्मिक प्रसंगों को सजीव रूप से उपस्थित करने में विशेष सफलता पायी है। यह कहना भी जरूरी कि बहुत से असमिया विद्वानों ने संस्कृत और हिन्दी भाषाओं में रामकाव्यों का असमिया में अनुवाद कर रामकाव्य को समृद्ध किया है। भाषा रामायण के लेखकों ने काव्य के पात्रों को अपने प्रदेश के परिवेश में ढालकर प्रस्तुत किया। फलतः उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक के सम्प्रदाय ने राम काव्य के पात्रों को अपना समझा। माधव कंदलि को जनभाषा असमिया को काव्य भाषा का रूप देने में पूर्ण सफलता मिली है। इनके परवर्ती सभी कवियों ने उनकी भाषा का अनुकरण किया है। माधव कंदलि की भाषा लोक भाषा है जो लोक प्रचलित मुहावरों, लोकोक्तियों आदि के कारण अपनापन के मान के साथ परिपूर्ण है। उनकी भाषा प्रसंगानुरूप भाषानुसरिणी है। प्रसंग भाव परिस्थिति, वार्तालाप का विषय एवं वक्ता श्रोता के अनुसार ही भाषा का प्रयोग हुआ है, जिससे काव्य में स्वाभाविक सौन्दर्य की वृद्धि हो पायी है। तत्कालीन समाज के लिए उसे युग धर्म मतानुकूल बनाने के साथ ही सम्प्रेषणीय बनाने की दृष्टि से उनका महत्व अधिक है। माधव कंदलि की काव्य भाषा का सर्जनात्मक एवं साधनात्मक रूप भावानुरूप, प्रवाहपूर्ण तथा प्रसंगोचित है। राम काव्य का जो भी प्रयोजन है, उसका जो भी झोपड़ी - झोपड़ी तक पहुँच रहा है। असमिया रामायण अपने क्षेत्र में जनप्रिय है। आज भी वहाँ के लोग रामायण को कंठस्थ कर जन-समाज में गायन करते हैं।

श्री हरिनारायण बरुआ का कथन है- "यह रीति-रामायण हमारे देश के आबाल-वृद्ध सभी के हृदय का धन एवं सेवा की वस्तु है, क्योंकि यह हमारी जाति के आचार-व्यवहार, रिवाज, रीति-नीति एवं सामाजिक जीवन के तथ्य से युक्त है।" असमिया रामायण महत्वपूर्ण महाकाव्य होने के साथ ही भारतीय राम- साहित्य की एक अन्यतम कृति है। इसमें राष्ट्र की ऐक्य भावना का आभास मिलता है। पूरे भारत के साथ पूर्वोत्तर प्रदेशों में भी राम कथा का अत्यंत प्रभाव है। इसमें कोई रामोपासक सम्प्रदाय न होने के बावजूद असमिया साहित्य के सारस्वत भंडार को प्रभूत राम- साहित्य ने समृद्ध किया है। कंदलि की रामायण भारतीय संस्कृति की असम देशीय विशिष्टता का दर्पण है । यह असमिया में एक अद्वितीय रचना है। वाल्मीकि तथा तुलसी की तरह असमिया रामायण असमिया साहित्यकाश में दैदीप्यमान नक्षत्र है । माधव कंदलि रामायण असमिया की राम काव्यधारा में सर्वश्रेष्ठ स्थान है। वस्तुतः माधव कंदलि कृत रामायण असमिया जीवन, भाषा-साहित्य तथा संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

गेट बाजार,
(एन0 जे0 पी0), पो0- भक्तिनगर,
सिलीगुड़ी- पिन-734007 (पं0 बंगाल)
दूरभाष - 9434494430

गुजराती साहित्य में राम

० वीरेन्द्र याज्ञिक

श्री राम भारत के जन-मन की आत्मा हैं, अभी हाल ही में इसका प्रत्यक्ष भारत के जन-मन को उस समय हुआ जब 22 जनवरी 2024 को श्री अयोध्या धाम में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के पूज्य संत महात्माओं, आचार्यों, विद्वानों तथा सहस्त्राधिक श्रद्धालु भक्तों की उपस्थिति में श्री राम जन्म भूमि पर भव्य एवं दिव्य मंदिर में श्री रामलला को विराजमान किया था। श्री रामलला के उस अभूतपूर्व प्रतिष्ठापन के अलौकिक, अवर्णनीय आनंद की अनुभूति केवल भारत के जन जन ने ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के जन मन ने की थी, जिसका वर्णन हमें अध्यात्म रामायण में मिलता है

यस्मिन रमन्ते मुनयो विषया ज्ञान विप्लपवे।
तं गुरुं प्राह रामेति रमणादाम इत्ययि।।

अध्यात्म रामायण ज्ञान के द्वारा अज्ञान नष्ट हो जाने पर मुनिजन-सुधिजन जिनमें रमण करते हैं जो अपने सौन्दर्य से भक्तजनों के चित्रों को रमाते हैं। आनंदित करते हैं, उनको गुरु वशिष्ठ ने 'राम' नाम से अभिहित किया।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने श्री राम चरित मानस में लिखा

जो आनंद सिंधु सुख रासी।
सीकर ते त्रेलोक सुपासी।।
सो सुखधाम राम अस नामा।
अखिल लोकदायक विश्रामा ।।

जो आनंद के सागर है, सुख की राशि हैं। जिस आनंद के एक कण से तीनों लोकों को सुख प्राप्त हो जाता है, उन का नाम 'राम' हैं वे सुख के भवन है और समस्त लोकों को परम शांति और विश्राम प्रदान करते है। इसी राम तत्व के आनन्द की अनुभूति भारत के जन-मन ने विगत 22 जनवरी को की थी। भारत का कोई भी प्रदेश, प्रांत, क्षेत्र नगर, ग्राम ऐसा नहीं था, जहां इस अलौकिक आनंद का अनुभव न हुआ हो, उसका कारण यही है कि श्री राम भारत के चित्त में बसते हैं, हर भाषा, हर बोली और हर साहित्य में हमें राम के दर्शन होते हैं।

यद्यपि राम का चरित्र एवं राम कथा का मूल स्रोत महर्षि वाल्मीकि की रामायण है, किन्तु राम की कथा भारत की प्रत्येक भाषा में मिलती है । तथापि अनेक भाषाओं के रचनाकारों, साहित्यकारों तथा कवियों ने अपनी अपनी सामाजिक परिस्थितियों एवं दृष्टि से राम चरित्र का वर्णन किया है।

भारत का गुजरात प्रदेश भक्ति भाव की भूमि है। श्रीमद्भागवत पुराण में महर्षि वेदव्यास ने लिखा है कि भक्ति गुजरात में आकर वृद्ध हुई और जीर्ण शीर्ण हो गई। उत्पन्ना द्रविणे सा वृद्धि कर्नाटका गता। क्वचित्क्व चिन्महाराष्ट्र गुर्जर जीर्णतां गता । अर्थात भक्ति द्रविण देश

में उत्पन्न हुई, कर्नाटक में पल्लवित हुई, महाराष्ट्र में सम्मानित हुई और गुजरात में वृद्ध होकर जीर्ण शीर्ण हो गई। इस दृष्टि से गुजरात वह भूमि है जहाँ भक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर रही और आज भी हैं। इसीलिए गुजरात अत्यंत शांत सहिष्णु तथा सद्भाव व भक्तिभाव से पूर्ण भूमि मानी जाती है। मूलतः यह श्रीकृष्ण की भक्ति का प्रदेश है। यहाँ कृष्ण भक्ति का सागर हिलोरे लेता है, किन्तु श्री राम के प्रति भी यहाँ श्रद्धा का भाव कम नहीं है। वर्तमान में श्री राम की भक्ति का प्रचार-प्रसार पू0 संत मुरारी बापू एवं पू0 भाईश्री (श्री रमेश भाई ओझा) जैसे संत बहुत ही प्रभावी ढंग से कर रहे हैं और इसलिए गुजरात में भी राम भक्ति का ज्वार आज देखा जा सकता है। इनसे भी पहले बड़ौदा के संत पू0 डोंगरे जी महाराज ने भी राम कथा को गुजरात की धरती पर लोकप्रिय बनाया था यही कारण है कि आज गुजरात में श्री राम कथा और राम कथा साहित्य पर खूब कार्य हो रहा है

गुजराती साहित्य में राम कथा साहित्य पर फादर कामिल बुल्के का बहुत अधिक शोध कार्य है। उनके अनुसार गुजराती साहित्य का प्रारंभ ई0 सन् 1414-1479 माना गया है। तथापि उन्होने ई.सन् 1370 से ई0 सन् 1852 तक के 372 गुजराती कवियों/रचनाकारों में से 50 ऐसे कवियों की खोज की है जिन्होंने श्री रामचरित को अपने काव्य का प्रतिपाद्य बनाया है। गुजराती साहित्य में आदि कवि के रूप में सेट नरसिंह मेहता को मान्यता मिली है। जिनकी अत्यंत लोकप्रिय सब रचना "वैष्णवजन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाणे रे" को महात्मा गाँधी ने अपने सत्संग सभा का अभिन्न अंग बनाया था। प्रतिदिन महात्मा अपने दैनिक सत्संग में इस का गायन करते थे। भक्ति शिरोमणि श्री नरसिंह मेहता को कृष्ण भक्ति के महाकवि के रूप में जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है ना कि गोपीनाथ महादेव के आदेशानुसार उन्होंने भगवान कृष्ण को अपनी सभी रचनाएं समर्पित की। उनके आराध्य साँवलिया सेठ (श्री कृष्ण) थे, तथापि यत्रतंत्र उनके पदों में श्रीराम का भी उल्लेख मिलता है। उनके एक पद में कहा गया "संतो अमेरे वेवरिया श्री राम नाम ना अर्थात राम का नाम जपने वाले लोगो को कभी कोई कष्ट नहीं होता- ऐसा लिख कर नरसिंह मेहता ने राम नाम के महत्व का प्रतिपादन किया है। उनके एक और पद में राम नाम की महिमा देखने को मिलती हैं-

सुख दुःख मन में आणिये, घट साथे रे घड़ियाँ
टाण्या ते कोईना नव टणे रघुनाथ ना जाईया

इस प्रकार गुजराती साहित्य में नरसी मेहता राम नाम की महिमा का बीजारोपण किया, जिसका पल्लवन हमें आगे के कवियों में देखने को मिलता है। संत नरसी मेहता के बाद गुजराती साहित्य में कर्मण मंत्री का स्थान है जिन्होंने अपनी रचना "सीताहरण" के माध्यम से राम कथा गाई। 495 दोहों के इस काव्य को गुजराती साहित्य में की प्रथम प्रबंधात्मक कृति के रूप में मान्यता दी गई है। "सीताहरण" काव्य में संपूर्ण राम कथा नहीं है जो हमें अन्य रामायणों में मिलती है। "सीताहरण" के कुछ प्रसंग कवि की अपनी कल्पना है। इसमें से एक राजा दशरथ द्वारा कैकेई को दिए गए दो वरदानों का भी प्रसंग है, जिसका उल्लेख या स्रोत हमें अन्य किसी रामायण में नहीं मिलता है। तथापि, सीता हरण को गुजराती साहित्य में राम कथा की पहली कृति के रूप मे स्वीकृति दी गई है, किन्तु गुजराती साहित्य के मूर्धन्य विद्वान एवं टीकाकार के0 का शास्त्री "सीताहरण" काव्य को एक सामान्य दर्जे का काव्य मानते हैं।

कर्मण मंत्री के बाद कवि भालण का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने राम की बाल लीला का वर्णन किया है। जिस प्रकार हिन्दी कवियों में महाकवि सूरदास ने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वात्सल्य भाव से वर्णन किया है। वैसा

ही कुछ हमें भालण कवि के राम भक्ति के पदों में मिलता हैं अपने 'मामका' आख्यान में कवि ने वात्सल्य भाव के साथ साथ राम नाम की महिमा का भी वर्णन किया है। भालण कवि के उपरांत राम कथा के रचनाकारों में हमें भीम, श्रीधर कवि का उल्लेख मिलता है। सोलहवीं शताब्दी में जिस भक्त कवियित्री मीराबाई ने गुजराती, राजस्थानी तथा हिन्दी भाषा में समान रूप से मान्यता प्राप्त की है, वे कृष्ण भक्ति की गायिका-साधिका मीरा बाई ने भी रामभक्ति के पदों की रचना की है। संयोग से यह वर्ष मीराबाई के जन्म का 525 वाँ वर्ष है, उनका स्मरण यहाँ समीचीन लगता हैं। उनका प्रसिद्ध पद गुजराती-हिन्दी दोनों में समान रूप से गाया जाता है।

राम रमकणु जडियु ने राणा जी
मुने राम रमकणु जड़ियु

अर्थात् जिस प्रकार एक छोटा बालक खिलौना प्राप्त करके सब कुछ भूल जाता है और खिलौने के साथ खेलने लगता है। उसी प्रकार राम नाम का खिलौना प्राप्त कर भक्त को सारा संसार तुच्छ लगने लगता है, तभी मीरा बाई कहती हैं-

राम सीतापति तारी लेह लागी
तमने भजेथी मारी भीड भागी

अर्थात सीतापति राम से मन लग जाने पर, उसका भजन करने से संसार की सारी पीड़ा दूर हो जाती हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कृष्ण भक्ति की श्रेष्ठतम् कवियों में से एक मीराबाई को जो स्थान हिन्दी साहित्य में प्राप्त है, गुजराती तथा राजस्थानी भाषा में भी उनको बड़े सम्मान के साथ स्वीकृति प्राप्त हैं।

मध्यकालीन गुजराती भाषा व साहित्य में गिरधर कवि की रामायण को वही सम्मान और स्थान प्राप्त है जो हिन्दी साहित्य में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस को प्राप्त है। गिरधर कवि की रामायण का मूल स्रोत यद्यपि महर्षि वाल्मीकि की रामायण ही है, किन्तु इसमें तुलसी के रामचरितमानस, पद्म पुराण, अग्नि पुराण एवं हनुमन्नाटक का भी प्रभाव देखने को मिलता है। जिस प्रकार सम्पूर्ण उत्तर भारत तथा अन्य अनेक प्रदेशों में भी घर-घर श्री रामचरितमानस को बड़े ही पूज्य भाव से देखा जाता है और गाया जाता है, वैसे ही आज भी गुजरात की परंपरा में भी गिरधर रामायण का पारायण किया जाता है। तुलसी के समान ही गुजरात के वरेण्य कवि गिरधरदास का जन्म बड़ोदरा के मासर गांव में ई0स0 1785 में एक वणिक्र परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही गिरधर कवि का मन सांसारिक कार्यों में न लगकर सत्संग और भगवद्भक्ति में अधिक लगता था। बीस वर्ष की अवस्था में वे मासर से आकर बड़ोदरा शहर में आकर बस गए और वहीं उन्होने रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रंथों का अध्ययन किया।

श्री गिरधर कालांतर में वल्लभ संप्रदाय में वैष्णव धर्म से गोस्वामी पुरुषोत्तम दास जी से दीक्षित हुए। गोस्वामी पुरुषोत्तमदास वेदान्त एवं काव्य शास्त्र के विद्वान् थे, उनकी छत्र-छाया और निर्देशक में गिरधर कवि ने अपनी अध्यात्म यात्रा का प्रारंभ किया। गिरधर कवि विवाहित थे और उनका एक पुत्र भी था, किन्तु उनके पुत्र का बहुत ही छोटी आयु में मृत्यु हो जाने और उसके कुछ समय बाद उनकी पत्नी का निधन हो जाने कारण कवि गिरधर को संसार से विरक्ति हो गई और वे पूर्ण रूप से भगवान को समर्पित हो गए और इस विरक्त भाव ने कवि गिरधर को गुजराती साहित्य का अग्रणी कवि बना दिया, यद्यपि उन्होंने अपनी भक्ति यात्रा श्रीकृष्ण से प्रारंभ की किन्तु रामायण ने उनको गुजराती के श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित कर दिया। उन्होंने रामायण के अतिरिक्त 10 अन्य ग्रंथों की रचना की है। (1) दाण लीला (2) श्री कृष्ण जन्म वर्णन (3) राधा कृष्ण नो रास (4) प्रह्लाद चरित (5) ग्रीष्म ऋतु नी लीला (6) तुलसी विवाह (7) राजसूय यज्ञ (8) कृष्ण चरित (9) जन्माष्टमी

नो सोहलो (10) नृसिंह चतुर्दशी नी बधाई।

गिरधर की रामायण सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमें भी सात काण्ड, जैसा कि महर्षि वाल्मीकि की रामायण और तुलसी के मानस में हैं, किन्तु अध्यायों की संख्या 299 है और 9551 चौपाइयाँ है। गिरधर की रामायण की सभी चौपाइयाँ गाई जाने वाली राग रागनियों में है अतः इनका घरों घरों में बड़े आदर के साथ गान किया जाता हैं। गिरधर की रामायण के साथ-साथ अन्य रचनाओं का मूल रस शान्त रस ही है। उन्होंने अपनी रचनाओं में बहुत अधिक क्लिष्ट और साहित्यिक दृष्टि से भारी भरकम शब्दों का प्रयोग न करके सरस सुबोध तथा आम बोलचाल के शब्दों का ही प्रयोग किया है।

कवि ने भारत की काव्य परंपरा के अनुसार और महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसी दास का अनुसरण करते हुए अपनी रामायण का प्रारंभ गुरु गणेश, सरस्वती और भगवान शंकर की वंदना से किया है और पाठकों / भक्तों से विनम्रता के साथ निवेदन किया है कि वे उनकी इस काव्यकृति को भक्ति भाव से स्वीकार करें। सर्वप्रथम अपने सद्गुरु को प्रणाम करते हुए गिरधर कवि कहते हैं

श्री गुरुपदजुग मंगल रूप जी
सकल तीरथ धाम अनूपजी
नमुते पद ने जोड़ी जुग हाथ जी
सीद्ध मनोरथ हुं थाउ सनाथजी

यह ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार तुलसी ने अपने बाल काण्ड का प्रारंभ करते हुए लिखा है

बंदऊ गुरु पद पदुम परागा।
सुरचि सुवास सरस अनुरागा
अमिय भूरि मय चूरन चारु।
समन सकल भव रुज परिवारू,

गिरधर जी गुरू के बाद गणपति, पार्वती और शंकर को प्रणाम किया है और स्वयं को बालक बुद्धि मानकर माँ शारदा से राम चरित्र के गुणगान की आज्ञा मांगी है

हू बालक बुद्धि स्तवुंतुजने, करो वचन पवित्र
तुज कृपाए सरस्वती माता, गाँउ राम चरित्र

इसके बाद कवि ने राम कथा के स्रोत के रूप में कुछ रामायणों तथा उनके रचनाकारों-रचयिताओं के प्रति भी अपना आदर व्यक्त किया है-

हरि कथा नी महिमा म्होटो, संत जाणें छे घणाँ
आदि कवि जे मुनि वाल्मीकि, कर्त्ता रामायण तणाँ
वाल्मीकि रामायण प्रथम वली व्यासे रामायण करी
वशिष्ठ रामायण तथा शुकदेव रामायण खरी
वली वृह्म रामायण करी भणावी नारद ने तथा
अंजनि पुत्र करी छे हनुमान नाटक नी कथा
विभीषण रामायण करी, शेभुकृत अभिराम छे
पार्वती ने भणावी तेनु शिव रामायण नाम छे।।

इस प्रकार कवि ने अपने पूर्ववर्ती रामायण के रचनाकारों/कवियों के प्रति अपना आदर व्यक्त करते हुए उनका आभार प्रकट किया है। यह कहीं और किसी अन्य रचना में नहीं मिलता है। तुलसी ने, भी अपने बाल काण्ड में केवल महर्षि वाल्मीकि और कपीश्वर श्री हनुमान जी का ही उल्लेख किया है।

सीताराम गुण ग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ ।
वन्दे विशुद्ध विज्ञान कवीश्वर कपीश्वरो।।

कवि गिरधर ने अपने सभी पूर्ववर्ती रामकथा के रचनाकारों की एक लम्बी सूची प्रस्तुत की है। उनको प्रणाम किया है और फिर कहा कि मैं अपनी अल्प बुद्धि से अब राम कथा का वर्णन कर रहा हूं

एमू करू अल्प बुद्धे कहेवा रामकथाय ।
अंतरजामी कृपा करजो ग्रंथ पूरण थाय ।।
सहु कवि ने पाये नमुँ कर जोड़ी मांगू मान।
बालक जाणी दया आणी देजो हरि गुण दान ।।

इसी प्रकार से अपने सात काण्डों में रामायण की रचना करके कवि गिरधर ने तुलसी की ही तरह श्री हरि को प्रणाम करके अपनी रामायण का समापन किया है- गिरधर अंत में लिखते हैं

गावा राम चरित्र पावन, इच्छा मनमाहे धरी।
कर जोड़ी कहे दास गिरधर श्रोताजन बोलो हरि।।

इस प्रकार गुजराती साहित्य में गिरधर रामायण ने अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। गिरधर रामायण में अनेक ऐसे प्रसंग भी हैं जो अन्य रामयाणों से भिन्न हैं। उत्तरकाण्ड में श्री सीता जी का धरती में समा जाने वाले प्रसंग को कवि ने अपनी विशिष्ट शैली में प्रस्तुत किया है, यह कवि की अपनी कल्पना शीलता है। चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचारी के अनुसार "जब तक हमारी भारत भूमि में गंगा, कावेरी प्रवाहमान है, तब तक सीता राम की कथा भी आबाल स्त्री, पुरुष सबसे प्रचलित रहेगी, माता की तरह हमारी जनता की रक्षा करती रहेगी" श्री गिरधर दास जी विरचित गुजराती रामायण गुजराती भाषा का सर्वोत्तम श्री राम कथा काव्य है।

डी-1611, उपवन टावर
अप्पर गोविंद नगर
मालाड (पूर्व) मुम्बई-400097
मो0 9820219181

करके यमुना-स्नान, विलम वट के तले,
लक्ष्मण, सीता, राम विकट वन को चले।
वहाँ विविध वैचित्र्य, विलक्षण ठाठ थे,
अगणित आकृति-दृश्य, प्रकृति के पाठ थे।
वन में अग्रज अनुग, अनुज हैं अग्रणी
सीता ने हँस कहा-न हो कोई व्रणी।
भाभी, फिर भी गईं न आईं तुम कहीं
मध्य भाग की मध्य भाग में ही रहीं।
मुसकाये प्रभु मधुर मोदधरा वही,
वन में नागर भाव प्रिये अपना यही।
बीते यों ही अवधि यहाँ हँस-खेलकर
तो हम सब कृतकृत्य, कष्ट भी झेलकर।

-मैथिलीशरण गुप्त (साकेत से)

मराठी साहित्य में राम

➲ डॉ0 विद्या केशव चिटको

राम हमारा कर्म हमारा धर्म हमारी गति है
राम हमारी शक्ति हमारी भक्ति हमारी मति है
बिना राम के आदर्शों का चरमोत्कर्ष कहाँ है
बिना राम के इस भारत में भारतवर्ष कहाँ है।

ये पंक्तियाँ हैं शिव ओम अम्बर की... वीणा पत्रिका के जनवरी वर्ष 2024 के मुखपृष्ठ पर छपी हैं। राम का रूप लोकाभिराम है। लोगों को प्रिय लगने वाला है। जन जन की प्रीत का विषय हैं राम। राम आत्मीय हैं। सर्व वृत्त व्यापक हैं। राम सबके हैं। किसी एक के अकेले के नहीं। विशिष्ट वर्ग के नहीं। अनुशासन के नहीं शासन के नहीं किसी व्यवस्था के नहीं। सभ्यता संस्कृति के नहीं, न किसी विशिष्ट के, न शिष्ट के। वह तो घट-घट वासी कण कण में समाये हुए हैं। वह लोक देवता हैं। राम नायक सबके लिए हैं सर्व हितार्थ सज्जित हैं। सर्व दुख भंजन हैं। राम का यह अद्‌भुत दर्शन है।

सुर काज धरि नर राज तनु, चले दलन खल निसिचर। राम का नाम तुलसी के शब्दों में अपना घर है आत्मीयता है। राम से रिश्ते का अर्थ है अति साधारण अति विपन्न अति अज्ञानी अति पीडित से सहज रिश्ता रखना। जो न रख सके वह काहे का नातेदार? कहने का भाव यह कि श्री राम तो आज जन जन की आवश्यकता हैं। भारत में दो अमर कथाएँ हैं। इन दो कथाओं पर देश की हर भाषा में प्रचुर साहित्य लिखा गया है। कविता, कथा, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, लोकगीत, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोककला, कहावतें, मुहावरे, परम्पराएँ, आचार, विचार, मनन, चिंतन, व्यवहार सब कुछ का आधार मूल तो वही है। महाभारत के लिए तो कहा ही गया है। "यन्न भारते तन्न भारते" अर्थात् जो महाभारत में नहीं वह विश्व के किसी भी भाग में नहीं। और राम के समान आदर्श जीवन जीने वाला कोई दूसरा पुरुष ही नहीं। वैयक्तिक जीवन के स्तर पर 'राम' और सामाजिक जीवन स्तर पर रामराज्य की चाह हर युग में जीवित रही है। आज भी यह जीवित है। पुत्र राम जैसा ही हो और राजा भी राम जैसा ही हो। राम कथा में मानवीय मूल्य रक्षित हैं। सिंहासनारूढ होते राम कहते हैं "जो अनीति कछु भाषौ भाई तौ माहि बरजहु भय बिसराई।" राम राज का स्वरूप प्रकट करते समय तुलसी दास लिखते हैं "सब नर करहिं परस्पर प्रीति चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति। राम मानवता के इतिहास में बेजोड़ हैं। आदर्श नर और आदर्श राजा के लिए तो सबसे पहला नाम राम का ही लिया जाता है। भरत अपनी माता कैकेयी से कहते हैं। अस को जीव जन्तु जग माहीं जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं। मानव दानव एवं वन्य इन तीन वंशों की कथा रामायण में गुंफित है। इसमें समकालीन संस्कृति का दर्शन है। इसे प्रतीकात्मकता प्राप्त हुई है। उसका आह्‌वान

चिरकालिक बना हुआ है। वीर काव्य राम रावण युद्ध के मूल सूत्र में पिरोया गया है। प्रतिशोध, प्रतिकार, स्वीकार, अस्वीकार, आह्वान, अपहरण वचन पूर्ति और वनवास, जय पराजय, त्याग परित्याग, जैसे शताधिक भावनाओं का एकत्रीकरण समीकरण है रामायण। भारतीय भाषाओं का साहित्य इन तीन पात्रों से जुड़ा हुआ है। राम का बिम्ब हमारे भारतीय मानस पर बहुत गहरी छाप लिए हुऐ है। राम कथा के मूल रचयिता भगवान शंकर हैं।

इनके अतिरिक्त अगस्त्य, लोमेश, ऋषि याज्ञवल्क्य और काग भुसुंडि को भी राम कथा का स्रोत माना गया है। परन्तु वाल्मीकि कृत रामायण को ही सर्वत्र आदि काव्य माना गया है अनेक विद्वानों ने इसे लगभग 4000 ई पूर्व की रचना कहा है। यों तो वेद में भी जनक, सीता, राम, भरत आदि शब्द आए हैं पर कई विद्वानों ने वेद में दाशरथि राम की उपस्थिति अस्वीकार्य की है। पर हमारे करपात्रीजी महाराज ने "राम कथा मीमांसा" में वेद से राम कथा के अनेक संदर्भ खोज निकाले हैं। एक जनश्रुति यह भी है कि पहली राम कथा हनुमान जी ने लिखी थी। रामराज्य स्थापित होने के बाद कुछ समय के लिए हनुमान जी कैलास पर्वत पर चले गए थे वहाँ श्री रामजी का स्मरण करते हुए उन्होंने पत्थर पर एक राम कथा उत्कीर्ण की। इसी बीच महर्षि वाल्मीकि कैलास पहुँचे वहाँ हनुमंतजी के रामायण को देख कर बड़े दुखी हो गए तब हनुमान जी ने उनके दुखी होने का कारण पूछा। तो उन्होंने बताया कि एक रामायण कथा मैंने भी लिखी है। पर उसकी रचना का श्रेय तो अब मुझको नहीं मिलेगा। तब हनुमानजी ने उन्हे श्रेय देने के लिए अपने काव्य के सारे प्रस्तर खंड समुद्र को अर्पित कर दिए। यह भी मान्यता है कि श्री राम का राज्य त्रेता युग में लगभग 11000 वर्ष तक चलता रहा। उस बीच वाल्मीकि ने कुश लव द्वारा मौखिक राम कथा की गायन परंपरा की शुरूआत की। पहले यह श्रुति परंपरा में थी बाद में लिपिबद्ध हुई। आगे चल कर इसमें तरह-तरह के प्रकरण प्रक्षेप जुड़ते गए। आज भारत और भारत के बाहर इन्दोनेशिया मलाया फीजि, बाली, सुमात्रा जहाँ-जहाँ राम कथा है रामलीला है रामचरित के इस रूप के लिए ही रामायण को विकासात्मक काव्य 'एपिक आफ ग्रोथ' कहा गया है।

राम कथा को शब्द बद्ध करते महर्षि वाल्मीकि मूलतः कवि थे। ये राम के समकालीन थे। इन्होंने इक्ष्वाकु कुल के राम संबंधी इतिवृत्त का ज्ञान प्राप्त कर महान आख्यान रामायण की रचना की। नारद उस समय राम के जीवन सूत्र के अधिकृत ज्ञाता थे। जिन्होंने योगी तपस्वी वाल्मीकि के समक्ष उसका सविस्तारवर्णन किया है। वाल्मीकि का प्रश्न था "कोन्वस्मिन्साम्प्रतं लोके" प्रश्न का उत्तर नारदजी ने दिया है। वे कहते हैं "ईक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न एक ऐसे पुरुष हुए हैं जो राम नाम से विख्यात हैं। वे मन को वश में रखने वाले महाबलवान, कीर्तिमान, धैर्यवान और जितेन्द्रिय हैं। वे बुद्धिमान नीतिज्ञ वक्ता शोभायमान शत्रु संहारक है। शरीर के विभिन्न अंगों के अप्रतिम सौन्दर्य और शक्ति से युक्त राम शत्रुओं का दमन करने वाले राम महान् प्रतापी हैं। उनके कंधे पुष्ट और भुजाएँ बड़ी-बड़ी है। ग्रीवा शंख के समान और ठोढी मांसल है। वे शोभायमान और सुन्दर लक्षणों से युक्त हैं। शरीर सुडौल और देह की कांति का रंग नीलवर्णी है। वे यशस्वी ज्ञान संपन्न शत्रुविध्वंसक जीवों तथा धर्म के रक्षक हैं। स्वधर्म और स्वजनों के पालक वेद वेदांग के तत्त्ववेत्ता तथा धनुर्वेद में प्रवीण हैं। वे अखिल शास्त्रों के तत्वज्ञ स्मरण शक्ति से युक्त तथा प्रतिभा संपन्न हैं। अच्छे विचार और उदार हृदय वाले श्री रामचन्द्रजी बातचीत करने में चतुर तथा समस्त लोकों के प्रिय हैं। जैसे नदियाँ समुद्र से मिलती हैं उसी प्रकार राम से साधु पुरुष मिलते रहते हैं। संपूर्ण गुणों से युक्त श्री राम अपनी माता कौसल्या के आनंद को बढ़ाने वाले हैं।

गंभीरता में समुद्र और धैर्य में हिमालय के समान हैं। वे विष्णु भगवान के समान बलवान हैं। उनका दर्शन चन्द्रमा के समान मनोहर प्रतीत होता है। वे क्रोध में कालाग्नि के समान और क्षमा में पृथ्वी के समान हैं। राम में इतने सारे गुणों भंडार एक साथ होना ही उन्हे असाधारण बनाता है।

वाल्मीकि ने इस असाधारण व्यक्तित्व को 24000 श्लोकों में बद्ध किया है। यह अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। अध्यात्म रामायण, आनंद राामायण, अद्भुत रामायण, भुशंडि रामायण, वसिष्ठ रामायण, योगवसिष्ठ, उदार राघव, उल्लास राघव, उन्मत्त राघव, पांडवीयहनुमन्नाटक, प्रसन्न राघव, भास, कालिदास, प्रवरसेन, भवभूति भट्टि कवियों की परंपरा से होते हुए स्वयंभू तुलसी, केशव, मैथिलीशरण गुप्त, निराला, नरेश मेहता तक हैं। बौद्ध कथाओं, जैन कथाओं, प्रवरसेन कृत सेतुबन्ध पाँचवी शती भारतीय भाषाओं तमिल, तेलगु, मलियाली, कन्नड, असामी, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी, महाराष्ट्री प्राकृत मराठी में भावार्थ रामायण याने शताधिक ग्रन्थ भारतीय भाषाओं में लिखे गये हैं। इसके साथ ही विशेष लक्षणीय बात यह है कि भारतीय भाषाओं के अलावा आदिवासी समाज, वन्य जातियों गिरिजन समाज की बोलियों में राम कथा की भरमार है। कथा, कविता, नाटक, तमाशा, नौटंकी, बहुरूपिया नकल के सहस्रों रूप और आज भी खेत खलिहानों में, बोली में, कहावतों में, मुहावरों में, उक्तियों में, विवाह की रस्मों में, जन्म से लेकर षोडष संस्कारों में सर्वत्र राम है। रामलीला तो पूरे विश्व मे है उसके अनगिनत रूप हैं समुद्र मे उठने वाली अनगिनत लहरों जैसी। राम कथा को व्यापक रूप प्रदान करने का श्रेय गोस्वामी तुलसी दासजी को है। राम चरित मानस एक अनूठा महाकाव्य है जिसमें भक्ति की भूमि इतिहास पुराण धर्मशास्त्र कथा काव्य चरित मानस का प्रतिपाद्य राम चरित है। विमल विवेक विलोचन भव मोचन राम चरित बरनत है। तुलसी के राम लोकरक्षक एवं लोक रंजक हैं। उनके राम सबके हैं। ज्ञानी पंडित के कोल किरात के निषाद के शवरी के गिध के सुग्रीव के जामवन्त जैसे जाति के भी। गोस्वामीजी ने राम का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया, जिसमें गार्हस्थ जीवन के अनेक सम्बन्ध पिता पुत्र का, माता पुत्र का, भाई-भाई का, छोटे-बड़े का, स्वामी सेवक का, राज प्रजा का, गुरु-शिष्य का स्वामी सेवक का अनेक-अनेक संबंधों का व्यावहारिक आचरण का रूप राम के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यह राम चरित मानस अगाध महार्णव है। इसमें गहरी डुबकी लगा कर हजारों रत्न खोजे जा सकते है। मानस का रस सदा सर्वदा सबको माता रहा है। इसमें भक्ति भाव है। स्नेह है। ज्ञान है। कर्म है उपासना है। आदर्श है। विचार हैं, व्यवहार है। नीति है और न जाने कितने रूप हैं जिन्हे हम शब्दों में पकड़ ही नही पाते हैं। इसी कारण कहा गया है कि कविता लसी पा तुलसी की कला। तुलसी को पा कर कविता धन्य धन्य हो गई। तुलसी के मानस को ही सर्व आदर्श का मूल मान कर कवि ने तमिल में, असम में माधव कंदिल ने, बंगाल में कृत्तिवास ने कन्नड में, कश्मीरी भाषा में और एकनाथजी ने मराठी में भावार्थ रामायण की रचना की। तुलसी जहाँ रहते थे काशी मे उस स्थान अस्सी नगवा के बीच झोपड़ी बना कर उसी से थोड़ी दूरी पर एकनाथजी महाराज रहते थे। वे नित्य ब्राम्ह बेला में उठ कर स्नान पूजा कर तुलसी की पीयूष वाणी में कथन करती राम कथा श्रवण करने के लिए पहुँच जाया करते थे। भारी जन समुदाय वहाँ तुलसी की मंत्रमुग्ध वाणी मे राम कथा सुनता था। एकनाथजी महाराज तो तुलसी से अत्यधिक प्रभावित थे। पूरे तीन वर्ष वे काशी में रहे। रामकथा श्रवण करते थे। और उन्होंने संकल्प कर लिया था कि पूरे महाराष्ट्र को मैं इसी प्रकार रामकथा सागर में निमज्जित कर दूँगा। इस प्रण पूर्ति का परिणाम भावार्थ रामायण है। आज पूरा महाराष्ट्र राम मय है। एक नाथ महाराज ने अपने पुत्र हरि को राम

भक्ति में सराबोर होने के लिए काशी मे ही छोड़ दिया था।

भावार्थ रामायण आज महाराष्ट्र के घर-घर में भक्ति भाव से पढ़ी जाती है। तुलसी के सर्वेसर्वा राम तद्वत एकनाथजी का प्राण श्वास राम थे। एक राम घनस्याम हित चातक तुलसी दास वैसे ही एकनाथजी के लिए "श्रीराम आम्हां गण गोत आमचे सर्वस्व श्री रघुनाथ"

गोस्वामी तुलसी दास और एकनाथजी महाराज में बड़ी निकटता थी। इसका कारण ये दोनों परम रामभक्त ईसवी सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में अवतीर्ण हुए थे तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 और एकनाथजी का जन्म ईस्वी सन् 1533। गोस्वामीजी एकनाथजी से उम्र मे बड़े थे। दूसरी बात यह कि दोनो का ही जन्म अभुक्तमूल नक्षत्र में हुआ था। वंश नाश के भय से तुलसी दासजी के पिता ने इनका त्याग कर दिया था। मातु पिता जग जाय त्यजो जन्म के कुछ काल बाद ही माता स्वर्ग धाम चली गई। एकनाथ महाराज का जन्म भी मूल नक्षत्र में हुआ था। वर्ष के भीतर ही उनकी माँ स्वर्ग सिधार गई। मातामही और पितामह ने एकनाथजी का पालन किया। तुलसीदासजी बाबा नरहरिया दास के पास दीक्षित हुए तो एकनाथजी स्वामी जनार्दन जी के पास। दोनों ने भाखा में रचना की स्वान्तःसुखाय रघुनाथ गाथा गाई। दोनों ने ही अगुनहि सगुनहि नही कछु भेदा। सगुन निरगुन का भेद ही मिटा दिया। दोनों ने सकल ब्रह्म राममय कर दिया। "तुलसी जाके बदन ते धोखेहु निकसे राम ताके पग की पनहि मेरे तनु चाम" एकनाथजी महाराज भी यही बात कहते हैं। "जगा लावे सत्पथी हेचि साधुंची पै कृती" तात्पर्य यह कि तुलसीदास और एकनाथजी में समान धर्मिता के अनेक बिन्दु हैं। पूरे उत्तरभारत को राममय बना देने का श्रेय बाबा तुलसीदास को है। राजा से रंग महल से झोपड़ी तक, ज्ञानी पंडित से अनपढ़ तक रामगाथा को लोकप्रिय बनाने का श्रेय तुलसी को है। आज अत्यंत सामान्य कृषक भी एक दूसरे से मिलते 'जै सिया राम' 'रामराम' कहते हैं। एकनाथ महाराज ने भी भावार्थ रामायण लिख कर पूरे महाराष्ट्र में घर घर तक राम के धनुर्धारी राम को एक व्रती, एक वचनी और एक पत्नीव्रती का आदर्श प्रस्तुत किया है। एक वाक्य में कहें तो उन्होने नव चैतन्य निर्माण करने का कार्य किया है। इस महान विभूति के ग्रन्थों को पालकी मे सजा काशी के विद्वानों ने शोभा यात्रा निकाली थी। एकनाथ महाराज ने भावार्थ रामायण के द्वारा राम रूप को महाराष्ट्र के जन मन में धँसा दिया। महाराष्ट्र में वारकरी पंढरपुर की यात्रा विट्ठल का दर्शन करने जाते 'रामकृष्ण हरि' 'जय जय राम श्री हरि' का घोष करते हैं। राम वहाँ भी अग्रक्रम में हैं। ज्ञानेश्वरी के दसवें अध्याय में परमेश्वर की अनेक विभूतियों में राम एक विभूति है। ज्ञानेश्वरी में सिर्फ तीन ओवियों याने तीन पंक्तियों में राम के अनन्य सौन्दर्य का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं "रावण के मस्तक का अपने बाणों से शिरच्छेद करने वाले देवादिकों की मर्यादा और धर्म का जीर्णोद्धार करने वाला सूर्य वंश का सूर्या" भावार्थ रामायण ने महाराष्ट्र की प्रजा को इस कदर प्रभावित किया कि लोग नित्य हरिपाठ जैसे पाठ करते हैं और तो और उत्स्फूर्त रूप में रामायण कथा गायी और रची जाने लगी। मुक्तेश्वर मराठी के प्रतिभा संपन्न कवि एकनाथ महाराज के प्रपौत्र। उनका समय शके 1521 से 1571। उन्होंने 'संक्षेप रामायण' की रचना की। इसे 'कौतुहल रामायण' भी कहा जाता है। इस रामायण मे 1725 पंक्तियाँ हैं। सात कांड विदग्ध शैली शब्दालंकारों का ऐसा प्रयोग कि मन मुग्ध हो जाता है। ठहर जाता है बारंबार पढ़ा जाता है। मन इसका आस्वाद लेने के लिए ललकता है। अभिव्यक्ति की ऐसी अनूठी शैली के कारण इस रामायण को 'कौतुहल रामायण' कहा गया है।

मुक्तेश्वर की परंपरा में माधव स्वामी ने भी राम केन्द्रित भक्ति काव्य की रचना की। रामनाथ निगडीकर ने

'राम राज्य' काव्य लिखा। मोरोपन्त ने तो अपनी हथेली के आकार में 'अष्टोत्तर शत' रामायण की रचना की। राम कथा को अनेक भावों से अलंकृत करने का यह प्रयत्न स्तुत्य और मराठी साहित्य की एक विशेष निधि मानी गई है।

समर्थ रामदास और गोस्वामी तुलसी दास दोनों में विलक्षण साम्य रहा है। दोनो ही ने परकीय शासन के विरोध में मुगल सल्तनत के विरोध में रावण को ही प्रतिरूप मान कर सब प्रकार से चेतना जाग्रत करने का काम किया। कोदंडधारी राम "तुलसी मस्तक तव नवै धनुष बाण लेहु हाथ" समर्थराम दास तो पंढरपुर में विटठल को कमर पर दोनों हाथ धरे खड़ा देखते हैं तो सीधा सवाल करते हैं कि कमर पर हाथ धरे क्यों खड़े हो उठाओ धनुष बाण। अरे वह मर्कट वानर राक्षसों का संहार कर सकते है तो हम अत्याचारी मुगलो से अपनी प्रजा की और देवमंदिरों की रक्षा नही कर सकते हैं क्या"। अतुलित बल धामा हनुमान की आराधना और विश्वास वर्धित करने के हेतु पुरस्सर तुलसी दासजी ने काशी में संकट मोचन हनुमान मंदिर की स्थापना की। बलशाली पवनपुत्र हनुमान की आराधना की शुरूआत की। समर्थ रामदास जी ने तो पूरे महाराष्ट्र मे एक सौ आठ हनुमान मंदिरों की स्थापना की। "पाणी महासायक चारु चापं" हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना के लिए राज शिवाजी को प्रवृत्त किया। समर्थ रामदास स्वामी ने दो रामायण लिखी। एक लघु रामायण जिसमे 125 श्लोक हैं और दूसरी विस्तार रामायण युद्ध कांड और सुन्दर कांड। प्रश्न उठता है कि ऐसा उन्होंने क्यों किया। तो इसका उत्तर यह है कि समर्थ रामदास स्वामी की दृष्टि में प्रभु श्री रामचन्द्रजी देवताओं के बन्ध विमोचक हैं। रावण जैसे दुराचारी से धरा को मुक्त करना। समर्थ रामदासजी ने यहाँ पर एकनाथ महाराज की रामोपासना का अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का प्रयत्न किया है। गोस्वामी तुलसीदास "रामजपु राम जपु राम जपु भाई" कहते हैं तो समर्थ रामदास भी कहते हैं "राम आनंदाचे रक्षण संरक्षण दासाचे।"

राम ही हमारे जीवन सर्वस्व हैं। इसी भाव को दृढता प्रदान करते समर्थ रामदास स्वामी की शिष्या कवयित्री वेणा वाई ने भी एक रामायण लिखी। एक महिला द्वारा लिखी गई यह पहली कृति है। आगे चल कर सन् 1703 में श्री श्रीधर कवि ने भी 'रामविजय' काव्य की रचना की। महाराष्ट्र के अनेक स्थानों पर यह श्रीमद्गीता वत पूजी और पढ़ी जाती है।

पूरे महाराष्ट्र को रामभक्ति सागर में अथाह निग्मज्जित कर देने वाले गजानन दिगंबर माडगूलकर ग. दि. मा. नाम से पहचाने जाते आधुनिक वाल्मीकि। गीत रामायण की रचना की। प्रतिभा संपन्न स्वर ज्ञाता श्री सुधीर फड़केजी ने उसे स्वरबद्ध लयबद्ध कर आकाशवाणी पुणे पर एक अप्रैल सन 1955 शुक्रवार को प्रसारित किया। "स्वये श्री राम प्रभु ऐकती कुश लव रामायण गाती" स्फुट गीतों मे राम कथा गायी गई है। रामायण महाभारत जैसे महाकाव्य से लेकर कालिदास भवभूति जैसे ललित संस्कृत कवि पंडितादि से लेकर आधुनिक मराठी काव्य लावनी पोवाडा जैसे लोकसाहित्य से मधुपर्क एकत्रित गीत रामायण एक अद्भुत रसायन है। गोस्वामी राम कथा गाकर जगत वंद्य हो गए उसी प्रकार गीत रामायण की रचना कर माडगुलकर और उसे स्वर साज सजाते सुधीर फडके। आज भी इन गीतों की लोकप्रियता किंचित भी कम नही हुई है। इसकी लोकप्रियता की शताधिक कथाएँ महाराष्ट्र की एक गौरव गाथा हैं। यहाँ पर दो ही घटनाओं का उल्लेख पर्याप्त है। एक घटना स्वातन्तयवीर सावरकर ने गीत रामायण की पंक्तियाँ "दैव जात दुखे भरता नको आँसू ढाळू आता पूस लोचनास तुझा आणि माझा वेगळा प्रवास अयोध्येत हो तू राजा रंक मी वनास" अर्थात राम भरत को

समझाते हैं कि पिता की आज्ञा का पालन मेरा कर्तव्य मैं वन को प्रस्थान करता हूँ और भरत तुम अयोध्या के राज सिंहासन पर आसीन हो" और दूसरी घटना सन् 1958 जून महीने की है। डा0 राजेन्द्र प्रसादजी विनोबाजी से बातें कर रहे थे और बातचीत के दौरान उन्होंने गीत रामायण सुनने की इच्छा व्यक्त की। पंढरपुर विट्ठल दर्शन के उपरान्त उस रात्रि को ग. दि. मा. और श्री सुधीर फडकेजी को डाकबंगले में निमंत्रित किया गया। "स्वयंवर झाले सीतेचे", "सेतु बाँधा रे सागरी", "पराधीन आहे जगती पुत्र मानवाचा" गीतों को सुनकर हमारे प्रथम राष्ट्रपति जी मंत्रमुग्ध हो गए। महामहिम राष्ट्रपतिजी ने श्री सुधीरजी को प्रति तुलसी का सम्मान प्रदान किया। यह गीत रामायण की अभूतपूर्व लोकप्रियता रही है।

इसी क्रम में महाराष्ट्र के जलगाँव जिले के शिरसगाँव के श्री शंकर राव महाराज ने अभंग रामायण की रचना की है इसमें 3747 अभंग हैं। प्रत्येक अभंग को पढ़ते समय गोस्वामी जी के मानस की चौपाई दोहा आँखों के सामने आ जाते हैं। इस कृति में मंगलाचरण तो मानस के प्रारंभ में गाया गया "वर्णानां अर्थ संघानाम्" का ही प्रतिरूप है। गोस्वामी तुलसी दास जी के समान शंकर राव महाराज के चार वक्ता और चार श्रोता श्री रामकथा का रसपान करते हैं। समग्र रूप में अभंग रामायण रसात्मकता से परिपूर्ण है। डा0 रामचन्द्र चिंतामणि श्रीखंडे प्रसिद्ध शल्य तज्ञ हैं सदा सर्वदा राम भक्ति में तल्लीन रहते है उन्होंने 'सुश्लोक मानस' की रचना की है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग द्वारा इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है और काशी के संकट मोचन हनुमान मंदिर में इसका सात दिन पाठ किया गया। यह विशेष है।

राम भक्ति रस धारा का अखंड स्रोत आज भी प्रवाहित है।

बंगला नं0-8, अक्षर सोसाइटी
समर्थ नगर, नासिक-422005
महाराष्ट्र।
मो0 9527313387

रामनाम मणि-दीप धरु जीह-देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार।।
तुलसी 'ए' के कहत ही निकसत सकल विकार।
पुनि आवन पावन नहीं देत 'म' कार किवार।।
रामनाम सुन्दर करतारी। संशय विहग उड़ावन हारी।।
तुलसी राम सनेह कर, त्यागु सकल उपचार।
जैसे घटत न अंक नौ-नौ के लिखत पहार।।
-तुलसीदास

भोजपुरी में राम

➲ डॉ0 राजेश श्रीवास्तव

राम नाम के भक्त जगत से तरि जालन तत्काल।
कुतुबपुर के कहत 'भिखारी' बूढ़ जवान बाल।।
(भिखारी ठाकुर)

प्रभु राघवेंद्र के विराट स्वरूप को सारे विश्व में पहचान मिली है। संसार में किसी भी देव अथवा ईश्वर को इतनी लोकप्रियता नहीं मिली जितनी कि राम को । रामकथा के विस्तार के भी अनेक रूप हुए-मंदिर, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तु, ज्योतिष, उत्सव, पर्व, त्यौहार, जनजाति, रंगमंच, रामलीला, सिनेमा, टेलीविज़न और हाँ साहित्य भी। सर्वाधिक महत्वपूर्ण वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस। सभी देशों, भाषाओं, बोलियों के मूर्त और अमूर्त विग्रहों में विराजित कृपानिधान कौशल्यानंदन राम भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं ।

मारीशस में एक कार्यक्रम में वहाँ के एक प्रतिष्ठित अधिकारी ने जब कहा कि रामचरितमानस की रचना बाबा तुलसीदास ने भोजपुरी में की तो मेरा चौंकना स्वाभाविक था। हम तो सामान्य ज्ञान में मानस को अवधी की रचना ही मानते आये हैं (यद्यपि अवधी, भोजपुरी, बुंदेली आदि बोलियों के भाषा वैशिष्ट्य को बहुत कम ही लोग समझते हैं) उस समय मैंने उनकी बात का पुरजोर विरोध किया किन्तु बाद में बहुत विचार करना पड़ा। मानस लोकजीवन का काव्य है। यह हमारी आस्था के साथ जीवन की गहराइयों से भी जुड़ा है। कुछ लोगों का मानना है कि काशी भोजपुर क्षेत्र के अन्तर्गत ही आता है इसलिए भोजपुरी के संदर्भों के पड़ताल के लिए भी मुझे सूत्र देखने पड़े।

कहीं पढ़ा है कि भोजपुरी में प्रथम महाकाव्य की रचना करने वाले बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ने 'साहित्य रामायण' की रचना की है। इसका प्रख्यात आलोचक श्री महेंद्र शास्त्री जी ने बहुविध उल्लेख किया है तथा उस पर समीक्षा भी लिखी है। 'साहित्य रामायण' के तीन खण्ड हैं - किष्किंधा और सुंदरकांड (1964 ई.), लंका कांड (1965 ई.) और अयोध्या और अरण्यकांड (1967ई.) ।

उमा राम नर ऊ पहिचनलें।
धरम करत जे प्रेम उमतलें ।।
परम विवेक हृदय जे अनलें।
उहे रूप प्रभु राम के जनलें।।
(अरण्यकाण्ड)

भोजपुरी के भारतेन्दु कहे जाने वाले पं महेंद्र मिश्र ने भी लगभग आठ सौ पृष्ठों की वृहद भोजपुरी बोली में अपूर्व रामायण लिखी है । इसके गीत अत्यंत मनोरम हैं। जनकपुर का एक प्रसंग-

कइसे के तूड़िहें रामजी शिव के धनुहिया से अबहीं त

छोटे दुनों भइया हो लाल।
मंड़वा में अइलें रामजी चारों भइया
हाय रे संवरियो लाल ।
अंगना भइले उजियार हाय रे संवरियो लाल।
कहाँ मिलिहें मोरा अवध बिहारी हो।
खान पान कुछ निको ना लागे तन मन दसा बिसारी हो।

बाबा बुलाकीदास ने भोजपुरी रामायण में अनेक प्रयोग किये हैं जो उनकी भक्तिभावना को प्रदर्शित करते हैं । अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' का ग्रन्थ 'कौशिकायन' 1973 ई. में प्रकाश में आया। भोजपुरी भाषा के एक और प्रसिद्ध हुए महाकाव्य 'कुंजन रामायण' की रचना कुंज बिहारी प्रसाद कुंजन ने 2007 में की ।

कुंज बिहारी 'कुंजन' के 'सीता के लाल' में निर्वासित सीता के पुत्र लव-कुश के द्वारा अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा रोकने, राम के सेना से युद्ध, राम से परिचय तथा सीता पाताल प्रवेश की कथा का सुंदर चित्रण है ।

लाल लाल मुंह कइले बाबा बड़ा जोर खिसिआइल।
चलत पसेना बड़हिस जइसे डूबकी मार नहाइल।।
अच्छा ! त सरकारे राम हईं धरती के योद्धा।
रउवे धरती के सपूत रउरे बा गाँव अयोध्या।
रउवे काल्हे से इहंवा किरकिन्ह करववले बानी?
कतना मूड़ी कटववलीं सब रउरे ह करदानी?

पद्मश्री विंद्यवासिनी देवी की लोकरामायण में भोजपुरी लोकगीतों का संग्रह है। कर हो मन राम नाम धन खेती।

भोजपुरी में एक अन्य ग्रन्थ ने प्रसिद्धि पायी वह है। श्री रामरसायन। पं0 बद्रीनारायण दुबे बक्सरी की इस रामकथा में चार खंड हैं- प्रथम बालकाण्ड, दूसरा अयोध्याकाण्ड, तीसरा अरण्य, किष्किन्धा एवं सुंदरकांड तथा चौथा लंका एवं उत्तरकाण्ड। दोहा और छंद के माध्यम से रचित इस रामायण में 1802 छंद, 710 दोहा तथा 100 सोरठा, 331 चौपाई और 99 भजन सम्मिलित है।

रामरसायन नाम बा भरल सुधारस धार।
चरित कथा रघुनाथ के सकल सुमंगल सार।।

वरिष्ठ कवि सिपाही पांडेय मनमौजी ने भी एक भोजपुरी रामायण लिखी । 'बनवासी की शक्ति साधना' (रामबचनलाल श्रीवास्तव), रामबृक्ष राय 'विधुर' रचित 'सीता स्वयंवर (1978 ई.), तारकेश्वर मिश्र 'राही' का 'लव कुश' (1982 ई.), विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' रचित 'रावण-अंगद संवाद' (1982 ई.), श्री वीरेश्वर तिवारी के प्रबंधकाव्य 'लंका विजय' (1986 ई.), व्रतराज दुबे 'विकल' का 'केकई माई' (1992 ई.), हीरा ठाकुर रचित 'अंजनी के लाल' (1997 ई.) और 'केने बाड़ी सीता' (2005 ई.), अमर सिंह रचित प्रबंधकाव्य 'मर्यादा पुरुषोत्तम'(2000 ई.), राम सुरेश पांडेय रचित 'रावन चरित मानस', श्री भगवान मिश्र 'श्रीदास रचित 'बालकांड रामायण' (2013 ई.), शिवभजन राय 'वैरागी' का 'कवित रामायण' और 'भजन रामायण' (2010 ई.), भगवान सिंह 'भास्कर' का 'भास्कर लोक रामायण' (2003 ई.), रामलाल गजपुरी के 'रामचरित दर्शन' (1993 ई.), रामप्रवेश शास्त्री का 'रामभक्त हनुमान', हीरा प्रसाद ठाकुर का 'सबरी' (2000 ई.) और 'रामजी के बिआह', बद्री नारायण दुबे का 'श्री राम चालीसा' गोरखनाथ शर्मा का 'सीताहरण' और व्रतराज दुबे 'विकल' का 'सती उर्मिला' (2016 ई.), व्रतराज दुबे 'विकल' का 'सिरिमद करुणाकर रामायण' (2014 ई.) और युवा कवि सुशांत शर्मा का 'जटायु' (2018 ई.) इसी क्रम में और भी रामकाव्य हैं। इन सभी ग्रंथों के बारे में पृथक पृथक मूल्यांकन करने तथा रामरस का मधुर पान करने की आवश्यकता है।

सिने अदाकारा अनारा गुप्ता भोजपुरी रामायण नाम से एक फिल्म बनाने का प्रयास कर रही हैं। राम का चरित्र भोजपुर की लोक संस्कृति में गहरी पैठ रखता है। कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा सम्पादित भोजपुरी ग्रामगीत में

सीता की अग्निपरीक्षा का रोचक वृत्तान्त मिलता है । सीता ने

1- अग्नि हाथ में ली जो ठंडी हो गयी ।
2- सूर्य को हाथ में लिया जो अस्त हो गया ।
3- सर्प को हाथ में लिया जो फन फैलाकर बैठ गया।
4- गंगा को हाथ में लिया तो वह सूख गयी।
5- तुलसी को हाथ में लिया तो वह सूख गयी।

भोजपुरी के राष्ट्रगीत 'बटोहिया' के कवि बाबू रघुवीर नारायण की भक्तिपरक रचना 'विजयी नायक रामायण' में राम जी के सुन्दर गीत हैं

लगन कब लगिहें राम सिया से।
कब कृपालु मोह आपन करिहें छूटब द्वन्द्व बला से।
प्रतिदिन बिनवों चारुशिला से, विमला चन्द्रकला से।
जन 'रघुवीर' युगल दर्शन हित, जांचल रूपकला से।

भोजपुरी के महाकवि भिखारी ठाकुर रामचरित मानस से बहुत प्रभावित हैं । उनके प्रत्येक नाटक के आरम्भ में मानस की चौपाई राम का पूत लगाकर गाई जाती हैं । विश्वामित्र जी के साथ राम लक्ष्मण जब बक्सर पहुँचे तो मुनि के यज्ञ की रक्षा तथा असुरों के संहार और अहिल्या उद्धार के सुन्दर चित्र उनके काव्य में मिलते हैं -

रामजी-लछुमन तजि के अवध नगरवा हो
डगरवा धइ के ना,
चलत-चलत में पहुँचलन बक्सरवा हो,
डगरवा धइ के ना।
दूनों भइया मारी मारी के जरवा ओरववलन हो,
महातमा भरवा ना,
बोले लागल जय-जयकरवा हो, महातमा भरवा ना।

जटायु के चरित पर सुन्दर पंक्ति-

रोवत बाड़े जटायु के नैन,
आ रोवत बाड़ी सीता मृगनैनी ।
रोवत बा कविताई हमार,
की रोवत बाड़ी गिरा मृद बैनी ।

कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' ने रामचरित मानस पर 'रामकथा परम्परा में मानस' नामक समीक्षा ग्रन्थ 1978 ई. में लिखा। रामायण केंद्र भोपाल के अनेक शोधमित्र भारतीय बोलियों में रामकथा के तथ्यों का संकलन कर रहे हैं, जिसमें नित नवीन ग्रंथों तथा परम्पराओं की सूचनाएँ मिल रही हैं। भोजपुरी क्षेत्र की रामलीलाओं की छबि भी निराली है।

भोजपुरी लोकगीतों में रामकथा के अनेक सूत्र मिलते हैं- मंदोदरी सीता से प्रश्न करती है- तुम तो सत्यवती थी तो दूसरे के पति (रावण) के साथ क्यों चली आई ? मंदोदरी के साथ उस समय 900 सखियाँ थीं।

आरे सिया मिलन जब आई
मंदोदरी नव सौ सखियन संग ले आई
सुरुज जोति जब सिया जी के देखलसि
सुधि बुधि सकल भुलाई

एक भोजपुरी लोकगीत में राम के बिआह के समय माता कौशल्या प्रसन्न हैं किन्तु कैकई दुखी होकर कहती है- राम और लक्ष्मण का विवाह हो रहा है और मेरा बेटा भारत क्वारा है ।

राम से लछमन बिअहन चले ले भरत रहले कुँवार हो
जनि हो केकइया रानी लोढ़वा घुमावहु जनि नयन ढरि लोर हो ।

अग्निपुराण और पद्मपुराण में रामकथा में मात्र राम और लक्ष्मण का विवाह ही बताया गया है ।

भोजपुरी लोकगीतों तथा कथाओं में रामकथा के अनेक सूत्र छिपे हुए हैं जिनपर गहन पड़ताल की आवश्यकता है।

निदेशक रामायण केंद्र भोपाल
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
तीर्थ स्थान एवम मेला प्राधिकरण
म0प्र0 शासन, भोपाल-462001
मो0- 7974004023

भारतीय समाज और राम

➲ डॉ0 अमित कुमार दीक्षित

वर्तमान भारतीय समाज का जो दृश्य उपस्थित है उससे हम भली-भाँति परिचित हैं । नैतिक मूल्यों की क्षति, टूटते रिश्ते, आदर्शों का खोखलापन आदि अनेक समस्याएँ चहुँओर विद्यमान है, जिनका समाधान वैज्ञानिकों के पास नहीं है। वे अपने आविष्कार से मानव को भौतिक सुविधाएँ ही उपलब्ध करा सकते हैं परंतु मानसिक शांति नहीं। हमें शान्ति, धर्म उपनिषद दर्शन, रामायण और गीता में संकलित उपदेश ही दे सकते हैं। भारतीय समाज के उच्च, मध्य और निम्नवर्ग की समस्याओं और विषमताओं को उस समय के साहित्य के विद्वानों ने बड़े ही करीब से देखा तथा जिसे अपने लेखनी के माध्यम से उजागर भी किया। समाज के संपर्क और सहयोग से ही मनुष्य का जैविक और मानसिक विकास संभव है। मनुष्य समाज का संवेदनशील सदस्य होने के कारण सामाजिक जीवन की यथास्थितियाँ उसे अधिक प्रभावित करती हैं। सजग संवेदनशील, कल्पनाशील और दूरदर्शी, भविष्यदर्शी आदि चीजें समाज को एक निश्चित दिशा देने का प्रयास करती है। भारतीय समाज की जो कल्पना राम के लोक कल्याणकारी भावना के माध्यम से की गयी थी वह आज के समय में भी प्रसांगिक और सार्थक साबित होती है तथा उस समय की समस्याओं को प्रस्तुत कर उन्हे वर्तमान समय से जोड़ना तथा उसके निदान के उपाय भी सुझाना ताकि लोगों को समझ में आ पाये कि सही ढंग एवं क्रमबद्ध तरीके से कोशिश करने से ही सफलता की प्राप्ति होगी और समाज एवं देश भी आगे बढ़ेंगे। आज मनुष्य की लड़ाई खुद से है वह खुद से इतना परेशान है कि दूसरों की उसे चिन्ता ही नहीं क्योंकि 'समय कम है, समझौते ज्यादा है।' दृढ़ संकल्पी मनुष्य केवल दिशा ही नहीं देता, बल्कि अपने समकालीन समाज को सजग और सचेत भी करता है। मनुष्य समाज के साथ अवतरित भाव से जुड़ा रहता है तथा समाज की गतिविधियों पर नज़र भी रखता है ताकि समाज में होने वाले परिवर्तन के साथ अपने आपको भी परिवर्तित कर समाज के साथ आगे बढ़ सकें।

"मानवीय चेतना प्रकाशान्तर से सामाजिक चेतना में परिवर्तित हो जाती है। जब वैयक्तिकता की संकीर्णता से ऊपर उठकर समूह का होकर उसी के कल्याण में प्रयत्नशील रहता है तो उसकी व्यक्तिगत चेतना सामूहिक चेतना का रूप धारण कर लेती है।

राम भारतीय संस्कृति के प्रतीक रहे हैं। राम का चरित्र एक सशक्त व्यक्ति के रूप में है जो कर्तव्यपरायण, दृढ़ संकल्पी, लोक कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। राम के जीवन पर आधारित वाल्मीकि का रामायण हमारा आदिकाव्य है। वह इसी लोक और अपने ही काल की गाथा कहता है - कोन्वस्मिन साम्प्रतं लोके । राम का जनप्रिय रूप उनके व्यक्तित्व का विशेष गुण रहा है। भगवान के सभी अवतार आराध्य हैं, किंतु राम सर्वाधिक जनप्रिय हैं।

पुरुषोत्तम श्री राम भारतीय जनमानस में बसने वाले आदर्श, मर्यादित अनुकरणीय, उदार, प्रेरक एवं भावमय चरित्र है। जिसमें प्राचीन युगों के आदर्श सत्यपरायणता, समग्र नैतिकता का मूर्त स्वरूप आदर्श पुत्र आदर्श पति और सर्वोपरि राजा का साक्षात्कार होता है । रामायण में तो उनकी जनप्रियता बार-बार रेखांकित की जाती है - रामो नाम जनैः श्रुतः। तुलसी की रचनाओं में मध्यकालीन समाज के अनेक-विध भौतिक, दैविक, दैहिक तापों की कथा है - अकाल, भुखमरी, रोग, स्त्री-पराधीनता, क्रूर शासन, अत्याचार, क्रोध, मोह, लोभ, बेरोजगारी का दारुण चित्रण है, तो दूसरी ओर इन सबसे मुक्त परम सुखद रामराज का स्वप्न है। राम का व्यक्तित्व ऐसा है कि वह समाज के निम्नतम स्तर पर पड़े आदमी के साथ खड़े हैं। अन्याय व शोषण के खिलाफ लड़ने वाले हिंसक नहीं कहे जा सकते, वे तो वीरोचित धर्म का पालन करने वाले, अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले अपनी महान बलिदानी परम्परा के पालनकर्ता मात्र व सच्चे जन सेवक होते हैं।

अतः गोस्वामी तुलसीदास जी ने सर्वसाधारण को बुद्धिगम्य बनाने हेतु रामचरितमानस की रचना की -

'राम- कथा सुंदर करतारी।
संसय विहग उड़ावनिहारी'।

राम ने अपने विचारों से दृढ़ विश्वास एवं अपने समर्पित भाव को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है जिससे लोगों को बल मिलेगा और वे अत्याचार का विरोध कर सकेंगे । भगवान के शायद किसी अन्य अवतार रूप ने आजीवन इतना संघर्ष किया हो । राम कथा के महान लेखकों ने राम की इस आजीवन संघर्ष गाथा को अनेकशः रेखांकित किया है। वाल्मीकि के राम कहते हैं- वसुंधरा पर मेरे समान दुखी और कोई नहीं, मेरे हृदय और मन को शोक की परंपरा बेधती रहती है। भवभूति के राम का दुख तो ऐसा है कि पत्थर को भी रुला दे। वह दुखी नहीं, दुख तो उन्हें व्याप ही नहीं सकता, लेकिन उनका संबंध मध्यकालीन भारत की जनता के दुख से है। तुलसी ने उन्हें 'करुणा निधान', 'गरीब नेवाज' और रामराज का संस्थापक कहा है। उनके राज में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप से जनता मुक्त है- दैहिक, दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा।। उसके हर प्रकार के दुख की उन्हें चिंता है- राम गरीबनेवाज भए हौं गरीबनेवाज गरीब नेवाजी। प्रकृति और मनुष्य, दोनों एक-दूसरे के सहयोगी हैं। बादल किसान की इच्छा से जल की वर्षा करते हैं। समुद्र अपनी मर्यादा में है। वे तट पर रत्न डाल देते हैं, मनुष्य उनका उपभोग, उपयोग करते हैं। यह मर्यादा राम के व्यक्तित्व का परम रूप है। समाज कल्याण के उद्देश्य से ही राम और लक्ष्मण दोनों को वनों की खाक छाननी पड़ी। सामाजिक बंधन और सामाजिक सरोकार से ऊपर लक्ष्मण भी राम के सिद्धाश्रम के उत्थान के लिए निकल पड़ते हैं। वे अन्याय का विरोध कर, जन कल्याण के मार्ग में आने वाली बाधाओं का नाश करते हुए एक समृद्ध समाज की कल्पना करते है जिसमें सभी के हित की रक्षा हो सके। भारतीय समाज की सुदृढ़ कल्पना लोगों' के विचारों, भावनाओं नैतिक मूल्यों व सामाजिक मूल्यों पर निर्भर करती है ये सारी बातें उनके मन में घर कर जानी चाहिए कि बिना प्रयास और सच्ची निष्ठा एवं समर्पित भाव से कार्य नहीं करने से किसी का भी कल्याण संभव नहीं है। नरेन्द्र कोहली ने दीक्षा उपन्यास में ऋषिमुनियों की निष्ठा और समर्पित भाव को दर्शाया है कि कैसे वे राक्षसों के अत्याचार से मुक्ति के लिए लगातार प्रयत्न करते और राम की सहायता से उनका खात्मा करते खुशहाल समाज का निर्माण करते। पूरे भारतीय समाज के लिए समान आदर्श के रूप में राम को उत्तर से लेकर दक्षिण तक सभी लोगो ने स्वीकार किया है हिंदी में तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस सर्वत्र प्रसिद्ध ग्रंथ है ही दक्षिण भारत में महाकवि कम्बन द्वारा लिखित कम्ब रामायण अत्यंत ही भक्तिपूर्ण ग्रंथ है। आदिकवि वाल्मीकि ने राम के लिए कहा भी है -

"समुद्र इव गांभीर्ये धैर्यण हिमवानिव"।
अर्थात राम गांभीर्य में समुद्र के समान है।

राम ने ईश्वर होते हुए भी मानव का रूप रचकर मानव जाति को मानवता का पाठ पढ़ाया मानवता का उत्कृष्ट आदर्श स्थापित किया। भारतीय जीवन में राम नाम उसी प्रकार अनुस्यूत है जिस प्रकार दुग्ध में धवलता ।

'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त' जी ने यशोधरा में राम के आदर्शमय महान जीवन के विषय में कितना सहज व सरस लिखा है-

राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है ।
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है ।।

श्रीराम का चरित्र नरत्व के लिए तेजोमय दीप स्तंभ है। वस्तुतः भगवान राम मर्यादा के परम-आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हैं। राम सदैव कर्तव्यनिष्ठा के प्रति आस्थावान रहे हैं। उन्होने कभी भी लोकमर्यादा के प्रति दौर्बल्य प्रकट नही होने दिया ।इस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में श्रीराम सर्वत्र व्याप्त हैं ।कहा गया है -

एक राम दशरथ का बेटा
एक राम घट-घट में लेटा ।
एक राम का सकल पसारा
एक राम है सबसे न्यारा।।

भारतीय धर्म संस्कृति में प्रभु राम को आदर्श व्यक्तित्व के साथ बेहतर प्रबंधक का भी प्रतीक माना जाता है। राम के आदर्शों को लक्ष्मण रेखा की उस मर्यादा के समान मानना चाहिए जिसे लाँघा तो अनर्थ और अगर मर्यादा की सीमा में रहे तो खुशहाल और सुरक्षित जीवन। अतीत का परिदृश्य हो या वर्तमान का हो, समाज प्रभु राम के आदर्शो तथा संघर्षों से भरा हुआ है। अगर उन आदर्शों को सामान्यजन अपना ले तो उनका जीवन स्वर्ग बन जाए ।

सामाजिकता, जातीयता, राष्ट्रीयता और वैश्विकता के अंतर्संबंधों के परिप्रेक्ष्य में ही सामाजिक मूल्य आदि आगे बढ़ते रहते हैं । राम सर्वप्रथम जनसामान्य और दुर्बलों को एकत्रित कर उनमें न्याय, समता, वीरता और आत्मनिर्भरता की भावना जाग्रत करते हैं। श्रमिकों, मजदूरों तथा किसानों के हाथ में अपने न्याय के लिए लड़ने हेतु राम उनके हाथों में शस्त्र थमा देते हैं और अधिकारों को छीन लेना सिखाते हैं। जन संगठन करते हुए पुरुष के साथ स्त्री को भी राम महत्वपूर्ण समझते हैं । जो निरीह स्त्रियाँ अत्याचार, शोषण और बलात्कार की शिकार हुई है ।ऐसी स्त्रियों का राम ने केवल उद्धार ही नहीं किया अपितु समाज में उन्हें मान्यता दिला कर सम्मान और सुरक्षा प्रदान करते हैं ।केवल अहिल्या ही नहीं बल्कि घने जंगलों में रहने वाली आदिवासी महिलाओं में अनुशासन, अक्षर ज्ञान, सैनिक, प्रशिक्षण, कुटीर निर्माण, आर्थिक स्वावलंबन, स्वच्छता, सभ्यता, सुसंस्कार समता की भावना का विकास करते हैं । सामाजिक मूल्यों और मान्यताओं की अभिव्यक्ति के माध्यम से ही भारतीय समाज की विकास यात्रा आगे बढ़ायी जा सकती है। सामाजिक चेतना के लिए प्रेरणा रूप उन समस्त परिस्थिति एवं समाज से उनके संबंध पर विचार करना होगा। समय के परिवर्तन के साथ इन सामाजिक मूल्य में भी परिवर्तन आवश्यक होता है। जब कोई समाज युगीन परिवेश वातावरण और परिस्थतियों के अनुकूल इनमें परिवर्तन नहीं करता है तब वे सारे नियम जड़ और त्रासदायी बन जाते है अतः मनुष्य की सुविधा और सुख को ध्यान में रखते हुए इन सामाजिक मूल्यों में यथोचित बदलाव अपेक्षित है । नरेन्द्र कोहली जी के रामायण पर आधारित रचनाओं में राम ही एक ऐसा पात्र है जो देवत्व के धरातल से उतरकर जन सामान्य तक पहुँचते हैं उन्हें स्वयं की रक्षा करना सिखाते हैं । देवता या नारायण रूप में पूज्यनीय राम जन सामान्य के धरातल पर आकर एक सामान्य मानव बन जाते हैं, मानव धर्म का पालन करते हैं यही उनकी प्रमुख विशेषता है। बदलती हुई दुनिया में समाज का बदलना स्वाभाविक है। उन्ही के कारण इधर दुनिया में एक हिस्से में बहुत तेजी से बदलाव प्रक्षिप्त हुए

हैं। इस बदलाव से समाज भी उतना ही विक्षिप्त हुआ है। ये प्रक्षिप्त और विक्षिप्त बदलाव? व्यक्ति समाज जातीयता-स्थानिकता बौद्धिकता के अंतर्संबंधों के संतुलन बिन्दु पर कायम रह कर ही समाज को आगे बढ़ाया जा सकता है। इस संदर्भ में यह पंक्ति सार्थक जाना पड़ती है -

"समाज रीतियों एवं कार्यप्रणालियों की अधिकार एवं पारस्परिक सहायता की अनेक समूहों तथा विभागों की मानव व्यवहार के नियंत्रणों में तथा स्वतंत्रताओं की शब्द व्यवस्था है। इस सदैव परिवर्तनशील, जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते है। यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है और यह हमेशा परिवर्तित होता रहता है।"

श्री राम का उच्चारण मात्र से मानव के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। जो लोग ध्वनि विज्ञान को जानते है कि राम शब्द की महिमा अपरंपार है। जब हम राम शब्द का उच्चारण करते हैं तो रेत अथवा हवा में एक विशेष आकृति का निर्माण होता है। उसी प्रकार से चित्त में भी विशेष लय का संचार होने लगता है। जब कोई भी व्यक्ति निरतंर राम-राम का जप करता रहा है तो उस व्यक्ति के रोम-रोम में प्रभु बस जाते है। उस व्यक्ति के आस-पास सुरक्षा का मंडल बन जाता है। श्रीराम जी की सभी चेष्टाएँ ज्ञान नीति, धर्म, शिक्षा गुण तत्व प्रभाव एवं रहस्य से भरी हुई है। उनका व्यवहार देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी ऋषि मुनि आदि सभी के साथ अलौकिक, अतुलनीय तथा प्रशंसनीय रहा। आस्था, प्रेम, श्रद्धा, सहानुभूति का स्थान अर्थ ने ले लिया और आज के युग में अर्थ ने मनुष्य को इतना स्वार्थी बना दिया कि वह मानवीय मूल्यों को भूल गया है । मानवीय मूल्य उसके हाथों से रेत के कणों की तरह खिसक गए। राक्षसों का नाश और समाज के कल्याण हेतु विश्वामित्र दशरथ के पास जाकर उनसे राम की माँग करते हैं। दशरथ राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए तैयार हो जाते है। उसके अपना चिंतन प्रकट करते हैं और समाज की जटिलताओं और समस्याओं को उनके सामने प्रस्तुत करते हैं। वे अपने दिव्य शस्त्र राम के हाथ सौंपते हैं उनसे वचन लेते हैं कि उनके जीवन का लक्ष्य राज भोग न होकर न्याय के पक्ष में निरंतर लड़ना है । अपनी स्वार्थ पूर्ति के बजाय जन सामान्य के संकटों को दूर कर जन सामान्य के लिए अपने सुखों का त्याग करना होगा और समाज के उत्थान के लिए तथा नैतिक मूल्य की स्थापना के लिए सारे सुख को त्यागना होगा तभी सही अर्थों में लोक कल्याण के कार्य संपन्न होंगे और लोगों का कल्याण होगा और साथ ही जो समाज जड़ अवस्था में है वह चेतन अवस्था में परिणत हो जायेगा । इस संदर्भ में यह पंक्ति सार्थक जान पड़ती है अधिकार उसको होता है जो न्याय कर सकें। राम मुस्कुराए- 'मेरा अधिकार भी यही था और अयोध्या की सेना के दूर होने से भी कोई अंतर नहीं पड़ेगा। किसी किसी का भी न्याय पूर्ण व्यवहार अपने आस-पास के जन-सामान्य में सेना खड़ी कर लेता है। राम सेनाएँ साथ लेकर नहीं चलता वह जनता में से सेना निर्माण कर लेता है।"

श्रीराम के नैतिक आचरण की, मर्यादित व्यक्तित्व की, उनके त्याग की, उनकी क्षमा, सत्य, करुणा, धैर्य और पराक्रम आदि जैसे प्रेरक प्रसंग ही देश व समाज को विकास के पथ पर अग्रसर कर नैतिक मूल्यों की स्थापना में सहायक साबित होंगे। राम के उज्ज्वल चरित्र से ही जन मानस के विचार, भावों व चरित्र का विकास संभव है । राम का जीवन हमेशा ही सत्यम् शिवम् सुंदरम् जीवन हेतु मानव जाति के लिए पथ प्रदर्शक का काम करता रहेगा। नैतिक मूल्यों की रक्षा एवं चेतना के प्रचार-प्रसार के माध्यम से भारतीय समाज की विकास यात्रा को प्रबल गति प्रदान करना ही श्रीराम के चरित्र व व्यक्तित्व का मुख्य ध्येय था।

-सेल, सी एम ओ, इस्पात भवन,
5वीं मंजिल, ओडी सेक्शन, 40, जे एल
नेहरु रोड, कोलकाता-700071
मो0- 90032-38025

राम का लोकनायकत्व

➲ डॉ0 रोचना भारती

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यत्व चरतः सह।
तं लोकं पुण्यों प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना।।
(20, 25)

सामान्यतः मनुष्यों में ब्रह्मबल=विद्या और क्षात्रबल = शारीरिक बल में से किसी एक की विशेषता होती है। जो विद्या और दोनों की उपासना करते हैं, वही पुण्य पुरुष होते हैं, आदर्श मानव माने जाते हैं और वह देश और समाज का उन्नयन करने में समर्थ होते हैं। भगवान श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महावीर हनुमान तथा इस युग में महर्षि दयानन्द आदि अनेक देव पुरुष हुए हैं।

वैदिक काल की धार्मिक और सामाजिक विशेषताएँ रामायण काल तक अविच्छिन्न रूप से चली आ रही थीं। राजनीतिक परिस्थितियों के कारण कुछ विषमताएँ होती रहीं। नौ लाख से अधिक समय का इतिहास बताता है कि शृंगी ऋषि के पुत्रेष्टि यज्ञ से लेकर महर्षि वशिष्ठ, महामुनि विश्वामित्र और अगस्त्य ऋषि के द्वारा रघुकुल के चारों राजकुमारों के निर्माण की योजना सोच-समझकर की गई थी। ऋषियों की योजना के अंतर्गत थी, कैकेयी और मंथरा की मंत्रणा में राजा दशरथ से अपने दो वचन माँगना, जिसमें राम को 14 वर्ष का वनवास और भरत का राज्याभिषेक किया जाए। दक्षिण प्रदेश में राक्षस जाति के लंकाधिपति रावण का ऋषि और जन-जाति पर अत्याचार और शनैः-शनैः आधिपत्य जमाने से जन-जीवन की रक्षा, महावन के बीच रहकर ही हो सकती थी, राजा दशरथ से यह सभी समस्याएँ गुप्त रखी गई थीं। यदि सत्य वस्तुस्थिति बताई जाती तो अपने राजकुमारों को राजा दशरथ जाने नहीं देते और स्वयं जाने के लिए तत्पर हो जाते है। राज्याभिषेक के समय कैकेयी के प्रति वचनबद्धता के कारण शोक से अभिभूत होकर भी रानी को वचन देना पड़ा। किंतु जब मन्त्री सुमन्त्र श्री राम, लक्ष्मण और सीता को अयोध्या की सीमा पर छोड़कर आए, तो दोनों पुत्रों और पुत्रवधू के वियोग में शोकाकुल विह्वल राजा दशरथ सुमन्त्र से पूछते हैं कि क्या वन की ओर जाते हुए राम ने मेरे लिए कोई संदेश दिया? मन्त्री सुमन्त्र ने उपाय सोचा और बोले - "श्री राम के मन में कुछ भाव अवश्य आए क्योंकि कुछ कहने के लिए उनके होंठ काँपे, लेकिन उनका गला भर आया इसलिए कुछ कह नहीं पाए-

"कंचिदर्थं चिरं ध्यात्वा वक्तुं प्रस्फुटिताधरः।
वाष्पस्तम्भितकण्ठत्वा दनुक्त्वैव वनं गतः।।

"तथापि आप अपने पुत्र पर अभिमान कर सकते हैं, क्योंकि वह व्यक्ति मैं ही हूँ, जिसे आपने कहा था कि राम को यह सूचना दो कि कल तुम्हारा राज्याभिषेक होगा, तुम अयोध्या के सम्राट् बनोगे, यह उनसे जाकर मैंने कहा और तुरन्त ही थोड़ी सी देर में आपने मुझसे ही कहा

कि जाकर राम को आदेश दो कि उन्हें 14 वर्ष के लिए वनवास दिया जाता है दोनों ही स्थितियों में वह विचलित नहीं हुए, निर्विकार रहे। युगों-युगों तक यह उदात्त चरित्र अनुकरणीय रहेगा।"

वाल्मीकि रामायण में यह उल्लेख है कि श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ ऋषि अगस्त्य के आश्रम में दर्शनार्थ मिलने आए थे। ऋषि विन्ध्य पर्वत पार कर आए प्रथम आर्य थे, जिनके साथ अनेक ऋषि-मुनियों ने अपने आश्रम गोदावरी तट पर बनाए थे, परिणाम स्वरूप यह "जनस्थानं" कहा जाने लगा। अगस्त्य ने राम को गोदावरी नदी के तट पर स्थित पंचवटी जाने के लिए कहा । कविवर मैथिलीशरण गुप्त के "पंचवटी" काव्य में यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य परिलक्षित होता है -

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल थल में
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है
अवनि और अंबर तल में।...

अगस्त्य मुनि ने उल्लेख किया था कि उस स्थान के समीप ही दण्डकारण्य है जहाँ ऋषिगणों का वास है, पूरा वन क्षेत्र राक्षसी यक्षों के कारण अभिशप्त है और उन्हें विश्वास है कि राम की दिव्य उपस्थिति से सभी राक्षसों और असुरों का नाश हो जाएगा तथा एक बार फिर ऋषि और साधक शान्ति से रह सकेंगे ।

पंचवटी में ही अगस्त्य मुनि ने भगवान श्रीराम को अग्निशाला में बनाए गए शस्त्र भेंट किए थे। नासिक में श्रीराम पंचवटी में रहे और गोदावरी के तट पर स्नान-ध्यान किया। नासिक में गोदावरी के तट पर पाँच वृक्षों का स्थान होने के कारण पंचवटी नामकरण हुआ- पंचानाम वटानां समाहार इति पंचवटी। ये पाँच वृक्ष थे- पीपल, बरगद, आंवला, बेल तथा अशोक वट। यहीं पर सीता माता की गुफा के पास यह पाँच प्राचीन वृक्ष हैं, माना जाता है कि इन वृक्षों को भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मणजी ने अपने हाथों से लगाया था। नासिक क्षेत्र में सीता सरोवर, रामकुण्ड, त्र्यंबकेश्वर मंदिर आदि आस्था के बड़े केंद्र हैं। यहाँ भगवान श्रीराम द्वारा बनाया हुआ एक मंदिर खण्डहर रूप में आज भी स्थित है। मारीच का वध पंचवटी के निकट ही मृगव्याधेश्वर में हुआ था। गृद्धराज जटायु से श्रीराम की मैत्री भी यहीं हुई थी।

अरण्यकाण्ड में पंचवटी मनोहर वर्णन है, जिसका एक अंश इस प्रकार है-

"अयं पंचवटी देशः सौम्य पुष्पितकाननः, यथा ख्यातमगस्त्येन मुनिना भावितात्मना। इयं गोदावरी रम्या पुष्पितैस्तरुभिर्वृता, हंसकारंडवाकीर्णा चक्रवाकोपशोभिता। नातिदूरे चासन्ने मृग यूथ निपीडिता। मयूरनादित रम्याः प्रांशवो बहुकंदराः, दृश्यन्ते गिरयः सौम्याः फुल्लैस्तरुभिरावृत्ता। सौवर्णः राजतैस्ताभैर्देशेदेशे तथा शुभेः गवाक्षिता इव भान्ति गजाः परमभक्तिभिः।

उपर्युक्त उद्धरणों से ज्ञात होता है कि पंचवटी गोदावरी नदी के तट पर स्थित थी । कालिदास ने रघुवंश में कई स्थानों पर पंचवटी का वर्णन किया है-

"आनन्दयत्युन्मुखकृष्णसारा दृष्टाचिरात् पंचवटी मनो मे"

"पंचवटी ततोरामः शासनात् कुंभजन्मनः
अनषोढस्थितिस्तस्थौ विंध्याद्रिप्रकृताविव"।

रघुवंश में- पंचवटी को गोदावरी नदी के तट पर स्थित बताया गया है-"अत्रानुगोदं मृगया निवृत्तस्तरंगत्रातेन विनीतखेदः रहस्यदुत्संग निषण्णमूर्धा स्मरामि वानीरगृहेषु सुप्तः।"

भवभूति ने उत्तर रामचरित द्वितीय अंक में पंचवटी का श्रीराम के द्वारा उनकी पूर्व स्मृति जनित उद्वेग के कारण करुणाजनक वर्णन किया है-

'अत्रैव सा पंचवटी यत्र चिरनिवासेन दिविधविस्रम्भातिप्रसंगसाक्षिणः प्रदेशाः प्रियायाः प्रियसखी च वासंती नाम वन देवताः, यस्यां ते दिवसास्तया सह मयानीता यथा स्वेगृहे, यत्संबंध कथाभिरेव सततं दीर्घाभिरास्थीयत।

एकः संप्रतिनाशित प्रियतमस्तामेव रामः कथं, पापः पंचवटी विलोकयतु वा गच्छत्व संभाव्य वा।

वाल्मीकि और कालिदास के समान ही 'अध्यात्मरामायण' में पंचवटी को अगस्त्य ने श्रीराम के रहने के लिए उपयुक्त बताया था।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में अगस्त्य द्वारा ही श्रीराम को पंचवटी भिजवाया है-

"हे प्रभु परम मनोहर ठाऊँ, पावन पंचवटी तेहि नाऊँ।
दंडक वन पुनीत प्रभु करहू, उप्रशाप मुनिवर के हरहू।
चले राम मुनि आयुस पाई, तुरतहि पंचवटी नियराई।
गृधराज सौ भेंट भई बहुविधि प्रीति दृढ़ाय,
गोदावरी समीप प्रभु रहे पर्णगृह छाय"।

पंचवटी जनस्थान या दण्डक वन में स्थित है। पंचवटी या नासिक से गोदावरी का उद्गम स्थान त्र्यंम्बकेश्वर लगभग 32 कि.मी. दूर है। वहीं त्र्यंबकेश्वर के निकट पहाड़ी पर स्थित अंजनेरी में पवनतुल्य शक्तिशाली पवनदेव तथा उनकी पत्नी अंजना का तेजस्वी वज्रअंगी पुत्र हनुमान का जन्म हुआ था। हनुमान ने महर्षि अगस्त के आश्रम में वेद-वेदाङ्गो की शिक्षा और क्षात्रधर्मोचित विद्या प्राप्त की थी।

वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड में पंचवटी का मनोहर वर्णन मिलता है। पंचवटी महाराष्ट्र के नासिक गोदावरी नदी के किनारे स्थित बड़ा तीर्थस्थान है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक भगवान त्र्यंबकेश्वर का भी मंदिर है। रामायण और प्राचीन ग्रंथों में यह उल्लेख मिलता है कि वन गमन के समय भगवान श्रीराम ने भगवान त्र्यंबकेश्वर के दर्शन किए थे, अतः त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग के पास बसी पंचवटी का रामायण में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। महाराष्ट्र में दक्षिण भारतीय आर्य संस्कृति का मुख्य विंदु नासिक है । गोदावरी के प्रभाव का शास्त्रशुद्ध अभ्यास कर मनुष्य जाति के निवास के लिये उपयुक्त जानकर गौतम ऋषि ने इसे बसाया था, इसलिये इसका नाम "गौतमी गंगा" भी कहा गया है। गौतम ऋषि शास्त्रज्ञ थे, धान की खेती के लिए भूमि जलवायु का अध्ययन उन्होंने किया था। उल्लेख है कि महर्षि कश्यप के आदेश पर गोदावरी तट पर श्री राम ने पितृ श्राद्ध किया था । यह स्थान अस्थि वलय के नाम से जाना जाता है। आज भी भारत के प्रत्येक भाग से श्रद्धालु आकर पितरों को अर्ध्य देते हैं, अस्थि प्रवाह करते हैं। महाभारत में सप्त गोदावरी का उल्लेख है। इस गोदावरी में धारणा, कादवा, प्रवरा, मूला, वर्धा, बाणगंगा, इंद्रावती और शर्वरी नदियाँ आकर मिलती हैं ! स्कंद पुराण में ऐसी मान्यता है कि संगम स्थली में गोदावरी का प्रवाह इतना तीव्र होता है कि उस प्रवाह की रगड़ से अस्थियां 1/2 घंटे में ही गल जाती हैं । गोदावरी के नाम के स्मरण मात्र से मुक्ति मिल जाती है। नासिक में रामकुण्ड पर प्रति 12वर्ष में सिंहस्थ कुंभ पर्व होता है। रावण ने सीता माता का अपहरण भी यहाँ चित्रकूट से ही किया था ।

भगवान श्रीराम अपने वनवास के दौरान भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ दंडकारण्य के घने जंगलों में कई आसुरी शक्तियों का अंत करते हुए, ऋषि-मुनियों के आश्रमों में दर्शन और वनवासियों से मिलते हुए, वे कई नदियों, तालाबों, पर्वतों और वनो को पार करते हुए नासिक में अगस्त्य मुनि के आश्रम पहुँचे। मुनि का आश्रम नासिक के पंचवटी क्षेत्र में था। गोदावरी के तट पर पंचवटी के रमणीय प्रदेश में राम की आज्ञा से लक्ष्मण एक सुंदर पर्णकुटी का निर्माण करते हैं । त्रेतायुग में लक्ष्मण व सीता सहित भगवान श्रीराम ने वनवास काल का अधिक समय पंचवटी की छाया में इसी सुन्दर पर्णकुटी में बिताया। यहीं पर लक्ष्मण द्वारा रक्ष-संस्कृति की प्रतीक, उन्मुक्त प्रेम व स्वच्छंद विचरण करने वाली, लंकाधिपति रावण की बहन गर्विष्ठा शूर्पणखा के सौंदर्य और प्रेमातुर समर्पण का तिरस्कार, अपमान हुआ था, इसलिये उसके अहं को ठेस

लगी थी, इस तरह उसकी नाक (संस्कृत में नासिका) कट गई थी । अतः इस स्थान को "नासिक," कहा गया ।

ऋषियों के यज्ञ में विघ्न उत्पन्न करने के लिए खर-दूषण और त्रिशिरा सहित चौदह हजार राक्षसों ने अत्यधिक कष्ट देना शुरू किया तो उस स्थान को निर्विघ्न भयमुक्त करने के लिये आतंक का नाश करने के लिये श्रीराम लक्ष्मण ने उनके साथ युद्ध कर उनका वध किया और इसे "त्रिकण्टक" कहा गया । नासिक के इतिहास में वर्णित यह प्रथम युद्ध कहा गया है। किंतु भयावह आतंक का अंत सहज नहीं था । शूर्पणखा अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए महा बलशाली रावण को उकसाती है। रावण का दुष्कपट और सीता का छलपूर्वक अपहरण रक्ष-संस्कृति के अन्त का कारण बना।

श्रीराम, लक्ष्मण के निर्माण के साथ ही साथ अगस्त्य मुनि ने वानर जाति के युवा वर्ग को ज्ञान-विज्ञान में दीक्षित कर राक्षसों के प्रति द्रोह भावना और देव व आर्यों के प्रति प्रेम और मैत्री भावों के संस्कार दिये। वानर जाति के युवा पीढ़ी के नायक थे महावीर हनुमान। उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्यव्रती रहकर श्री राम के राष्ट्रोद्धार में और चक्रवर्ती साम्राज्य की, रामराज्य की स्थापना में महान् योगदान दिया।

लोकनायक श्रीराम ने योजना के अंतर्गत जब वनगमन किया तो उनके दृष्टिपथ में एक विराट् लक्ष्य था शोषक दमनकारी और अन्यायी रावण के राक्षसी दुष्कर्म का अंत ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। युद्ध-शक्ति को बढ़ाने के लिए एक संगठित अनुशासित लक्ष्य के लिए समर्पित तथा प्रशिक्षित जन-बल की आवश्यकता थी। इतिहास साक्षी है यह दुष्कर कार्य श्रीराम ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति आत्म-बल संगठन की योजना और उत्कृष्ट लोक व्यवहार के कारण समर्पित निष्ठावान और जुझारू जन-बल खड़ा कर पूर्ण किया था। यह प्रक्रिया उन्होंने अत्यंत सूझ-बूझ तथा बुद्धिमत्ता पूर्ण नीति से की थी । क्योंकि जातियों तथा प्रजातियों कोल-किरातों, भीलों, निषाद ऋच्छों, गिद्ध, शबरी आदि और वनवासियों को अपनाया था और उनको एक सूत्र में निबद्ध किया था। उन्होंने आश्रम वासियों को प्रशिक्षित कर विशिष्ट गुणों तथा दलों में संगठित कर दिया था, उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण देकर शास्त्रार्थ का संचालन करना सिखाया।

आश्रमों में यज्ञशाला में दुष्ट राक्षसों के द्वारा मारे गए असंख्य ऋषि-मुनियों, वनवासियों के कंकाल मंदाकिनी के तट से पम्पा सरोवर तक बिखरे हुए थे। नरभक्षी राक्षसों से रक्षा करने के लिये श्री राम और लक्ष्मण धनुष की प्रत्यंचा कसकर संतप्त दुखी ऋषियों के यज्ञ में विघ्न डालने वाले आततायियों से रक्षा करने के लिए निर्भय होकर- निशाचर हीन करौं मही, भुज उठाई प्रण कीन्ह...

सांस्कृतिक उपन्यासकार नरेंद्र कोहली जी ने 'अभ्युदय' में यथा स्थान जीवन्त शब्द-चित्रण किया है। राम लक्ष्मण से कहते हैं- "कोई बाहरी सेना आकर किसी के लिए कोई युद्ध जीता दे, तो निश्चित रूप से वह कार्य नहीं हो सकता, जो जन सामान्य में जागृति लाकर, उन्हीं को प्रबुद्ध बनाकर, उसी पीड़ित जागृत जनता के बीच में तैयार की गई सेना से हो सकता है । लक्ष्मण मैं नहीं जानता कि मुझे सेना की आवश्यकता कहाँ पड़ेगी ? कब पड़ेगी ? कौन सी सेना मेरी सहायता के प्रस्तुत होगी ? जिस कार्य के लिए राम दण्डकारण्य जा रहा है, वह यही है कि प्रत्येक जन साधारण अपनी रक्षा के लिए प्रबुद्ध हो स्वाश्रित हो तो उसमें प्राण फूँकना मेरा कार्य है, उन्हें मार्ग दिखाना, उनका नेतृत्त्व करना। जब जनता जाग उठती है तो बड़े से बड़ा अत्याचार भी उसके सम्मुख टिक नहीं सकता...।" श्रीराम ने परवर्ती समय में इन्हीं शब्दों के द्वारा लोकसंग्रह के माध्यम से लोक चेतना जागृत कर पीड़ित जनों को संगठित, प्रशिक्षित कर रावण जैसे दुर्दम्य राक्षस का अन्त किया और लोकराज्य की स्थापना की।

श्रीराम का वनवास काल का अधिकांश समय नासिक चित्रकूट में वनवासियों की जटिल समस्याओं का अंत करने में व्यतीत हुआ। उनका उद्देश्य आर्यावर्त में उत्तर से दक्षिण तक सम्पूर्ण एक संस्कृति का प्रसार करना था। साकेत के अष्टम सर्ग में सीता माता भी अपना ध्येय धर्म समझते हुए कहती हैं -

ओ भोली कोल-किरात-भिल्ल बालाओ !
मैं आप तुम्हारे यहाँ आ गई आओ।
मुझको कुछ करने योग्य काम बतलाओ
दो अहो! नव्यता और भव्यता पाओ ।
लो मेरा नागर भाव भेंट जो लाया,
मेरी कुटिया में राज भवन मन भाया ।
सब ओर लाभ ही लाभ बोध-विनिमय में
उत्साह मुझे है विविध वृत्त-संचय में ।
तुल अर्थ नग्न क्यों हो अशेष समय में
आओ हम कातें-बुने गान की लय में ।
निकले फूलों का रंग, ढंग से ताया,
मेरी कुटिया में राज भवन मन भाया ।"

सीता धरती पुत्री थीं, अतः प्रकृति और धरती के गर्भ में निहित असंख्य बहुमूल्य सम्पदा के उपयोग का ज्ञान भी वनवासियों को समझाती थीं।

श्री राम ने लंकाधिपति रावण का संहार किया क्योंकि उसने सीता का हरण किया था, तो इसी बात के लिये, इसी एक कृतित्व के लिये रावण से युद्ध किया गया यह मूल कारण नहीं है, मूल उद्देश्य है रावण के दूषित विचारधारा के प्रति संघर्ष। राक्षस राज के विध्वंस के लिए महामानव की आवश्यकता थी, क्योंकि रावण को यह वरदान मिला था कि वह मनुष्य के द्वारा ही मारा जाएगा, अतः महामानव के रूप में श्रीराम का प्रादुर्भाव हुआ । रावण के वध के पश्चात् जब सभी देवी-देवताओं ने राम की स्तुति करते हुए उन्हें "भगवान राम" कहा तब राम स्वयं कहते हैं -

आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ।"
अर्थात् - "मैं स्वयं को मनुष्य ही मानता हूँ,
मैं राजा दशरथ पुत्र राम हूँ।"

राम ने सर्वांगीणकृत्यों द्वारा यह दर्शाया है कि कोई भी मनुष्य उच्च आदर्श ध्येय और कर्मों के द्वारा देवत्त्व को प्राप्त कर सकता है । स्वार्थ की पराकाष्ठा अभिजात्य नेतृत्त्व और अलौकिक व्यक्तित्त्व की त्रिपुटी हैं राम । वैदिक काल के पश्चात् आर्य हिंदू जाति को यदि किसी संजीवनी ने जीवित रखा तो वह है 'रामायण'। 'साकेत' में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सर्वप्रथम श्रद्धावनत होकर कहते हैं -

"राम, तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए, सहज सम्भाव्य है ।"

साकेत के 'अष्टम सर्ग' में राम अपने जीवन के उद्देश्य को बताते हुए कहते हैं -

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया
जन सम्मुख धन को तुच्छ बताने आया।
भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।...

'राम की शक्ति पूजा' में महाकवि निराला के राम एक अपराजेय योद्धा के साथ-साथ अप्रतिम साधक भी हैं, जो अपनी दृढ़ साधना से माँ शक्ति को अपनी ओर करते हैं। उनकी विजय सुनिश्चित हुई, जब जाम्बवान राम को - "आराधना का दृढ़ आराधना से दो उत्तर..." कह कर उनमें साधना के प्रति दृढ़ विश्वास भरते हैं।

महाकवि जयशंकर प्रसाद के लेखन में भारतीय ज्ञान-परम्परा और रचनात्मक लेखन के भारतीय वाङ्मय की प्रतिभा दृष्टिगत होती है। इनकी रचित एक कविता में राम के व्यक्तित्त्व का सर्वश्रेष्ठ चित्र उभरता है -

कारण तुम्हीं थे अब कर्म हो रहे हो तुम्हीं,
धर्म कृषि मर्म के नवीन घनश्याम हो।

रमणीय आप महामोदमय धाम तो थी,
रोम-रोम रम रहे कैसे तुम राम हो!

लंका विजय के पश्चात् राक्षसराज रावण का अंतिम दाह संस्कार करने से विभीषण द्वारा इन्कार करने पर राम उसे समझाते हुए कहते हैं कि -

मरणान्तानि वैराणि निवृत्तः नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारः ममापेष्य यथावत्।।

अर्थात् "जब तक जीवित था तभी तक उसमें पशुत्व था। अब मृत्यु के पश्चात् वैर कैसा ? अच्छे भाई की तरह अंतिम संस्कार करो, नहीं तो मैं करूंगा। जैसे वह तुम्हारा भाई है, वैसे ही मेरा भी है।" श्री राम के चरित्र को समझने के लिए मन-मस्तिष्क दोनों का साथ आवश्यक है। राम का जीवन सभी दशा और दिशाओं का समष्टि रूप है।

भारतीय संस्कृति, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय सभी विशेषताओं के प्रतीक हैं राम। प्रागैतिहासिक युग की इक्ष्वाकु वंशीय सुदीर्घ परम्परा ब्रह्मा, मारीच, दिलीप, रघु से लेकर अज, दशरथ और राम तक। श्रीराम के पुत्र लव-कुश के प्रकाश स्तम्भ हैं राम। मानव संस्कृति के इतिहास में राम मर्यादा पुरुषोत्तम माने जाते हैं, क्योंकि मर्यादा का अर्थ है, प्रत्येक कर्म को करने की जितनी आवश्यकता है उस सीमा को टूटने नहीं देना। राम जैसी परित्राण विभूति पाना दुर्लभ है। उनके उच्च कोटि के कर्तव्य पालन से रघुवंश रूपी मंदिर के कलश-ध्वज को राम ने अपने अलौकिक तेज तथा अद्वितीय माधुर्य के साथ सुशोभित किया है। ऋषि वाल्मीकि कहते हैं -

तेषां केतुरिव श्रेष्ठः रामः सत्य पराक्रमः।
प्रसन्नतां यां न गताभिषेक,
तस्तथा न मम्ले वनवास दुःखतः।।

राज्य प्राप्ति से प्रसन्न नहीं, वनवास से दुखी नहीं। राज्य भी कर्तव्य पालन के लिए था और वनवास भी कर्तव्य पूर्ति के लिये। उनके जीवन में धर्म और कर्तव्य का समावेश है। उनके त्याग में आवेश नहीं है, अनुचित वेग नहीं है, वे शान्त हैं, मर्यादाओं से पूर्ण हैं। सदियों से राम कथा और रामायण प्रवचन सुने जाते रहे हैं, किंतु उन्हें भगवान मान कर, उनमें दैवीय, ईश्वरीय गुण मान कर मूर्ति और चित्र की पूजा हम करते हैं, लेकिन उनके चरित्र को आत्मसात नहीं करते, यह कैसी विडम्बना है ?...

7, एम0आई0डी0सी0 नेताजी सुभाष चंद्र मार्ग
सातपुर नासिक-422007 (महाराष्ट्र)
मोबाइल : 9822753691

रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान।
ज्ञानवंत अपि सोइ नर पसु बिन पूँछ बिखान।
जरउ सो संपत्ति, सदन, सुख, सुहृद, मातु पितु भाइ।
सनमुख होत जो रामपद करइ न सहज सहाइ
सेइ साधु गुरु, समुझि, सिखि राम भगति थिरताइ।
लरिकाई को पैरिबो तुलसी बिसरि न जाइ।।
सबै कहावत राम के, सबहि राम की आस
राम कहै जेहि आपनो, तेहि भजु तुलसीदास
- तुलसीदास

जन-जन में बसे हैं राम

चित्रा गर्ग

मर्यादा पुरूषोत्तम राम भारतीय जनमानस के हृदय और मस्तिष्क में गहराई तक बसे हुए हैं। इस धरा के कण-कण में राम व्याप्त हैं। हम राम के स्वरूप को जैसे चाहें समझ सकते हैं। अपनी पूजा पद्धति से, साधना से, कल्पना से, श्रद्धा से दिल से या दिमाग से। राम हमें व्यक्ति के आचरण में मिलते हैं।

'राम' शब्द केवल दो अक्षरों का युग्म नहीं है, बल्कि इसमें समस्त वेदों का और ब्रहमांड का दिव्य ज्ञान समाहित है। राम विष्णु के स्वरूप हैं, साथ ही शिव जी और ब्रह्मा जी के भी। जीवन के हर पहलू में राम की झलक दृष्टिगोचर होती है

राम-राम के अभिनन्दन से हमारे आपसी प्रेम सम्बन्ध प्रगाढ़ हो जाते हैं और आपसी खिंचाव महसूस होता है। राम के जीवन का हर पहलू हमें जीवन में प्रेरणा देता है चाहे गृहस्थ रूप से, योगी रूप अथवा, सांसारिक रूप से, राजा का रूप हो अथवा जंगल का साधक रूप हो । देखा जाए तो राम शास्त्र और लोकजीवन के बीच जय श्रीराम एक सेतु से समान है।

जा पर कृपा राम की होई ।
ता पर कृपा करहिं सब कोई ।।
जिनके कपट, दम्भ नहिं माया ।
तिनके हृदय बसहु रघुराया ।।

कहने का अर्थ यह है, जिन पर राम की कृपा होती हैं, उन्हें कोई सांसारिक दुःख छू तक नहीं सकता। परमात्मा जिस पर कृपा करते हैं उस पर तो सभी की कृपा अपने आप होने लगती है। जिनके अंदर कपट, दम्भ (पाखंड) और माया नहीं होती, उन्हीं के हृदय में रघुपति बसते हैं अर्थात् उन्हीं पर प्रभु की कृपा होती है।

शील, सौंदर्य और शक्ति से सम्पन्न राम तुलसी के आराध्य हैं जो मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। तुलसी ने अपने महाकाव्य में राम के विभिन्न रूप जैसे कि आदर्श मानव, आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श वीर, आदर्श पिता को चित्रित किया है ।

वाल्मीकि के राम एक हाड़-माँस के संसारी पुरुष हैं। वे श्रेष्ठ पुरुष हैं, धीर पुरुष हैं, वीर पुरुष हैं, पर हैं मानव ही । तुलसीदास ने राम को निराकार से साकार कर दिया है। उन के राम परमब्रह्म हैं । राम तुलसी के हृदयपति हैं । तुलसी को राम प्यारे हैं, रामकथा प्यारी है, राम के संगी प्यारे हैं, राम के भक्त प्यारे हैं।

तुलसी ने जगत को जो राम दिया है, वो किसी कथा का नायक मात्र नहीं है, वो किसी भी कथा से बहुत आगे का है। वो राम श्रेष्ठतम की मानवीय अभिव्यक्ति है। तुलसी के राम एक छोर पर तो और दूसरे छोर पर आपकी व्यवहारिक पहुँच के भीतर हैं।

तुलसीदास वर्णन करते हैं-

सीयराममय सब जग जानी ।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।

ये जो पूरा जगत है, ये सियाराममय है, ये हैं तुलसी के राम। क्या तुलसी के राम एक पुरुष मात्र हैं? क्या तुलसी के राम निराकार ब्रह्मम हैं? नहीं, तुलसी के लिए राम एक ऐसी जीवंत वास्तविकता हैं जो जगत के तो हैं ही पर जिसमें आपको लगातार जगत के पार की भी झलक मिलती है। यही कारण है तुलसी के राम की विराट उपस्थिति का। वो जगत द्वारा इतने व्यापक रूप में स्वीकार किए गए हैं।

राम यदि 'ब्रह्म' हैं तो सीता 'प्रकृति' रूप में, स्त्री रूप मे देवीरूप में, उस ब्रह्म का विस्तार हैं । राम यदि आदि 'सत्य' हैं तो सीता आदि 'शक्ति' हैं । यदि हम आँख से देखें तो दिखाई देगे, सिर्फ राम, जो कि एक पुरुष हैं। यदि हम भक्त के हृदय से देखेंगे तो क्या दिखाई देगा? राम जो कालातीत हैं, जो मात्र पुरुष ही नहीं, आदिपुरुष हैं, स्वयं सत्य हैं।

वाल्मीकि के राम वनवास की खबर मिलने पर सीता के पास जाते हैं और जरा चिंता व्यक्त करते हैं। वो कहते हैं, 'मैं जा रहा हूँ सीते, और तुम भरत के साथ ज़रा बना कर रखना क्योंकि जिसके पास सत्ता होती है, उसके साथ संबंध अच्छे होने चाहिए' । हो सकता है कि ऐसा हुआ भी। हाड़-माँस का कोई भी साधारण इंसान शायद ऐसी ही सलाह देगा अपनी पत्नी को, जब वो उसे छोड़कर चौदह वर्ष के लिए जंगल जा रहा हो । अब देखते है तुलसी के राम को ।

अब देखते है तुलसी के राम को । तुलसी के राम इसी मौके पर जब सीता के पास जाते हैं तो वह किसी चिंता से ग्रस्त नहीं हैं। उनमें पूरी धीरता मौजूद है, वे पूरी तरह शांत हैं। वे सीता को । समाचार यूँ देते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। आप तुलसी के शब्दों में इस मौके पर भी राम को करीब-करीब मुस्कुराते हुए देख सकते हैं। ऐसा महसूस होता है कि जैसे राम को सब कुछ पहले से ही पता हो और जैसे सीता की प्रतिक्रिया भी पहले से ही तय हो। कहाँ चिंता ? कहाँ व्याकुलता? कहाँ भरत को लेकर शंका?

राम तक पहुँचने के लिए कोई चाहिए जो स्वयं राम से ओतप्रोत हो, उसके सहारे के बिना नहीं। अन्यथा राम साक्षात सामने भी आएँगे तो आपको नज़र नहीं आएँगे। कोई मध्यस्थ चाहिए, कोई सीता चाहिए। तुलसीदास दुखी होते हैं कि उन्हें राम के दर्शन होते थे और मैं अभागा पहचान नहीं पाया। हनुमान बोले, "तू रो मत, दोबारा आएँगे। पर उनकी लीला का ठिकाना नहीं, अब ऐसे नहीं आएँगे घोड़े पर, आँख खुली रखना।" तुलसी बोले, "हाँ"। अब एक दिन सुबह तुलसी अपने नित्य भक्ति का आयोजन कर रहे थे, चंदन घिस रहे थे। तो एक बच्चा आया, जैसे सारे बच्चे होते हैं, भोला - सुंदर, कहता है, "बाबा, हमें भी चंदन चाहिए। दो चंदन ।" अब वो चंदन तैयार कर रहे है अपने देवता के लिए, भगवान के लिए, और बच्चा कह रहा है, खिलवाड़ में, हमें भी दो चंदन। अब तुलसीदास मना ही करने वाले थे, वहीं पेड़ पर बैठे हनुमान बोले, "ये फिर चूका, इसको नहीं दिखाई देगा"। तब वे ऊपर से कहते है:-

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़।
तुलसीदास चंदन घिसे तिलक देत रघुवीर।।

कह रहे हैं कि अगर तुम चंदन घिस रहे हो तो तिलक लेने के लिए ये रघुवीर ही आए हैं । तुलसीदास ने देखा कि वो ऊपर से इशारा कर रहे हैं, 'वही हैं' । यहाँ तुलसीदास चंदन घिस रहे हैं और संतो के माथे पर रघुवीर तिलक दे रहे हैं।

जी-51, ईस्ट ऑफ कैलाश,
नयी दिल्ली-110065
मोबाइल- 9810082411

वनगमन में राम

➲ श्याम कृष्ण सक्सेना

राम का नाम हमारी सोच में शामिल होते ही उनकी अनेक महिमाओं की झलक मन-मस्तिक में आ जाती है, क्योंकि राम की महिमा अपरंपार है। भगवान श्रीराम लोकमंगल के पर्याय हैं। इसी कारण युगों-युगों से राम समाज के साथ-साथ साहित्य के केंद्र में भी हमेशा से रहे हैं। राम के अनेकानेक रूपों में साहित्य में अलग-अलग तरीके से व्याख्यायित किया गया है। शायद इसीलिए आजतक राम पर जितनी रचनाएँ लिखी गयी, उतनी किसी अन्य पर कम ही देखने को मिलती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के विविध रूपों को साहित्य में अलग-अलग दृष्टि से देखा गया है। मर्यादा की प्रतिमूर्ति राम के स्वरूपों को किसी सीमा में बाँध पाना बहुत मुश्किल है, फिर भी अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य मर्मज्ञों ने राम के प्रति आदरभाव प्रकट किया है। राम को अपनी भक्ति के माध्यम से याद करने वालों में महर्षि वाल्मीकि एवं गोस्वामी तुलसीदास जी का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। वाल्मीकि रामायण में वर्णित है कि अयोध्या के राजा दशरथ की तीन पत्नी थीं - कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा। राम की माता कौशल्या। भरत की माता कैकई। लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न की माता सुमित्रा थी । वाल्मीकि जी ने रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राम चरित्र को साधारण एवं उत्तम पुरुष के रूप में ही चित्रित किया है। वे आदर्श पुत्र, भाई और पति के प्रतीक हैं। वाल्मीकि जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अभिवादन करते हुए कहा है कि 'नीले कमल के समान श्याम और कोमल जिनके अंग हैं, सीताजी जिनके वाम भाग में विराजमान हैं और जिनके हाथों में अमोघ बाण और सुंदर धनुष है, उन रघुवंश के स्वामी भगवान रामचन्द्र जी को मैं नमस्कार करता हूं।'

रामचरितमानस एक ऐसा धार्मिक ग्रंथ है, जिसमें सामाजिक प्राणी के जीवन के प्रत्येक पक्ष को दर्शाया गया है। संत गोस्वामी तुलसीदास को भगवान राम का अनन्य भक्त कहा जाता है। कहा जा सकता है कि तुलसीदास जी ने राम की भक्ति को अपने साहित्य का उद्देश्य बनाया। तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राम के उस मंगलकारी रूप को समाज के सामने प्रस्तुत किया, जो संपूर्ण जीवन को विपरीत परिस्थितियों के बीच भी जीने और उसे आगे बढ़ाने में सहायक है। तुलसीदास जी कहते हैं कि मंगल भवन अमंगल हारी/द्रवहु सुदसरथ अजिर बिहारी।। यानि- जो सुख के सागर हैं, मंगल करने वाले और अमंगल दूर करने वाले हैं, वो दशरथ नंदन श्री राम मुझ पर अपनी कृपा करें।

इसके अलावा भी भक्तिकाल में राम को केंद्र में रखकर कई कालजयी रचनाएँ लिखी गई हैं। तुलसीदास जी जहाँ राम के सगुण रूप की उपासना करते हैं, तो वहीं

दूसरी ओर कबीर समाज में व्याप्त आडम्बर और कुरीतियों पर प्रहार करते हुए भक्ति के माध्यम से निर्गुण राम का सहारा लेते हैं। कबीर कहते हैं कि जिस तरह से कस्तूरी हिरण की नाभि में होता है, लेकिन इससे अनजान हिरण उसकी सुगन्ध कारण चारों ओर ढूँढता फिरता है। ठीक ऐसे ही राम यानी ईश्वर भी प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करते हैं, लेकिन उन्हें कोई ढूँढ नहीं पाता। उन्हें ढूँढने के लिए दर-दर भटकता रहता है, विभिन्न धार्मिक स्थलों पर जाता रहता है।

इसके अतिरिक्त भी अनेक रचनाकारों ने समय और परिस्थिति को ध्यान में रखकर राम के अनेकानेक रूपों को व्याख्यायित किया है। राम के विविध स्वरूपों को उकेरा है । हिन्दी साहित्य ही नहीं भारत की लगभग प्रत्येक भाषा के विद्वान साहित्यकारों ने राम के विविध चरित्रों को अपने लेखन के माध्यम से व्याख्यायित किया है, उसे सजाया एवं संवारा है । इतना ही नहीं विश्व साहित्य में भी राम को केंद्र में रखकर अनेक रचनाएँ रची गई हैं।

भगवान राम के जीवन के 14 वर्ष वनगमन करते हुए बीते। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार वनवास पर जाते हुए भगवान राम कई जगह रुके थे । वनवास काल के दौरान भगवान राम ने अनेक ऋषि-मुनियों से विद्या ग्रहण की और विभिन्न समुदायों और जातियों को एकत्रित/संगठित करते हुए उन्हें धर्म के मार्ग पर चलाया। अपने संयमित और मर्यादित जीवन में रहने के कारण उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहा गया। भगवान राम ने संपूर्ण भारत को धर्म के सूत्र में बाँधने का काम किया। भगवान राम ने वनवास काल के दौरान अपनी यात्रा अयोध्या से प्रारंभ करते हुए रामेश्वरम के रास्ते श्रीलंका में समाप्त की थी।

अनेक विद्वानों ने भगवान राम और माता सीता से जुड़े उन स्थानों का पता लगाया, जहाँ वे रुके थे। इनमें से कुछ स्थल प्रमुख हैं- तमसा नदी- भगवान राम ने नाव से इस नदी को पार किया था। यह नदी अयोध्या से लगभग 20 किमी दूरी पर है। शृंगवेरपुर तीर्थ- शृंगवेरपुर में निषादराज का राज्य था। इसी जगह पर गंगा के तट पर भगवान राम ने केवट से गंगा पार कराने के लिए अनुरोध किया था। शृंगवेरपुर को वर्तमान में सिंगरौर कहा जाता है, जो प्रयागराज से लगभग 20-22 किलोमीटर दूर पर स्थित है।

कुरई गाँव- सिंगरौर में गंगा पार कर श्रीराम कुरई पहुँचे थे, जहाँ उन्होंने विश्राम किया था। कुरई गाँव से आगे चलकर भगवान राम माता सीता और अपने भाई लक्ष्मण सहित प्रयाग पहुँचे। प्रयाग को लम्बे समय तक इलाहाबाद कहा गया और अब पुनः बदलकर प्रयागराज कर दिया गया है।

चित्रकूट- श्रीराम प्रयाग में यमुना नदी को पार कर चित्रकूट पहुँच गये। इसी समय श्रीराम के वियोग में राजा दशरथ का स्वर्गवास हो गया। चित्रकूट में ही कैकेई पुत्र भरत श्रीराम को मनाने अपनी सेना के साथ पहुँचे थे। श्रीराम ने भरत की बात नहीं मानी। इस पर भरत ने श्रीराम की चरण पादुका लेकर सिंहासन पर रख दी और राज्य चलाने लगे। इसके बाद वे चित्रकूट के पास ही सतना स्थित माता अनुसूइया के पति ऋषि अत्रि के आश्रम पहुँचे। लेकिन श्रीराम उस आश्रम में न रुक कर सतना में ही 'रामवन' नामक स्थान पर रुके थे, जहां ऋषि अत्रि का दूसरा आश्रम था।

दंडकारण्य- चित्रकूट से निकलने के बाद श्रीराम घने वन में पहुँच गए। महाभारत काल में इस वन को दंडकारण्य नाम से जाता था । मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के कुछ क्षेत्रों को मिलाकर दंडकारण्य था । दंडकारण्य का क्षेत्र गोदावरी नदी तक फैला हुआ था। गोदावरी नदी के तट पर बसा यह स्थान सीता-रामचंद्र

मंदिर के लिए प्रसिद्ध रहा। यह मंदिर भद्रगिरि पर्वत पर है। अपने वनवास के दौरान श्रीराम ने कुछ दिन इस भद्रगिरि पर्वत पर ही बिताए थे। मान्यता के अनुसार दंडकारण्य के आकाश में ही जटायु का रावण से युद्ध हुआ था। सिर्फ यहीं पर एकमात्र जटायु का मंदिर है।

दण्डकारण्य में प्रवास के उपरान्त श्रीराम महर्षि अगस्त्य मुनि के आश्रम गए। गोदावरी नदी के किनारे बसा यह आश्रम नासिक के पंचवटी क्षेत्र में है। इसी जगह पर लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी थी। इसके बाद श्रीराम-लक्ष्मण ने खर व दूषण के साथ युद्ध किया था। सर्वतीर्थ-शूर्पणखा, मारीच और खर व दूषण के वध के बाद ही रावण ने सीता का हरण किया और जटायु का भी वध किया था। इसी स्थल पर प्रवास के दौरान माता सीता के हठ के कारण सोने का हिरण खोजने के लिए श्रीराम और लक्ष्मण निकले थे। आश्रम से निकलते समय माता सीता की रक्षा के लिए लक्ष्मण रेखा खींची गई थी। माता सीता के हरण के बाद रावण से युद्ध करते हुए जटायु की मृत्यु 'सर्वतीर्थ' स्थान पर हुई, जो नासिक जिले में मौजूद है। इस स्थान पर ही गम्भीर रूप से घायल जटायु ने माता सीता के बारे में श्रीराम को बताया था। यहाँ श्रीराम ने जटायु का अंतिम संस्कार किया था। जटायु की स्मृति में नासिक से 56 किमी दूर 'सर्वतीर्थ' स्थान आज भी संरक्षित है। पर्णशाला-पर्णशाला आंध्रप्रदेश में गोदावरी नदी के तट पर स्थित है। मान्यता है कि इस स्थान पर रावण ने अपना विमान उतारा था। यहाँ पर राम-सीता का प्राचीन मंदिर है। तुंगभद्रा सर्वतीर्थ और पर्णशाला के बाद श्रीराम-लक्ष्मण माता सीता की खोज में तुंगभद्रा तथा कावेरी नदियों के क्षेत्र में पहुँच गए। तुंगभद्रा एवं कावेरी नदी क्षेत्रों के अनेक स्थलों पर वे सीता की खोज में गए। जटायु और कबंध से मिलने के पश्चात श्रीराम ऋष्यमूक पर्वत पहुँचे। रास्ते में वे पम्पा नदी के पास शबरी आश्रम भी गए। तुंगभद्रा नदी का प्राचीन नाम 'पम्पा' है। शबरी का नाम श्रमणा था। यह स्थल केरल में स्थित है। मलय पर्वत और चंदन वनों को पार करते हुए श्रीराम ऋष्यमूक पर्वत की ओर बढ़े। ऋष्यमूक पर्वत- ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँच कर उन्होंने हनुमान और सुग्रीव से भेंट की। इसी स्थल पर श्रीराम ने बाली का वध किया। ऋष्यमूक पर्वत तथा किष्किंधा नगर कर्नाटक के हम्पी में स्थित है। ऋष्यमूक पर्वत के पास ही 'मतंग पर्वत' स्थित है, जो हनुमान जी के गुरु ऋषि मतंग के नाम पर स्थित है। यही पर मतंग ऋषि का आश्रम था। ऋष्यमूक पर्वत के पास ही किष्किंधा स्थित है।

श्रीराम ने हनुमान और सुग्रीव से मिलने के बाद कोडीकरई में वानर सेना का गठन किया और लंका की ओर प्रस्थान किया। कोडीकरई तमिलनाडु के समुद्र तट पर स्थित है, जो पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में पाल्क स्ट्रेट से घिरा हुआ है। कोडीकरई में श्रीराम की सेना ने पड़ाव डाला और आगे की रणनीति तैयार की। लेकिन यहाँ से समुद्र लाँघना वानर सेना के लिए दुष्कर कार्य था इसलिए श्रीराम ने सेना के साथ रामेश्वरम की ओर प्रस्थान किया। रामेश्वर पहुँच कर श्रीराम ने सही स्थल का चयन किया।

रामचरितमानस के अनुसार भगवान श्रीराम ने यहाँ भगवान शिव की पूजा की थी एवं रामेश्वरम में शिवलिंग स्थापित किया। तब से रामेश्वरम प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ केंद्र है। धनुषकोडी भारत के तमिलनाडु राज्य के पूर्वी तट पर रामेश्वरम द्वीप पर स्थित है। इस जगह का नाम धनुषकोडी इसलिए पड़ा क्योंकि यहाँ से श्रीलंका तक जो सेतु बनाया था, उसके मार्ग का आकार धनुष के समान ही है। कुछ दिन विश्राम के बाद श्रीराम ने वह स्थान ढूँढ निकाला, जहाँ से समुद्र पर सेतु बाँधना था। श्रीराम ने नल, नील और समस्त वानर सेना की मदद से उक्त स्थान से लंका तक का सेतु निर्माण किया। धनुषकोडी ही भारत और श्रीलंका के बीच एकमात्र स्थलीय सीमा है। वाल्मीकि कृत

रामायण के अनुसार श्रीलंका के केन्द्र में रावण का महल था। श्रीलंका में नुआरा एलिया पहाड़ियों के आस-पास के क्षेत्र में रावण फॉल, रावण गुफाएँ, अशोक वाटिका, खंडहर हो चुके विभीषण के महल आदि के पुरातात्विक अवशेष मिलते हैं, जिनसे रामायण काल के होने की पुष्टि होती है।

भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या कोशल राज्य की प्रारम्भिक राजधानी हुआ करती थी। यहाँ पर इक्ष्वाकु, हरिश्चन्द्र, पृथु, मांधाता, सागर, भगीरथ, दिलीप, भगीरथ, ककुत्स्थ, रघु, दशरथ का राज हुआ करता था। रामचरितमानस के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी। बाद में अयोध्या सूर्यवंशी राजवंश की राजधानी बना, जिसके राजा श्रीराम थे। इसके बाद अयोध्या को साकेत के नाम से जाना गया। समय बीतता गया और एक समय ऐसा भी आया जब अयोध्या फैजाबाद बन गया। अब इस स्थल को पुनः अयोध्या नाम मिल गया। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार अयोध्या में ही भगवान राम का जन्म हुआ था, जहां पर अब भव्य मंदिर का निर्माण किया गया है।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर बने भव्य राम मंदिर में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि पूरा भारत राममय हो गया है। इसकी गूँज अब विदेशों तक में भी विभिन्न माध्यमों से सुनाई दे रही है। गत 22 जनवरी, 2024 को प्रधानमंत्री मोदी ने यहाँ प्राण प्रतिष्ठा की। प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही अयोध्या में आने वाले रामभक्तों से पर्यटन बहुत बढ़ गया है। मंदिर निर्माण के बाद अब यह स्थल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बन गया है। धार्मिक स्तर से मंदिर निर्माण के लिए सबसे अधिक संघर्ष किया गया। इस संघर्ष में राजनीतिक एवं सामाजिक स्तर पर सबसे अधिक सहयोग प्राप्त हुए, जिसके कारण यह सुखद संयोग बन सका । रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह को भव्य बनाने के लिए गर्भगृह से लेकर पूरे राम मंदिर को फूलों और लाइटों से सजाया गया। प्राण प्रतिष्ठा के लिए अयोध्या को लगभग 2500 क्विंटल फूलों से संवारा गया। मंदिर सहित सम्पूर्ण अयोध्या को सजाने के लिए दिल्ली, कोलकाता, कर्नाटक के साथ-साथ थाईलैंड और अर्जेंटीना से मनमोहक विदेशी फूल मंगवाये गये थे। रांत के समय मंदिर की स्वर्णिम आभा अलग ही छटा बिखेरती है। मंदिर के खंभे पर शानदार नक्काशी की गई है। मंदिर की दीवारें भव्य मूर्तियों से सजाई गयी हैं। मंदिर का स्थापत्य नागर शैली में किया गया है। ऊँचे शिखर मंदिर की भव्यता को और बढ़ाते हैं। कहते हैं वह मनुष्य सबसे महान है, जिसे कुछ नहीं चाहिए। तप और त्याग मनुष्य को महान बनाते है, बिना उसके जीवन में दिव्यता नहीं आती है। त्याग के माध्यम से जो कुछ पाया जा सकता है, वह किसी अन्य माध्यम से प्राप्त नहीं होता। "जो कछु न चाहिये, सो साहन को शाह !" श्रीराम त्याग केन्द्रित आदर्श व्यक्तित्व, धर्म और संस्कृति के प्रतीक हैं, जिसके चलते यह राम मंदिर राष्ट्रीय गौरव और एकजुटता की भावना का प्रतीक बन गया है।

- मोबाइल- 91405-01078

जहाँ बालमीकि भए व्याध तें मुनींद्र साधु, 'मरा' 'मरा' जपे सुनि सिख रिषि सात की।
सीय को निवास, लव-कुश को जनमथल, तुलसी छुवत छाँह ताप गरै गात की।
बिटप महीप सुरसरित समीप सोहै, सीता वट पेखन पुनीत होत पातकी।
वारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि, अंकित जो जानकी-चरण जलजात की।

- तुलसीदास

रामायण और स्वामी विवेकानंद

➲ अलका प्रमोद

रामायण जनित संस्कार आदर्श जीवन जीने की परिभाषा तो हैं ही उनकी अद्‌भुत महिमा है कि जिसने सच्चे अर्थों में उन संस्कारों के आत्मसात किया है और जन-जन में उनका प्रचार किया है उसने संत की सिद्धि प्राप्त की।

त्रेता युग में राम-भक्त हनुमान तो ईश्वरत्व को प्राप्त हुए। बाल्मीकि, तुलसीदास आदि ने रामायण रच कर एवं आधुनिक विचारधारा के महान संन्यासी स्वामी विवेकानंद ने रामायण में निहित नैतिक मूल्यों को आत्मसात कर और उनको विदेश की धरती तक संप्रेषित कर मानवता के उत्कृष्ट स्तर संत की उपाधि प्राप्त की।

संन्यासी स्वामी विवेकानंद ने रामायण के दर्शन को समझा और स्वयं को आस्था एवं मानवता को समर्पित कर मानव का कल्याण किया।

त्रेता युग से वर्तमान में कलियुग तक उत्तरोत्तर मानव के मूल्यों का कितना भी वास क्यों न हुआ हो, रामायण जनित संस्कारों ने पग-पग पर मानव को सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित किया है।

रामायण मात्र धार्मिक महाकाव्य नहीं जीवन को जीने का मूल मंत्र है जिसमें मर्यादा, सत्य, प्रेम, मित्रत्व, सेवक धर्म, सदाचार और नैतिक मूल्यों का श्री राम की गाथा के माध्यम से उल्लेख किया गया है। रामायण की पूरी गाथा जीवन के प्रत्येक संबंध के निर्वहन, प्रत्येक समस्या के समाधान और प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने की राह दिखाती है। भारत की सामाजिक संस्कृति के निर्माण, मर्यादित परिवार के गठन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह आशीर्वाद है, मानव जीवन के लिए।

रामायण विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थों में से एक है, मान्यता के अनुसार सर्वप्रथम श्री हनुमान ने त्रेता युग में हिमालय पर साधना के समय अपने नाखूनों से सम्पूर्ण रामायण की गाथा लिखी जिसका नाम हनुमद रामायण था। तत्पश्चात आदि कवि बाल्मीकि ने संस्कृत में इसे पुनः सृजित किया था। इसके बाद हिंदी, तमिल, तेलगू, मलयालम आदि अनेक भाषाओं में लगभग 300 रामायण रची गयी, यही नहीं सुदूर इण्डोनेशिया, लंका, जापान, थाईलैण्ड आदि 9 से अधिक अन्य देशों में भी रामकथा प्रचलित है। अवधी में सन्त तुलसीदास रचित रामचरितमानस सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थों में से एक है।

ज्ञातव्य है कि त्रेता युग में श्री राम को समर्पित राम भक्त हनुमान तो ईश्वरत्व को प्राप्त हुए। उनकी भक्ति उस चरम बिन्दु को प्राप्त हुई जिसे स्पर्श करना मानव के लिये सम्भव नहीं। यह रामायण के संस्कारों का ही प्रभाव था कि आदि कवि बाल्मीकि जो दस्यु के रूप में पाप कर्म में लिप्त थे, ऋषि नारद से राम गाथा सुनने के बाद महान कवि एवं संत हो गये और रामायण की गाथा से न केवल

जन मानस को परिचित कराया वरन मानव को रामायण के संस्कारों से संस्कारित भी कराया। तुलसीदास ने श्रीराम के भक्तिसागर में अवगाहन कर रामचरित मानस के रूप में भक्ति की धारा निःसृत कर समाज का हित किया और स्वयं सामान्य राम बोला से संत तुलसीदास बने।

इसी श्रृंखला में 12 जनवरी 1863 में जन्मे स्वामी विवेकानंद के बाल्यकाल में ही उनके मन में रामायण के आदर्शों का बीजारोपण हो गया था। उन्होंने रामायण के संस्कारों को अपने जीवन में आत्मसात किया, साथ ही रामायण को सात समुद्र पार तक पहुँचाया और मात्र हिंदू नहीं, मात्र भारत नहीं, सम्पूर्ण विश्व को रामायण में निहित नैतिक मूल्यों से अवगत कराया तथा मानव जाति का कल्याण कर महान संन्यासी बने ।

कहना न होगा कि जिसने भी श्रीराम के संस्कारों के आत्मसात किया वह मानव जीवन में उत्कृष्ट स्थान को प्राप्त कर संत बना।

स्वामी विवेकानंद आधुनिक विचार-धारा के मानव हित को समर्पित संन्यासी हुए हैं जिनका बाल्यकाल का नाम वीरेश्वर था तथा उन्हें प्यार से बिले कह कर संबोधित किया जाता था। कालान्तर में उन्हें नरेन्द्र का नाम दिया गया। वह बाल्यकाल में अपनी संस्कारवान माता भुवनेश्वरी देवी से नित्य रामायण की कथा सुनते थे और मात्र पाँच वर्ष की आयु में ही इस मेधावी बालक को रामायण कंठस्थ हो गयी थी। उन्होंने जो अपनी माँ से सुना था वह शब्दशः अपने अनुज को सुनाते थे। अबोध आयु में ही उनके प्रथम आराध्य राम और सीता ही थे जिनकी प्रतिमा ले कर वह कमरा बन्द करके ध्यान लगाते थे, स्वाभाविक है कि उनके मन में अपरोक्ष रूप से रामायण में वर्णित संस्कार अंकित हो गये। श्री रामकृष्ण जैसे आध्यात्मिक गुरु ने उनकी ईश्वर में आस्था जगायी और ज्ञान दिया जिसके बाद ईश्वर के प्रति आस्था और मानव कल्याण उनके जीवन का ध्येय बन गया ।

प्रभु राम के बाल्यकाल के मन में रोपित संस्कारों ने पग-पग पर उनको प्रेरित किया तथा वह आजीवन नैतिक मूल्यों का आँचल थाम कर सन्मार्ग पर चलते रहे। प्रभु राम ने वनवास में लंका तक भ्रमण करके अनेक दानवों का नाश कर, अहल्या को पत्थर से पुनः स्त्री बना कर अन्याय के विरुद्ध संदेश दिया, लोगों का हित किया तथा उत्तर से दक्षिण तक लोगों को एक सूत्र में बाँधा तो विवेकानंद ने उन्हीं संस्कारों से प्रेरित हो कर सम्पूर्ण भारत का भ्रमण करके लोगों में ईश्वर के प्रति आस्था जगायी, भारत की परतंत्रता की बेड़ियाँ तोड़ अन्याय का विरोध करने के लिये लोगों का जागरूक किया तथा सम्पूर्ण भारत को एकत्रित करने का प्रयास किया।

प्रभु राम ने श्री हनुमान को अपना परम प्रिय तो बनाया ही ऊँच-नीच से परे केवट, शबरी सुग्रीव, जटायु विभीषण आदि को समान रूप से अपना आत्मीय मान कर सार्वभौमिक प्रेम और भाईचारे का आदर्श स्थापित किया

बाल्यकाल से ही प्रभु राम की रामायण कंठस्थ करने वाले स्वामी विवेकानंद भी ऊँच-नीच से परे थे उनका कहना था कि "तुम उन्हें बराबर कहते हो यह मत छुओ वह मत छुओ इस देश में दया, धर्म और भाईचारा है क्या, मुझे मत छुओ यही रह गया है। ऐसे पतित आचरण को लात मारकर बाहर कर, कितना चाहता हूँ कि मुझे मत छुओ की दीवारें ढहा कर तुम सब ऊँच-नीच को एक में मिलाकर बाहर निकलो और पुकारो- आओ दीनहीन, सर्वहारा, पददलित, पतित, रामकृष्ण के नाम पर हम सब एक हैं, जब तक यह नहीं उठते, भारत माता का उद्धार नहीं होगा।"

उन्होंने अध्यात्म की नींव पर परस्पर प्रेम और भाईचारे को स्थापित करने का प्रयास किया। एक बार उनके पास कुछ युवक दीक्षा लेने आये। स्वामी जी ने उनको

सहमति दे दी। तब उनके शिष्य ने उनमें से एक युवक का इतिहास बताते दीक्षा दिये जाने के निर्णय के संबंध में शंका प्रकट की। तब स्वामी जी ने कहा "मुझे भली-भाँति पता है। परन्तु यदि किसी पापी को हम हृदय से नहीं लगाएंगे तो कौन लगाएगा।"

श्री राम ने अपनी शिक्षा का उपयोग संहारक शक्तियों का संहार कर, परहित में शिक्षा का सदुपयोग करने का संदेश दिया तो उनका अनुसरण कर विवेकानंद ने जीवन निर्माण, मानव निर्माण, चरित्र निर्माण के विचारों को आत्मसात करने को ही शिक्षा का सही अर्थ बताया। उन्होंने कहा "मेरे जीवन का प्रमुख कार्य है- भारत में संन्यासियों का ऐसा वर्ग तैयार करना जो अपना जीवन दूसरों की सेवा में समर्पित कर दें।"

प्रभु राम ने समाज की संतुष्टि के लिये दुख सहे अपनी पत्नी और पुत्र का वियोग तक सहा। स्वामी जी ने उन्हीं संस्कारों को आत्मसात किया और स्वयं तो इसे जीवन में अपनाया ही अपने शिष्यों को दीक्षा देते समय कहा "याद रखो संन्यासी का जन्म अपनी आत्मा की मुक्ति तथा सारे समाज की सेवा के लिये हुआ है।"

स्वामी जी का उद्देश्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों था। जब विदेश जाने का अवसर मिला तो प्रथम भाषण में ही उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को भारत की संस्कृति, संस्कार एवं हिन्दू धर्म के अध्यात्म की ऊँचाइयों से परिचित कराया। उनका मत था कि धर्म मनुष्य की आत्मा है ।

31 जनवरी 1900 में शेक्सपियर क्लब, पासाडेना, कैलिफोर्निया में अपने उद्‌बोधन में स्वामी जी ने पहले रामायण के संस्कृत में रचयिता आदि कवि बाल्मीकि के दस्यु से महान कवि एवं संत होने के चमत्कार का प्रसंग सुना कर रामायण के प्रभाव को प्रतिपादित किया तत्पश्चात रामायण की पूरी गाथा सुनाई और तब विश्व को ज्ञात हुआ कि रामायण ग्रन्थ में मानव जाति के लिये कितना बहुमूल्य संदेश है। स्वामी विवेकानंद प्रखर बुद्धि के आधुनिक विचारधारा के विचारक थे अतः उन्होंने भारत के संस्कारों से पश्चिम के संस्कारों की तुलना करते हुए रामायण के बारे में समझाने का प्रयास किया ।

स्वामी जी ने बताया कि- रामायण भारत का महान प्राचीन महाकाव्य है। राम और सीता भारतीय राष्ट्र के आदर्श हैं। सभी बच्चे विशेष रूप से लड़कियाँ सीता की पूजा करती हैं। उनकी महत्वाकांक्षा की ऊँचाई सीता की तरह बनना है।

उन्होंने कहा- ऐसी कोई पौराणिक कहानी नहीं है जो पूरे देश में इतनी व्याप्त हो गई हो, जीवन में प्रवेश कर गई हो और इसीलिये जाति के खून की हर बूँद में इतनी झनझनाहट है, क्योंकि उनका आदर्श सीता है, सीता भारत में हर उस चीज के लिए नाम है जो स्त्री में अच्छी, शुद्ध और पवित्र है, जिसे स्त्रीत्व कहते है। अगर एक पुजारी एक महिला को आशीर्वाद देना है तो वह कहता है 'सीता बनो' सीता स्वभाव से एक सच्ची भारतीय थीं, उन्होंने कभी चोट नहीं की।

स्वामी जी ने मात्र विदेश में सीता की गाथा नहीं सुनाई पर स्त्री की शुद्धता और पवित्रता को अपने विचारों में भी स्वीकारा तभी तो जब एक बार एक वेश्या स्त्री उनसे मिलने आई तो उसको भी उन्होंने सम्मान दिया और कहा "वह एक स्त्री है और मेरी दृष्टि में हर स्त्री माँ है।"

स्वामी जी ने कहा कि "भारत में उन्हें भगवान का सातवाँ अवतार मानता हूँ ।"

आधुनिक और बौद्धिक विवेकानंद ने रामायण की गाथा को आस्था के साथ-साथ दर्शन की दृष्टि से भी विवेचना कर प्रस्तुत किया और रामायण की गाथा के गूढ़ संदेश से विश्व को परिचित कराया। उन्होंने रामायण को दर्शन की दृष्टि से उसमें निहित संदेश के बारे में उन बौद्धिक लोगों को समझाया जो उसे मात्र एक कहानी

समझते थे।

उन्होंने बताया कि राम परमात्मा हैं और सीता जीवात्मा तथा प्रत्येक मानव का शरीर लंका है।

जीवात्मा जो शरीर में कैद है वह लंका में कैद है और सदा परमात्मा के सम्पर्क में है अर्थात श्री राम के लगाव में है पर राक्षस रूपी दुष्चरित्र या स्वभाव के लक्षण इसमें बाधा बनते हैं।

विभीषण सत्व गुण है, रावण राजस गुण है तथा कुम्भकरण तमस गुण का प्रतीक है। सत्व का अर्थ अच्छाई है, राजस का अर्थ हवस या लिप्सा और जुनून या मद या वासना है और तमस का अर्थ अन्धकार, व्यामोह या जड़ता, लोभ, द्वेष या गलत इरादा, से सम्बद्ध है ।

यह गुण जीवात्मा यानि कि सीता को लंका रूपी शरीर में रखे हैं और परमात्मा यानि कि राम से मिलने से रोकते हैं । जीवत्मा रूपी सीता कैद में है और राम से मिलने का प्रयास कर रही हैं। तब हनुमान रूपी गुरु या आध्यात्मिक गुरु जो ब्रह्म ज्ञान रूपी अंगूठी दिखा कर सारे भ्रमों का निवारण कर देते हैं और इस प्रकार जीवात्मा परमात्मा से मिलने का मार्ग पा जाती है और जीवात्मा तथा परमात्मा एक हो जाते हैं।

आज का युग भ्रम का युग है लोगों में आस्था की कमी है बौद्धिकता का बोलबाला है प्रायः मानव तर्क और उससे भी अधिक कुतर्क करते हैं ऐसे में स्वामी विवेकानंद जैसे मेधावी आधुनिक विचारधारा के साथ समन्वय करने वाले तार्किक कसौटी पर विवेचना करने वाले विद्वान ही धर्म और मानवता को स्थापित कर सकते हैं उन जैसे संत ही रामायण की महिमा से विश्व को अवगत कराकर उसमें निहित आदर्शों पर चलने की राह दिखा कर मानवता का कल्याण कर सकते हैं। स्वामी जी ने आजीवन यही प्रयास किया अपने गुरु के नाम पर देश विदेश में मठ स्थापित कर धर्म का उत्थान किया और मानव का उत्थान किया।

इस प्रकार रामायण के संस्कारों को आत्मसात करके नैतिक शिक्षाओं का अनुसरण करके ही वह एक महान संन्यासी बन पाये।

- 5/41, विराम खण्ड
गोमती नगर, लखनऊ-226010
मो0- 98390-22552

तुम सुनो, सदैव समीप है-
जो अपना आराध्य है।
आओ, हम साधें शन्ति भर,
जो जीवन का साध्य है।
अलक्ष की बात अलक्ष जाने,
समक्ष को ही हम क्यों न माने?
रह वहीं प्लावित प्रीति-धारा,
आदर्श ही ईश्वर है हमारा।
- मैथिलीशरण गुप्त

शिक्षाप्रद राम का जीवन

➲ डॉ0 शारदा मेहता

श्रीराम मर्यादापुरुषोत्तम हैं। जन्म से लेकर परमधाम जाने तक हर क्षण वे मर्यादा में रहे। बड़ी से बड़ी कठिन परिस्थिति में वे विचलित नहीं हुए। कभी भी श्रीराम को क्रोधित होते नहीं देखा। कैसी भी परिस्थिति हो, कितनी भी बड़ी समस्या हो, उन्होंने उसका सामना धैर्यपूर्वक किया। वे सर्वदा गरिमामय वातावरण निर्मित कर हर समस्या का निदान सूझबूझ से करते थे। किसी पर भी दोषारोपण करके उसे दंडित नहीं करते थे। उनके जीवन की प्रत्येक अवस्था पर हम दृष्टिपात करें तो उनके सम्पूर्ण चरित्र से कोई न कोई शिक्षा प्राप्त होती है-

बाल्यावस्था- बाल्यावस्था में वे अपने तीनों भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करते थे। चारों भाई साथ-साथ भोजन करते थे। सभी अपने सखाओं के साथ खेलने जाते थे। सभी आखेट का खेल खेलते थे। सभी छोटे भाइयों की ओर उनका ध्यान रहता था। भरतजी श्रीराम के बाल्यावस्था के व्यवहार के विषय में कहते हैं-

सिसुपन तें परिहरेऊँ न संगू ।
कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ।।
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही ।
हारेहुँ खेल जितावहि मोही ।।

(श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड दोहा 259/4)

भाव यह है कि भरतजी ने शैशवावस्था से साथ नहीं छोड़ा। रामजी ने भी मेरे (भरतजी के) मन को नहीं तोड़ा। मैंने प्रभु की मुझ परकृपा की रीति को हृदय में भली भाँति देखा है। मेरे हारने पर भी खेल में मुझे जिता देते थे। माता-पिता तथा गुरु की आज्ञा का पालन करते थे। सुबह उठकर -

प्रातकाल उठि के रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।
आयसु मागि करहिं पुर काजा।
देखि चरित हरषइ मन राजा।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 204/4)

पितृभक्तिः श्रीराम की पितृभक्ति अनुकरणीय है। माता कैकेयी उन्हें जब यह बतलाती है कि पिताजी ने तुम्हें चौदह वर्ष वन जाने की आज्ञा दी है तो श्रीराम उसे सहज ही स्वीकार कर लेते हैं। वे कहते हैं कि-

सुनि जननी सोई सुतु बड़भागी।
जो पितु मातु बचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोषनिहारा।
दुर्लभ जननि सकल संसारा।।

(श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड 41/4)

भाव यह है कि हे माता! वही पुत्र भाग्यवान है जो माता-पिता के वचनों का पालन करता है। आज्ञा पालन के द्वारा माता-पिता को सन्तुष्ट करने वाला पुत्र, हे जननि!

सारे संसार में दुर्लभ है।

श्रीराम की मातृभक्ति- शैशवावस्था में बालक माता के सम्पर्क में सर्वाधिक रहता है। माता से ही उसे उत्तम संस्कार प्राप्त होते हैं। श्रीराम अपनी माता को अत्यधिक सम्मान देते हैं, किन्तु साथ ही साथ कैकेयी का भी सम्मान करते हैं। माता कौसल्या श्रीराम से कहती है कि पिता से माता की आज्ञा बड़ी है अतः हे राम ! तुम वन में मत जाओ-

जौ केवल पितु आयसु ताता।
तौ जनि जाहु जानि बड़ी माता ।।

(श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड 56/1)

जब श्रीराम ने कैकेयी की आज्ञा माता कौसल्या को सुनाई तो एक आदर्श माता के रूप में वे मौन हो गईं। वे श्रीराम को कहती हैं कि वन के देवता तुम्हारे पिता होंगे और वनदेवियों को तुम माता स्वरूप मानना। वन के पशुपक्षी तुम्हारे सेवक होंगे। जब श्रीराम के वन गमन के पश्चात सभी जन भरतजी के साथ चित्रकूट में श्रीराम लक्ष्मण तथा सीताजी से भेंट करने जाते हैं तो वहाँ कैकेयी के पश्चाताप को देखिये-

लखि सिय सहित सरल दोउ भाई।
कुटिल रानि पछितानि अघाई।।
अवनि जमहि जाचति कैकेई।
महिन बीच बिधि मीचु न देई।।

(श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड 252/3)

भाव यह है कि कुटिल कैकेयी श्रीराम लक्ष्मण का सहज सरल व्यवहार देखकर पश्चात्ताप कर रही है। वह यमराज से प्रार्थना करती है कि उसे पृथ्वी फटकर स्थान दे दें।

गुरुकुल गमन- श्रीराम राजा दशरथ को अत्यधिक प्रिय थे। गुरु विश्वामित्र उन्हें गुरुकुल में शिक्षा देने के लिए अयोध्या पधारे। इस समाचार से राजा दशरथ अत्यधिक दुःखी होते हैं। वे श्रीराम से क्षण भर भी अलग होना नहीं चाहते हैं। वे गुरु विश्वामित्र से कहते हैं-

सब सुत प्रिय मोहि प्रान की नाई।
राम देत नहीं बनई गोसाई।।
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा।
कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 207/3)

वन में श्रीराम लक्ष्मण ने बड़ी श्रद्धा के साथ गुरुजनों की राक्षसों से रक्षा की और उनकी तपस्या, यज्ञ, पूजन में विघ्न उपस्थित नहीं होने दिया। दशरथजी ने मृत्यु के समय भी श्रीराम को स्मरण किया-

राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ।।

(श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड दोहा 155)

गुरु विश्वामित्र के आश्रम में रहते हुए श्रीराम तथा लक्ष्मण ने शीघ्र ही विद्या प्राप्त कर ली -

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अल्पकाल सब विद्या आई ।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 203/2)

यह पंक्ति दर्शाती है कि सावधानीपूर्वक, मन लगाकर तल्लीन होकर शिक्षा प्राप्त की जाए तो शीघ्र ही सफलतापूर्वक विद्या प्राप्त की जा सकती है।

जनकपुर गमन- जनकपुर में धनुष यज्ञ की सूचना गुरु विश्वामित्र को प्राप्त हुई। वहाँ जनक पुत्री सीताजी का स्वयंवर का आयोजन किया गया था। गुरुजी श्रीराम लक्ष्मण को लेकर जनकपुर गए। दोनों भाइयों ने जनकपुर की छटा देखी। वे दोनों अत्यधिक प्रभावित हुए। रात्रि में दोनों भाइयों ने गुरु के पैर दबाए और उनकी आज्ञा से शयन करने गए । प्रातःकाल जल्दी उठकर, नित्यक कर्म करने के पश्चात् गुरु की आज्ञा लेकर जनकपुर की पुष्पवाटिका देखने गए। वहाँ सीताजी भी अपनी सखियों के साथ गौरी पूजन करने आई थी। यहाँ भी रामजी मर्यादित रहे। गुरु के साथ धनुष यज्ञ में सम्मिलित हुए। गुरु के कहने पर धनुष संधान किया

और उसे भंग कर दिया। सीता स्वयंवर सम्पन्न हुआ और सीताजी ने श्रीराम को वरमाला पहना दी।

जनकपुर में धनुष भंग की सूचना परशुरामजी को लगी तो वे क्रोधित होकर जनकपुर आ गए। इतनी कठिन परिस्थिति में भी श्रीराम विचलित नहीं हुए। परशुरामजी के क्रोध की पराकाष्ठा हो गई पर वे शान्त भाव से उन्हें श्रवण करते रहे। वे श्रीपरशुरामजी से कहने लगे-

बररै बालकु एकु सुभाऊ।
इन्हहि न संत विदूषहिं काऊ।।
तेहिं नाही कछु काज बिगारा।
अपराधी मैं नाथ तुम्हारा।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 278/2)

भाव यह है कि लक्ष्मण ने काम नहीं बिगाड़ा है। धनुष मैंने तोड़ा है अतः अपराधी आपका मैं हूँ। लक्ष्मणजी ने चुहलबाजी की तो रामजी ने परिस्थिति को विकट होने से बचाया और कहा-

राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा।
कर कुठारू आगे यह सीसा।
जेहिं रिस करिअ सोइ स्वामी।
मोहि जानिय आपन अनुगामी।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 280/4)

भाव यह कि श्रीराम ने बड़े शांत भाव से कहा कि मुनीश्वर क्रोध छोड़िए। कुठार आपके हाथ में है। यह मेरा सिर है। जिस प्रकार आपका क्रोध शान्त हो जाए वही कीजिए, मुझे अपना दास जानिये। श्रीराम बड़ी विनम्रता से आगे कहते हैं-

हमहि तुम्हहि सरिबरि कसिनाथा।
कछु न कहाँ चरन कहँ माथा।
राम मात्र लघुनाम हमारा।
परसु सहित बड़ नाम तोहारा।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 281/3)

इस लक्ष्मण परशुराम संवाद में श्रीराम की भूमिका अनुकरणीय है। उनका शान्त स्वभाव, परशुरामजी के प्रति आदरभाव और विपरीत परिस्थिति में भी अपने आप को निर्विकार रख कर क्रोधी परशुरामजी का सामना करना एक साहसिक कार्य था । जनकजी के यहाँ चारों भाइयों का विवाह होता है। सभी ओर आनन्द का वातावरण है।

अयोध्या आगमन- चारों वर वधूओं का भव्य स्वागत होता है। सम्पूर्ण अयोध्या नगरी में उत्साह है। श्रीराम एक पत्नी व्रत का पालन करने वाले हैं। वे 'रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाय पर वचन न जाई' के सिद्धान्त को मानने वाले हैं। दशरथजी द्वारा श्रीराम के राज्याभिषेक की सूचना दी जाती है। सम्पूर्ण अयोध्या में आनन्द का वातावरण है। देवता सरस्वतीजी को यह कार्य सौंपते हैं कि वह मंथरा की बुद्धि कुंठित कर दे और वह कैकेयी के माध्यम से राजा दशरथ से यह वरदान मांगे कि राम को चौदह वर्ष का वनवास तथा भारत को अयोध्या का राज्य प्राप्त हो ।

वनगमन- वन गमन के समय श्रीरामजी सीताजी को अयोध्या में ही रहने की सलाह देते हैं। परन्तु पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली सीता जी श्रीराम के साथ ही जाती है। विभिन्न गुरुओं के आश्रमों में जाकर सभी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। पंचवटी में पर्ण कुटी बनाकर यहाँ निवास करते हैं । एक दिवस श्रीराम लक्ष्मण की अनुपस्थिति में सीताजी को अवतार का रहस्य समझाते हुए कहते हैं कि अब मैं मनुष्य की लीला करूँगा। तब तक तुम अग्नि में निवास करो-

सुनहि प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला।
मैं कछुकरविललित नर लीला।
तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा।
जौ लगि करौ निसाचर नासा।।1।।

(श्रीरामचरितमानस अरण्यकाण्ड दोहा 23/1)

श्रीराम अपनी पत्नी के प्रति सचेत हैं। इसलिए वे सीताजी के लिए सुरक्षात्मक कार्य करते हैं। पंचवटी में शूर्पणखा का आगमन, उसका विवाह प्रस्ताव तथा लक्ष्मण द्वारा उसको नाक कान विहीन करना ये सभी विकट परिस्थितियाँ थीं, जिसमें श्रीराम धैर्य से निर्णय लेते रहे और अपने आपको संयमित रखते रहे।

लंका में लक्ष्मणजी को शक्ति लगना- रावण के साथ युद्ध में लक्ष्मणजी को मेघनाद के विशेष बाणों से शक्ति लग गई। लक्ष्मणजी बेहोश हो गए। श्रीराम के लिए यह विकट परिस्थिति थी। वे कहते हैं-

जैहऊँ अवध कवन मुहु लाई।
नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।

(श्रीरामचरितमानस लंका काण्ड दोहा 60/6)

भाव यह है कि मैं कौन सा मुख लेकर अवधपुरी जाऊँगा। सभी कहेंगे कि पत्नी के लिए भाई को खो दिया। मूर्च्छित लक्ष्मणजी को देखकर श्रीराम आगे कहते हैं-

निज जननी के एक कुमारा।
तात तासु तुम्ह प्राण अधारा।।

(श्रीरामचरितमानस लंकाकाण्ड दोहा 60 (ख) 7)

श्रीराम मूर्च्छित लक्ष्मणजी को देखकर वह क्षण स्मरण करते हैं जब माता सुमित्रा श्रीराम के साथ लक्ष्मणजी को वन जाने का कहती है-

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी।
सब विधि सुखद परम हित जानी।
उतरु काह दैहऊँ तेहि जाई।
उठि किन मोहि सिखावहु भाई।।

(श्रीरामचरितमानस लंकाकाण्ड दोहा 60 ख/ 8)

पशु पक्षी के प्रति प्रेम- बाल्यावस्था में कौआ को रोटी खिलाते थे। रघुकुल की गौसेवा प्रसिद्ध है। श्रीराम भी गाय की सेवा करते थे। सीताहरण के पश्चात वन में घूमते हुए श्रीराम वन्य प्राणियों तथा प्रकृति जगत में सीताजी के बारे में पूछते हैं। हरिण, भ्रमर तथा अन्य पक्षियों की सहायता लेकर सीतान्वेषण करते हैं। रावण जब सीताजी को ले जा रहा था तो जटायु ने सीताजी को बचाने का प्रयत्न किया। रावण ने उसके पंख काट दिये। भूमि पर घायल पड़े जटायु की श्रीराम ने सेवा सुश्रूषा की। गिलहरी की पीठ पर जो तीन धारियाँ हैं वे भी श्रीराम के हाथ की उँगलियों के निशान हैं। ये सभी श्रीराम के पशु पक्षी प्रेम की ओर इंगित करते हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण श्रीरामचरितमानस में श्रीराम का चरित्र विभिन्न आपदाओं से घिरा रहा। हर परिस्थिति में उन्होंने अपने आपको संयमित रखा । श्रीराम ने न कभी क्रोध किया, न आवेश में आए, हमेशा शान्त तथा निर्विकार भाव से यह सहजता पूर्वक, धैर्य से हर समस्या का निदान सफलतापूर्वक करते रहे। श्रीराम ने शरणागत को शरण दी, जिसका उदाहरण रावण का भाई विभीषण है। मूक प्राणियों से मित्रता कर उन्होंने वानर सेना बनाई और रावण पर विजय प्राप्त की। सुग्रीव की सहायता की। हनुमानजी की दूरदर्शिता, बल सौष्ठव तथा चतुर रणनीति से सीताजी की खोज की। भालू के रूप में जामवन्तजी ने सेवा की। इस प्रकार असहनीय दारुण दुःख का अनुभव श्रीराम को हुआ । वे हमेशा हर परिस्थिति में मर्यादा में रहे। किसी भी सम्प्रदाय के प्रति श्रीराम के मन में वैमनस्य भाव नहीं था । वनवास में ऋषि कुलों के प्रति विशेष आदर भाव श्रीराम ने रखा । समुद्र पर सेतु निर्माण में नल और नील सहित अन्य वानर समुदाय ने सहायता की और लंका में वानर सेना का प्रवेश हो सका। रावण ने कई मायावी रूप धारण किये परन्तु असीम धैर्य से श्रीराम ने विजय प्राप्त की।

सीनि. एम.आई.जी.-103,
व्यास नगर, ऋषिनगर
विस्तार, उज्जैन (म.प्र.) 456010
मोबाइल- 9406660280

आधुनिक जन स्वास्थ : राम

➲ डॉ0 श्रीधर द्विवेदी

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से असंक्रामक महामारियों जैसे उच्चरक्तचाप (हाइपरटेंशन), डायबिटीज, हृदयाघात (दिल का दौरा), पक्षाघात (स्ट्रोक), मोटापा तथा कैंसर का प्रकोप बढ़ना शुरू क्या हुआ कि अब वह थमने का नाम नहीं ले रहा है। निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। आज स्थिति यह है कि विकसित देशों की क्या कहें भारत जैसे विकासोन्मुख देश में भी ये बीमारियाँ भयावह स्वरूप में मुँह बाये खड़ी हुई हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार इस समय हमारे देश में करीब आठ करोड़ लोग मोटापे से, छह करोड़ डायबिटीज से, चौदह करोड़ उच्चरक्तचाप से, इक्तीस करोड़ हृदयाघात से, तीन करोड़ साँस-खाँसी (सी ओ पी डी) से, एक करोड़ से अधिक कैंसर से तथा उतने ही लोग पक्षाघात से पीड़ित कहे जाते हैं। आखिर जन स्वास्थ्य की इस भयानक स्थिति के कारण क्या हैं? इसका सीधा उत्तर है- हमारी बिगड़ी जीवन शैली। खराब खान-पान, व्यायामहीन जीवन, तंबाकू-धूम्रपान, मदिरापान, आपाधापी भरा तनावपूर्ण क्रोधमय जीवन, पर्याप्त निद्रा की कमी, जीवन में सकरात्मकता का अभाव और कर्तव्य पालन में अरुचि। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन समस्त कारणों का संबंध कहीं न कहीं हमारी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा हुआ है जिससे हम बहुत हद तक कट गये हैं। परिणाम यह हुआ है कि अब हमारा पूरा रहन सहन पश्चिमी विचारों से प्रभावित हो गया है। हम आँख मूंद कर यूरोपीय लोगों द्वारा प्रचारित-निर्देशित संस्कारों को अपनाकर गौरवान्वित होते हैं। बिना कोई प्रश्न किये यह मान जाते हैं कि धूम्रपान से हम अच्छे लगते हैं, मांसाहार शाकाहार से अच्छा है, योग-व्यायाम से जिम जाना श्रेष्ठ है, जंक से हमें तुरंत ऊर्जा मिलती है, रात देर से तक जगने से कुछ नहीं होता, वृद्ध-श्रेष्ठ लोगों को प्रणाम करने से क्या मिलता है? गीता-रामायण पढ़ने से उस पर अमल करने से मानसिक शांति कहां मिलने वाली है, आदि आदि अनेक बातें। संस्कार के अभाव, धूम्रपान, योग व्यायाम के अभाव, जंक भोजन मद्यपान तथा आपाधापी जैसे कुटेवों के चलते हम सब इस बदहाल स्वास्थ्य परिस्थिति में फँसे हुए हैं।

सौभाग्य से इस विषम परिस्थिति से निपटने का अत्यंत सुगम उपाय मर्यादा पुरुषोत्तम राम हजारों वर्ष पूर्व हमें बता चुके है। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन ऐसी खुली किताब है जिसके हर पृष्ठ पर सुस्वास्थ्य के ऐसे सरल सूत्र अंकित है जिसके सहारे हम सब स्वस्थ और दीर्घायु जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आइये हम दशरथपुत्र राम के उन पक्षों पर विचार करें जिसके बल पर वह आजीवन स्वस्थ, समर्थवान और दीर्घायु बने रहे। श्रीराम के स्वस्थ जीवन के अनेक सकारात्मक पक्ष है:-

सुकृति और संस्कार- दशरथनंदन राम के जन्म का मूल

उद्देश्य पृथ्वी पर बढ़ रहे राक्षसों के दुराचार को समाप्त कर सुराज्य की स्थापना करना था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्हें स्वयं को शारीरिक मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से अत्यंत सबल ,सशक्त नीतिवान और प्रत्युत्पन्नमति से युक्त होना परम आवश्यक था। सौभाग्य से उनका जन्म पुत्रेष्टि यज्ञ के पश्चात् हुआ था। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से श्रीराम के इस जन्म को हम महारानी कौशल्या और महाराज दशरथ दोनों के जीन्स सम्मिलन का प्रतिफल कह सकते हैं। महारानी कौशल्या का मातृत्व पूर्णतः सुपोषित, संस्कारित, आत्मतुष्टि से पूर्ण तथा सात्विक वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्रीराम इस पवित्र और महिमामयी दम्पति की सुकृति का सुफल थे। अद्भुत गुणों से सम्पन्न रघुकुल दीपक थे। महाकवि तुलसी ने इस बात को बड़ी मार्मिकता से बालकाण्ड में रामविवाह के समय इस प्रकार उल्लेखित किया है। 'जनक सुकृति मूरति वैदेही। दशरथ सुकृति राम धरे देही।। (रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा 309 चौपाई 1)। जनककुमारी सीता महाराज जनक के पुण्यकर्म, सत्कर्म की प्रतिकृति हैं। और श्रीराम महाराज दशरथ की तपस्या के प्रतिमूर्ति हैं यहाँ यह भी विचारणीय है कि श्रीराम को शैशवावस्था में महाराज दशरथ के समस्त संस्कार जैसे गुरु सम्मान, अभिवादनशीलता, विनय, ईशभजन, शाकाहार के गुण मिले। किशोर होकर उन्हें महर्षि वशिष्ठ जैसे विद्वान से शास्त्र और शस्त्र ज्ञान मिला। युवा होते ही ऋषि विश्वामित्र उन्हे राक्षस विनाश के लिये अपने साथ ले गये। विश्वामित्र के साथ भी उन्हे सनातन संस्कृति के गूढ़ पाठ मिले । सुकृति और संस्कार के कारण रघुकुलतिलक राम को सबल देहयष्टि मिली, अपार शक्ति मिली तथा महाप्रतापी रावण को युद्ध में परास्त करने की अकाट्य क्षमता प्राप्त हुई। मर्यादाशील राम आजीवन निरोगी रहे, कर्मठ और कर्तव्यपरायण रहे। यह सब इसलिए संभव हो सका क्योंकि दशरथपुत्र राम को रघुकुलवंश के जीन्स गुणसूत्र तथा उच्च संस्कार मिले थे जिसके कारण उनके स्वास्थ्य की आधारशिला अत्यंत सुदृढ़ स्तंभों पर टिकी हुई थी (चित्र- 1)।

शाकाहारः श्रीराम का आरंभिक जीवन गुरुकुल में महर्षि वशिष्ठ के साथ, फिर विश्वामित्र के संग बीता। विवाह के बाद अयोध्या लौटने पर उन्हें वनवास मिला और वन में निषाद-राज, कोल-किरात और भील आदि वनवासी का साथ मिला जो उन्हें सुहृद भाव से कभी कंद मूल फल अंकुर जूरी (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 249, चौपाई 2) देते तो कभी 'कंद मूल फल दोना। चले रंक जनु लूटन सोना।। (अयोध्या कांड दोहा 134 चौपाई 2)' अर्पित करते थे। वनवास में जनकनंदिनी सीता को 'असनु अमिअ सम कंद मूल फर (अयोध्या कांड दोहा 139 चौपाई 6) का भोजन करना पड़ता था। स्वाभाविक ही श्रीराम और भाई लक्ष्मण भी वही भोजन करते थे । भीलनी शबरी ने तो उन्हें जूठे बेर भी खिला दिये जो राम ने बड़े सहज - स्नेह भाव से स्वीकार कियेः कंद मूल फल सुरस अति दिए राम खून आनि, प्रेम सहित प्रभु खाये बारम्बार बखानि। (रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, दोहा 34)। ये समस्त साक्ष्य श्रीराम के शाकाहारी होने के अकाट्य प्रमाण है ।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार शाकाहार सर्वोत्तम आहार माना गया है। आई सी एम आर के अधुनातन शोध के अनुसार कोविड महामारी के दौरान भारतीय लोगों में मृत्यु दर पश्चिमी देशों की अपेक्षा इसलिए कम रही क्योंकि अधिकांश भारतीय शाकाहारी थे और उनके भोजन में औषधिपूर्ण मसालों की प्रधानता थी। अब यह बात निर्विवाद रूप से मान ली गई है कि वनस्पतियों से युक्त भोजन स्वास्थ्यपरक होता है। मांसाहार विशेषतः लाल मांस हृदय घातक और कैन्सरकारक होता है।

सक्रियताः किशोरावस्था से लेकर रावण वध तक श्रीराम का

जीवन कर्मठ और क्रियाशीलता की अद्भुत यशोगाथा है । अयोध्या निवास से विश्वामित्र के साथ जनकपुरी तक जाना, वहाँ धनुष यज्ञ में शिवजी के शक्तिशाली कोदंड को तोड़ना, चौदह वर्षों के वनगमन में प्रयागराज से लंका तक की 33302.9 किलोमीटर की पैदल यात्रा जिसमें दुर्गम पगडंडियाँ, जंगल, पहाड़ खोह सब सम्मिलित थे नंगे पैर चले। वृक्षों के नीचे कंदरों और पर्वत- शिलाओं में जीवन व्यतीत किया पर उफ् तक नहीं किया। युवा राम का यह तपोपूर्ण जीवन चरैवेति-चरैवेति का ज्वलंत उदाहरण है। चिकित्सा विज्ञान के सिद्धांत के अनुसार स्वस्थ हृदय की यही मनोकामना होती है की 'तुम हमारे लिये रोज पैदल चलो मै तुम्हारे लिए सर्वदा धड़कता रहूँगा।'

प्रकृतिस्थताः क्रोध, तनाव और विकट परिस्थितियों में असीम धैर्य को बनाये रखना यह प्रकृतिस्थता की निशानी है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपनी मनस्थिति को बनाये रखने की क्षमता को प्रकृतिस्थता कहते हैं। आजकल सम्पूर्ण विश्व में जो आपाधापी मची हुई है और सब लोग ब्लडप्रेशर, डायबिटीज, हृदय रोग, अनिद्रा, पक्षाघात तथा कैंसर से पीड़ित दिखाई देते हैं उसके पीछे प्रकृतिस्थता का अभाव ही प्रमुख कारण है। जिसने अपने अंदर प्रकृतिस्थता का गुण विकसित कर लिया उसने इन तमाम बीमारियों पर सहज ही नियंत्रण प्राप्त कर लिया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का यह अत्यंत विशिष्ट गुण है। उनके जीवन में हमें ऐसे कई उदाहरण मिलते है जहां उनके इस गुण के अलभ्य दर्शन होते हैं।

1. धनुषभंग के पश्चात क्रुद्ध परशुराम का लक्ष्मण से तर्क वितर्क उस क्रोधाग्नि के बीच श्रीराम ने शांत भाव बिना आपा खोये ऋषिवर का शंका समाधान।

2. श्रीराम जनकपुर में विवाह के पश्चात अयोध्या लौट आते हैं और महाराज दशरथ गुरु वशिष्ठ से मंत्रणा के बाद उन्हें राज्याधिकार देने का सुनिश्चय करते हैं। राज्याभिषेक के तिथि की घोषणा हो जाती है। दूसरे दिन सबेरा होते होते महारानी कैकेयी की कुमति और दुराग्रह के चलते उन्हे चौदह वर्ष वनवास की आज्ञा होती है जिसे राम 'कानन राजू' समझ कर सहर्ष स्वीकार करते हैं। उनके चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं उभरती। प्रस्तावित राज्याभिषेक के ठीक पहले वह हर्षोन्मत्त भी नहीं थे। इस संदर्भ में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन का एक प्रसंग बहुत ही अनुकरणीय है जिसकी चर्चा महाकवि तुलसी इस श्लोक में बहुत सुंदर तरीके से करते है:

प्रसन्नतां या न गताभिषेकस्तथा, न म्ले वनवास दुःखतः। मुखाम्बुज श्रीरघुनंदनस्य मे सदास्तुसा मंजुल मंगलप्रदा ।। (अयोध्याकांड श्लोक-श्रीरामचरितमानस)। ऐसा अद्भुत मानसिक संयम और संतुलन ही व्यक्ति को स्वस्थ और दीर्घायु दे सकता है। इसके ठीक विपरीत आजकल का धमाचौकड़ी पूर्ण जीवन केवल असंतोष और तनाव देता है जो अनेक असंक्रामक रोगों का सहज कारण बनता है ।

3. सीताहरण के पश्चात अपने मनोभावों पर नियंत्रण रखते हुए दृढ़ संकल्प के साथ जनक नंदिनी को खोज निकालने का प्रण और सफलता मिलने तक उस दिशा में आगे बढ़ते जाने का पराक्रम । समुद्र लंघन के समय अपनी अट्ठारह पद्म विकटानन वानर भालुओं की सेना को लेकर महासागर से प्रार्थना - 'प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई (रामचरितमानस, सुंदरकांड दोहा 50, चौपाई 7)।

4. अयोध्या छोड़ने के बाद वनवास की पूरी अवधि मे सीताहरण के पूर्व और पश्चात् परछाई की तरह लगे रहने वाले छोटे भाई लक्ष्मण पर मेघनाद द्वारा प्राणघातक प्रहार उस गंभीर परिस्थिति में अपने को सहज रखना, विभीषण के सुझाव पर भक्त हनुमान् को वैद्य राज सुषेण को ले आने को कहना फिर संजीवनी के आने तक अपनी

मनस्थिति को बनाये रखना श्रीराम की फौलादी मानसिकता का परिचायक है- बहु बिधि सोचत सोच विमोचन। श्रवत सलिल राजिव लोचन।। (रामचरितमानस बहु लंकाकांड दोहा 60 ख, चौपाई 11)।

5. उनके महान शौर्य उनके अद्‌भुत मानसिक सौष्ठव और आध्यात्मिक गहराई का परिचय हमें राम-रावण युद्ध के चरम बिन्दु पर मिलता है जब वह पैदल रथ पर सुसज्जित रावण के समक्ष अंतिम समर के लिये कटिबद्ध खड़े हैं और विजयश्री का वरण करने वाले के अंदर बाईस गुणों जैसे शौर्य, धैर्य, सत्यता, शीलता बल, विवेक, क्षमा, कृपा समत्व, दृष्टि, ईश्वर भजन विरक्ति, संतोष, दान, बुद्धि, विज्ञान का समावेश होना आवश्यक होता है (रामचरितमानस, लंकाकांड दोहा 79 चौपाई 1-10)।

अभिवादनशीलताः मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अपने सम्पूर्ण जीवन में अपने माता-पिता, गुरुजन, कुलदेवता, ज्येष्ठ जनों के प्रति हमेशा अभिवादनशील रहे। वह सभी को उचित प्रणाम - नमन करते दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा एक भी क्षण नहीं आया जब राम ने इस ध्रुव सत्य का पालन भूले-बिसरे भी न किया हो चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति रही हो। उदाहरण के तौर पर धनुष भंग के पश्चात् क्रोधमूर्ति परशुराम का आगमन हुआ हो- "राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा। कर कुठारु आगे यह सीसा।।" (रामचरितमानस, बालकाण्ड दोहा 280, चौपाई 7), पिता दशरथ के निधन के पश्चात् भाई भरत का सपरिवार गुरु वशिष्ठ के साथ वन में आगमन उस समय श्रीराम के गुरु के प्रति आदर- "गुरहिं देखि सानुज अनुरागे। दंड प्रनाम करन प्रभु लागे।।" (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड दोहा 242 चौपाई 3), राम-रावण के बीच निर्णायक और अंतिम युद्ध के पूर्व श्रीराम विजय के इच्छुक पुरुषों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ऐसे व्यक्तियों को विद्वानों और गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए- "कवच अभेद विप्र गुरु पूजा। एहिं सम विजय उपाय न दूजा।।" (रामचरितमानस, लंकाकाण्ड दोहा 79, चौपाई 10)। इसी प्रकार वनवास की अवधि समाप्ति करने के बाद अयोध्या में जब रघुनंदन का आगमन हुआ उस समय का दृश्य तो और भी नयनाभिराम और अनुकरणीय है- "बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक।। धाई धरे गुरु चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह।। (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड दोहा 4 ख चौपाई 2-3)।

यद्यपि सुभाषित "अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।" का प्रणयन प्रभुराम के जीवन काल के बहुत बाद हुआ है परंतु सच यह है कि श्रीराम का पूरा जीवन इस सूक्ति का ज्वलंत उदाहरण है। स्वस्थ और दीर्घ जीवन की कामना करने वाले हर व्यक्ति को अपने से आयु में श्रेष्ठ हर प्राणी का उचित अभिवादन, उसका यथा संभव सेवा-सत्कार अवश्य करना चाहिये। इस शाश्वत नियम का पालन करने से हम ईश्वरीय विधान का परिपालन करते हैं। इसके फलस्वरूप वह विराट नैसर्गिक शक्ति हमें आयु, विद्या, बल और सुयश सहज ही प्रदान करता है। कालांतर में इस चिरंतन सत्य का अनुभव हमें अनेक अवसरों पर होता रहता है। अभिवादनशील व्यक्ति की आयु, विद्या, कीर्ति और बल इन चारों में वृद्धि होती है। प्रभु राम का जीवन हमें स्वस्थ और सबल बने रहने के लिए हमेशा अभिवादनशील बने रहने की यही शिक्षा देता है।

सकारात्मकताः दशरथपुत्र राम जन्म से लेकर सरयू समाधि तक सदैव उदार सकारात्मक और आध्यात्मिक रहे। सब परिस्थितियों में सबके परहित में निमग्न रहे। इसीलिए मानसकार उन्हें अनेक स्थलों पर कृपालु, कृपासिन्धु करुणाकर, कोमलचित्त, सुकृपानिकेता, प्रनतपाल, करुनासिंधु, दीनदयाल, करुनापुंज, कृपानिधि, दयानिधि,

कृपावत्सल, शरणागतवत्सल और कृपानिकेत आदि नामों से संबोधित करते हैं। ये उनके व्यक्तित्व के प्रबल आध्यात्मिक गुण हैं। ऐसे गुण जो सुस्वास्थ्य के निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं। अमेरिकन जर्नल आफ क्लीनिकल न्यूट्रीशन में प्रकाशित एक शोध के अनुसार सकारात्मकता जीवन शैली का एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति को अनेक असंक्रामक रोगों से सुरक्षा और दीर्घायुष्य प्रदान करता है। इस शोध अध्ययन के अनुसार सकारात्मकता के अतिरिक्त शारीरिक व्यायाम, धूम्रपान निषेध, शाकाहार, शराब से दूरी और अच्छी नींद पाँच अन्य आदतें भी निरोग और लंबी आयु के लिए आवश्यक बताईं गयीं हैं। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि तंबाकू का प्रचलन भारत में सोलहवीं शताब्दी में गौरांग महाप्रभुओं द्वारा हुआ था। त्रेतायुग में तो उसका दूर दूर तक कोई नामों निशान न था। इसी प्रकार मदिरापान रघुकुल परंपरा का अंग नही थी। अलबत्ता राक्षसों के दैनिक जीवन का हिस्सा जरूर वर्णित है- महिष खाइ करि मदिरा पाना। गर्जा बज्राघात समाना।। (लंकाकाण्ड दोहा 63/ चौपाई 1)।

संतति संकल्पनाः "दुइ सुत सुंदर सीता जाए। लवकुश बेद पुरानन्ह गाए।।" (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड दोहा 24, चौपाई 6)। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने त्रेता युग के उस काल में सीमित परिवार परिवार का ऐसा आदर्श रक्खा जो अब सम्पूर्ण विश्व को जनसंख्या विस्फोट से बचाने के लिये एक अनुकरणीय अपरिहार्यता बन गयी है। ध्यातव्य है कि भारत सरकार ने बहुत वर्षो पहले अपरिमित बढ़ती हुई आबादी पर नियंत्रण पाने के लिए 'हम दो हमारे दो' नारे की बहुत जोर शोर के साथ उद्घोषणा की थी - 'हम दो हमारे दो'। पर हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम तो इस बात का जीवंत उदाहरण हमारे सामने हजारों वर्ष पूर्व रख दिया था। स्वस्थ सामाजिक संरचना के लिए ऐसी संतति - संकल्पना शायद ही किसी अन्य ने प्रस्तुत किया हो ।

मर्यादा पुरुषोत्तमराम ने सुस्वास्थ्य के जिन मूलभूत नियमों जैसे सक्रियता/चरैवेति-चरैवेति, शाकाहार, किसी प्रकार के नशे (तंबाकू या मदिरा) से दूरी, जगने सोने का उचित समय, प्रकृतिस्थता, परहित तत्परता- 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई', अभिवादनशीलता, उदारता तथा सकारात्मकता का आजीवन पालन किया वे सिद्धांत आज भी उतने सत्य, सार्वभौमिक और पालनीय हैं जितने त्रेता युग में थे। रघुकुलनंदन राम का सम्पूर्ण जीवन सर्वोत्कृष्ट जीवनशैली का ऐसा अलौकिक उदाहरण है जो करुणा दया, सहानुभूति और आध्यात्मिकता से लबालब भरा हुआ है। अनुकरणीय मानवीय गुणों का अथाह सागर है। इन सद्गुणों को अपनाकर हम् निःसंदेह स्वस्थ और निरामय रह सकते हैं। इन पंक्तियों के लेखक के पास अपने लंबे चिकित्सकीय अनुभव में ऐसे दर्जनों प्रसंग हैं जहाँ लोगों ने शाकाहार, योग, और सकारात्मक/आध्यात्मिक जीवनशैली के बल पर लंबी आयु पायी और लंबी बीमारियों से अपेक्षाकृत रूप से बचे रहे। यदि उन्हें असंक्रामक बीमारियाँ हुई भी तो पथ्य और न्यूनतम औषधियों के बल पर उनकी जीवन यात्रा सुगम बनी रही। संक्षेप में दशरथसुत राम के बताए हुये उपरोक्त जीवन बिंदुओं का अनुशरण करके हम आजीवन स्वस्थ, सुखी और आनंदित रह सकते हैं । सत्य, शिव और सात्विक गुणों से परिपूर्ण श्रीराम के इन्हीं आदर्श मूल्यो का गुणगाान वेद-पुराण ओर निगमागम करते है-

"सुजस पुरान विदित निगमागम।
गावत सुर मुनि संत समागम।।

वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ
बी-107, सागर अपार्टमेन्ट
सेक्टर-62, नोएडा- 201304
(उ0प्र0)
मोबाइल- 98189-29659

राम की शक्ति पूजा

○ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

रवि हुआ अस्त : ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम – रावण का अपराजेय समर
आज का, तीक्ष्ण-शर – विधृत – क्षिप्र कर वेग- प्रखर,
शतशेलसम्वरणशील, नीलनभ – गर्ज्जित -स्वर,
प्रतिपल – परिवर्तित – व्यूह – भेद – कौशल – समूह,
राक्षस – विरुद्ध प्रत्यूह – क्रुद्ध कपि – विषम – हूह,
विच्छुरितवह्नि – राजीवनयन हत लक्ष्य बाण,
लोहितलोचन – रावण मदमोचन – महीयान,
राघव – लाघव – रावण-वारण – गत-युग्म – प्रहर,
उद्धत – लंकापति मर्दित- कपि-दल-बल – विस्तर,
अनिमेष – राम -- विश्वजिद्दिव्य शर भङ्ग भाव, ---
विद्धाङ्ग – बद्ध- कोदण्ड- मुष्टि – खर- रुधिर – स्राव,
रावण – प्रहार दुर्वार – विकल – वानर दल-बल –
मूर्च्छित सुग्रीवाङ्गद – भीषण – गवाक्ष गय नल,
वारित- सौमित्र भल्लपति -- अगणित – मल्ल-रोध,
गर्ज्जित – प्रलयाब्धि क्षुब्ध – हनुमत् – केवल- प्रबोध,
उद्गीरित – वह्नि – भीम – पर्वत – कपि – चतुः प्रहर,
जानकी – भीरु – उर – आशाभर – रावण – सम्वर ।
लौटे युग – दल । राक्षस-पदतल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार – बार आकाश विकल ।
वानर-वाहिनी खिन्न, लख निज-पति-चरण-चिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविर-दल ज्यों विभिन्न,
प्रशमित है वातावरण; नमित-मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चिन्ता – पल, पीछे वानर-वीर सकल,
रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत – चरण,
श्लथ धनु – गुण है कटिबन्ध स्रस्त- तूणीर धरण,
दृढ़ जटा – मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकती दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार।

आये सब शिविर, सानु पर पर्वत के, मन्थर,
सुग्रीव, विभीषण, जाम्बवान आदिक वानर,
सेनापति दल – विशेष के, अङ्गद, हनूमान
नल, नील, गवाक्ष, प्रांत के रण का समाधान
करने के लिए, फेर वानर – दल आश्रय-स्थल ।
बैठे रघु-कुल- मणि श्वेत शिला पर ; निर्मल जल
ले आये कर-पद-क्षालनार्थ पटु हनूमान;
अन्य वीर सर के गये तीर सन्ध्या – विधान
वन्दना ईश की करने को, लौटे सत्वर,
सब घेर राम को बैठे आज्ञा को तत्पर ।
पीछे लक्ष्मण, सामने विभीषण, भल्लधीर,
सुग्रीव, प्रान्त पर पाद – पद्म के महावीर;
यूथपति अन्य जो, यथास्थान, हो निर्निमेष

देखते राम का जित - सरोज - मुख - श्याम - देश ।
है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन-चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।
स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय,
रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु-दम्य-श्रान्त
एक भी, अयुत - लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार-बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार - हार ।
ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी - तनया - कुमारिका - छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का, - प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का --- नयनों से गोपन -- प्रिय सम्भाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान - पतन,
काँपते हुए किसलय, - झरते पराग - समुदय,
गाते खग-नव-जीवन-परिचय, - तरु मलय- वलय,
ज्योति प्रपात स्वर्गीय, - ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।
सिहरा तन, क्षण-भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भङ्ग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता-ध्यान-लीन राम के अधर,
फिर विश्व - विजय - भावना हृदय में आयी भर,
वे आये याद दिव्य शर अगणित मन्त्रपूत,
फड़का पर नभ को उड़े सकल ज्यों देवदूत,
देखते राम, जल रहे शलभ ज्यों रजनीचर,
ताड़का, सुबाहु, विराध, शिरस्त्रय, दूषण, खर;
फिर देखी भीमा मूर्ति आज रण देखी जो
आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को,
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ-बुझकर हुए क्षीण,
पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन,
लख शंकाकुल हो गये अतुल - बल शेष - शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन;
फिर सुना - हँस रहा अट्टहास रावण खलखल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्ता - दल।

बैठे मारुति देखते राम-चरणारविन्द
युग 'अस्ति नास्ति' के एक-रूप, गुण - गण - अनिन्द्य
साधना - मध्य भी साम्य - वाम - कर दक्षिण-पद,
दक्षिण-कर-तल पर वाम चरण, कपिवर गद्गद
पा सत्य, सच्चिदानन्दरूप, विश्राम - धाम,
जपते सभक्ति अजपा विभक्त हो राम-नाम।
युग चरणों पर आ पड़े अस्तु वे अश्रु युगल,
देखा कपि ने, चमके नभ में ज्यों तारादल;
ये नहीं चरण राम के, बने श्यामा के शुभ-
सोहते मध्य में हीरक युग या दो कौस्तुभ ;
टूटा वह तार ध्यान का, स्थिर मन हुआ विकल,
सन्दिग्ध भाव की उठी दृष्टि, देखा अविकल
बैठे वे वही कमल लोचन, पर सजल नयन,
व्याकुल-व्याकुल कुछ चिर-प्रफुल्ल मुख, निश्चेतन।
"ये अश्रु राम के" आते ही मन में विचार,
उद्वेल हो उठा शक्ति - खेल - सागर अपार,
हो श्वसित पवन - उनचास, पिता-पक्ष से तुमुल,
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प को उड़ा अतुल,
शत घूर्णावर्त, तरङ्ग - भङ्ग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़
तोड़ता बन्ध - प्रतिसन्ध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय - अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।
शत-वायु-वेग-बल, डुबा अतल में देश - भाव,
जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव

वज्राङ्ग तेजघन बना पवन को, महाकाश
पहुँचा, एकादशरुद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।
रावण - महिमा-श्यामा विभावरी अन्धकार,
यह रुद्र राम- पूजन-प्रताप तेजः प्रसार,
उस ओर शक्ति शिव की जो दशस्कन्ध- पूजित,
इस ओर रुद्र - वन्दन जो रघुनन्दन - कूजित,
करने को ग्रस्त समस्त व्योम कपि बढ़ा अटल,
लख महानाश शिव अचल हुए क्षण-भर चंचल,
श्यामा के पदतल भारधरण हर मन्द्रस्वर
बोले - "सम्बरो देवि, निज तेज, नहीं वानर
यह, - नहीं हुआ शृंगार - युग्म - गत, महावीर,
अर्चना राम की मूर्तिमान अक्षय - शरीर,
चिर - ब्रह्मचर्य- रत ये एकादश रुद्र धन्य,
मर्यादा- पुरुषोत्तम के सर्वोत्तम, अनन्य
लीलासहचर, दिव्यभावधर, इन पर प्रहार
करने पर होगी देवि, तुम्हारी विषम हार;
विद्या का ले आश्रय इस मन को दो प्रबोध,
झुक जायेगा कपि, निश्चय होगा दूर रोध।"
कह हुए मौन शिव, पवन-तनय में भर विस्मय
सहसा नभ में अंजना - रूप का हुआ उदय ;
बोली माता - "तुमने रवि को जब लिया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल ;
यह वही भाव कर रहा तुम्हें व्याकुल रह-रह,
यह लज्जा की है बात कि माँ रहती सह- सह,
यह महाकाश, है जहाँ वास शिव का निर्मल-
पूजते जिन्हें श्रीराम, उसे ग्रसने को चल
क्या नहीं कर रहे तुम अनर्थ ? - - सोचो मन में,
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्रीरघुनन्दन ने ?
तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य -
क्या असम्भाव्य हो यह राघव के लिए धार्य ?"
कपि हुए नम्र, क्षण में माताछवि हुई लीन,
उतरे धीरे - धीरे, गह प्रभु-पद हुए दीन।

राम का विषण्णानन देखते हुए कुछ क्षण,
"हे सखा", विभीषण बोले, "आज प्रसन्न वदन
वह नहीं, देखकर जिसे समग्र वीर वानर-
भल्लूक विगत - श्रम हो पाते जीवन-निर्जर,
रघुवीर, तीर सब वही तूण में हैं रक्षित,
है वही वक्ष, रण - कुशल हस्त, बल वही अमित,
हैं वही सुमित्रानन्दन मेघनाद - जित-रण,
हैं वही भल्लपति, वानरेन्द्र सुग्रीव प्रमन,
तारा कुमार भी वही महाबल श्वेत धीर,
अप्रतिभट वही एक - अर्बुद सम, महावीर,
है वही दक्ष सेना-नायक, है वही समर,
फिर कैसे असमय हुआ उदय यह भाव - प्रहर?
रघुकुल गौरव, लघु हुए जा रहे तुम इस क्षण,
तुम फेर रहे हो पीठ हो रहा जब जय रण !
कितना श्रम हुआ व्यर्थ ! आया जब मिलन समय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय !
रावण, रावण, लम्पट, खल, कल्मष-गताचार,
जिसने हित कहते किया मुझे पाद-प्रहार,
बैठा उपवन में देगा दुख सीता को फिर, --
कहता रण की जय - कथा पारिषद-दल से घिर;--
सुनता वसन्त में उपवन में कल- कूजित पिक
बना किन्तु लंकापति, धिक्, राघव, धिक् धिक् !"

सब सभा रही निस्तब्धः राम के स्तिमित नयन
छोड़ते हुए, शीतल प्रकाश देखते विमन,
जैसे ओजस्वी शब्दों का जो था प्रभाव
उससे न इन्हें कुछ चाव, न हो कोई दुराव;
ज्यों हों वे शब्द मात्र, मंत्री की समनुरक्ति,
पर जहाँ गहन भाव के ग्रहण की नहीं शक्ति।

कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर
बोले रघुमणि-- "मित्रवर, विजय होगी न समर
यह नहीं रहा नर-वानर का राक्षस से रण,
उतरीं पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण;
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति !" कहते छल-छल
हो गये नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कण्ठ, चमका लक्ष्मण - तेजः प्रचण्ड,
धँस गया धरा में कपि गह युग पद मसक दण्ड,
स्थिर जाम्बवान, --- समझते हुए ज्यों सकल भाव,
व्याकुल सुग्रीव, - हुआ उर में ज्यों विषम घाव,
निश्चित-सा करते हुए विभीषण कार्य-क्रम,
मौन में रहा यों स्पन्दित वातावरण विषम।

निज सहज रूप में संयत हो जानकी प्राण
बोले - "आया न समझ में यह दैवी विधान;
रावण, अधर्मरत भी, अपना, मैं हुआ अपर--
यह रहा शक्ति का खेल समर, शंकर, शंकर !
करता मैं योजित बार-बार शर-निकर निशित
हो सकती जिनसे यह संसृति सम्पूर्ण विजित,
जो तेजःपुंज, सृष्टि की रक्षा का विचार
है जिनमें निहित पतनघातक संस्कृति अपार
शत-शुद्धि-बोध--- सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का विवेक,
जिनमें है क्षात्रधर्म का धृत पूर्णाभिषेक,
जो हुए प्रजापतियों से संयम से रक्षित,
वे शर हो गये आज रण में श्रीहत, खण्डित !
देखा हैं महाशक्ति रावण को लिये अंक
लाञ्छन को ले जैसे शशाङ्क नभ में अशङ्क
हत मन्त्रपूत शर संवृत करतीं बार - बार,
निष्फल होते लक्ष्य पर क्षिप्र वार पर वार!
विचलित लख कपिदल, क्रुद्ध युद्ध को मैं ज्यों-ज्यों,
झक-झक झलकती वह्नि वामा के दृग त्यों-त्यों,
पश्चात्, देखने लगीं मुझे, बँध गये हस्त,
फिर खिंचा न धनु, मुक्त ज्यों बँधा मैं हुआ त्रस्त !"
कह हुए भानुकुल भूषण वहाँ मौन क्षण-भर,
बोले विश्वस्त कण्ठ से जाम्बवान – "रघुवर,
विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरुष - सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर;
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन !
तब तक लक्ष्मण हैं महावाहिनी के नायक,
मध्य भाग में, अङ्गद दक्षिण- श्वेत सहायक,
मैं भल्ल - सैन्य; हैं वाम पार्श्व में हनूमान,
नल, नील और छोटे कपिगण -- उनके प्रधान;
सुग्रीव, विभीषण, अन्य यूथपति यथासमय
आयेंगे रक्षाहेतु जहाँ भी होगा भय।"

खिल गयी सभा। "उत्तम निश्चय यह, भल्लनाथ !"
कह दिया वृद्ध को मान राम ने झुका माथ।
हो गये ध्यान में लीन पुनः करते विचार,
देखते सकल-तन पुलकित होता बार-बार।
कुछ समय अनन्तर इन्दीवर निन्दित लोचन
खुल गये, रहा निष्पलक भाव में मज्जित मन।
बोले आवेग - रहित स्वर से विश्वास - स्थित--
"मातः, दशभुजा, विश्व-ज्योतिः, मैं हूँ आश्रित-;
हो विद्ध शक्ति से है खल महिषासुर मर्दित,
जनरंज्जन-चरण-कमल- तल, धन्य सिंह गर्ज्जित!
यह, यह मेरा प्रतीक, मातः, समझा इङ्गित;
मैं सिंह, इसी भाव से करूँगा अभिनन्दित"

कुछ समय स्तब्ध हो रहे राम छवि में निमग्न,
फिर खोले पलक कमल-ज्योतिर्दल ध्यान-लग्न;
हैं देख रहे मन्त्री, सेनापति, वीरासन
बैठे उमड़ते हुए, राघव का स्मित आनन।
बोले भावस्थ चन्द्र-मुख-निन्दित रामचन्द्र,
प्राणों में पावन कम्पन भर, स्वर मेघमन्द्र-
"देखो, बन्धुवर सामने स्थित जो यह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुन्दर,
पार्वती कल्पना हैं इसकी, मकरन्द - विन्दु;
गरजता चरण - प्रान्त पर सिंह वह, नहीं सिन्धु;
दशदिक - समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर,
अम्बर में हुए दिगम्बर अर्चित शशि-शेखर;
लख महाभाव - मंगल पदतल धंस रहा गर्व-
मानव के मन का असुर मन्द, हो रहा खर्व"
फिर मधुर दृष्टि से प्रिय कपि को खींचते हुए-
बोले प्रियतर स्वर से अन्तर सींचते हुए
"चाहिये हमें एक सौ आठ, कपि, इन्दीवर,
कम-से-कम अधिक और हों, अधिक और सुन्दर,
जाओ देवीदह, उषःकाल होते सत्वर
तोड़ो, लाओ वे कमल, लौटकर लड़ो समर।"
अवगत हो जाम्बवान से पथ, दूरत्व, स्थान,
प्रभु - पद - रज सिर धर चले हर्ष भर हनूमान।
राघव ने विदा किया सबको जानकर समय,
सब चले सदय राम की सोचते हुए विजय।

निशि हुई विगतः नभ के ललाट पर प्रथम किरण
फूटी, रघुनन्दन के दृग महिमा - ज्योति - हिरण;
है नहीं शरासन आज हस्त -- तूणीर स्कन्ध,
वह नहीं सोहता निविड़-जटा दृढ़ मुकुट-बन्ध ;
सुन पड़ता सिंहनाद, रण - कोलाहल अपार,
उमड़ता नहीं मन, स्तब्ध सुधी हैं ध्यान धार;
पूजोपरान्त जपते दुर्गा, दशभुजा नाम,
मन करते हुए मनन नामों के गुणग्राम;
बीता वह दिवस, हुआ मन स्थिर इष्ट के चरण,
गहन-से-गहनतर होने लगा समाराधन ।
क्रम - क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन चढ़ता गया ऊर्ध्व निरलस;
कर - जप पूरा कर एक चढ़ाते इन्दीवर,
निज पुरश्चरण इस भाँति रहे हैं पूरा कर ।
चढ़ षष्ठ दिवस आज्ञा पर हुआ समाहित मन,
प्रति जप से खिंच-खिंच होने लगा महाकर्षण;
संचित त्रिकुटी पर ध्यान द्विदल देवी-पद पर
जप के स्वर लगा काँपने थर-थर-थर अम्बर;
दो दिन - निष्पन्द एक आसन पर रहे राम,
अर्पित करते इन्दीवर, जपते हुए नाम;
आठवाँ दिवस, मन ध्यान-युक्त चढ़ता ऊपर
कर गया अतिक्रम ब्रह्मा-हरि-शंकर का स्तर,
हो गया विजित ब्रह्माण्ड पूर्ण, देवता स्तब्ध,
हो गये दग्ध जीवन के तप के समारब्ध,
रह गया एक इन्दीवर, मन देखता - पार
प्रायः करने को हुआ दुर्ग जो सहस्रार,
द्विप्रहर रात्रि, साकार हुईं दुर्गा छिपकर,
हँस उठा ले गयीं पूजा का प्रिय इन्दीवर।
यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नील कमल ;
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल,
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गये नयनद्वयः-
"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध !
जानकी ! हाय, उद्धार प्रिया का न हो सका ।"

वह एक और मन रहा राम का जो न थका;
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा, विद्युत्-गति हतचेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।
"यह है उपाय" कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन--
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन !
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
करता हूँ देकर मातः एक नयन।"
कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक,
ले लिया हस्त, लक-लक करता वह महाफलक;
ले अस्त्र वाम कर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गये सुमन।
जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदयः -
"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम !
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम ।
देखा राम ने-सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वाम पद असुर-स्कन्ध पर रहा दक्षिण हरि पर;
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र - सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित,
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बाँयें रण - रङ्ग राग,
मस्तक पर शंकर । पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्दस्वर वन्दन कर ।
"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन !
कह महाशक्ति राम के वदन में हुईं लीन ।

मनुष्य का जन्म दुर्लभ है, उसका एक क्षण भी अमूल्य है।
तो भी बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्य कोड़ियों के समान व्यय करतें हैं।

X X X

मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है।

X X X

लाली बन सरस कपोलों में, आँखों में अंजन सी लगती।
कुंचित अलकों सी घुँघराली, मन की मरोर बन कर जगती।

- जयशंकर प्रसाद

राम

➲ डॉ0 रामदरश मिश्र

राम तुम्हारी छवि तो देश के कण-कण में व्याप्त है
तुम मानव मूल्यों असीम प्रकाश के मूर्त रूप हो राम
मनुष्य तो मनुष्य
हवाएँ, नदियाँ, पेड़, पंछी, फसलें
सभी तुम्हारा, महिमा गीत गाने लगते हैं।
उत्सवों और त्याहारों में
तुम्हारी कथा की गूँज भरी होती है।
तुम्हारी मनोहारी व्याप्ति देखने के लिए
भीतरी आँखे खुली होनी चाहिए
मुक्त होना चाहिए, मन मंदिर का द्वार
तुम किसी पाषाण गृह में सिमट नहीं सकते राम
पाषाण गृह तो तुम्हारी व्याप्ति की ओर
संकेत करने का माध्यम होता है
किन्तु क्या विडंबना है कि
लोग पाषाण गृह में स्थित मूर्ति को ही
तुम्हारा पर्याय मान लेते है
और पूजा मान लेते हैं
अपने द्वारा किए गए जयकार की चिल्लाहट को।

बी-24 ब्रह्मा अपार्टमेन्ट द्वारका सेक्टर-7
नई दिल्ली-110075

ललित ललाम 'राम'

➲ डॉ0 राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर'

तन में, मन में भीतर-बाहर हो अजर, अमर, अव्यय-अक्षर
तुम शक्ति, शील, सौन्दर्य धाम हे राघव ललित-ललाम राम

पावन संस्कृति के धवल केतु अनुल्लंघ्य सिंधु पर गढ़ा सेतु
हर युग के उलझे प्रश्नों का हैं उत्तर केवल नाम राम

है दसों दिशाओं में गुंजन जय राम-राम जय रघुनंदन
हे शौर्य-विनय संगम मंगल संयम-शुचिता गुणग्राम राम

दुर्दान्त हुआ जब- जब कंचन अवतरित हुए प्रभु रघुनंदन
गरजा फिर अपराजेय धनुष युग-पीड़ा के विश्राम राम

हे निर्गुण-सगुण विषादहीन करते अभीत सब दीन-हीन
वन, गिरि, सरि-तट पर निवसित जन रक्षक सबके हर याम राम

पाषाण शिला को दें जीवन केवट-निषाद के जीवन-धन
शबरी की प्रबल प्रतीक्षा को करते अनुपम अविराम राम

वे गिद्ध जटायु, भालु कपि-जन या ग्राम-नगरवासी निर्धन
निर्बल, दुर्बल, दुख-त्रस्त व्यस्त सब के बल हैं अभिराम राम

मद, काम, क्रोध का करें शमन जन का निर्मल कर देते मन
तुम धर्म, अर्थ कामादि मोक्ष पुरुषार्थ परम के धाम राम

वंचित-दलितों की हरें व्यथा हर मन में पावन राम कथा
जो रीझि-खीजि भी भजे कभी लें हाथ उसी का थाम राम

रामानुज, रामानंद, रटें रैदास, कबीरों में प्रकटें
हों घना जाट, सेना नाई सबके अपने हैं राम-राम

ऋषिवर बनते हैं रत्नाकर तुलसी को करते भक्त प्रवर
तुम दया-सिन्धु, करुणा प्लावित रक्षक-शिक्षक अविराम राम

जन नागर, ग्राम्य, विनीत वन्य हर 'यायावर' को करें धन्य
हर घर-आँगन, झोंपड़ी, महल सबके आश्रय बस राम

– 86, तिलक नगर, बाईपास रोड,
फ़ीरोज़ाबाद- 283203
उत्तर प्रदेश
मो0- 94123-16779

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा

➲ डॉ0 वेदभूषण त्रिपाठी

सृष्टि जगत के श्रद्धालुजन सरयू तट पर आये हैं।
दरस परस मज्जन कर जल का पुण्य पुंज खिलाये हैं।
भारतीय संस्कृति संरक्षित कर मंगलदीप जलाये हैं।
अवध धाम की पावनता वैश्विक मान बढ़ाये हैं।
रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का पूर्ण आनन्द मनाये हैं।
प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव पर धन्य-धन्य जाए हैं।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र गौरवमयी बनाए हैं।
दशविधि स्नान आत्मशुद्धि से अनुष्ठान कराए हैं।
अनुष्ठान में शामिल होकर जीवन धन्य बनाए हैं।
विष्णु पूजन पंचगव्यप्रासन गोदान परम्परा निभाए हैं।
सृष्टि के देवता गोवर्धन को गौरवान्वित कराए हैं।
वैदिक धर्म का निर्वाहन कर सुख मंगल वर्षाए हैं।
स्वयं तरेंगे स्नेह भाव से पितरों को भी तराए हैं।
प्राणाहुति रामभक्तों को श्रद्धासुमन चढ़ाए हैं।
रामलला की प्रतिमा लेकर कलश यात्रा जाए हैं।
मंडप प्रवेश वास्तु पूजन से वरुण देव हर्षाए हैं।
विघ्नहर्ता गणेश का आह्वान कर मातृका पूजन कराए हैं।
रामलला की पूज्य मूर्ति का जलाधिवास कराए हैं।
दीप प्रज्ज्वलित कर यज्ञवेदी पर पूजन-हवन कराए हैं।
यज्ञाग्नि अरणि मंथन कर वैदिक मंत्र गूँजाए हैं।
अमृत जल से अभिसिंचित कर पावन पवित्र बनाए हैं।
वास्तुशांति अन्नाभिषेक कर शय्याधिवास कराए हैं।
रामायण के काकभुशुण्डि का पुण्य प्रताप बताए हैं।
सुमेरु पर्वत कुबेर टीला की महिमा गुण गाएं हैं।
सृष्टि जगत के श्रद्धालुजन सरयू तट पर आए हैं।
दरस-परस मज्जन कर जल का पुण्य-पुंज खिलाए हैं।

भारतीय संस्कृति संरक्षित कर मंगलदीप जलाए हैं।
अवध धाम की पावनता का वैश्विक मान बढ़ाए हैं।
रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का पूर्ण आनंद मनाए हैं।
प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव पर धन्य धन्य हो जाए हैं।
श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र गौरवमयी बनाए हैं।

रनीवां आश्रम, अम्बेदकर नगर-224141
(उ0प्र0)
संपर्कसूत्र : 9453620749

श्री राम पधारे

➲ नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

सजे-धजे घर आंगन द्वारे,
अवधपुरी श्री राम पधारे।

उषा तमस तिमिर को हरती।
पुलक-पुलक करती है धरती ।
पवन चली आनंदित करती
सरयू हर्ष हिलोरें भरती ।

पंछी गाते वन्दन वारे,
अवधपुरी श्री राम पधारे।

आज अवध की शोभा न्यारी ।
हर्षित पुलकित सब नर-नारी ।
राम नाम पीताम्बर धारी,
करते स्वागत की तैयारी ।

गूँज रहे हैं जय जयकारे,
अवधपुरी श्री राम पधारे ।

हर पथ पर श्री राम लिखा है
पुष्प दीप सुख धाम लिखा है ।
नगर वासियों की साँसों में,
रघुनंदन का नाम लिखा है ।

राम रमे हैं चौक-चौबारे
अवधपुरी श्री राम पधारे ।

आज अयोध्या महक रही है।
दसों दिशाएँ चहक रही हैं।
भूल गए सब सुध-बुध अपनी,
राम रसायन लहक रही है।

प्रेम उमंगित नेत्र हमारे
अवधपुरी श्री राम पधारे।

- ए-67/बी,
दुर्गा विहार, देवली गाँव,
नई दिल्ली- 110080
मो0- 98732-99789

मर्यादित पिता : श्रीराम

➲ डॉ0 अमिता दुबे

त्रेता युग में
श्री हरि विष्णु
लेते हैं अवतार
श्रीराम के रूप में।
रघुकुल शिरोमणि
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
अयोध्या नरेश दशरथ
एवं
महारानी कौशिल्या
के
राजदुलारे
माता सुमित्रा के प्रिय
माता कैकेयी के प्राण
अनुज लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न
के
आदर्श
पत्नी सीता के सर्वस्व
प्रजापालक श्रीराम
जाने पूजे जाते हैं
अनेक नामों से
जिनके हैं भिन्न-भिन्न अर्थ
रामचन्द्र, रामभद्र, शाश्वत
राजीव लोचन, श्रीमान्, राजेन्द्र
रघुपुंगव, जानकीवल्लभ जैत्र
जितामित्र, जनार्दन, विश्वामित्रप्रिय
दांत, शरण्यत्राणतत्पर, बालिप्रमथन
वाग्मी, सत्यवाक्, सत्यविक्रम
सत्यव्रत, व्रतफल, सदा हनुमदाश्रय
कौसलेय, खरहवंसी, विराधवध,
विभीषण-परित्राता, दशग्रीवशिरोहर
सजतालप्रमेता, हरकोदण्ड, जामदग्न्यमहादर्पदलन
ताडकान्तकृत, वेदान्तपार, वेदात्मा,
भवबन्धैकमेषज, दूषणप्रशिरोडरि, त्रिमूर्ति
त्रिगुण, त्रयी, त्रिविक्रम
त्रिलोकात्मा पुण्यचरित्रकीर्तन, त्रिलोकरक्षक
धन्वी, दण्डकारण्यवासकृत, अहल्यापावन,
पितृभक्त, वरप्रद, जितेन्द्रिय
जितक्रोध, जितलोभ, जगद्गु
ऋक्षवानरसंघाती, चित्रकूट-समाश्रयः
जयन्तत्राणवरद, सुमित्रापुत्र-सेवितः
सर्वदेवाधिदेव, मृतवानरजीवन
मायामारीचहन्ता, महाभागः, महाभुज
सर्वदेवस्तुतः, सौम्य ब्रह्मण्य,
मुनिसत्तम, महायोगी, महोदर

सुग्रीवस्थिर, सर्वपुण्याधिकफलप्रद
स्मृतसर्वाघनाशन, आदिपुरुष, महापुरुष
परमः पुरुष, पुण्योदय, महासार
पुराणपुरुषोत्तम, स्मितववत्र, मितभाषी
राघव, अनन्तगुण गम्भीर, धीरोदात्तगुणोत्तर
मायामानुषचरित्र, महादेवाभिपूजितः
सेतुकृत, जितवारीश, सर्वतीर्थमय
हरि, श्यामांग, सुन्दर
शूर, पीतवासा, धनुर्धर
सर्वयज्ञाधिप, यज्ञ, जरामरणवर्जित
शिवलिंगप्रतिष्ठाता, सर्वाघगणवर्जित
परमात्मा, परंब्रह्म, सच्चिदानन्दविग्रह
परं ज्योति, परंधाम, पराकाश
परात्पर परेश, पारग
पार, सर्वभूतात्मक, शिव।
प्रत्येक नाम को
सार्थक करते हैं श्रीराम
श्रीराम लेते हैं जन्म
माता कौशल्या के गर्भ से
देते हैं मोद तीनों माताओं को
बलिहारी जाते हैं पिता
तब गोस्वामी तुलसीदास
लिखते हैं-
ठुमक चलत रामचन्द्र
बाजत पैंजनिया !
गुरु वशिष्ठ से लेते हैं शिक्षा
कर्त्तव्यपथ पर चल देते हैं
मुनि विश्वामित्र के साथ
स्वयंवर की शर्त को पूर्णकर
बनते हैं जामाता
मिथिलानरेश महाराजा जनक के
मिथिला कुमारी सीता को
ब्याहकर लाते हैं अयोध्या
पिता के वचन पूर्ण करने हेतु
चल देते हैं वन को
वनवासी राम करते हैं
अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण काम
माता कैकेयी जिन्हें
सभी प्रताड़ित करना चाहते हैं
उन्हें देते हैं सम्मान
करते हैं सबका भ्रम निवारण
और देते हैं आश्वासन
अवधि पूर्णकर
धारण करेंगे मुकुट
करेंगे शासन !
राम स्थितिप्रज्ञ हैं
मर्यादित हैं जितेन्द्रीय हैं
इसलिए
मर्यादापुरुषोत्तम कहलाते हैं
रामराज्य में सभी सुखी
सभी संतुष्ट, सभी प्रफुल्लित रहें
ऐसा प्रयास
श्रीराम ने निरन्तर किया
राज्य विस्तार के लिए
नहीं किया कोई युद्ध
दुष्टों का संहार कर
मानव को मानवता
का
मार्ग दिखाकर
विश्राम से पूर्व
अपने दोनों पुत्रों
लव और कुश को
किया नीति-राजनीति में पारंगत
तब सौंपा

दक्षिण कोसल का
राज्य कुश को
और
उत्तर कोसल का
राज्य लव को ।
मर्यादित पिता ने
अनुज पुत्रों को भी किया
नीति-राजनीति में पारंगत
अनुज लक्ष्मण पुत्र अंगद को
कारुपथ देश सौंपा
जिसकी राजधानी थी अंगदीया
तो
दूसरे लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु को
दिया मल्ल देश का राज्य
जिसकी राजधनी थी चुन्द्रकान्ता
इसी प्रकार
भरत पुत्र तक्ष को
गंधर्व देश सौंपा
उसकी राजधानी थी तक्षशिला
दूसरे भरत पुत्र पुष्कल बने
गान्धार देश के राजा
उसकी राजधानी थी पुष्कलावत ।
श्रीराम की आज्ञानुसार
शत्रुघ्न ने भी
अपने पुत्र सुबाहु को सौंपी
मधुपुरी
और दूसरे पुत्र
शत्रुघाती को दिया
विदिशा का राज्य।
चक्रवर्ती सम्राट
परम प्रिय राजाराम ने
रघुकुल के आठों पुत्रों को
अलग-अलग राज्य सौंपकर
मर्यादित पिता
श्रीराम ने
रघुकुल को भी
कर दिया मर्यादित।
आज भी यदि हम
आदर्श पुत्र, शिष्य,
पति, शासक, मित्र-सखा
के रूप में
खोजते हैं कोई नाम
तो वह नाम
सहज ही श्रीराम का है
मर्यादा की सीमा रेखाएँ
स्थापित करने वाले
श्रीराम जल समाधि लेने से पूर्व
देते हैं सबको विश्राम का संदेश
जीवन का अंतिम क्षण तो
विश्राम ही है
जीवन बीत जाता है
रह जाते हैं हमारे काम
दशरथनन्दन श्रीराम
कभी नहीं होते विचलित
न क्रोध में, न आनन्द में
न नेह में, न गेह में
न वन में, न उपवन में
न राजमहल में न पर्णकुटी में
इसीलिए
हाँ इसीलिए
वे कहलाते हैं
मर्यादापुरुषोत्तम
सफल मर्यादित पिता।

मोबाइल नं0- 9415551878

संस्थान समाचार

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, के संयुक्त तत्वावधान में त्रिदिवसीय संगोष्ठी, दिनांक 06, 07 व 08 अक्टूबर, 2023

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ और प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 06, 07 व 08 अक्टूबर, 2023 को किया गया। 'केदारनाथ सिंह की कविता में जनपद और जनपदीय संस्कृति' विषय पर केन्द्रित संगोष्ठी का उद्घाटन 06 अक्टूबर, 2023 शिवदुलारी देवी दलडपट शाही महिला महाविद्यालय रामकोला के सभागार में किया गया, जिसमें श्री उदय प्रकाश व प्रो0 रामदेव शुक्ल सहित अनेक विद्वान उपस्थित थे। मुख्यवक्ता प्रो0 अवधेश प्रधान, मुख्य अतिथि श्री के0 सत्यनारायण रहे। दूसरे दिन यह आयोजन पड़रौना में हुआ, जो केदार जी की कर्मस्थली रही है। वहीं तीसरे दिन का आयोजन कुशीनगर में हुआ, जो बुद्ध की धरती है।

इस त्रिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में केदारनाथ सिंह की कविता में जनपद और जनपदीय संस्कृति, जनपद के

केदारनाथ, केदारनाथ सिंह की कविता में जनपदीय संस्कृति, केदारनाथ की कविता में बुद्ध की धरती पर कविता विषय पर केन्द्रित सत्र आयोजित हुये, जिसमें सुश्री निर्मला तोदी, कोलकाता, श्री विजय कुमार शॉ, पश्चिम बंगाल, डॉ0 बृजराज सिंह, आगरा, सुश्री अंशुप्रिया, झारखण्ड, श्री सुभाष राय, लखनऊ, डॉ0 नलिन रंजन सिंह, लखनऊ, डॉ0 अनिल कुमार त्रिपाठी, लखनऊ, श्री

अरुण आदित्य, गाजियाबाद, डॉ0 ममता, दिल्ली, डॉ0 राकेश कुमार रंजन, बोधगया, डॉ0 अनुज लुगुन, गया, सुश्री चाहत, श्री अष्टभुजा शुक्ला, बस्ती, श्री राहुल साहनी, वाराणसी, श्री बादल सिंह राज, वाराणसी, श्री राहुल कुमार शा, वाराणसी, श्री उदय प्रकाश पाण्डेय, वाराणसी, डॉ0 विहाग वैभव, वाराणसी, डॉ0 शैलेन्द्र कुमार सिंह, वाराणसी, श्री अर्पण कुमार, गोरखपुर, डॉ0 कपिल देव, गोरखपुर, श्री मनोज कुमार पाण्डेय, गोरखपुर, डॉ0 मधुप कुमार, गोरखपुर, डॉ0 रघुवंश मणि त्रिपाठी, बस्ती, डॉ0 वीणा श्रीवास्तव, कुशीनगर, श्री रामा खेतान, पडरौना, डॉ0 प्रेमचन्द सिंह, पडरौना, डॉ0 उमाशंकर सोनी, कुशीनगर, श्री शुभ नारायण शर्मा, पड़रौना, श्री राणा प्रताप सिंह, पडरौना, डॉ0 रंजना जायसवाल, गोरखपुर सहित अनेक साहित्यकारों, विद्वानों ने प्रतिभाग किया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की प्रधान सम्पादक डॉ. अमिता दुबे ने संस्थान का परिचय एवं संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। संस्थान के प्रधान सहायक श्री रामजनम दिवाकर ने भी प्रतिभाग किया।

इस अवसर पर शोधार्थियों, विद्यार्थियों द्वारा भी बड़ी संख्या में उपस्थित होकर समारोह को सफल बनाने में सहयोग दिया गया।

भारतीय भाषा उत्सव, 06 नवम्बर, 2023 को आयोजित संगोष्ठी

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा भारतीय भाषा उत्सव के अन्तर्गत सोमवार 06 नवम्बर, 2023 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन के निराला सभागार लखनऊ में किया गया।

सम्माननीय अतिथि डॉ0 सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ, डॉ0 अलका पाण्डेय को स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया।

दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के उपरान्त कार्यक्रम में वाणी वंदना श्रीमती कामिनी त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत की गयी।

डॉ0 अलका पाण्डेय ने कहा- नाटक के पात्र जो बात करते है वह एक कलाकार के नहीं बल्कि उसके होते है, जिसका वह पात्र (किरदार) निभा रहा है। रंगमंच एक विशिष्ट है। पर्दो पर जब कोई चित्र देख रहे होते है तो वह बहुत बड़े दिखाई देता है, जबकि नाटक के किरदार वास्तविक दिखाई देते है। इसलिए नाटक रंगमंच के अलग हैं। रंगमंच जीवंत विधा है। नाटक की भाषा कोई व्याकरण की भाषा नहीं है। इसमें पात्र का प्रत्येक अंग बोलता है। नाटक में संगीत और नृत्य बोलता हुआ प्रतीत होता है।

मौन की भी अपनी भाषा होती है। पात्र अपने संवादों के द्वारा जीवंत रहता है। पात्र संवादो के अरोह और अवरोह पर विशेष ध्यान देते है। नाटक लिखना बहुत कठिन माना गया है। क्योंकि उसमें जो कुछ घटित करना है, उसे संवादो के माध्यम से प्रस्तुत करना है। नाटक एक पाठ्य विधा नहीं है। जब तक नाटक रंगमंच पर नहीं होते तब तक वे पूर्ण नहीं होते।

डॉ0 सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ ने कहा- नाटक दृश्य काव्य है। यह आँखो और कानो के लिए है। इन दोनों इन्द्रियों से इनका सम्बन्ध है। लिखा हुआ नाटक साहित्य का हिस्सा है, परन्तु जब तक उसका मंचन नहीं होता वह अपूर्ण रहता है। लोक भाषा का मतलब लोगो की भाषा, जिस भाषा में लोग अपने आम जनजीवन को अभिव्यक्त करते है। प्राकृत लोक भाषा थी। संस्कृत उच्चवर्ग की भाषा थी। निम्न वर्ग और स्त्रियों को संस्कृत उस समय बोलने की मनाही थी। उनके संवाद प्राकृत भाषा में मिलते है। आप किसी पुस्तक को धीरे-धीरे पढ़ सकते है, पर नाटक में ऐसा नहीं हैं उसमें जो संवाद एक बार बोल दिया जाता है उसे पुनः नहीं बोला जाता है। रामलीला में रामचरित मानस की जगह राधेश्याम रामायण का प्रयोग है। आधुनिक नाटकों में यथार्थ की भाषा मिलती हैं जबकि पुराने नाटकों से लोकभाषा मिलती है। लोकभाषा निरंतर अपने को बदलती रहती है। संस्कृत और भाषा एक बहती नदी की तरह है। रंगमंच, दृश्य, वाचिक अभिनय की अलग-अलग भाषा होती है।

शोधार्थियों/विद्यार्थियों में सुश्री सुकीर्ति तिवारी, तनु मिश्रा, आसिया बानो द्वारा 'लक्ष्मीनारायण मिश्र का नाटक सिंदूर की होली' की प्रस्तुति की गयी।

डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर कार्यक्रम, 06 दिसम्बर, 2023

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर

संस्थान के निराला सभागार में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का स्मरण किया गया। परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर माँ सरस्वती व डॉ0 अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण/पुष्पार्पण करते हुये दीप प्रज्वलन किया गया। श्री आर0पी0 सिंह, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की विशेष उपस्थित में आयोजित इस स्मृति समारोह में डॉ0 अम्बेडकर के जीवन और सिद्धान्तों पर चर्चा करते हुए डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक ने कहा- 'डॉ0 अम्बेडकर का जीवन हमें शिक्षा के महत्व को सिखाता है। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त

की और उन्नति की दिशा में देश को ले जाने का प्रयास किया।'

निदेशक, श्री आर0पी0 सिंह (आई0ए0एस0) ने कहा- डॉ0 अम्बेडकर ने महिलाओं की उन्नति के लिए भी बहुत अधिक काम किया। आज उनके जीवन की बातें सोचकर आश्चर्य होता है कि उन्होंने किस प्रकार कार्य किया होगा।' इस अवसर पर श्रीमती किरन जोशी, प्रदीप कुमार दुबे, सुरेन्द्र कुमार, रामजनम दिवाकर, सुनीता रानी, श्याम कृष्ण सक्सेना, सुभाष चन्द्र, अकबर हुसैन, विनोद कुमार वर्मा, देवेन्द्र कुमार पाल, अशोक कुमार, बराती लाल, रजनेश कुमार, प्रताप कुमार, दिनेश कुमार शर्मा, सौरभ चौहान, उमेश कुमार, अनिल कुमार, मुकेश कुमार, राजेन्द्र सिंह, नवीन सिंह, सुभाष कुमार, प्रदीप, जितेन्द्र, सीमा मिश्र, चिंतामणि सिंह, नवी हसन, अमन, अमित, मनोज, संजय कुमार शर्मा, मनोज कुमार, सुनील सखूजा, शिवराज, प्राची, आसिया बानो व मालती यादव आदि कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्थापना दिवस समारोह, 30 दिसम्बर, 2023

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा संस्थान के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर अभिनन्दन पर्व एवं कहानी, कविता, निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन शनिवार, 30 दिसम्बर, 2023 को

हिन्दी भवन के निराला सभागार में किया गया। सम्माननीय अतिथि के रूप में पद्मश्री डॉ0 विद्याविन्दु सिंह, लखनऊ, प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित, लखनऊ उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलन एवं माता सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के उपरान्त प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में वाणी वन्दना सरोज खुलबे द्वारा प्रस्तुत की गयी। छः बाल साहित्यकारों को उत्तरीय, प्रशस्तिपत्र एवं इक्यावन हजार रुपये की धनराशि से अभिनन्दित किया गया। सुश्री श्रद्धा पाण्डेय, गाजियाबाद को सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान, श्री पवन कुमार वर्मा, वाराणसी को अमृत लाल नागर बाल कथा सम्मान, श्री लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, बस्ती को लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान, श्री अशोक अंजुम, अलीगढ़ को डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान, डॉ0 मनीष मोहन गोरे, गाजियाबाद को जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान, सुश्री शताब्दी गरिमा, लखनऊ को उमाकान्त

मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया।

साथ ही संस्थान द्वारा आयोजित कहानी, कविता एवं निबन्ध प्रतियोगिता वर्ष 2023 के पुरस्कार वितरित किये गये। कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्री विश्रुत तिवारी, जौनपुर, द्वितीय पुरस्कार सुश्री आकांक्षा गुप्ता, चन्दौली, तृतीय पुरस्कार सुश्री खुशी सखूजा, लखनऊ, सांत्वना पुरस्कार सुश्री करिश्मा, हमीरपुर, श्री आशांशु त्रिपाठी, प्रतापगढ़, सुश्री कविता सरोज, वाराणसी को प्रदान किये गये। कविता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्री शक्ति प्रकाश त्रिपाठी, भदोही व श्री अचल तिवारी, हरदोई, द्वितीय पुरस्कार सुश्री इरम, बुलंदशहर, तृतीय पुरस्कार सुश्री शालिनी तिवारी, कानपुर, श्री उदय प्रताप कुमार

(उदय प्रताप पटेल), कुशीनगर, सुश्री यशस्वनी शुक्ला, गोरखपुर, सुश्री रोशनी रावत, लखनऊ और सांत्वना पुरस्कार सुश्री शिवांगी उपाध्याय, वाराणसी एवं श्री अभिषेक कुमार सिंह, प्रयागराज को प्रदान किये गये। निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार सुश्री अंशिका, लखनऊ, द्वितीय पुरस्कार श्री विनय अवस्थी, कानपुर नगर, तृतीय पुरस्कार श्री आकाश वर्मा, लखीमपुर खीरी एवं सांत्वना पुरस्कार सुश्री अमृता सैनी, लखनऊ एवं सुश्री शेफाली, वाराणसी को प्रदान किये गये। कहानी, कविता एवं निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार रु0 7,000/- द्वितीय पुरस्कार रु0 5,000/- तृतीय पुरस्कार रु0 4,000/- सांत्वना पुरस्कार रु0 2,000/- की धनराशि से पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर पद्मश्री डॉ0 विद्याविन्दु सिंह ने कहा – 'आज बच्चों पर पढ़ाई का काफी दवाब बढ़ा है। नई शिक्षानीति में बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने का विचार किया गया है। बच्चों का व्यक्तित्व का विकास अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 'सिंहासन बत्तीसी' 'पंचतंत्र' की कहानियाँ बच्चों में काफी लोकप्रिय हैं। विद्यालयों के बच्चों को भी कहानियाँ लिखने का अवसर मिलना चाहिए। उन्हें प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है साथ ही प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बच्चों को लोक परम्पराओं के माध्यम से संस्कारित करने की आवश्यकता है।'

प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा- किसी रचनाकार को पुरस्कार ऊर्जा एवं प्रेरणा प्रदान करता है। प्रतिभा का उजागर अच्छे परिवेश से होता है। बड़े उम्र के लोग बालमनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर रचना करें तभी बाल पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ सकता है। बाल रचनाकार को शब्दों का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। बाल रचनाकारों में निरंकार देव सेवक, हरिकृष्ण देवसरे का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। पत्रिकाओं में

बाल-विनोद, गुड़िया, चन्दा मामा आदि चर्चित रही हैं। बाल साहित्य के माध्यम से विज्ञान साहित्य को लिखा जा रहा है। आज तकनीकी युग में बच्चे प्रबुद्ध होते जा रहे हैं। वर्तमान में पठनीयता की समस्या है। बाल साहित्य पर आधारित कार्यशालाएं करवाने की आवश्यकता है। पठन-पाठन कार्य हमारी दिनचर्या में सम्मिलित होना चाहिए।

प्रधान सम्पादक, डॉ0 अमिता दुबे, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कहा- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित बाल साहित्य संवर्द्धन योजना के अन्तर्गत

अभिनन्दन पर्व पुरस्कार वितरण समारोह एवं कहानी/कविता/ निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत प्रतियोगियों को व विभिन्न विधाओं के बाल साहित्यकारों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए हम गौरवान्वित हैं। बाल साहित्य के सृजन में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका रचनाकारों की है, उससे अधिक दायित्व बाल पत्रिकाओं के सम्पादक का भी है। संस्थान द्वारा प्रकाशित बालवाणी द्वैमासिक पत्रिका के माध्यम से हम बाल पाठकों के बीच जाते हैं और उसे सभी का स्नेह और सहयोग मिलता है। मीडिया कर्मियों, पत्रकार बन्धुओं के प्रति भी हम आदर भाव व्यक्त करते हैं।

विश्व हिन्दी दिवस समारोह, 10 जनवरी, 2024

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर बुधवार 10 जनवरी, 2024 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन के निराला सभागार लखनऊ में पूर्वाह्न 10.30 बजे से किया गया।

दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त वाणी वंदना श्री सर्वजीत सिंह मारवा द्वारा प्रस्तुत की गयी।

सम्माननीय अतिथि डॉ0 कैलाश देवी सिंह, डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव व डॉ0 अनुराधा पाण्डेय 'अन्वी' को स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया।

डॉ0 कैलाश देवी सिंह ने कहा- 'हिन्दी को विश्व पटल पर पहुँचाने में फिल्मों, शैक्षिक संस्थानों, संचार माध्यमों ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। विश्व के अधिकांश देशों ने हिन्दी के महत्व को समझा है। अतीत में भी विदेशों में हिन्दी के क्षेत्र में काफी कार्य हुआ है। विदेशी विद्वानों ने हिन्दी भाषा के व्याकरण पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। ई.मैगजीन के माध्यम से हिन्दी भाषा का विकास निरन्तर हो रहा है। डॉ0 जार्ज ग्रियर्सन ने 'भारत का भाषा सर्वेक्षण' पुस्तक लिखकर हिन्दी के लिए महती कार्य किया। विदेशी साहित्यकारों ने भारतीय साहित्य का अनुवाद के माध्यम से हिन्दी को समृद्ध किया है। फादर कामिल बुल्के ने 'रामकथा' की रचना करके महान कार्य किया हैं। भारतीय लेखक, साहित्यकार आज विदेशों में हिन्दी को आगे बढ़ाने में निरन्तर प्रयासरत हैं। ये लेखक कथालेखन, आत्मकथा, संस्मरण, निबंधों आदि के माध्यम से हिन्दी को आगे बढ़ा रहे हैं।'

डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव ने कहा- 'हिन्दी अनवरत रूप से निरन्तर बढ़ती जा रही है। हिन्दी को विश्व मंच पर पहुँचाने के लिए भारत ने कठिन प्रयास किये हैं। 160 से अधिक देशों में हिन्दी पढ़ी एवं पढ़ाई जा रही है। मॉरीशस को लघु भारत भी कहा जाता है। वहाँ हिन्दी भाषा का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। सूरीनाम व मॉरीशस हिन्दी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति को समृद्ध कर रहे हैं। जार्ज ग्रियर्सन ने हिन्दी भाषा को समृद्ध करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। भारतीय लेखक, साहित्यकार

विदेशों में हिन्दी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार में संघर्षरत हैं। विदेशों के विश्व विद्यालय-महाविद्यालयों में भी पठन-पाठन कार्य किये जा रहे हैं। फिजी में भी साहित्यिक संस्थाएं हिन्दी को आगे बढ़ाने में संलग्न है। विदेशों में शिक्षण केन्द्र हिन्दी को पुष्पित एवं पल्लवित निरन्तर कर रहे हैं। विश्व में रेडियों ने हिन्दी को काफी आगे बढ़ाया है। सूरीनाम, रूस जैसे देशों में आकाशवाणी केन्द्र हैं, जिनसे हिन्दी में कार्यक्रम निरन्तर प्रसारित प्रचारित कर रहे हैं।

डॉ0 अनुराधा पाण्डेय 'अन्वी' ने कहा- आज गैर हिन्दी भाषी भी हिन्दी को आत्मसात कर रहे हैं। हिन्दी 'हिन्दी की क्या बात करूँ मैं हिन्दी मुझसे बतियाती है।' हिन्दी हमारे हृदय के काफी निकट है। हिन्दी में संप्रेषणीयता के गुण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं हिन्दी का उद्भव देव भाषा संस्कृत से हुआ है। हिन्दी भाषा के व्याकरण संस्कृत भाषा से समृद्ध हुआ है। हिन्दी में ग्रहणशीलता के गुण है। हिन्दी भाषा लेखन एवं पाठन में सरलता है। हिन्दी एक सरल एवं लचीली भाषा है। हिन्दी का विकास संस्कृत से हुआ है। हिन्दी भाषा संपर्क भाषा के रूप में काफी प्रचलित है। भारत एक बहुभाषी देश है। आजादी के बाद हिन्दी का विरोध धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। आज वैश्विक समाज पर हिन्दी अपना स्थान बनाती जा रही है। विश्व में हिन्दी बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। हिन्दी फिजी की आधिकारिक भाषा है। मॉरीशस में हिन्दी भाषा का व्यापक सृजन हो रहा है। मॉरीशस एवं सूरीनाम में अनेक पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रहीं है। पूरे विश्व में हिन्दी साहित्य काफी लोक प्रिय हो रहा।

डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

प्रभुता को सब कोई भजै,
प्रभु को भजै न कोय
कह कबीर प्रभु को भजै
प्रभुता चेरी होय

- कबीरदास

अयोध्या

– मैथिलीशरण गुप्त

देख लो, साकेत नगरी है यही,
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।
केतु-पट अंचल-सदृश हैं उड़ रहे,
कनक-कलशों पर अमर-दृग जुड़ रहे !
सोहती हैं विविध शालाएँ बड़ी,
छत उठाये भित्तियाँ चित्रित खड़ी।
गेहियों के चारु-चरितों की लड़ी,
छोड़ती है छाप, जो उन पर पड़ी।
स्वच्छ, सुन्दर और विस्तृत घर बने,
इन्द्रधनुषाकार तोरण हैं तने।
देव-दम्पति अट्ट देख सराहते,
उतरकर विश्राम करना चाहते।
फूल-फलकर, फैलकर जो हैं बढ़ी,
दीर्घ छज्जों पर विविध बेलें चढ़ी ।
पौरकन्याएँ प्रसून-स्तूप कर,
वृष्टि करती हैं यहीं से भूप पर।
फूल-पत्ते हैं गवाक्षों में कढ़े,
प्रकृति से ही वे गये मानो गढ़े।
दामिनी भीतर दमकती है कभी।
चन्द्र की माला चमकती है कभी,
सर्वदा स्वच्छन्द छज्जों के तले,
प्रेम के आदर्श पारावत पले।
केश-रचना के सहायक हैं शिखी,
चित्र में मानो अयोध्या है लिखी !

('साकेत' से)

साहित्य भारती
वर्ष:27, अंक-2-3, अप्रैल-सितम्बर, 2024 (संयुक्तांक) पंजीयन संख्या- 65194/96

साहित्य भारती

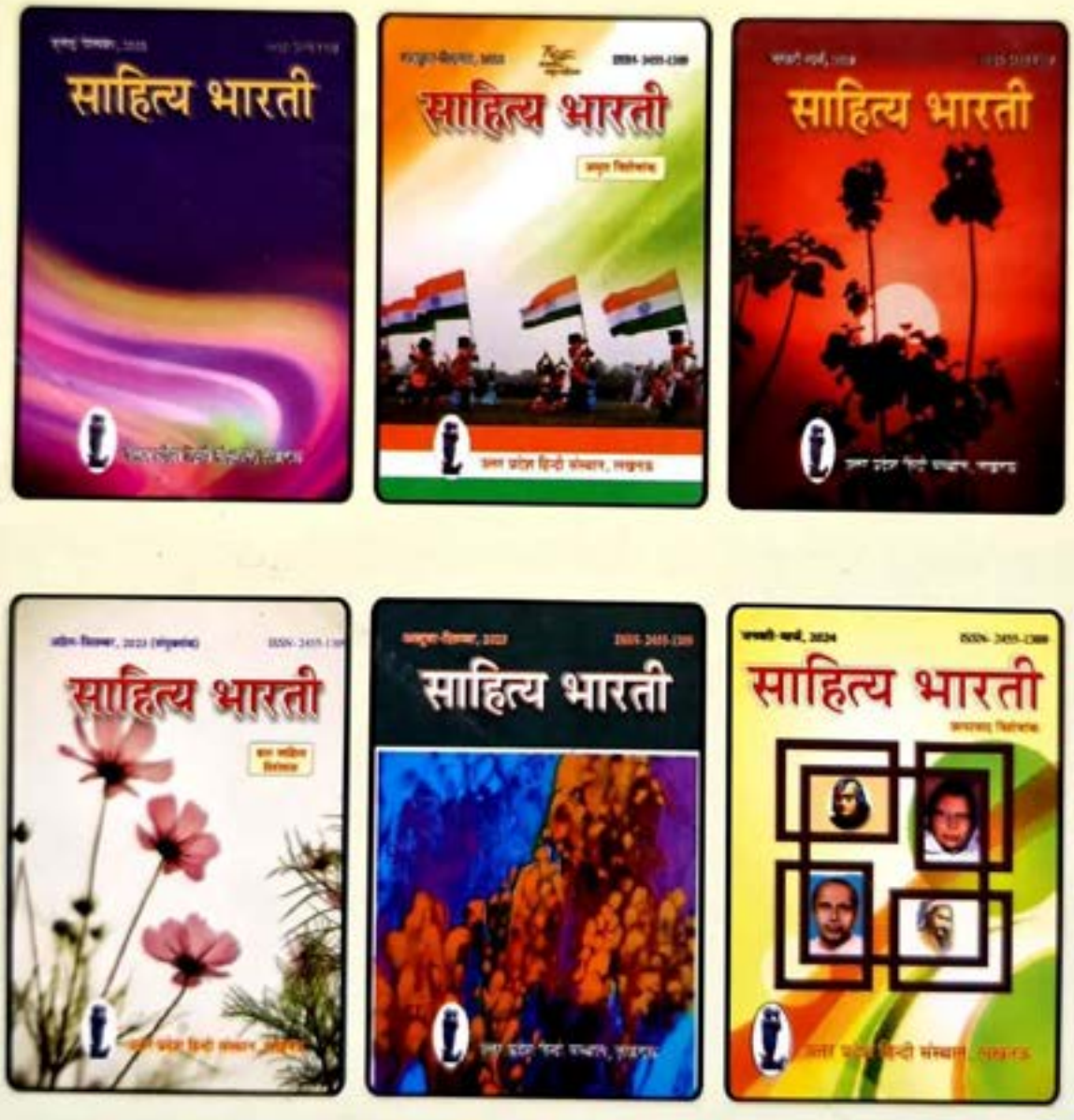

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रबन्ध सम्पादक, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा मौर्या इण्टरप्राइजेज, लखनऊ से मुद्रित तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, 6, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. अमिता दुबे
वेबसाइट : www.uphindisansthan.in ई-मेल: sahityabharti1976@gmail.com दूरभाष: 0522-2614470